जनम के साथी हैं, करम के साथी नहीं

(१) बुरे कामों का कोई साथी नहीं होता।

(२) भाग्य में कोई हिस्सा नहीं बंटा सकता। सब अपना-अपना भोगते हैं।

जनम-जनम की छूट गई

(१) जन्म-जन्मान्तर के लिए छुटकारा पाया।

(२) जन्म-जन्मान्तर के लिए कलंक धुल गया।

जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट

(१) झूठी शान दिखानेवाले के लिए क०।

(२) साधारण स्थिति में रहकर बड़ी-बड़ी चीज़ों का स्वप्न देखनेवाले के लिए भी क०।

बोरिया = टाट का बोरा।

जनम पत्र सब देखते हैं, करमपत्र कोई नहीं देखता

भाग्य-लिखा कोई नहीं जान सकता।

जनम पत्र की विध तो मिला लो

जल्दी न करो, पहले देख तो लो कि यह काम होगा कैसे?

(हिन्दुओं के यहा विवाह में वर और कन्या की जन्मपत्री देखी जाती है। जब उनके गुण ज्योतिष के अनुसार परस्पर मिल जाते है, तभी विवाह पक्का होता है।)

जने-जने का मन रखते, वेश्या हो गई बांझ

सबको प्रसन्न रखना बड़ा कठिन है। इस तरह के प्रयास में वेश्या का जीवन ही अकारथ जाता है।

जफ़ा झफ़ा राजाओं पर पड़ती आई हे

विपत्ति सब पर पड़ती है।

जब अपना उतार लाता दूसरे की उतारते क्या लगता है?

जिस आदमी ने अपनी इज्ज़त की परवाह नहीं की, वह दूसरे की इज्ज़त की परवाह क्यों करने चला?

(उतारने का मतलब इज्ज़त उतार लेने से है।)

जब आंखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है

(१) आपस में मिलने पर प्रेम उत्पन्न हो ही जाता है। अथवा

(२) मिलने पर लिहाज़ करना ही पड़ता है।

जब आया देही का अंत, जैसा गदहा वैसा संत

मृत्यु के लिए सब बराबर हैं।

जब आवे बरसन का चाव, पछवा गिने न पुरवा बाव, (कृ०)

बरसनेवाले बादल बरसकर ही रहते हैं, फिर चाहे पश्चिम की हवा चले या पूरब की।

(वैसे पश्चिम की हवा चलने पर ही वर्षा होती है।)

जब ऐसे हों, तब ऐसे हो

जब तुम्हारे ऐसे (बुरे) कर्म हैं, तभी तुम्हारी ऐसी (बुरी) दशा है।

जब करी आस, तब आए तेरे पास

तुमसे आशा करके ही हम आए हैं।

('जब करें आस, तब आयें तेरे पास' इस प्रकार भी यह कहावत सुनी जाती है।)

जब चने थे तब दांत न थे, जब दांत हुए तब चने नहीं

साधनों के रहते उनका उपयोग नहीं किया जा. सका और जब उनका उपयोग करने के योग्य हुए, तब साधन नहीं।

जब जैसा, तब तैसा

जब जैसा समय हो, तब तैसा ही काम करना चाहिए।

जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह जानता है 'मुझसे ऊंचा कोई नहीं'

जब तक किसी मनुष्य का अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से मुकाबला नहीं पड़ता, तब तक वह अपने को ही सबसे बड़ा समझता है। अंधेरे में रहना।

जब तक करूं 'बाबू, बाबू', तब तक करूं अपने काबू, (स्त्रि०)

जब तक 'बाबू, बाबू' अर्थात खुशामद करती रहती हूं, तब तक वह मेरे काबू में रहता है।

जब तक गंगा जमुना बहे

जब तक पृथ्वी रहे।

जब तक चांद सूरज हैं

जब तक यह सृष्टि है।

(ऊपर के दोनों वाक्य आशीर्वाद देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।)

जब तक जीना, तब तक सीना, (स्त्रि०)
जब तक आदमी ज़िंदा रहता है, तब तक उसे संसार के कामों में लगा ही रहना पड़ता है।

जब तक तंगदस्ती है, परहेज़गारी है
आर्थिक कठिनाई जब तक रहती है, तब तक आदमी संयम से काम लेता है।

जब तक दम है, तब तक ग़म है
जीवन में एक न एक दुख लगा ही रहता है।

जब तक पहिया लुढ़कता है, तभी तक गाड़ी है
(१) जब तक कोई वस्तु काम में आती रहे, तभी तक उसके नाम की सार्थकता है। अथवा (२) अवसर का उपयोग कर लेना चाहिए। (पहिए का लुढ़कना बंद होने पर गाड़ी, फिर निकम्मी हो जाएगी, उससे काम नहीं लिया जा सकेगा।)

जब तक पहिया लुढ़के, लुढ़काए जाओ
जब तक भी काम चलता रहे, चलाते रहना चाहिए। बीच में थककर मत बैठो।

जब तक बहू कुंआरी, तब तक सास बारी। बहू आई गौद में, लाड़ गया हौद में। (स्त्रि०)
जब तक बहू पुत्रवती नहीं होती, तभी तक सास का उस पर लाड़-प्यार रहता है। पुत्रवती होने पर वह प्यार लड़के पर केंद्रित हो जाता है।

जब तक रकाबी में भात, तब तक मेरा तेरा साथ
स्वार्थमय प्रेम।

जब तक सांस, तब तक आस
(१) सांस जब तक रहती है, तब तक (मरणासन्न आदमी के) जीवित रहने की आशा भी रहती है। (२) आशा अन्त तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती या अन्त तक आशा रखो।

जब तीर छट गया, तो फिर कमान में नहीं आ सकता
(१) मुंह से निकली बात फिर लौट नहीं सकती। इसलिए सोच-विचार कर बात करे।
(२) एक बार जो काम हो जाता है, वह फिर व्यर्थ नहीं जा सकता।

जब तू न्याय की गद्दी पर बैठे तो अपने मन से तरफ़-दारी, लालच और क्रोध को दूर कर
स्पष्ट। नीति वाक्य।

जब तेरे पेट में खुड़िया लगे, तब मीठा और सलोना क्या रे?
भूख में मीठा और नमकीन सब बराबर।
खुड़िया=क्षुधा।

जब दांत न थे, तब दूध दियो, जब दांत भये का अन्न न देयगो
ग़रीबी में ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहा गया है।

जब दिन आए भले, तब लड्डू मारे, चले, (पू०)
अच्छे दिन आने पर लड्डू अपने-आप खाने को मिलने लगते हैं। किसी भाग्यवादी का कथन। ('मारना' एक मुहा० है, जिसका अर्थ बिना परिश्रम के बहुत-सी चीज़ प्राप्त करना होता है।)

जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए रुसवाई क्या?
जब प्रेम ही किया, तो फिर बदनामी का क्या डर?

जब देखो तब नाज़िर मियां नत्थू का टाला
जब देखो तब मियाँ नत्थू मौजूद।
(ऐसे मुफ़्तखोरे के लिए क०, जो हमेशा दरवाज़े पर आ जाया करता हो।)
टाला=आना-जाना, घूमना।

जब देना होता है, तो छप्पर फाड़कर देता है
ईश्वर को जब देना होता है, तब वह देने का रास्ता निकाल ही लेता है। भाग्यवादी की उक्ति।

जब नटनी बांस पर चढ़ी, तो घूंघट क्या?
जब किसी काम को करने पर उतारू ही हो गए, तो फिर उसमें संकोच से क्या लाभ?
(नटनी यानी नट की स्त्री बांस पर चढ़कर तरह-तरह की कलाबाज़ियां दिखाती है। अब यदि वह घूंघट से अपना मुंह छिपा ले, तो फिर खेल कैसे दिखाएगी?)

जब नाचने निकली, तो घूंघट क्या?
दे० ऊ०।
(इस कहावत का भाव भी लगभग ऊपर की कहावत जैसा ही है। पर मुहावरे में नाचने का अर्थ निर्लज्ज

बनकर काम करना भी होता है। इसलिए यहां उसका यह अभिप्राय लगाना अधिक ठीक होगा कि किसी बुरे काम को भी करने का इरादा यदि किया, तो उसे अच्छी तरह ही करना चाहिए।)

जब प्रजा नहीं, तो राजा कहां?

प्रजा से ही राजा होता है।

जब फेंको तब पांच तीन

जब पांसा फेंकते हैं, तब पांच और तीन ही पड़ते है।

किसी काम में हमेशा सफल होना।

(चौसर के खेल में पांच और तीन के पांसे अच्छे माने जाते है। उनसे गोटों के चलने में सुभीता होता है।)

जब बिगड़े जब सुघड़ नर, क्या बिगड़ेगा कूढ़।
मट्ठे का क्या बिगड़ना, जब बिगड़े जब दूध।

जब बिगड़ता है, तब चतुर आदमी ही बिगड़ता है। मूर्ख क्या बिगड़ेगा। मट्ठा नही बिगड़ता, जब बिगड़ता है, तब दूध ही बिगड़ता है।

जब भये सौ, तब भाग गया भय, (व्य०)

कर्ज़ की रकम सौ पर पहुंच जाने पर अधिक चिन्ता नही रहती। (तब फिर साहूकार को ही फिक्र रहती है कि वह किसी तरह वसूल हो जाए।)

जब साजन की होय लुगाई,
तोरे कोट और फांदे खाई।

दुराचारिणी को बुरे मार्ग पर जाने से कोई रोक नहीं सकता।

जब भी तीन और अब भी तीन, जब पाए तब तीन ही तीन

स्थिति में कोई परिवर्तन न होना।

जब भूख लगी भड़ुवे को, तंदूर की सूझी,
और पेट भरा उसका तो फिर दूर की सूझी, (स्त्रि०)

(१) स्त्री का अपने निकम्मे पति के संबंध में कहना।

(२) दिखावटी प्रेम करना।

जब्बर की जोय महतारी होय, निबल की जोय मेरी साली, (पू०)

जबर्दस्त की स्त्री को मां समझते हैं, और कमजोर की स्त्री को साली बनाते हैं।

निबल को सब सताते हैं।

जबर्दस्त का ठेंगा सिर पर

ज़बर्दस्त के आगे सबको दबना पड़ता है।

जबर्दस्त की बीसों बिस्वा

ज़बर्दस्त की सब बात ठीक।

बिस्वा = बीघे का बीसवां भाग।

'बीसों बिस्वा' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ है निश्चित, निस्सन्देह, सही।

जबर्दस्त को लाठी सिर पर

दे०—ज़बर्दस्त का ठेंगा...।

जबर्दस्त मारे और रोने न दे

ज़बर्दस्त कमज़ोर को हर तरह से दबाता है।

जबर्दस्त सबका जंवाई

सब उससे दबते हैं।

जब लग पैसा गांठ में, तब लग उसका भार।
साईं इस संसार में, स्वारथ का ब्यौहार।

स्पष्ट।

जब लग साक़ी, तब लग आस

स्पष्ट।

साक़ी = (१) वह जो दूसरों को शराब पिलाता है।

(२) प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

जब लागी चाह, तब सूझा हलवाई का हाट

चटोरे के लिए क०।

जब ले सखा के भाव आई, तब ले पूत के आंखी जाई, (पू०)

जब तक ओझा के सिर देवता आएंगी, हैं, तब तक लड़के की आंखें ही चली जाएंगी। मतलब—जब तक सहायतार्थ प्रतीक्षा करेंगे, तब तक काम ही बिगड़ जाएगा।

(कुछ समय पहले तक ग्रामीण जनता अज्ञान के कारण साधारण रोगों को चिकित्सा के लिए भी झाड़-फूंक और टोना-टोटका की शरण लिया करती थी। ओझा या गुनिया के सिर देवता आते थे, और वह जैसा कहता था, वही किया जाता

था। कहावत उसी प्रथा पर आधारित है। किसी के लड़के की आंखों में दर्द है। पर ओझा के सिर देवता आने में देर हो रही है। तब उपर्युक्त बात उसने कही।)

जब लौ कुठला में नाज, तब लौ जलहृदू को राज, (पू०)

साधारण आदमी के पास जब तक खाने को रहता है, तब तक वह किसी की परवाह नहीं करता।

जब सती सत पर चढ़े, तो पान खाना रस्म है।
आबरू जग में रहे, तो जान जाना धर्म है।

सती जब अपने पति के साथ चिता में जलने लगती है, तो उसे पान खाने को मिलता है। संसार में प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए प्राण भी देना पडे, तो कोई बात नही।

जब सब पनहारी तो पनहारी कहाई

जब और सब काम करके हार गई, तब पनहारी बनी। पनहारिन की निंदा।

जब से उगे बाल, तब से यही हवाल, (स्त्रि०)

जब से बडे हुए, तब से यही हाल है। प्राय. बुरे लड़के के लिए क०।

जबान के आगे लगाम जरूर चाहिए

मुह से बात संभालकर निकालनी चाहिए।

जबान के आगे लगाम नहीं

जब कोई न कहने योग्य बात कहे, तब क०।

जबान के नीचे जबान है

दो भिन्न प्रकार की बात करना।

जबान क्या चली, दो हल चल गये

जो मन मे आए सो कह दे, उसके लिए क०।

जबान जने एक बार, मां जने बार-बार

जबान से जो बात निकली सो निकली, उसे पलटना नही चाहिए।

जबान मत फेरो

कही हुई बात की रक्षा करो।

जबान शीरीं, मुल्कगीरी, जबान टेढ़ी, मुल्क बांका

मीठी बोली से आदमी सबको वश में कर लेता है। कड़वे वचन बोलने वाले के सब शत्रु बन जाते हैं।

जबान से खंदक पार

डीग हाकनेवाले के लिए क०। केवल बातों से ही खंदक पार।

जबान से बेटा-बेटी पराये होते है

जबान देकर बदलना नही चाहिए। जिसे जबान दे देते है, उसी के यहा लड़के-लड़की का सम्बन्ध करते है।

जबान ही हलाल है, जबान ही मुरदार है

जीभ ही न्याय करती है और जीभ ही अन्याय।

जबान ही हाथी चढ़ावे, जबान ही सिर कटवावे

बातो से ही हाथी चढने को मिलता है, और बातो से ही आदमी मारा भी जाता है। इसलिए बात सोच समझकर करना चाहिए।

(बातो हाथी पाइये, बातो हाथी पाव।)

जबानी जमा खर्च बताना

कोरी बात करना।

जमना किनारे घर किया, क़र्ज काढ़ के खायं।
जब आवे कोई मांगने, गडप जमुना में जायं।

जो उधार लेकर खाए और न दे, उसके लिए क०।

जम से बुरी जनेत, (हिं०)

बराती यम से भी बुरे होते है, क्योकि लड़कीवाले को उनपर खर्च करना पडता है।

जमात करामात

सगठन मे ही बल है।

जमा लगे सरकार की और मिरजा खेलें फाग

दूसरे के पैसे पर मौज करना।

जमींदार की जड़ हरी

जमीदार हमेशा मौज करता है।

जमींदार को किसान, बच्चे को मसान

जमीदार के लिए किसान वैसा ही है, जैसा बच्चो के लिए प्रेत।

(मसान एक प्रेत होता है।)

जमींदारी दूब की जड़

हमेशा फलती-फूलती रहती है।

दूब- एक घास, जो बहुत फैलती है।

जमीन आसमान के कुलाबे मिलाते हैं

बहुत बातूनी या झूठे के लिए क०।

ज़मीन सख्त और आसमान दूर है
कहां जाकर शरण लूं? किसी विपदग्रस्त का कथन।

ज़र का ज़ायल करना जी से जी मरना है
धन को बर्बाद करना जीते-जी मरना है।

ज़र का ज़ोर पूरा है और सब अधूरा है
पैसे का बल ही बड़ा बल है।

ज़र का तो ज़र्रा भी आफ़ताब है, बेज़र की मट्टी ख़राब है
धन का तो एक कण भी सूर्य के समान है, धनहीन की बर्बादी होती है।

ज़र को ज़र ही खेंचता है
धन से धन पैदा होता है।

ज़र गया ज़र्दी छाई, ज़र आया सुर्खी आई
बिना पैसे के आदमी उदास नजर आता है, पैसे से खुश दिखाई देता है।

ज़र, ज़मीन, ज़न, झगड़े की जड़
जब झगडा होता है, तब सपत्ति, ज़मीन और स्त्री को लेकर।

ज़र, ज़ोर ख़ुदादाद है
धन और बल ईश्वर की देन है। भाग्यवादी का कथन।

ज़रदार का सौदा है, बेज़र का ख़ुदा हाफ़िज़
धनी ही हर चीज खरीद सकता है, धनहीन का तो ईश्वर मालिक है।

ज़र दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे, उलफ़त बुरी बला है, किसी से न कीजे
रुपया दे दे, पर दिल न दे। प्रेम बुरी चीज़ है, किसी से न करे।

ज़र नेस्त इश्क टें-टें
बिना पैसे के इश्क नही होता।

ज़र फंसाया और कार बराया
पैसा खर्चा और काम बना।

ज़र बल न ज़ोर बल
(१) न धन-बल, न शरीर-बल।
(२) धन-बल ही सच्चा बल है, शरीर का बल उसके सामने कुछ नही।

ज़र हज़ार ऐब लगाता है, बेज़र बिगड़ा नज़र आता है
धन से हज़ार काम समलते हैं, धनहीन बिगड़ा नज़र आता है।

ज़र है तो नर है, नहीं तो खंडहर है
पैसे के बिना कोई नही पूछता।

ज़र है तो नर है, नहीं तो पंछी बेपर है
पैसे से ही आदमी का महत्व बढ़ता है।

ज़रा ज़रा-सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया
थोडा-थोडा सचय करने से बहुत हो जाता है।

ज़रा न ज़द्दूर, गांठ मेरी भरपूर
पास मे कुछ नही? और कहते है मैं मालदार हू।
ज़द्दूर=सपत्ति।

ज़रा-सा खावे बहुत बतावे, वह है बहू सुघड़ैली।
बहुत खावे कम बतलावे, वह बह अड़ बिगड़ैली।
जो बहू थोडा खाए और बहुत बताए, वही सुघड है, जो बहुत खाए और थोडा बताए, वह बिगडैल है।

ज़रा-सा मुंह बड़ा-सा पेट
बहुत खाऊ या द्वेष रखनेवाले लडके के लिए क०।

ज़रा-सा मुंह बड़ी बातें
लड़के के लिए क०।

जरे जायें, सूझे सुक्कर, (पू०)
मरने जा रही है, फिर भी शुक्र देख रही है। (शुक्र एक अशुभ ग्रह माना जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि पति के साथ चिता मे जलने जा रही है, किन्तु शुभ-अशुभ नक्षत्र की चिन्ता कर रही है।)

जलते की जाई, गरीब के गले लगाई
अभागे की लडकी गरीब को ब्याही।
जैसे को तैसा मिलना।

जलमय भगवान है
स्पष्ट।

जल में खड़ी प्यासों मरे, (स्त्रि०)
अभाव न होते हुए भी कष्ट भोगना।

जल में बसे कमोदनी, और चंदा बसे अकास।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास।
स्पष्ट।

जल में मछली, नौ-नौ कुटिया बखरा
मछली अभी पानी मे है फिर भी लोग उसे नौ नौ टुकडे करके आपस मे बाट रहे हैं।
काम पूरा हुआ नही, फिर भी हिस्सेदार अपना हिस्सा लगा रहे है।

जल सूर बामन, रनसूर छत्री, कलम सूर कायथ, गंड सूर खत्री
ब्राह्मण नहाने मे, क्षत्रिय लडाई मे, कायस्थ कलम चलाने मे बहादुर होता है। खत्री कायर होता है। यह सब धारणाए है, जिनका आधार तो होगा ही, पर चिर-सत्य नही।

जलाने को फूस नहीं, तापने को कोयला
ऊचा दिमाग रखनेवाले को क०।

जले को जलाना, नमक-मिर्च लगाना
पीड़ित को और कष्ट देना।

जले घर की बलेंडी
ऐसा व्यक्ति जो परिवार मे अकेला बचा हो।
बलेडी=वह लबी लकडी, जिसके सहारे छप्पर रखा जाता है।

जले पराई धी और हंसे बटाऊ लोग
दूसरे की हानि होते देख प्रसन्न होना।
धी=लड़की। बटाऊ=राहगीर।

जले पांव की बिल्ली, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री जो लड़ाई-झगडा करती फिरे।

जले फफोले फोड़ते हैं
किसी पर अपना गुस्सा उतारना, कोसना, गाली देना।

जलेबियों की रखवाली और चोट्टी कुतिया
अविश्वसनीय आदमी को किसी चीज की रखवाली का काम सौंप देना।

जले हुए तो पत्थर मारा करते है
ईर्ष्या-द्वेष से कुढा बैठा आदमी पत्थर तो फेंकेगा ही। मतलब किसी न किसी तरह अपना गुस्सा उतारेगा ही।

जले हुए यों ही कहा करते हैं
स्पष्ट। दे० ऊ०।

जवान जाय पताल, बुढ़िया मांगे भतार, (पु०)
जवान तो मरी जा रही है और बुढिया ब्याह किया चाहती है। असगत बात पर क०।

जवान डरावे भागने से, बूढ़ा डरावे मरने से
स्पष्ट।

जवान रांड, बूढ़े सांड
दे०—जवान जाय पताल...।

जवानी और उस पर शराब, दूनी आग लगती है
स्पष्ट।

जवानी दीवानी
जवानी मे आदमी पागल हो जाता है। उसे अच्छा-बुरा नही सूझता।

जवानी मे गधे पर भी जोबन होता है
युवावस्था मे कुरूप मनुष्य भी सुन्दर लगता है।

जवानों को चला-चली, बुढ़िया को ब्याह की पड़ी
उल्टा काम।

जवाब तुर्की-बतुर्की
जैसे को तैसा जवाब।

जवाबे जाहिलां बाशद खामोशी (फा०)
मूर्ख की बात का जवाब मौन है।

जस किया तस पाया
जैसा किया, वैसा फल मिला।

जस केले के पात में, पात पात में पात।
तस ज्ञानी की बात में, बात बात में बात।
केले के पौधे मे पत्ते ही पत्ते होते हैं, उसी प्रकार बना हुआ ज्ञानी कोरी बाते करता है।

जस दूलह तस बनी बराता
जैसा आदमी वैसे ही उसके साथी भी।

जस मुकुंद तस पावल धोड़ी, बिधना आन मिलावल जोड़ी
जैसे मुकुद हैं, वैसी ही उन्हे घोड़ी भी मिल गई। ईश्वर ने स्वयं आकर जोड़ी मिलाई। जैसा आदमी

वैसा ही उसका साज-सरंजाम या साथी भी हो, तब क०। दे०—जस दूलह...।

जहां का मुरदा तहां ही गोर

जहां का मुरदा होता है वहीं गड़ता है। जहां की चीज वहीं ठिकाने लगती है।

जहां कुत्ता होता है, वहां नेकी का फ़रिश्ता नहीं आता

स्पष्ट।

मुसलमानों का एक विश्वास।

जहां के मुरदे तहां ही गड़ते हैं

स्पष्ट।

दे०—जहां का मुरदा...।

जहां ख़र्च नहीं, वहां हर एक गांठ का पगा

जहां पैसे की जरूरत नही, वहां हरेक की जेब भरी रहती है—जहां जरूरत होती है, वहां जेब खाली हो जाती है।

जहां खाना, वहां सबका ठिकाना

जहां आदमी की गुज़र-बसर हो, वही उसका ठिकाना भी समझना चाहिए।

जहां गंग, वहां रंग

गंगा-स्नान करनेवाले का कहना कि गंगा के साथ रंग भी है।

जहां गंज वहां रंज

जहां पैसा होता है, वहां परेशानियां भी बहुत होती है। गंज=ढेर, धनराशि।

जहां गढ़ा होगा, वहां पानी भरेगा

अर्थात कीचड़ होगा। गोसाईं तुलसीदास जी ने कहा है—

अंतहु कीच तहां जहं पानी।

जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आयेंगी

जहां पैसा होगा, वहां खाने-पीनेवाले भी पहुंचेंगे।

जहां जाय भूखा, वहां पड़े सूखा

दुखिया को सब जगह दुख है।

जहां जायें बाले मियां, तहां जाये पूंछ

जब कोई हमेशा किसी के साथ लगा रहता है, तब क०।

जहां जिसके सींग समायें, वहां निकल जायें

जहां जिसकी गुज़र हो, वहां चला जाए, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

जहां डर, वहां हमारा घर

निडर का कहना।

जहां ढाक वहां डाकू

ढाक के जंगल में डाकू ज्यादा रहते हैं।

जहां तुम्हारा पसीना गिरे, वहां हम खून गिरायें

मतलब—तुम्हारा अच्छी तरह साथ देंगे।

जहां दल, तहां बादल

जहां लोगों की भीड़ होती है, वही धूल उड़ती है।

जहां देखी रोटी, वहां मुंड़ाई चोटी, (स्त्रि०)

जिससे कुछ मिलने की आशा हुई, उसी के चेला बन गए अथवा उसी की ख़ुशामद करने लगे।

जहां देखें गुना पुड़ी, तहां जायें लुरही लुरही, (स्त्रि०)

जहां खाने-पीने का डौल देखा, वही पहुंच गये। गुना=एक तरह का पकवान, जो प्रायः ब्याह में बनता है।

जहां देखे तवा-परात, वहां गावे सारी रात, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

दे० ऊ०।

जहां न जाको गुन लहे, तहां न ताको ठांव।
धोबी बसकर क्या करे, दिगंबरन के गांव।

जहां अपने गुण की क़द्र करनेवाला कोई न हो, वहां नही रहना चाहिए।

जहां न जाए सुई, वहां भाला घुसेड़ते है

(१) गुंजाइश से अधिक की आशा करना।

(२) अतिशयोक्ति से काम लेने पर भी क०।

जहां पड़े मूसल, वहां खेम कूसल

जहां मूसल से अनाज कुटता रहे, वहीं समझो क्षेम-कुशल है।

जहां बड़ी सेवा, तहां ओछे फल

जहां बहुत ख़ुशामद करनी पड़ती है, वहां नतीजा भी कुछ अधिक अच्छा नहीं निकलता।

जहां बहू का पसीना, वहीं ससुर की खाट

एक आपत्तिजनक बात।

(हिन्दू घरों में बहू ससुर से परदा करती है। तब जहां ससुर लेटा है, वहां बैठकर वह पीसेगी कैसे?)

जहां बालक तहां पेखना, जहां गोरस तहं घोर।
जहां राजा मिठ बोलना, बसें घनेरे लोग।

जहां बालक होते हैं वही खिलौने भी होते है, जहा दही होता है, वही दही का शर्बत भी होता है, जहा राजा मिष्टभाषी होता है, वही अधिक लोग बसते है।

जहां बालों का बैठना, वहां भूतों का बास

दे०--जहा बहू का पीसना...।

(कहावत का यह अभिप्राय भी हो सकता है कि जहा बालक होते है, वही प्रेतबाधा भी अधिक होती है।).

जहां मुरगा नही होता, वहां क्या सबेरा नहीं होता?

किसी के बिना कोई काम रुका नही रहता।

जहां रुख नहीं, तहां अ ंड रुख

जहां कोई विद्वान, गुणवान या धनी व्यक्ति नही होता, वहा बहुत कम विद्या, गुण या धनवाला व्यक्ति ही बडा माना जाता है।

जहां सेर, वहां सवैया

थोडे के लिए कोई काम क्यों बिगड़े, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

जहां सौ, वहां सवा सौ

दे० ऊ०।

जहाज का कौवा

जिसका कही ठिकाना न हो, जो घूम-फिरकर अपनी ही जगह पर आए, उसके लिए क०।

जाओ नेपाल, साथ आये कपाल, (पू०)

(१) कही भी जाओ, भाग्य साथ नही छोड़ता।
(२) अकर्मण्य कही कुछ नही कर सकता।

जाओ पूत दक्खिन, वही करम के लच्छन, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

मां का अपने निकम्मे लड़के से क०।

(गुजराती में भी कहते हैं---अखण गया दख्खण गया, पण लख्खन नहि गयां।

जाको आछी सास, बाका ही घर बास।
जाकी सास नकारा, बाका नहीं गुजारा। (स्त्रि०)

जिसकी सास अच्छी, वही सुखी रहती है; जिसकी सास बुरी, वह दुख भोगती है।

जाके कारन पहरी सारी, वही टांग रही उघारी (स्त्रि०)

जिस कष्ट से बचने (या लाज-शरम को ढकने) के लिए इतनी झझट मोल ली, वह ज्यो का त्यो ही बना रहा।

(साड़ी पहिनने से मतलब ब्याह करने से है।)

जाके पास रहिए, ताही की-सी कहिए

जिसके पास रहे, उसी का पक्ष लेना चाहिए।

जाको जो स्वारथ सधे, सोई ताहु सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात।

जिस चीज से जिसका काम बनता है, उसे वही अच्छी लगती है फिर वह बुरी ही क्यो न हो।

जाको जौन स्वभाव, जाय नहीं ज्यू से।
नीम न मीठा होय, सींच गुड़ घ्यु से।

कितना ही उपाय क्यों न करो, किन्तु जिसका जो स्वभाव है, वह नही मिटता।

जाको डंडा ताको गाय, मत करो कोई हाय-हाय

जमाना ताकतवाले का है, इसके लिए हाय-हाय करना व्यर्थ है।

जाको राखे साइयां, मार न सक्के कोय

ईश्वर जिसका रक्षक है, उसका कोई कुछ नही बिगाड़ सकता।

जाका राम रच्छक, ताका कौन भच्छक, (हि०)

स्पष्ट। दे० ऊ०।

मच्छक मक्षक। मारनेवाला।

जाको लोह, ताको सोह

(१) जिसका हथियार, उसी को शोभा देता है।
(२) जिसके हाथ में हथियार है, उसी का सब कुछ है।

जाग जगन्ते पहरुवा, लाग लगन्ते और

पहरुए पहरा देते रहते हैं, पर काम करनेवाले तो दूसरे होते हैं, जो अपना मतलब गांठ ले जाते हैं।

जागते को कटिया और साते का कटड़ा

जागनेवाले को भैंस और सोनेवाले को भैंसा मिलता है। अर्थात जागनेवाला हमेशा मुनाफे मे रहता है। दे०—जो सोवे उसका पड़वा ..।

जागियो! जागना भला होगा

स्पष्ट। दे० नीचे।

जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोवेगा

सावधान रहने से लाभ होता है।

जाट कहे सुन जाटनी, याही गाव मे रहना।
ऊंट बिलैया ले गई, तो हांजी हांजी कहना।

जाट अपनी स्त्री को समझा रहा है कि 'देखो हमे इसी गाव मे रहना है। इसलिए अगर कोई कहे कि बिल्ली ऊट को उठाकर ले गई, तो कहना चाहिए—'हा बिल्कुल ठीक है, बिल्कुल ठीक है।'

जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट 'तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू'—'तुक तो मिली ही नहीं?' 'बोझों तो मरेगा'

किसी तेली ने जाट से कहा—'तेरे सिर पर खाट'। जाट ने जवाब दिया—'तेरे सिर पर कोल्हू।' तेली बोला—'तुक तो मिला ही नही।' तब जाट ने कहा—तुक नही मिले न सही, 'पर तू बोझ से तो मरेगा।' मूर्ख काव्य या भाषा की विशेषता तो क्या समझे? वह तो अपनी सीमित बुद्धि के अनुसार ही हर बात का अर्थ लगाता है।

जाड़े में रुई या दुई

जाड़े में या तो रुई से या दो से सर्दी कटती है।

जात का बैरी जात, काठ का बैरी काठ

जातिवाले से ही जातिवाले का नुकसान होता है। यदि कुल्हाडी मे काठ की बेट न हो, तो केवल कुल्हाड़ी से काठ नही कट सकता।

जात की बेटी जात ही के जाती है

उच्च कुल की लड़की उच्च कुल में ही ब्याही जाती है।

जात के बुलाइये बराबर बिठाइये, कम जात के बुलाइये नीचे बिठाइये

स्पष्ट। यह सब जातपांतवालों की धारणा है, नही तो हर नागरिक बराबर है; कोई नीचे क्यों बैठे?

जात खुदा की बे-ऐब है

ईश्वर ही ऐसा है, जिसमे कोई दोष नहीं।

जात गवौलां, पेट न भरल

किसी छोटी जातिवाले के यहां भोजन करके जाति खो दी या जाति भी गवाई और पेट भी न भरा। भोजन से जाति नही जाती, पर यह धारणा तब भी थी, जब छुआछूत को धर्म मानते थे। ईमान भी हाथ से खोया और कोई विशेष लाभ नही हुआ।

जात-भांत पूछे नहिं कोई, कुर्ती पहिन तिलंगवा होई

वर्दी पहिनने से ही सिपाही बन जाता है। फिर कोई नही पूछता कि तुम कौन जात हो।

जात-भांत पूछे नहिं कोइ, जनेऊ पहिन के बामन होई

स्पष्ट।

जात-भांत पूछे नहिं कोई, हरि का भजे सो हरि का होई

स्पष्ट।

(ऊपर की तीनों कहावतो मे 'जात-भात' के स्थान पर प्र० पा०—जात-पात है।)

जात मद पिये मालूम होय

किसी ने शराब पी रखी हो, तो उससे उसकी जाति का पता लग जाता है।

जात मे तुरक और बाज म हुड़क

ये दोनों बहुत शोर मचानेवाले होते हैं।

हुड़ुक—एक प्रकार का छोटा ढोल।

जान का मुंह नही करते, रुपए का मुंह करते है

जान का ख्याल नहीं करते, रुपए का खयाल करते है।

जब कोई आदमी बीमार पड़ने पर अथवा किसी और मुसीबत मे पैसा खर्च न करे, तब क०।

जान का सदका माल, इज्जत का सदका जान

जरूरत पडे, तो जान बचाने के लिए माल और इज्जत बचाने के लिए जान—न्यौछावर कर देना चाहिए।

जान की जान गई, ईमान का ईमान
हर तरह से घाटे में रहना।

जान के साथ जेवड़ा
मरते दम तक गले का यह फंदा नही छूटेगा। जब कोई अपनी स्त्री या अपने पति से बहुत दुखी रहता हो, प्रायः तब क०।

जान जाय, माल न जाय
कजूस के लिए क०।

जानता चोर गांव उजाड़े
भेद जाननेवाला चोर अधिक हानिकारक होता है।

जानते का दिल, अनजानते का कलेजा, (स्त्रि०)
समझदार आदमी दयावान होता है।
(यहा दिल से मतलब आत्मा से है।)

जान न पहचान, खाला बड़ी सलाम, (स्त्रि०)
बिना परिचय के ही रिश्ता जोड़ना।

जानन वाले जानिये, मूरख मन पछताय।
करनी भूली आपनी, औरां दोष लगाय।
मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है। दूसरो को दोष लगाता है।

जान बची, लाखों पाए
किसी काम से छुटकारा मिला, तो मानो लाखो की सपत्ति मिल गई।

जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर
दूकानदार जान-पहचानवालो को ही अधिक ठगता है, क्योकि सकोचवश वे कुछ कह नही सकते और चोर भेद पाकर ही चोरी करता है।

जान में जान आ गई
झझट से छुट्टी पाई। प्राण बचे।

जान सबको प्यारी है
किसी को सताना नही चाहिए।

जान सब में बराबर है
दे० ऊ०।

जान से हाथ धो बैठे हैं
जीने की उम्मेद नहीं।

जान है तो जहान है
दुनिया का सब हाल-चाल जान के साथ है। मरने पर फिर किसी से कोई सम्बन्ध नही रहता।

जाना अपने बस, आना पराये बस'
जाना अपनी इच्छा पर निर्भर करता है, पर आना दूसरे की इच्छा पर।

जाना है रहना नहीं, जाना बिस्वे बीस।
ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुधावे सीस।
स्पष्ट। ससार की नश्वरता पर यह कहा गया है। (कहा जाता है, यह दोहा मरते समय अमीर खुसरो ने कहा था।)

जाना है रहना नहीं, मोह अंदेसा और।
जगह बनाई है नहीं, बैठेगा किस ठौर।
ससार में रहकर मनुष्य यदि अच्छे कर्म न करता रहे, तो परलोक मे फिर उसका कही ठिकाना नही लगता।

जानेला चिलम जिनका पर चढ़ेला अंगारी, (पू०)
चिलम ही जानती है कि आग को सहन करना क्या चीज है।
जिसे कष्ट होता है, वही उसकी पीड़ा को जानता है।

जानेवाले के हजार रास्ते है, ढूंढ़नेवाले का एक
भागनेवाला न मालम किस रास्ते से चला जाए, पर ढूढ़नेवाला तो एक ही रास्ता देखता है।
(भागना आसान, ढूढ़ना कठिन।)

जानेवाले सिपाहिया के के रोकला? (पू०)
जानेवाले आदमी को कौन रोक सकता है?

जा बिध राखे राम, ताही बिध रहिए
दुख मे धैर्य और सतोष से काम लेना चाहिए।

जामिन दुनिया पाप है, त्रिया है महापाप।
दोनों को तू फूंक दे, नाम निरंजन जाप।
स्पष्ट। जामिन कवि ईश्वर-भजन का उपदेश देते है।

जामिन दे या दिलाए
जो किसी की जमानत देता है, उसे या तो गांठ से रुपया देना पड़ता है या दिलाना पड़ता है।

जामिन न हूजिए, गिरह का दीजिए
किसी का जमानतदार होना ठीक नही। गांठ से रुपया भरना पड़ता है।

जामिन मत हो चोर का और सींग पकड़ मत ढोर का
स्पष्ट।

जामिन होना, धन का खोना
स्पष्ट।

जामिनी पोदनी की क्या
किसी छोटे आदमी की जमानत देना ठीक नही। पोदनी एक छोटी चिड़िया।

जाय ईमान, रहे सब कुछ
(१) अगर और सब बचता है, तो ईमान जाने दो।
(२) ईमान ही साथ जाता है और सब यही छूट जाता है।
(३) स्वार्थी के लिए भी कह सकते है, जो ईमान की परवा नही करता।

जाय उस्ताद खाली
उस्ताद की नज़र मे कोई ग़लती चूक जाए, यह कैसे हो सकता है? व्यंग्य मे क०।

जायगा साहू का, रहेगा साहू का
नफा, नुकसान मालिक का होगा, मैं क्या करूं?

जाय जान, रहे ईमान
स्पष्ट।

जाय लाख, रहे साख, (व्य०)
भले ही लाखों बर्बाद हो जाएं, पर अपनी साख बनाए रखना चाहिए।

जालिम का ज़ोर सिर पर
अत्याचारी के आगे किसी की नहीं चलती।

जालिम का पेंड़ा ही निराला है
अत्याचारी के काम समझ में नही आते।

जालिम की उम्र कोता
अत्याचारी की उम्र कम होती है, क्योंकि न मालूम लोग कब उसे मार डाले।
कोता—कोताह, छोटा।

जालिम की जड़ भी उखड़ जाती है
अत्याचारी का भी अंत में नाश हो जाता है।

जालिम की रस्सी दराज है
अत्याचारी अधिक दिनों जीता है, क्योंकि उसे मारना कठिन होता है।

जासे जाको काम, सोई ताको राम
जिसका-जिसका काम पड़ता रहता है, वही उसके लिए ईश्वर तुल्य है।

जाहिद का क्या खुदा है, हमारा खुदा नहीं?
ईश्वर सबका है।
जाहिद सत।

जाहिर आबाद, बातीन खराब
देखने में भला, पर बातचीत में बुरा।

जाहिर रहमान का, बातीन शैतान का
देखने में ईश्वर का भक्त, पर बातों में शैतान का चेला।

जाहिल फ़कीर शैतान का टट्टू
मूर्ख साधु के सिर पर हमेशा शैतान सवार रहता है।

जाही ते कुछ पाइये, करिये ताकी आस
जिससे कुछ मिल सकता हो, उसी की आशा करनी चाहिए।

जिगर-जिगर है, दिगर-दिगर है
अपना-अपना है, और पराया-पराया।

जिजमान चाहे स्वर्ग को जाये, चाहे नरक को; मुझे दही-पूड़ी से काम
केवल अपना स्वार्थ देखना।
(हिन्दुओं मे मृतक के क्रिया-कर्म के लिए जो ब्राह्मण आता है, और जिसे विशेष रूप से दान-दक्षिणा तथा भोजन से तृप्त किया जाता है, उसका कहना कि हमें तो पकवान खाने से मतलब, मरनेवाला चाहे स्वर्ग जाए चाहे नरक। पुरोहित को पता है कि उसे क्या मिला, बाकी किसी को कुछ भी मिले।)

जिठानी का भैसा अगड़धोंधों
जिठानी का भैसा भी खूब तगड़ा रहता है।
(क्योंकि घर मे उसी की चलती है।)

जितना ऊपर, उतना नीचे
सब तरह से चालाक; पूरा चालाक। जैसे आठों गांठ कुम्मैत।

जितना करम में लिखा है, उतना मिलेगा
स्पष्ट।

जितना गरमायेगा, उतना ही बरसेगा (कृ०)
बादल जितना गरमाता है, उतना ही बरसता है।

जितना गुड़ डालेंगे, उतना ही मीठा होगा
(१) जितना अधिक पैसा खर्च किया जाएगा, चीज़ उतनी ही अच्छी मिलेगी।
(२) जितनी ज्यादा मजदूरी दी जाएगी, काम उतना ही अच्छा होगा।

जितना छानो, उतना ही किरकिरा
जितनी जाच-पड़ताल करोगे, उतने ही अधिक दाप निकलते आएगे।

जितना छोटा, उतना ही खोटा
स्पष्ट।

जितना तपेगा, उतना बरसेगा; (कृ०)
दे०—जितना गरमायेगा . . .।

जितना देगा; उतना पाएगा
दिया व्यर्थ नही जाता।

जितना मडवे में आवेला, उतना कोहबर में न आवे; (पू०)
मंडप के नीचे जितने लोग बैठते हे, उतने कोहबर म नही जाते।
(कोहबर=वह स्थान जहा विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते है। इस स्थान पर घर के खास-खास सगे सबधी ही बैठते है। कहावत मे केवल एक लोकप्रथा की ओर सकेत हे। फिर भी उसका यह भाव भी हो सकता है कि सब स्थान सब आदमियो के बैठने योग्य नही होते।)

जितना रला है सो चुगलो, (पं०)
जो तुम्हारा हे सो ले लो और उसी मे सतोष करो।

जितना सयाना, उतना दीवाना
जो जितना चतुर होता है, वह उतना ही परेशान भी होता है।

जितना सस्ता, उतना खराब
सस्ती चीज़ खराब होती है।

जितना सांप लंबा, उतना ही गोह चौड़ी
कोई किसी बात मे बढ़कर है, तो कोई किसी बात मे। दोनो एक से (धूर्त्त)।

जितनी आमद, उतना लोभ
आमदनी के हिसाब से लोभ भी बढता जाता है।

जितनी आमदनी, उतना खर्च
स्पष्ट।

जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो
सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत
स्पष्ट।

जितनी मियां की लंबी दाढ़ी, उतना गाव गुलज़ार
मिया की दाढी जितनी ही बढती है, उतना ही गाव को गुलज़ार समझना चाहिए।
भाव यह कि मिया को गाव मे मुफ्त का खाने को मिल रहा है, जिससे उनकी दाढी अब चिकनी-चुपडी हो रही है, और उससे गाव की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।)

जितना लाभ, उतना लोभ
स्पष्ट।

जितने काले, उतने बाप के साले
जितने शातिर या बदमाश है, वे सब मेरे बाप के साले है, यानी मेरी मुट्ठी मे है।

जितने घने, उतने भले
(१) अक्षर जितने घने लिखे जाए, उतने ही अच्छे लगते है। कहते भी है—घने अक्षर वेगरी पात, सो जाने लिखने की भात।
(२) जितने लडके हो उतना ही अच्छा, यह भाव भी निकलता है।

जितने मुंड, उतने पिंड; (हिं०)
जितने लडके होगे, पितरो का उतना ही अच्छा श्राद्ध होगा।

जितने मुंह, उतनी ही बातें
(१) किसी एक बात का नाना प्रकार से कहा जाना।
(२) अफवाह फैलाना।

जिधर जलता देखें, तिधर तापें
दूसरे की हानि से लाभ उठाना।

जिधर मौला, उधर आसफ़उद्दौला

ईश्वर की मर्जी के खिलाफ तो आसफ़उद्दौला भी नही जा सकते।

(आसफ़उद्दौला लखनऊ के प्रसिद्ध नवाब हो गए है। वह बड़े दानी थे। कहते हैं, एक बार किसी फ़कीर ने उनके पास आकर एक हजार रुपए मागे। इस पर नवाब ने उसे दस रुपए देकर कहा—'तुम्हारे भाग्य मे इतना ही बदा है।' फ़कीर ने जब रुपए लेने से इन्कार किया, तब नवाब ने कहा,—'कल आना।' दूसरे दिन फ़कीर के आने से पहले ही नवाब ने एक रुपयो की, और एक पैसो की थैली भरवाकर रख दी। फ़कीर आया और रुपए मागने लगा। नवाब ने उन दो थैलियो मे से एक उठा लेने को कहा। दुर्भाग्यवश फकीर ने पैसो ही की थैली उठा ली। नवाब ने तब कहा —'तुम्हारे भाग्य में था, सो मिल गया।' उक्त कहावत इसी घटना पर आधारित है।)

जिधर रब, उधर सब

ईश्वर जिसका साथी है, उसके सब साथी है।

जिनका मुंह नहीं देखते, उनका पांव छूना पड़ता है

गर्ज पड़ने पर छोटे आदमियो के भी हाथ-पैर जोड़ने पड़ते है।

जिनकी बोली में दग़ा, उनके दिल में क्या दग़ा नहीं होगी ?

कुछ लोगो मे पठानो के लिए कहा जाता है; क्योकि वे 'दग़ा दग़ा' बहुत कहा करते है, जिसका अर्थ उनकी भाषा मे होता है 'इसको' 'इसको'। साथ ही दग़ा का एक अर्थ धोखा तो है ही।

जिनकी यहां चाह, उनकी वहां भी चाह

सज्जन पुरुषो की मृत्यु पर कहते हैं कि ईश्वर भी उन्हे चाहता है और अपने पास जल्दी बुला लेता है।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा

जिनको जितनी अधिक आकाक्षाएं होती है, उनको उतना ही अधिक दुख भी होता है।

जिन जाये, उन्हीं लजाये

जिन्होंने पैदा किया, उन्हें ही शर्मिन्दा किया।

अयोग्य लड़के के लिए क०।

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
बक बिचारा क्या करे, रहे किनारे बैठ।

लाभ तभी होता है, जब कुछ परिश्रम किया जाए और जोखम भी उठाया जाए।

(कबीर का प्रचलित दोहा इस प्रकार है—
जिन ढूढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
हौ बौरी ढूढ़न गई, रही किनारे बैठ।)

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार। (बिहारी)

जिन दिनों (तूने) वे (सुन्दर तथा सुगंधित) फूल देखे थे, वह बहार (वसन्त ऋतु) तो बीत गई। हे भ्रमर! अब तो गुलाब के वृक्ष मे बिना पत्ते की कटीली डाल रह गई है।

इसलिए तू अपना दुख छोड़ दे और सुख की आशा मत कर।

(यह किसी ऐसी स्त्री पर, जो अपना यौवन खो चुकी है या किसी ऐसे मनुष्य पर जिसने अपना सर्वस्व खो दिया है, अन्योक्ति है।)

जिन पांयन पनही नहीं, तिन्हे देत गजराज।
बिख देते बीखा मिले, साहब ग़रीबनेवाज।

ईश्वर बडे दयावान है। उनकी कृपा होने से ऐसे व्यक्ति को भी, जिसके पैरो मे जूते नही, हाथी बैठने को मिलता है और विष खिलाये जाने की जगह लडकी से विवाह होता है।

(कथा है कि किसी धनाढ्य सेठ के पास एक भिखारी नित्य भीख मागने आया करता था। उससे तंग आकर सेठ ने अपने आढ़तिये को चिट्ठी लिखी कि इसे बिख (यानी विष) दे दो। आढ़तिये की लड़की का नाम बीखा या विषया था। इसलिए यह समझकर कि सेठ जी ने उसे ही देने के लिए लिखा है, उसने भिखारी का बड़ा आदर-सत्कार किया और अपनी कन्या का उसके साथ ब्याह करके उसे हाथी पर चढ़ाकर विदा कर दिया।)

जिन बरहा हार चरी, सौ कैसे चरें प्वांर ? (कृ०)
जिन जानवरों ने हरी-हरी घास चरी है, वे भला सूखा प्वांर कैसे चरेंगे।
(सुख भोग चुकने के बाद दुख मुश्किल से भोगा जाता है।)
प्वांर = धान का सूखा भुस।

जियत पिता की पूछी न बात,
मरे पिता को दूध और भात।
(१) कपूत के लिए क०।
(२) हिन्दुओं के श्राद्धकर्म पर भी व्यंग्य।

जिये न मानें पितृ और मुए करें श्राद्ध
दे० ऊ०।

जिसका आंड़ू बिके, वह बधिया क्यों करे ? (व्यं०)
जो चीज़ जिस हालत में है, उसी तरह बिक जाए, तो उसमें किसी तरह का परिवर्तन करके बेचने का कष्ट क्यों उठाया जाए?
आंड़ू = बिना बधिया किया गया बैल।

जिसका काम उसी को छाजे।
और करे तो मूरख बाजे।
जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।

जिसका खाइये अनपानी, उसकी कीजे अबादानी, (स्त्रि०)
जिसका अन्न खाए, उसकी भलाई चाहनी चाहिए।

जिसका खाइये, उसका गाइये
जिसका अन्न खाए, उसका पक्ष ले।

जिसका खून उसी की गर्दन पर
हत्या करने का पाप हत्या करनेवाले को ही लगता है।

जिसका गुइयां नहीं उसका कूकर गुइयां, (स्त्रि०)
जिसका कोई मित्र नहीं, उसका कुत्ता ही मित्र। अर्थात कुत्ता मनुष्य का एक अच्छा मित्र है।

जिसका चिकना देखा फिसल पड़े
जहां कुछ मिलने का डौल देखा, वहीं खुशामद करने बैठ गए।
स्वार्थी और मुंह देखी कहनेवालों के लिए क०। जिसका चिकना देखा = जिसका चिकना मुंह देखा, अर्थात जिसे मालदार देखा।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न
दान में जो खर्च करता है, उसी को पुण्य मिलता है
चुन्न = आटा।

जिसका चुयेगा, सौ छवा लेगा
जिसका घर (बरसात में) टपकेगा, सो आप छवाता फिरेगा।
(जिसे जो कष्ट होता है, वह आपही उसकी चिंता करता है।)

जिसका जावे वही चोर कहाये
पुलिसवाले जब चोर का पता नहीं लगा पाते, तब प्रायः वे जिसका माल जाता है, उसी को चोर बनाते हैं। कहावत में उनकी इस आदत को लेकर ही कटाक्ष किया गया है।

जिसका डर, वही नहीं घर, (स्त्रि०)
जब पति घर में नहीं तो चाहे जो करे। परम स्वतन्त्र।

जिसका तेज, उसका भेज, (कृ०)
ज़बर्दस्त ही किराया या मालगुज़ारी (अथवा कर्ज़) जल्दी वसूल कर पाता है।
भेज = पावना।

जिसका पल्ला भारी, वही झुके
(१) जिसके पास पैसा है, वही दे सकता है।
(२) भले आदमी को ही दबना पड़ता है।
(तराजू में भारी पलड़ा ही झुकता है। वहीं से रूपक लिया गया है।)

जिसका पाप, उसका बाप
पाप मनुष्य का बाप है, अर्थात वह उसके सिर पर सवार रहता है।

जिसका फ़िक्र, उसका ज़िक्र
जिस बात की चिन्ता रहती है, उसकी चर्चा भी की जाती है।

जिसका बनिया यार, उसको दुश्मन की क्या दरकार
बनियों पर ताना।

जिसका मड़वा, उसका गीत; (स्त्रि०)
परिस्थिति के अनुसार ही काम किया जाता है।
मड़वा = मंडप, विवाह।

जिसका यार कोतवाल, उसे डर काहे का
पुलिसवालों पर व्यंग्य। कोतवाल का, जो एक पुलिस अफसर होता है, सब जगह बड़ा रोब रहता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।

जिस कारन पहनी सारी, वही टांग रही उघारी
जिस उद्देश्य से किसी काम को करने का कष्ट उठाया, वही पूरा नहीं हुआ। सुख से जीवन बिताने के लिए विवाह किया, पर कपड़े भी पहिनने को नहीं मिले।

जिस कारन मूंड़ मुड़ाया, सो दुख आगे आया
जिस दुख से पीछा छुड़ाने के लिए हानि सहकर कोई काम किया, उस दुख से फिर भी पीछा नहीं छूटा। (कोई मनुष्य मजदूरी करके अपना पेट पालता था। पर नित्य प्रति कठिन परिश्रम करना उसे बहुत खलता था। इसलिए सिर मुडाकर साधु हो गया। उसका ख़याल था कि साधु बन जाने पर कोई परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। पर दरवाजे-दरवाजे जाकर भीख मागना उसे और भी कठिन जान पड़ा और तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

जिसकी आंख में तिल, वह बड़ा बेसिल
जिसकी आंख में तिल होता है, वह बड़ा बेमुरौव्वत होता है।
(यह एक विश्वास है जिसका सच होना जरूरी नहीं।)
बेसिल = शीलहीन, हृदयहीन।

जिसकी खइये चंदिया, उसकी हूजिये बंदिया, (स्त्रि०)
जिसका खाए उसकी तावेदारी करे।
चंदिया - रोटी।

जिसकी गोद में बैठे, उसकी दाढ़ी नोचे
कृतघ्न के लिए क०।

जिसकी जीभ चलती है, उसके नौ हर चलते हैं
लंबी-चौड़ी हांकनेवाले की सब बात सच।

जिसकी जूती, उसी का सिर
किसी की खातिर उसी के पैसे से करना या किसी की कही बात से खुद उसी को परास्त कर देना।

जिसकी जोरू अंदर, उसका नसीबा सिकंदर
अंग्रेजों के जमाने में मेहतर लोग आपस में कहा करते थे। तात्पर्य यह कि जिस मेहतर की औरत आया बनकर अंग्रेज के घर घुस गई, उसकी तकदीर खुल गई।

जिसकी तेग, उसकी देग
जिसके हाथ में ताक़त है, उसी की सब चीज़।
तेग = तलवार।
देग = भोजन पकाने का बर्तन।

जिसकी देग, उसकी तेग
जिसके पास खाने को है, उसी की फ़तह होता है। (सिपाही उसी की मदद करते हैं।)

जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ?
वह दूसरे के उस कष्ट को नहीं समझ सकता, जिसे स्वयं वह कष्ट नहीं हुआ।
बिवाई—एक पीड़ा, जिसमें जाड़े के दिनों में पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।
पाठा०—पांव जाके न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।

जिसकी बीबी से काम, उसकी लौंडी से क्या काम ?
जब बड़ों तक पहुंच है, तब छोटों की खुशामद करने की क्या ज़रूरत ?
(जड़ को ही पकड़े।)

जिसकी महल में मैया, मांगे पैसा मिले रुपैया
बड़े आदमी के बेटे को किस बात की कमी ?

जिसकी लाठी, उसकी भैंस
बलवान की जीत होती है।

जिसकी सीरत अच्छी, उसकी सूरत भी अच्छी
अच्छे स्वभाव का व्यक्ति देखने मे भी अच्छा लगता है।

जिसकी सीरत अच्छी नहीं, उसकी सूरत को क्या देखना ?
जिसका स्वभाव अच्छा नहीं, उससे बात क्या करनी; भले ही उसकी शक्ल अच्छी हो।

जिसके कारन जोगिन भई, वह सइयां परदेस, (स्त्रि०)
जिस के लिए सब छोड़ बैठे, वही उपलब्ध नहीं।

जिसके घर भोज, उसको भात नहीं
क्योंकि वह आदर-सत्कार में लगा रहता है और भोजन करने का समय नहीं पाता।

जिसके चार पैसे लो, उन्हें हलाल करके खाओ
जिससे पैसे लो, उसका काम ईमानदारी से करो।

जिसके चार भैय्या, मारें धौल छीन लें रुपैया
जिसके चार आदमी सहायक होते हैं, वह सब-कुछ कर सकता है।

जिसके दिल में रहम नहीं, वह कसाई है
स्पष्ट।

जिसके धी नहीं उसकी देहली धी, (हिं०)
जिसके लडकी नही होती, वह देहली को ही लडकी समझता है, अर्थात उसे यदि कुछ देना होता है, तो दरवाज़े पर जो आता है, उसे ही देता है।
देहली = द्वार की चौखट दहलीज़।

जिसके नहीं पूत, वह क्या जाने माया, (स्त्रि०)
जिसके लडका नही, वह माता की ममता क्या जाने ?

जिसके पास डिबुआ, वही हमारा बबुआ
जो खाने को दे, वही हमारा मालिक। जिसके पास पैसा है, उसकी सब खुशामद करते है।
डिबुआ = (१) दाल-तरकारी परोसने का चम्मच। (२) रुपया।

जिसके पास नही पैसा, वह भलामानस कैसा ?
पैसे से ही भलमनसाहत है। पैसा ही प्रधान है।

जिसके पेशे मे 'बान', उसका गुरु शैतान; 'हा, मेहरबान'।
ऐसे कई पेशे हैं, जिनके अन्त मे 'वान' आता है, जैसे फीलवान, कोचवान, शुतरवान वगैरह। किसी ने जब कहा कि जिनके पेशे मे 'बान' आता वे सब बडे शतान होते है तो दूसरे ने जवाब दिया 'जी हा, मेहरबान'

जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे उदास
क्योकि मेले मे पैसो की ज़रूरत पड़ती है।

जिसके बारह बीघा बांगा।
उसकी कमर में नहीं तागा।
परिस्थिति की बात। अथवा कंजूस के लिए भी कह सकते है।
बांगा = कपास का खेत।

जिसके मां बाप जीते हों, वह हराम का नहीं कहलाता
जब किसी के निर्दोष होने का स्पष्ट प्रमाण मौजूद हो, तब उस पर झूठा दोष लगाना ठीक नही, क्योकि वह दोष चलेगा नही।

जिसके लिए चोरी की, वही कहे चोर
जिसकी खातिर बदनामी मोल ली, वही बुराई करे।

जिसके वास्ते रोये, उसकी आंखों में आंसू नहीं
जिसके लिए कष्ट उठाया, उसने कोई सहानुभूति भी नही दिखाई। कृतघ्नता।

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नही।
काटा है घर मे सेई का, या गुल कनेर का।
जिसके कारण घर मे लडाई हो, वह मनुष्य न होकर सेई का कांटा या कनेर का फूल है। (लोक-विश्वास हे कि जिस घर मे सेई का काटा या कनेर का फूल होता है, वहा हमेशा लडाई झगडा होता रहता है।)

जिसके सिर पर जूता रख दिया, वही बादशाह हो गया
किसी लफगे फकीर का कहना।

जिसके सिर पर पड़ती है, वही जानता है
अपनी मुसीबत आदमी आप ही जानता हे।

जिसके हाथ मे डोई, उसका सब कोई
जिसके हाथ में सत्ता होती है, उसकी सब खुशामद करते है।
डोई — लकडी का बडा चमचा।

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी
रुपए से सब को वश मे किया जा सकता है, अथवा सब काम किया जा सकता हे।
खस्सी करना = बधिया करना। नपुसक बनाना।

जिसको खुदा बचाये, उस पर कभी न आफ़त आये
ईश्वर जिसकी रक्षा करता है, उसका कोई कुछ नही बिगाड सकता।

जिसको राखे साइयां, मार न सक्के कोय।
बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय।
स्पष्ट। दे० ऊ०।

जिस पर नाड़ी फूड़ी, वह घर जानो कूड़ी

जिस घर में फूहड़ औरत हो, वह कभी ख़ुशहाल नहीं रह सकता।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा, वह घर डिग्गम डिग्गा

बड़े-बूढ़े के बिना घर का प्रबंध नहीं हो पाता।

जिस घर में खायें, उसी में छेद करें

कृतघ्नता।

जिस घर में संपत नहीं, तासूं भला विदेस

घर में ग़रीबी भोगने की अपेक्षा तो विदेश में रहना अच्छा।

जिस घर होय कुचलिया नारी, सांझ, भोर हो उसकी ख्वारी।

बदचलन औरत घर का नाश कर देती है।

जिस घर होय पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया।

बदचलन आदमी से भी घर का नाश होता है।

जिस टहनी पर बैठे, उसको काटे

जिसके आश्रित रहे, उसी का अनिष्ट करना। कृतघ्नता।

जिस तन लागे, वही जाने

जिस पर बीतती है, वही जान सकता है कि कैसी बीत रही है।

जिस दरख़्त के छाएं में बैठे, उसी की जड़ काटे

दे० ऊ०।

जिसने की बेहयाई, उसने खाई दूध मलाई

बेशर्म सुख-चैन से रहता है।

जिसने की शरम, उसके फूटे करम

संकोच या लिहाज़ करनेवालों को नुकसान उठाना पड़ता है।

जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा

आलसियों या भाग्यवादियों की उक्ति।

जिसने चीरा वही नीरेगा

जिस (ईश्वर) ने मुंह दिया वह नीर (अन्न-जल) भी देगा।

आलसियों का कहना। जब कोई कठिन अर्थ-संकट में पड़ जाता है, तब उसे धीरज बंधाने के लिए भी क०।

जिसने दिया उसने पाया

जो दूसरों को देता है उसे मिलता भी है।

जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे बिलाई।

जिसने न देखा हो ठग, वह देखे कसाई।

स्पष्ट। 'वह देखे नाई' भी पाठ है।

जिसने न देखी हो कन्या, वह देख ले कन्या का भाई

भाई-बहिन रूप-रंग में अक्सर एक से होते हैं, इसलिए क०।

जिसने बेटी दी, उसने क्या रखा?

अर्थात उसने सब-कुछ दिया।

विवाह में कन्यादान से मतलब है।

जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया

स्पष्ट। दे० ऊ०।

जिसने रंडी को चाहा, उसे भी जवाल और जिसको रंडी ने चाहा, उसकी भी तबाही

हर हालत में वेश्या का संग बुरा।

जिसने लगाई, वही बुझावेगा

(१) जिसने झगड़ा उठाया, वही उसे ख़त्म करेगा।

(२) दैवी विपत्ति को दैव ही दूर कर सकता है।

(३) प्रायः भिक्षुक भीख मांगते समय कहा करते हैं कि जिसने पेट में भूख की ज्वाला पैदा की, वही (ईश्वर) उसे शान्त भी करेगा।

जिस बन सुआ न सायरा, वहां कागा खायं कपूर

जिस बन में सुआ या कोयल नहीं होती, वहां कौए ही कपूर खाते हैं। जहां कोई योग्य पुरुष नहीं होता, वहां अयोग्यों की ही पूजा होती है।

जिस बर्तन में खाना, उसी में छेद करना

कृतघ्नता।

जिस मुंह से पान खाइये, उस मुंह से कोयले न चबाइये

(१) एक बार जिसकी प्रशंसा कर चुके, फिर उसकी बुराई नहीं करनी चाहिए।

(२) जहां सम्मानपूर्वक रह चुके हों, वहां अपमान सहकर नहीं रहना चाहिए।

जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस गिनने से क्या काम

जो काम करना ही नहीं, उसका ज़िक्र क्यों करना?

जिस शहर में फूंक बेचिये, वहां धूल न उड़ाइये
जिस जगह इज्जत से रहे हों, वहां बेइज्जत होकर नहीं रहना चाहिए।

जिस हांडी में खायें, उसी में छेद करें
जिसके आश्रित रहे, उसी का बुरा तकना।

जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाय क्यों?
अकर्मण्य के लिए क०।

जिसे खुदा रक्खे, उसे कौन चक्खे
जिसका ईश्वर रक्षक है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?

जिसे पिया चाहे, वही सुहागन; क्या सांवरी क्या गोरी
(१) विवाहित जीवन उसी स्त्री का सफल है, जिसे उसका पति चाहे।
(२) जिस पर मालिक की नजर होती है, वही उच्च स्थान पर पहुंच जाता है, चाहे उसमे गुण न हो।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं
बेशर्म बेईमान होता है।

जी कहीं लगता नहीं, जब जी कहीं लग जाय है
स्पष्ट।

'जी' कहो, 'जी' कहलाओ
दूसरों का सम्मान करो, तो दूसरे तुम्हारा सम्मान करेंगे।

जी का बैरी जी
(१) जीव जीव का भक्षक है।
(२) स्वयं मनुष्य अपना शत्रु है।

जी के बदले जी
(१) जान के बदले जान।
(२) प्रायः उस समय भी कहते हैं, जब कोई रुपया उधार लेकर माल गिरवी रख देता है।

जी चाहे बैराग को और कुनबा फाड़ेगा
जी तो वैराग्य लेने को चाहता है, पर गृहस्थी की झंझटों ने मुसीबत कर रक्खी है।

जीजा के माल पर साली मतवाली, (स्त्रि०)
एक मूर्खता की बात। जीजा के माल से साली को कोई मतलब नहीं।

जी जाय, घी न जाय
कंजूस के लिए क०।

जीत की हवा भी अच्छी
जीत का तो नाम भी अच्छा।

जीता सो हारा और हारा सो मुआ
अदालतों की मुकदमेबाजी के संबंध में क०। जो आदमी मुकदमा जीतता है, वह भी हारे के तुल्य हो जाता है, क्योंकि मुकदमों में बहुत पैसा और समय नष्ट होता है।

जीती मक्खी नहीं निगली जाती
(१) जानबूझकर कोई विष नही खाता, अथवा ग़लत काम नही करता।
(२) स्वेच्छा से कोई विपत्ति में नही पड़ता।
(३) स्पष्ट सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता।

जीते आसा, मुए निरासा
जीवन के साथ आशा लगी है। मरने पर सब समाप्त हो जाता है।

जीते का घर और मुए की गोर बता
संसार में कहीं किसी का कुछ नहीं। जिनके घर थे, उनके घरों का पता नही, जिनकी कब्रें थी, उनकी कब्रों का पता नही।

जीते के खून में हीरा धुंधला होता है
लोक-विश्वास है।
इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि ज़िंदा आदमी के खून की गर्मी के सामने हीरे की चमक कोई चीज नहीं।

जीते चाव, चाव, मुए दाब-दाब
जीते जी सब चाव (प्रेम) करते हैं, मरने पर गाड़ने की फ़िक्र पड़ती है।

जीते-जी का नाता है
अपने किसी आत्मीय के मरने पर जब कोई बहुत शोक करता है, तब उसे धैर्य बंधाने के लिए कहते हैं।

जीते-जी का मेला है
आदमी जब तक ज़िन्दा है, तभी तक मिलना-जुलना है, फिर तो अकेले जाना है।

जीते तो हाथ काला, हारे तो मुंह काला
जुआरियों के लिए क०।

जीते न पूछे, मुए धड़धड़ पीटे
जीते-जी बात नहीं पूछी, मरने पर छाती पीटकर रोते हैं।
(१) कृतघ्न संतान।
(२) आदमी की क़द्र मरने पर जानी जाती है।

जीते रहे तो लानत कहना
किसी को कोसना; शाप देना।

जीते हैं न मरते हैं, सिसक-सिसक दम भरते हैं
(१) बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे हैं।
(२) मरणासन्न हैं।

जीना थोड़ा, आसा बहुत
छोटे-से जीवन के साथ आशाएं बहुत लगी रहती हैं।

जीने से दूर, मरने के नज़दीक
(१) जीवित रहते हुए भी मुरे के समान हैं।
(२) एक पैर क़ब्र में लटकाए हैं।

जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता
बुढ़ापे की अशक्त अवस्था के लिए क०।

जीभ जने एक बार, मां जने बार-बार
मुंह से एक बार जो निकल गया, सो निकल गया; उसे फिर वापिस नहीं लिया जा सकता।

जीभ जली, न स्वाद आया
(१) कोई चीज़ बहुत थोड़ी खाने को मिले, तब क०।
(२) कष्ट उठाकर कोई काम किया जाए, पर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकले, तब भी क०।

जीवन मरन, बिधना के हाथ है
जीना-मरना ईश्वर के हाथ है।

जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई, (स्त्रि०)
ननद का अपनी भावज से ताना मार कर कहना कि तू घमंड किस बात का करती है, मेरे भाई के रहते तेरी जैसी बहुत-सी भावजें मिल जाएंगी।

जी है तो जहान है
जीवन से ही सारी चीज़ें लगी हैं।

जुआ बड़ा ब्योहार, जो इसमें हार न होती
जुआ बड़ी बढ़िया चीज़ थी, अगर इसमें हार न होती।

जुआरी को अपना ही दाव सूझता है
स्वार्थी के लिए क०।
(तु०—सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।)

जुआरी हमेशा मुफ़लिस
जुआरी हमेशा कंगाल रहता है।

जुए में बैल भी हारे हैं
स्पष्ट। जुए से बैल भी परेशान रहते हैं। यहां जुआ शब्द के दो अर्थ हैं (१) हल, बखर या गाड़ी के आगे की वह लकड़ी, जिसमें बैल जोते जाते हैं। (२) रुपए-पैसे की बाज़ी लगाकर खेला जाने-वाला खेल।

जुग टूटा, नर्द मरी
एका ही में बल है, अलग हुए और पिटे।
(वाक्य चौसर के खेल से लिया गया है। चौसर में जब दो गोटियां एक घर में इकट्ठी हो जाती हैं, तो विपक्ष का खिलाड़ी उन्हें मार नहीं सकता, किन्तु अलग होने से पिट जाती हैं।
फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड़ की।
आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो। गंग)
नर्द=चौसर की गोट।

जुड़ती नहीं धुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी
आयु के पूरे हो जाने पर कोई दवा काम नहीं करती।
धुर=शीर्ष स्थान।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खायं तुरंग, (कृ०)
(१) गरीबों के परिश्रम पर धनवान मौज करते हैं।
(२) कर्मचारी खटते हैं, अफ़सर बैठे खाते हैं।
(३) कुछ लोग खटते हैं, कुछ मौज करते हैं।

जुमा छोड़ सनीचर नहाये, उसका सनीचर कभी न जाये
जो शुक्रवार को न नहाकर शनिवार को नहाता है, उसकी विपत्तियां कभी दूर नहीं होतीं। मुसलमानों का लोक-विश्वास।

शुक्रवार नमाज़ का दिन होता है, और उस दिन नहाना आवश्यक माना जाता है।

जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एक्के बेरी, (पू०)

जुलाहा थोड़ा-थोड़ा करके सूत चुराता है, पर ईश्वर एक बार में सब चुरा लेता है, अर्थात जुलाहे का कभी इकट्ठा नुकसान हो जाता है और चोरी का सब नफ़ा निकल जाता है।

ईश्वरीय न्याय।

जुलाहा जाने जौ काटे ?

जुलाहा जौ काटना क्या जाने ?

(कथा है कि किसी जुलाहे पर बहुत कर्ज़ हो गया था। तब महाजन ने उससे काम कराकर रुपए वसूल करने चाहे। जुलाहा राज़ी होकर खेत में जौ काटने गया। पर जौ काटने के स्थान पर वह उसकी झुकी हुई बालों को इस प्रकार सुलझाने लगा जैसे महीन सूत को सुलझाते हैं। जुलाहे कहावतों में अपने बुद्धूपन के लिए प्रसिद्ध माने गए हैं। यहां उसी पर कटाक्ष है।)

जुलाहे का तीर न हो

ऐसे अवसर पर कहावत का प्रयोग करते हैं, जब किसी विषय पर जानबूझकर उपेक्षा करने से उसका बुरा परिणाम निकल सकता हो।

(कथा है कि किसी जुलाहे की जांघ में तीर लग गया। तब उसे निकाल फेंकने का कोई उपाय न करके वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान, ऐसा कर कि इस तीर का लगना झूठ साबित हो। उसी से कहा० चली।)

पाठा०—जुलाहे को लगा था तीर खुदा भली (या झूठ) करे।

जुलाहे का बेगारी पठान

एक अनहोनी बात। पठान कभी जुलाहे जैसे साधारण या सीधे-सादे आदमी के यहां जाकर बेगार नहीं —े।

ा, सिपाही की जोय, घरी-घरी

ा और सिपाही की स्त्री, दोनों काम में न आने के कारण व्यर्थ ही जाती हैं।

(इसलिए कि जुलाहा करघे पर बैठे-बैठे ही काम करता है, जूते पहिनने की उसे कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ती और सिपाही हमेशा फौज की नौकरी की वजह से बाहर रहता है, स्त्री के पास आ नहीं पाता।)

जुलाहे की तरह ईद-बकरीद को पान खा लेते हैं, (मु०)

(१) कभी-कभी शौक कर लेते हैं।

(२) कंजूसी करते हैं।

जुलाहे की मसखरी मां-बहिन से

जुलाहे के बुद्धूपन पर क०।

जूं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती

साधारण परेशानी के डर से कोई अच्छा लाभ का काम नहीं छोड़ दिया जाता।

जूठा खैये मीठे के लालच

ओछा काम भी अच्छे लाभ की आशा से करना पड़ता है।

(मराठी में है—तुपाचें आशेने उष्टें खावे।)

जूता पहने साई का, बड़ा भरोसा ब्याई का।

जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का।

जूता फरमायश देकर बनवाना चाहिए, अर्थात मज़बूत जूता पहिनना चाहिए, और विवाहिता स्त्री पर ही निर्भर करना चाहिए, (क्योंकि समय पर वही काम आती है।) घटिया दाम के जूते नहीं पहिनना चाहिए, और रखैल औरत का विश्वास नहीं करना चाहिए; (न जाने कब धोखा दे दे।)

नरी का=बकरी के चमड़े का।

करी का=रखैल का।

जेकर पुरखा न देखल पोई, तेका घर खुरबंदी होई

जिसके पुरखों ने कभी पोई का साग नहीं देखा, उसके घर घोड़ों के नाल बंध रहे हैं, अर्थात घोड़े बंधे हुए हैं।

(जो अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर बड़ा आदमी बन गया हो, अथवा जो साधारण हैसियत से ऊंची जगह पर पहुंच कर घमंड करने लगे, उसके लिए क०।)

जेकर मैया पूआ पकावे, तेकर धिया लिलके, (भो०)
किसी ग़रीब ब्राह्मणी के संबंध में कहा गया है, जो रसोई बनाने का काम करती है। मोची के लड़के को जिस प्रकार जूता और दर्जी के लड़के को अच्छे कपड़े पहिनने को नहीं मिल पाते, उसी प्रकार उसकी लड़की भी उन पूओं के लिए तरसती है, जिन्हें वह दूसरों के लिए बनाती है।

जेकरा बीघा भर कपास, तेकरा डांड़े डरा मा, (भो०)
जिसके पास बीघा भर कपास का खेत है, उस पर जुर्माना किया जा सकता है। (क्योंकि वह दे सकता है।)

जेकरा होरी अइसन ठाकुर, तेकरा जम के डर? (पू०)
जिसके ऐसे देवता, उसे यमदूत का क्या डर? व्यंग्य में क०।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस, (भो०)
जिसकी औरत है वह उसके पास है (अर्थात उसके कब्जे में है), दूसरा केवल ताकता है।

जेकरे घुड़वा बैठिन, तेकरे आंड़ दागिन, (भो०)
जिसके घोड़े पर बैठें, उसी के आंड़ दागें।
जिसका खाएं, उसी का नुकसान करें।

जेठ के भरोसे पेट
दूसरों पर आश्रित रहना अथवा दूसरे के भरोसे कोई काम करना।
(कहावत किसी ऐसी गर्भवती स्त्री के संबंध में कही गई है, जिसका पति बिल्कुल अकर्मण्य है, और जो प्रसव आदि की व्यवस्था के लिए अब अपने जेठ पर निर्भर करती है।

जेठ जेठे, असाढ़ हेटे
जेठ में दिन बड़े होते हैं, आषाढ़ में छोटे होने लगते हैं।
अथवा जेठ में मौसम अच्छा रहता है, आषाढ़ में बुरा।

जेठे लड़का-लड़की की शादी जेठ में नहीं करते
लोकमान्यता, जिसका कोई युक्तिसंगत कारण नहीं।

जे पांडे के पत्रा में, सो पंडयाइन के अंचरा में, (पू०)
पांड़े की अपेक्षा पंडयाइन अधिक चतुर है।
पत्रा=पंचांग, तिथिपत्र।
अंचरा=अंचल।

जे पूत परदेसी भइले, देव पितर सबसे गइले, (पू०)
जो घर से बाहर जाकर रहता है, उसका नियम-धर्म सब नष्ट हो जाता है।

जेब में नहीं खीली की डली, छैला फिरें गली-गली
कोरी शान बघारते फिरना।
खीली की डली - सुपारी का टुकड़ा।

जे बहुत धंधला सो आगे में पड़ेला, (भो०)
जो बहुत अनाचार करता है, वह अन्त में हानि उठाता है।
धंधलाना = (१) धांधलेबाजी करना।
(२) धुंआ उगलना, जलना।

जे मुंह चीरेला, से तो आहार देले चाहे, (भो०)
जिस (ईश्वर) ने पैदा किया, वह खाने को तो देगा ही।
मुंह चीरेला = मुह चीरा है।

जे मोरा लाल के न, से कौना काम के, (भो०)
जो वस्तु मेरे लड़के के पास नही (वह अगर औरों के पास है) तो निकम्मी है।
अपना या अपने लड़के का बड़प्पन दिखाना।

जेरों से शेर होते हैं
छोटे कमज़ोर बच्चे से ही बड़ा ताकतवर आदमी बनता है।

जेवड़े से नाड़ा घिसना है, (स्त्रि०)
(१) जिसका कोई इलाज़ नहीं, वह तो सहन करना ही होगा। (२) व्यर्थ ही दुख भोगना है।
(गाय भैस आदि पालतू जानवर जिस जेवरी (रस्सी) से बंधे रहते हैं, उसी से अपनी गर्दन घिसते रहते हैं। बंधन से मुक्त होने में असमर्थ रहते हैं। उसी से रूपक लिया गया है। प्रायः स्त्रियों के लिए क०।)
नाड़ा - गर्दन।

जैसन को तैसन, सुकटी को बैंगन, (पू०)
किसी दुबली-पतली लड़की का मोटे-ताज़े लड़के

के साथ विवाह हुआ। उसी पर व्यग्य मे कहा गया है कि जोड़ खूब मिल गया जैसे, सूखी मछली के साथ बैंगन। सुकटी=सूखी पतली लकड़ी को भी कहते हैं।

जैसन देखे गांव की रीत, तैसन करे लोग से प्रीत, (पू०)
जैसी गाव की चाल-ढाल देखे, वैसा ही लोगो से व्यवहार करे।

जैसा ऊंट लंबा, वैसा गधा खवास
एक-सी जोडी मिल जाना।
(लबा आदमी मूर्ख समझा जाता है, उसी से कहावत मे भाव यह है कि ऊँट जैसा अहमक है, वैसा ही खवास भी उसे गधा मिल गया।)
खवास=नाई, नौकर।

जैसा कन भर, वैसा मन भर
जैसा किसी चीज का एक टुकडा, वैसी ही पूरी चीज, कोई अतर नही पड़ता।

जैसा करोगे, वैसा पाओगे
कर्म का यथोचित फल मिलता है।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे
किए का दड भुगतना पडता है।

जैसा काछ काछै, तैसा नाच नाचे
जैसा वेष हो, उसी के अनुसार काम करो।

जैसा किया, वैसा पाया
बुरे काम का बुरा फल मिलता है।

जैसा तेरा खोट रुपया, तैसा मेरा खोखर पैसा
जसा बर्ताव तुमने मेरे साथ किया, वैसा मैंने तुम्हारे साथ किया।

जैसा तेरा घूंघर बिया, तैसी हींग हमारी
जैसी (बुरी) चीज तुमने मुझे दी, वैसी ही मैने तुम्हे भी दी।
(किसी ठग ने एक दूसरे ठग, को ऐसी हीग दी, जिसमे मिट्टी ही मिट्टी थी। तब दूसरे ने भी उसके बदले मे उसे मटर की ऐसी फलिया दी, जिनके भीतर बिल्कुल घुने हुए दाने थे।)

जैसा तेरा देना-लेना, वैसा मेरा गाना-बजाना
जैसा तुमनै दिया, वैसा मैंने काम कर दिखाया।

जैसा तेरा नोन-पानी, वैसा मेरा काम जानी
दे० ऊ०।

जैसा दूध, वैसा बुद्ध
मा का दूध जैसा पीने को मिलता है, वैसी ही बुद्धि विकसित होती है।

जैसा दूध धौला, वैसी छाछ धौली
ऊपरी दिखावट से धोखे में पडना।
धौला=सफेद।

जैसा देवता, वैसी पूजा, (हि०)
जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

जैसा देवे वैसा पावे; पूत भतार के आगे आवे, (पू०, स्त्रि०)
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
(कथा है कि किसी स्त्री ने उक्त कहावत की सत्यता की परीक्षा के लिए दो रोटियो मे विष मिलाकर किसी साधु को दे दी। उसने उन रोटियो को अपनी कुटी मे ले जाकर रख छोडा। सयोग से उसी स्त्री का पति और लडका कही से थके-हारे उस स्थान पर आ पहुचे और साधु से पानी मागा। साधु ने उन्हे भूखा जानकर वे दोनो रोटिया उन्हे खिला दी, और पानी पिला दिया। वे दोनो रोटिया खाकर मर गए।)

जैसा देस, वैसा भेस
जिस देश मे रहे, वहा जैसी रीति बरते।

जैसा बो, वैसा काट, (कृ०)
जैसा करोगे, वैसा पाओगे।

जैसा मन हराम मे, तैसा हरि में होय।
चला जाए बैकुंठ को, रोक सके ना कोय।
स्पष्ट।

जैसा भान, वैसा दान
हैसियत के अनुसार दान किया जाता है।

जैसा मुंह, वैसा थप्पड़
(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।
(२) उपयुक्त दड या मुंहतोड़ जवाब।

जैसा राजा, वैसी प्रजा
राजा के अनुसार ही प्रजा होती है।

जैसा सुई चोर, वैसा बज्जर चोर
चोरी-चोरी सब बराबर। जैसी छोटी चीज की वैसी ही बड़ी चीज की।
बज्जुर=वज्र फौलाद; यहां हथौड़े से अभिप्राय है।

जैसा सूत, वैसी फेटी; जैसी मां, वैसी बेटी; (स्त्रि०)
(१) लड़की मां जैसी ही होती है, अर्थात लड़की में मां के गुण आते हैं।
(२) जैसो के तैसे होते है।
फेटी=सूत या रेशम की लच्छी।

जैसा सोता, वैसी धारा
नदी का स्रोत जैसा होगा, वैसी ही नदी भी होगी। संतान अपने मां-बाप जैसी ही होती है।

जैसी करनी, वैसी भरनी
कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है।

जैसी करनी वैसी भरनी; होवे न होवे, करके देख
दे० ऊ०।

जैसी गई थी वैसी आई, हक महर का बोरिया लाई
किसी स्थान पर बहुत आशा से जाने पर कुछ न मिले, तब क०।
बदकिस्मती।
(कोई स्त्री ससुराल से मायके गई, और जब फिर ससुराल वापस आई, तो कुछ लेकर नही आई। उसी पर कहा गया है कि जैसी गई थी, वैसी ही आई, अपने साथ विवाह के हिस्से का बोरा लेकर आई, अर्थात खाली हाथ आई।)

जैसी तेरी तानी बनिये, वैसा मेरा बुनना
जैसे के बदले तैसा।

जैसी तेरी तानी, वैसी मेरी भरनी
तूने जैसी चीज दी, मैंने वैसा ही काम कर दिया।
तानी=कपड़ा बुनने में ताने का सूत।
भरना=बाना।

जैसी तेरी तिल चावली, वैसा मेरा गीत, (स्त्रि०)
जैसी मजूरी (या भेंट) वैसा काम।
(विवाह या पुत्र-जन्म जैसे शुभ अवसरों पर गाने के लिए जो स्त्रियां आती हैं, उन्हें तिल-चावल दिए जाते हैं।)

जैसी तेरी फाफड़ कोदों, वैसी मेरी हींग, (मु०)
दे०—जैसी तेरी तानी...।
फाफड़ = घुने हुए, छूछ।

जैसी तेरी भगत, वैसा मेरा आशीर्वाद
जैसा तूने मेरा सत्कार किया, वैसा मैंने आशीर्वाद भी दिया।

जैसी दाई आप छिनार, वैसी जाने सब संसार, (स्त्री०)
कोई स्त्री दूसरी को गाली देकर कह रही है। जो जैसा होता है, वह दूसरों को वैसा ही समझता है।

जैसी नीयत, वैसी बरकत
जैसी नीयत होती है, वैसा ही मिलता है।
नीयत -इच्छा, उद्देश्य, मंशा, संकल्प।

जैसी फूहड़ आप छिनार; तैसी लगावे कुल व्यौहार
दे०—जैसी दाई...।

जैसी बंदगी, वैसा इनाम
जैसी सेवा, वैसा फल।

जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै, (गिरधर)
अवसर या रुख देखकर काम करना चाहिए। मौका या अवसर से लाभ उठाना भी।

जैसी माई, वैसी जाई; (स्त्रि०)
जैसी मां, वैसी बेटी।

जैसी रूह, वैसे फरिश्ते; (मु०)
जैसी रूह होती है, वैसे ही फरिश्ते उसे लेने आते हैं। (भाव यह है कि हर मनुष्य को उसके कर्मों के अनसार ही फल मिलता है। जब दो एक-सी वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का जोड़ मिलता है, तब व्यंग्य में क०।)

जैसी होत होतव्यता, वैसी उपजे बुद्ध।
होनहार हिरदे बसे, बिसर जात सब सुद्द।
स्पष्ट।
होतव्यता =होनहार।
सुद्द=सुध, खबर।

जैसे ऊधो वैसे भान; न उनके चोटी, न उनके कान
दोनों एक से निकम्मे।

जैसे एक बार, वैसे हजार बार
जैसे कोई (बुरा) काम एक बार किया, वैसा हज़ार बार किया, कोई अन्तर नहीं आता।

जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे बिदेश।
जैसे ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेस। (स्त्रि०)
निकम्मे आदमी का घर और बाहर रहना एक-सा।
कंथा=कंत, पति।
कामली=कंबल।
खेस=गाढ़े की मोटी चादर।

जैसे की सेवा करे, तैसी आसा पूर; (पू०)
जैसे मनुष्य की सेवा करोगे, वैसी ही इच्छा पूर्ति होगी।

जैसे को तैसा
(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।
(२) जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।
(३) जो जैसा होता है, उसे दूसरे भी वैसे ही दिखाई देते हैं।

जैसे को तैसा, परखने को पैसा
जैसे के साथ तैसा व्यवहार करे, पैसा आखिर परखने के लिए ही है। दे० ऊपर भी।

जैसे को तैसा, बाबू को भैंसा
जो जैसा हो, उसका वैसा ही सम्मान करना चाहिए।
(यहां बाबू से मतलब बड़े आदमी से है।)

जैसे को तैसा मिले, ज्यूं बामन को नाई।
इसने कही आशीर्वाद, उन आरसी काढ़ दिखाई।
जैसे को तैसा मिल जाता है, जैसे ब्राह्मण को नाई मिल गया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—नाई ने भी उसके बदले में आरसी निकाल कर दिखला दी।
(ब्राह्मण जब किसी को आशीर्वाद देता है, तो दक्षिणा की आशा करता है, नाई भी जब विशेष अवसरों पर दर्पण दिखाता है, तो उसे इनाम दिया जाता है। कहावत में दोनों ने एक दूसरे को सूखा टरका दिया, यही उसमें मज़ा है।)

जैसे को तैसा मिले, सुन रे राजा भील।
लोहे को चूहा खा गया, लड़का ले गई चील।
(इसकी प्रसिद्ध प्राचीन कथा है जो बौद्ध जातक में मिलती है। एक मनुष्य अपना लोहे का कुछ सामान अपने एक मित्र को सौंपकर परदेश चला गया। कुछ वर्षों बाद आया, तो मित्र से अपनी धरोहर मांगी। उसने जवाब दिया—तुम्हारा सब लोहा तो चूहे खा गए। यह सुनकर वह चुप रह गया, पर इसका बदला लेने का अवसर खोजने लगा। एक दिन जब उसके उसी मित्र का छोटा लड़का बाहर मैदान में खेल रहा था, तो उसे उठाकर उसने घर में छिपा लिया। जब उसका मित्र लड़के को खोजता हुआ उसके पास आया और पूछने लगा कि तुमने मेरा लड़का तो नहीं देखा? तो उसने उत्तर दिया—हां, उसे तो चील ले गई। मित्र ने कहा—यह कैसे हो सकता है कि लड़के को चील उठा ले जाए। तब वह बोला कि यह उसी तरह संभव है, जिस तरह चूहा लोहा खा गए। सुनकर वह सारी बात को ताड़ गया। उसने सब लोहा निकालकर दे दिया। उसे अपना लड़का भी वापिस मिल गया। यह 'कूट वणिक जातक' है।)

जैसे गंगा नहाये, वैसा फल पाये
श्रद्धा के अनुसार फल मिलता है।

जैसे चिड़ियों में ढेल
क्रूर व्यक्ति।
ढेल=बाज़ पक्षी।

जैसे दाम, वैसा काम
जैसी मजदूरी दोगे, वैसा ही काम होगा।

जैसे नागनाथ, वैसे सांपनाथ
जैसे यह वैसे वह अर्थात दोनों एक से।

जैसे नीमनाथ, तैसे बकायन नाथ
दोनों में कोई अंतर नहीं। नीम भी कड़ुवा, बकायन भी कड़ुवा।
(नीम और बकायन एक ही समान हैं।)

जैसे मियां काठ, वैसी सन की दाढ़ी
किसी का मजाक उड़ाया गया है।

जैसे मुर्दे पर सौ मन मट्टी, वैसी हजार मन, (मु०)
क्योंकि मुर्दे पर उसका कोई असर नहीं पड़ता।

जैसे साजन आये, तैसे बिछौना बिछाये
साजन जैसे आए (अर्थात जिस तरह खाली हाथ आए) वैसा ही उनका सत्कार भी किया गया।

जैसे हरगुन गाये, तैसे गाल बजाये
सेवा में व्यर्थ समय नष्ट किया; कोई फल नहीं निकला। प्रायः उस समय कहते हैं जब कोई मनुष्य अपने किसी नौकर के काम की कद्र न करे। गाल बजाना सिर्फ शिव की पूजा में ही होता है। पर यहां इसका दूसरा अर्थ—व्यर्थ की बकवास भी है।

जैसे हसन, वैसे हुसैन, (मु०)
दोनों एक से।
(हसन और हुसैन एक ही पिता अली के पुत्र थे और समान मान से पूजे जाते हैं। पर यहां ये दोनों नाम सामान्य व्यक्तियों के नामों के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं।)

जो अपने काम न आये, सो चूल्हे भाड़ में जाये
स्वार्थी और झंझट से बचनेवाले लोगों का कहना।

जो आंख से दूर, वह दिल से दूर
आदमी जब तक सामने रहता है, तभी तक उससे प्रेम भी रहता है।

जो कबीर काशी में मरिहैं, रामहिं कौन निहोरा?
हिन्दुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मुक्ति होती है। कबीर कहते है कि अगर किसी को काशी में मरने के कारण मुक्ति मिलती है, तो उसमें ईश्वर का क्या एहसान?
(जब कोई मनुष्य किसी के पास काम में कुछ सहायता मांगने जाए और वह यह कहकर टाल दे कि इसमें क्या है, इसे तो तुम्हीं कर सकते हो। तब इस अर्थ में कहावत का प्रयोग होता है कि हम तो कर ही लेगें, लेकिन उसमें फिर तुम्हारी क्या तारीफ?)

जो कहते हैं वह, करते नहीं
बकवास करनेवालों से काम नहीं होता।

जो काम हिकमत से निकलता है, वह हुकूमत से नहीं निकलता
बुद्धि से जो काम बनता है, वह बल से नहीं।
हिकमत=युक्ति; तदबीर; चतुराई का ढंग।

जो किसी का बुरा चेतेगा, उसका पहले बुरा होगा
स्पष्ट।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?
जो दूसरों को सताता है, उसे शान्ति नहीं मिलती।

जो कोई खाय चने का ठूंक, पानी पीवै सौ-सौ घूंट
चने रूखे होते हैं, और उनके खाने से प्यास लगती है।

जो कोई खाय निबाह के ज्वार, मूल बने वह मूढ़ गंवार
जो जन्म भर केवल ज्वार खाता है, वह सदा मूर्ख और गंवार बना रहता है।
(शायद इसलिए कि ज्वार बहुत पौष्टिक नहीं होती। घटिया अनाज खानेवालों के लिए धनियों की घृणा भी इससे व्यक्त होती है।)

जो खुदा सिर पर सींग दे, तो वह भी सहने पड़ते हैं
किसी धैर्य्यवान और संतोषी पुरुष का क०।

जो गंवार पिंगल पढ़े, तीन बस्त से हीन।
बोली चाली बैठकी, लीन विधाता छीन।
गंवार चाहे जितना पढ़-लिख जाए, फिर भी उठने-बैठने और बोलने का सलीका उसे नहीं आ पाता। यह भी एक दंभ है एक वर्ग का।

जो गदहे जोतें संग्राम, तो काहे को ताजी को खरचे दाम
मूर्खों से यदि बड़े कार्य सिद्ध होने लगें, तो फिर पढ़े-लिखों की जरूरत ही क्या रहे?
ताजी=घोड़े की एक नस्ल; अरबी घोड़ा।

जो गरजते हैं, वह बरसते नहीं
डींग हांकनेवालों से काम नहीं होता।

जो गिरा खाई के अंदर, सो पड़ा फेरी में
जो किसी बुरे काम में (या झंझट में) फंस जाता है, वह मुश्किल से उबरता है।

जोगी का लड़का खेलेगा तो सांप से
संपेरे का लड़का सांप से ही खेलता है। बाप के गुण (या दुर्गुण) लड़के में भी आते हैं।

जोगी किसके मीत ?
जोगी किसी के मित्र नहीं होते।
(उन्होंने तो दुनिया त्याग रक्खी है।)

जोगी की पीत क्या ?
किसी वीतराग से प्रेम करना व्यर्थ है।

जोगी की-सी फेरी
भूल से कभी-कभी आ जाना।

जोगी केहके मीत, कलंदर केहके साथ ?
हिन्दू साधु जोगी और मुसलमान फ़कीर कलंदर कहलाते हैं। ये किसी के मित्र नहीं होते, क्योंकि वे तो हमेशा घूमते-फिरते रहते हैं।

जोगी को बैल बला
जोगी को बैल दिया जाए, तो वह तो उसके लिए एक विपत्ति ही सिद्ध होगा। वह उसे कहां रक्खेगा, कहां बांधेगा ?

जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ
किसी काम को अच्छी तरह सीखे बिना केवल भेष बदलने से काम नहीं चलता।
जुगत=युक्ति, योग की क्रिया।

जोगी जोगी लड़े, खप्परों का खौर
क्योंकि उनके पास लड़ने के लिए और रक्खा ही क्या ?
(बड़ों की लड़ाई में छोटे पिसते हैं।)
खप्पर=जोगियों का भिक्षापात्र।
खौर=हानि।

जोगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत
आदमी के मरने पर केवल उसका नाम रह जाता है।
(जोगी शब्द आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है।)

जोगी मारे छार हाथ
ग़रीब को मारने से कोई लाभ नहीं।
छार=(१) वह राख, जो जोगी अपने शरीर पर चढ़ाए रहते हैं। (२) धूल।

जो गुड़ खाय, सो कान छिदाय
जो मीठा खाना चाहे, वह कष्ट उठाए।
(उपर्युक्त वाक्य कान छेदते समय बच्चों से क०।)

जो चढ़ेगा, सो गिरेगा
(१) जो काम करता है, वह असफल भी होता है।
(२) महत्वाकांक्षी हानि उठाता है।

जो चप-चप कर आंख झपावे, वह क्‍ै रन में सेल चलावे
आलसी आदमी जो आंख मिचमिचाता रहता हो, वह युद्ध में बरछा क्या चलाएगा ?

जो चोरी करता है, सो मोरी भी रखता है
चोरी या बदमाशी करनेवाला अपने बचने का उपाय भी पहले से सोच रखता है।
मोरी=मुहरा, निकलने का रास्ता।

जो छावे, सो पावे
जो प्रयत्न करता है उसे मिलता है।
छाना=घर पर छप्पर चढ़ाना।

जो जाए कलकत्ते, वह खे खाए अलबत्ते
इसके दो अर्थ हैं—
(१) जो कलकत्ते जाता है, उसे खे यानी विष्ठा अवश्य खानी पड़ती है। यह इसलिए कहा गया है कि जब बहुत शुरू में कलकत्ते में पानी की कल नहीं थी, तब तमाम शहर का मैला गंगा में बहाया जाता था और वही पानी सबको पीना पड़ता था।
(२) जो कलकत्ते जाता है, वह खे खाता है। अर्थात कुछ और काम न मिले तो नाव खेकर ही अपना पेट भर सकता है, क्योंकि कलकत्ता एक बड़ा बंदरगाह जो है।

जो जीवे सो खेले फाग, मुआ सो लेखे लोग
जो जीवित है, उसी के लिए जीवन का आनंद है; जो मर गया, उसका तो हिसाब-किताब ही पूरा हो चुका।

जो टका देगा, उसका लड़का खेलेगा
जो पैसा खर्च करता है, वही लाभ उठाता है।
(क़िस्सा है कि कोई मनुष्य परदेश जा रहा था। पड़ोसियों ने उससे तरह-तरह की चीज़ों की फ़र-

माइश की। पर एक आदमी ने दो पैसे (टका) देकर कहा कि इसका झुनझुना ले आना। उसने जवाब दिया—'बस तेरा ही लड़का खेलेगा'।)

जोड़-जोड़ मर जायेंगे, माल जंवाई खायेंगे।
जंवाई भी न होगा, तो खालसे लग जायेंगे।

कंजूस के लिए क०।

(महाराज रणजीतसिंह के शासनकाल मे जब कोई लावारिस मरता था, तो उसकी सम्पत्ति खालसा-सरकार में जब्त कर ली जाती थी। 'खालसे लग जायेंगे' का यही अभिप्राय है कि धन खालसा-सरकार में चला जाएगा।)

जोड़ियां संयोग है

विवाह के लिए क० कि लड़के-लड़की का सम्बन्ध तो भाग्य पर निर्भर है।

जोड़ी बलवान है

दे० ऊ०।

जो तिल हद से ज्यादा हुआ, सो मस्सा हुआ

हद से बाहर कोई चीज अच्छी नही लगती।

(छोटा तिल चेहरे पर अच्छा मालूम देता, है पर वही जब बढ़कर मस्सा हो जाता है तो चेहरे की रौनक को बिगाड़ देता है।)

जो तैरेगा, सो डूबेगा

जो प्रयास करेगा, वह कभी-कभी असफल भी होगा। प्रयास न करनेवाले के लिए असफलता का प्रश्न ही नही।

जो दम गुजरे, सो ग़नीमत है

आनंद से जितना समय बीत जाए, सो ही अच्छा।

जो देखा, सो पेखा

दोनों में कोई अंतर नही। 'देखा' का जो अर्थ है वही 'पेखा' का।

जो धन जाता देखिये तो आधा दीजे बांट

यदि पूरी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो आधी दूसरों को देकर यश लूट लेना चाहिए।

जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया

जो धरती पर जन्म लेता है, वह धरती में ही फिर मिल भी जाता है।

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे

जो परिश्रम करेगा, वही (धन) पाएगा; जो आलस्य करेगा, वह गांठ का भी खो बैठेगा।

जो निकले सो भाग धनी के

जो कुछ भी मिलेगा, सो मालिक का भाग्य, अर्थात हमें क्या, हम कौन कही ले जाएंगे।

(प्रायः खेती के काम में सहायता करनेवाले चोट्टे और लापरवाह मजदूर कहा करते हैं।)

जो पहले मारे सो मीर

जो पहले मारता है, सो जीतता है।

(शतरज के खेल मे जो पहले मुहरा मारना शुरू कर देता है, वही फायदे में रहता है। उसी संदर्भ मे वाक्य कहा गया है।)

जो पारस से कंचन उपजे, सो पारस है कांच।
जो पारस से पारस उपजे, सो पारस है सांच।

सच्चा महापुरुष वही है, जो दूसरों को भी अपने जैसा बना ले।

पारस वह प्रसिद्ध कल्पित पत्थर जिसके संबंध में कहा जाता है कि यदि लोहा उससे छुवाया जाए, तो वह सोना हो जाता है। स्पर्शमणि।

जो पूत दरबारी भये, देव पितर सबसे गये

जो सरकारी नौकरी करते हैं, वे देव-पितरों के काम के नही रहते, अर्थात अंग्रेजी सभ्यता के प्रभाव से अपने धर्म में निष्ठा खो बैठते है।

(पुरातन पंथी हिन्दुओं की धारणा।)

जो प्याज काटेगा, सो आप रोयेगा

जो उपद्रव करेगा, वह उसका दंड भी भोगेगा।

(प्याज काटने से उसका झाग आंखों में जाता है, और आसू निकलने लगते है। उसी से मतलब है।)

जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा

जो वस्तु कभी चक्खी नहीं होती, उसके लिए मन ललचाता है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो?

जो बंदा नवाजी करे, जान उस पर फ़िदा है।
बेफ़ैज अगर यूसफ़े सानी है, तो क्या है?

जो मेरे साथ अच्छा बर्ताव करे, उस पर जान न्यौछावर कर सकता हू, पर जिसके हृदय में मेरे लिए

आदर नहीं, ऐसा दूसरा यूसुफ़ भी अगर मिले, तो उससे मुझे कोई सरोकार नहीं।

(यूसुफ़ हज़रत याक़ूब के पुत्र थे, जिन पर मिस्र की ज़ुलेखा आसक्त हो गई थी। वह बड़े रूपवान थे। उन्होंने मिस्र पर बहुत दिनों तक राज्य किया।)

जोबन था तब रूप था, गाहक था सब कोय।
जोबन रतन गंवाय के, बात न पूछे कोय।

जब मेरे पास यौवन और रूप था, तब सब मुझे चाहते थे। पर यौवन रूपी रत्न को (अब) जब मैं खो बैठी हूं, तब कोई मुझसे बात नही करता।

जो बर देख ताप मुझे आवे, सोई बर मुझे ब्याहन आवे, (पू०, स्त्रि०)

(१) जिस वस्तु से अत्यधिक घृणा थी, वही पल्ले पड़ी,। अथवा (२) जो काम करना नही चाहते थे, वही विवश होकर करना पड़ रहा है।

बर=वर, दूल्हा।

जो बहुत करीब, सो ज़्यादा रक़ीब

नजदीक ही के लोग दुश्मन होते है।

रक़ीब=प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

जो बहुत धधला, सो आगे में पड़ेला, (भो०)

जो बहुत अनाचार करता है, वह हानि उठाता है।

धधलाना=(१) धांधली करना।

(२) धुधुआना, आग उगलना।

जो बात है सो खूब है, क्या बात है आपकी ?

व्यंग्य में क० कि आपकी क्या तारीफ़ की जाए? आपकी हर बात निराली है।

जो बामन की जीभ पर, सो बामन की पोथी में

ब्राह्मण अपने मतलब की व्यवस्था ही पत्रा देखकर देता है, अर्थात अपने यजमान को वह वैसी ही सलाह देता है, जिससे उसे दान-दक्षिणा मिल सके।

जो बामन की पोथी में, सो यारों की ज़बान पर

(१) ब्राह्मण पत्रा देखकर जो कुछ बताएगा, उसे हम पहले से जानते हैं। अथवा

(२) ब्राह्मण जो बताएगा, वही हमारे यार लोग भी बताएंगे।

(खाने-पीने की बात)।

जो बिन सहारे खेले जुआ, आज न मुआ, कल मुआ

जो बिना अनुभव के जुआ खेलता है, वह कभी न कभी दचका खाता है।

जो बोवेगा, सो काटेगा

(१) जैसा करेगा, वैसा पाएगा।

(२) जो उद्योग करेगा, वह उसका फल भी पाएगा।

जो बोले सो कुंडा खोले

पुकारने से जो बोले, वही कुंडा खोले।

(घर के दरवाजे की कुंडी जब भीतर से बंद रहती है, तो पुकार कर खुलवाना पड़ती है। भीतर से जो जवाब देता है, उसी को प्रायः दरवाज़ा खोलने आना पड़ता है। भलमनसाहत का नतीजा।)

जो बोले सो घी को जाय

(इस कहावत की दो विभिन्न कथाएं प्रसिद्ध हैं, और उन दोनो के अलग-अलग दो अर्थ निकलते हैं। पहली कथा इस प्रकार है—

(१) एक बार चार मूर्खों ने मिलकर रसोई बनाने का इरादा किया। अब इस बात को लेकर उन चारों में झगड़ा होने लगा कि घी कौन लाए। अन्त में उन्होने तै किया कि जो पहले बोलेगा, उसी को घी लाने जाना पड़ेगा। जब वे चारों मौन साधे बैठे थे, तब एक पहरेदार वहां आ गया। उसने पूछा—तुम लोग कौन हो? यहां क्या कर रहे हो? कहां से आए हो? इत्यादि।

अपने प्रश्नों का कोई उत्तर न पाकर पहरेदार उन्हे पकड़कर कोतवाली ले गया। वहां कोतवाल के पूछने पर भी जब उन लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उन्हें कोड़े लगाने का हुक्म मिला। उनमें से एक, जो कोड़ों की मार नहीं सह सका, ज़ोर से रो उठा। तब वे तीनों बोल उठे—बस तुम्हीं घी लेने जाओ। इससे कहावत का अर्थ है किसी काम में मूर्खतापूर्ण हठ।

(२) एक दूसरी कथा है कि एक बार चार मनुष्यों ने मिलकर खिचड़ी पकाई। जब वे खाने बैठे तो एक ने कहा—तुम लोग खिचड़ी में घी डालना

भूल गए। इस पर तीनों बोल उठे—हां हां, तुम्हीं जाकर ले आओ। इससे कहावत का मतलब यह हुआ कि जो सलाह दे, वही उस काम को करे भी।

जो भादों से बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय

भादों में वर्षा होने से अकाल रोता है, अर्थात पैदावार अच्छी होती है।

जो भूखे को देत है, जथा शक्ति जो होय।
ता ऊपर सीतल बचन, लखे आत्मा सोय।

जो भूखे को भोजन देता है, वही सच्चा दयावान पुरुष है।

जो मन में बसे सो सुपने दसे

मन में जो इच्छा होती है, वह सपने में (पूरी हुई) दिखाई देती है।

जो मां से सिवा चाहे सो डायन

मां से अधिक प्रेम कोई कर नहीं सकता। उचित से अधिक स्नेह कोई दिखावे, तो समझना चाहिए कि वह बनावटी है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दांत निपोरे

ईश्वर ने सबको एक-सा पैदा किया है। जैसे भीतर से हम नंगे हैं, वैसे ही तुम भी हो ; इसमें हँसने की कौन-सी बात ?

जो मेरे है सो राजा के नहीं

धन सम्पत्ति का अभिमान करनेवाला।

जोर की लाठी सिर पर

जबर्दस्त की लाठी सिर ही पर पड़ती है।

जोर के आगे जब्र नहीं चलती

ज़बर्दस्त को चोट से कोई हानि नही पहुंचती।

जोर थोड़ा, गुस्सा बहुत

कमज़ोर को बहुत गुस्सा आता है।

जोर न जुल्म, अक्ल की कोताही

ज़ोर या जुल्म इतना कष्टदायक नहीं होता, जितना मूर्ख होता है।

जोरू का घघला बेचकर तंदूरी रोटी खाई है, (मु०)

स्वार्थीपन या पेटूपन की हद।

घघला = लहंगा।

जोरू का मरना और जूती का टूटना बराबर है

जूती पुरानी हो जाने पर नई ख़रीदी जा सकती है, उसी तरह औरत के मरने पर दूसरी शादी भी फ़ौरन की जा सकती है।

(पुरुष-प्रधान समाज की बौखलाहट भरी उक्ति।)

जोरू का मरना, घर का खराबा

स्त्री के मरने से घर बर्बाद हो जाता है।

जोरू का मुरीद

औरत का गुलाम।

जोरू खसम की लड़ाई क्या

होती ही रहती है।

जोरू खसम की लड़ाई, दूध की मलाई

पति-पत्नी का झगड़ा तो एक मजे की चीज़ है, कोई विशेष बात नहीं।

जोरू टटोले गठरी, और मां टटोले अंतड़ी

जोरू को यही फ़िक्र रहती है कि मेरे पति के पास कितना धन है और मां यही देखती रहती है कि मेरे लड़के का पेट अच्छी तरह भरा है या नहीं। आशय यह कि स्त्री धन चाहती है और मां अपने पुत्र का स्वास्थ्य।

जोरू न जांता, अल्लाह मियां से नाता

अविवाहित या फक्कड़ के लिए क०।

जो सादी चाल चलता है, वह हमेशा खुशहाल रहता है

सादगी से रहनेवाला सदा सुखी रहता है।

जो साधु की माने बात, रहे अनंद वह दिन रात

सज्जन पुरुष की बात माननी चाहिए।

जो सिर उठाकर चलेगा, सो ठोकर खायेगा

अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

जो सेवा करे सो मेवा पावे

सेवा का मीठा फल मिलता है।

जो सोवे उसका पड़वा, जो जागे उसकी पड़िया

सोनेवाले को पड़वा और जागनेवाले को पड़िया मिलती है, जो कीमती होती है।

सचेत रहनेवाला मुनाफ़े में रहता है।

तु०—जागते की कटिया...।

जो हांड़ी में होगा सो रकाबी में आवेगा
मन की बात प्रकट होकर रहेगी। अथवा जो बात सामने आने को है, वह तो आकर ही रहेगी, उसके लिए परेशान होने की ज़रूरत क्या?

ज़ौक में शौक, कस्तूरी में लड़का
ख़ुशी मे शौक और मुफ्त मे लड़का। जब केवल आनद के लिए कोई काम किया जाए और उसमे लाभ भी हो, तब क०।
ज़ौक=किसी वस्तु से प्राप्त होनेवाली प्रसन्नता।

जौ के खेत कंडुआ उपजे
जब किसी घर में कोई लड़का बहुत अयोग्य निकले, तब क०।
कडुआ या कुडुआ=जौ, गेहूं आदि की एक बीमारी, जिसमे दाना सड़कर काला पड़ जाता है।

जौ को गये, सतुआनी को आये, (पू०)
कोई दूसरे के यहा से जौ माग कर लाया, तो वह उसके यहा सत्तू खाने आ गया।
(अपनी कोई थोडी चीज़ देकर बदले में बहुत चाहना।)

जौ फ़रोश, गंदुमनुमा, (फा०)
बेचता जौ और दिखलाता गेहू है। धूर्त मनुष्य।

जौ ले दलिद्दर दादा छीपा लावत, तब ले हमरा भुईं में दो
जब तक दारिद्र्य देव छीपा लाते है, तब तक हमे ज़मीन मे ही (खाने को) दो।
बहुत गरीबी।
छीपा=बास का थालीनुमा बर्तन।

जौहर को जौहरी पहचाने
गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

ज्यादा जीकर क्या आक़बत के बोरिये समेटोगे?
ज्यादा जीकर क्या और भी पाप कमाओगे?
(बूढ़े आदमी से, जिसे जीने की ज्यादा हविस हो, व्यंग्य में क०।)
आक़बत=मरने के बाद की स्थिति, परलोक।

ज़्यारते बुज़ुर्गा कफ़्फ़ारह-ए-गुनाह
बड़े-बूढ़ों का सम्मान करने से पापों का क्षय होता है।

ज्यों-ज्यों बाव बहे पुरवाई, त्यों-त्यों घायल अति दुख पाई
पुरवाई चलने पर घाव या चोट का दर्द बढ़ता है।

ज्यों-ज्यों भीजे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय
(१) जब किसी आदमी पर कर्ज़ बहुत हो जाता है, और वह उसका ब्याज भी नही दे पाता, तथा कर्ज़ का बोझ बढता ही जाता है, तब क०।
(२) ज्यो-ज्यो उम्र बढती है, त्यो-त्यो पापो का बोझ भी बढ़ता जाता है, यह अर्थ भी होता है।

ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी हो, त्यों-त्यों दुम सुकड़े
कजूस के पास जितना धन बढ़ता जाता है, उसकी कृपणता भी उतनी ही बढ़ती जाती है।

ज्यों-ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों-त्यों मारा सारा गांव
ज्यो-ज्यो मैने आपका नाम लिया, त्यो त्यो गाव-वालो ने मुझे और भी मारा।
(किसी अत्याचारी अफसर के सबध मे कहा गया है।)

ज्यों ही कहा, त्यों ही किया
तुरंत आदेश मानना।

ज्ञान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से
चितन से ज्ञान बढता है, और आहार-विहार मे असयम से रोग।

झगड़ा झूठा, कब्ज़ा सच्चा
अधिकार ही सच्चा है। कानून की दृष्टि मे भी चीज़ जिसके अधिकार मे होती है, उसी की मानी जाती है।

झगड़े की तीन जड़, ज़र ज़मीन और जोरू
दुनिया के जितने भी झगड़े है, वे सब जमीन, जायदाद और स्त्री इन तीन चीज़ो को लेकर ही होते हैं।

झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी
जल्दी का काम अच्छा नही होता।

झड़बेरी का कांटा
जो ऐसा चिपटे कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाए।
(झड़बेरी का काटा बड़ा तेज और टेढ़ा होता है और चुभ जाने पर बहुत कष्ट देता है।)

झड़बेरी के जंगल में बिल्ली शेर
क्योंकि कांटों की वजह से उसे वहां कोई आसानी से पकड़ नही सकता।

झांट उपाड़े से मुरदा हलका नहीं होता
नाम मात्र के प्रयत्न से कोई बड़ी मुसीबत दूर नही होती।

झाड़ बिछाई कामली और रहे निमाने सोय
फकीरों की आवाज़।
निमाने -नीचे।

झाड़ भी बनिये का बैरी है
क्योंकि वहा चोर छिपे रहते है। बनिये से सब नाराज़ रहते है।

झींगुर बैठे बगुचा पर, कहत हम ही मालिक हैं, (पू०)
झींगुर सूती कपड़ों को बड़ी हानि पहुंचाता है। अनधिकारी ढंग से कब्जा।
बगुचा - कपड़े की गठरी।

झुके जो कोई उससे झुक जाइये, रुके आपसे उससे रुक जाइये
जो विनम्र बने, उसके साथ और विनम्र बन जाना चाहिए; जो झगडा करने से स्वयं ही हाथ खीच ले, उसके साथ फिर झगड़ना नही चाहिए।

झूठ कहे सो लड्डू खाय, सांच कहे सो मारा जाय
दुनिया में झूठों की ही क़द्र है।

झूठ की नाव मझधार डूबती है
झूठ का अन्त मे भंडाफोड़ होता है।

झूठ के पांव नहीं होते
झूठ परीक्षा में ठहरता नही। कलई खुल जाती है।

झूठ न बोले तो अफर जाय
झूठे से क० कि क्या झूठ बोले बिना तुम्हारा काम नहीं चलता?
अफरना = मर जाना, फूल उठना।

झूठ न बोले तो पेट फट जावे
दे० ऊ०।

झूठ बराबर पाप नहीं
स्पष्ट।

झूठ बोलना और खे खाना बराबर है
झूठ बोलना एक बहुत घृणित कार्य है।
खे = विष्ठा, मल।

झूठ बोलने में रक्खा क्या है?
झूठ बोलना व्यर्थ है।

झूठ बोलने में सर्फ़ा क्या
(१) झूठ ही बोलना है, तो उसमें किफ़ायत क्या?
(२) झूठ बोलने में कुछ खर्चा नहीं होता, यह अर्थ भी होता है।
सर्फा कम-खर्ची।

झूठ बोलनेवालों को पहले मौत आती थी, अब बुखार भी नहीं आता
झूठ बोलनेवाले से मज़ाक मे क०।

झूठ बोलूं तेरे मुंह पर
मेरी इतनी हिम्मत नही कि तुम्हारे सामने झूठ बोलूं।

झूठ से काम नहीं चलता, (व्य०)
झूठा सफल नहीं होता।

झूठा जूठ से बुरा जो सोने का होय
झूठ हर हालत में बुरा।

झूठा मरे न शहर पाक होय
झूठो से ही शहर गंदा रहता है।

झूठी बात बना ले, पानी में आग लगा ले
बहुत धूर्त्त आदमी।

झूठ का मुंह काला, सच्चे का बोलबाला
झूठे की हमेशा हार होती है, सच्चे की जीत।

झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन झूठ न बोल।
लखपती का झूठ से, दो कौड़ी हो मोल।
झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

झूठे की नहीं बढ़ बढ़ती
झूठा कभी तरक्की नहीं करता।

झूठे के आगे सच्चा रो मरे
झूठे के आगे सच्चा हार मान लेता है।
झूठे के मुंह में बू आती है
झूठा घृणित जीव है।
झूठे को घर तक पहुंचाना चाहिए
(१) जिसमें उससे फिर पाला न पड़े। अथवा
(२) झूठे को तभी छोड़े, जब उसके मुह से सच निकलवा ले।
झूठे घर को घर कहें, सच्चे घर को गोर।
हम चाले घर आपने (और) लोग मचावें शोर।
स्पष्ट। वैराग्य की उक्ति।
झूठे जग पतयाय
(१) इस संसार में झूठो का ही लोग विश्वास करते है। अथवा
(२) झूठे ससार को लोक पतयाते है, अर्थात सच्चा करके मानते है।
(वेदान्तियो का यह सिद्धान्त है कि ससार माया है।)
झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता
कजूस के लिए कहना।
(झूठे हाथ मे भोजन का कुछ-न-कुछ अश लगा रहता है। इसलिए भाव यह है कि भोजन के बाद हाथ मे जो अन्न लगा है, कंजूस को उसके भी नष्ट होने का डर रहता है। कहावत का रूप यह भी हो सकता है कि झूठे हाथ से कुत्ता भी नही मारना चाहिए, जो ठीक जान पडता है।)
झूठों का घर नहीं बसता
झूठा कभी खुशहाल नही हो पाता।
झूठों का बादशाह
बहुत झूठा।
झोंपड़ी में रहे, महलों का ख्वाब देखे
अपने बूते के बाहर के ऊंचे ख्याल बांधना।
झोटे-झोटे टक्करें लड़े, झुंडियों का नाश हो
भैंसे तो लड़ें, पौधों का नाश हो।
बड़ों की लड़ाई में छोटे व्यर्थ मारे जाते हैं।

टंटा मत कर जब तलक बिन टंटे हो काम।
टंटा विष की बेल है, या का मत ले नाम।
बिना झगड़े के काम बन जाए, तो झगड़ा नही करना चाहिए। झगड़ा बुरी चीज है।
टका कराई, और गंडा दवाई
दवा कराने के लिए तो (वैद्य को) एक टका दिया, पर दवा केवल पाच ही कौडी की मंगाई।
(जहां करना चाहिए, वहां खर्च न करके दूसरी मद में अधिक खर्च करना।)
टका रोटी अब ले, चाहे तब ले
इतना कभी ले लो। इससे अधिक की आशा मत करो।
टका-सा जवाब दे दिया
साफ इन्कार कर दिया।
टका हो जिसके हाथ में, वह बड़ा है जात में
पैसेवाले का ही सम्मान सब जगह होता है।
टका का सारा खेल है
दुनिया के सब काम पैसे से ही होते हैं।
टके की मुर्गी, छः टके महसूल
जितने की चीज नहीं, उतने से अधिक उस पर खर्च हो जाना।
टके की लौंग, बानती खाय, कहो घर रहे कि जाय?
बनियों पर ताना है। वे प्रायः कंजूस होते हैं। उनकी स्त्री अगर दो पैसे रोज की लौंग खा जाए, तो काम कैसे चलेगा?
टके तीतर गइला पर, पांच रुपैया भइला पर
गरीब को कोई चीज़ दो पैसे में भी उतनी ही महंगी जान पडती है, जितनी अमीर को पाच रुपए मे।
गइला पर न होने पर। भइला पर=होने पर।
टट्टर खोल निखट्टू आया, (स्त्रि०)
अकर्मण्य पति के लिए उसकी स्त्री का कहना।
टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं
धोखा देते हैं। छिपकर बुरा काम करते हैं।
टट्टू को कोड़ा और ताजी को इशारा
मूर्ख मुश्किल से समझता है, समझदार इशारे से ही समझ जाता है।

ताजी = घोड़ों की एक किस्म; अरबी घोड़ा।

टपके का डर है

बारिश में घर के टपकने का डर है। जब किसी के मन में कोई ऐसा ख़ास डर समा जाए कि जिसकी वजह से वह कोई काम न कर सके, तब क०।

(इसकी कथा है कि एक बूढ़ा सिपाही, जिसने कभी भले दिन देखे थे, अपने सड़ियल टट्टू पर सवार हो कहीं जा रहा था। शाम को वह एक जंगल में जहां शेर, भालू आदि हिंसक जंतुओं का डर था, एक बुढ़िया की झोपड़ी मे ठहर गया और पूछने लगा कि यहां किसी बात का डर तो नही है। बुढ़िया बोली—सरकार, डर तो किसी बात का नहीं है, अगर है तो टपके का है। झोंपड़ी के पीछे एक शेर खड़ा यह सब सुन रहा था। उसने समझा कि 'टपका' कोई मुझसे भी ज़बर्दस्त जानवर है, जिसके सामने मेरे डर की कोई परवाह ही नही की गई। संयोगवश आधी रात को पानी बरसा, जिससे सिपाही का घोड़ा खूंटे से छूट गया। सिपाही अंधेरे में घोड़ा खोजने गया तो उसके हाथ शेर पड़ गया। वह उसे ही टट्टू समझ बांधकर झोंपड़ी ले आया और खूंटे से बांध दिया। शेर भी 'टपका' समझ उससे कुछ न बोला। सुबह होते ही यह बात तमाम में फैल गई कि किसी ने एक शेर को रस्सी से बांध रखा है। राजा ने जब यह ख़बर सुनी तो वह स्वयं उस दृश्य को देखने आए और सिपाही पर इतने प्रसन्न हुए कि उसे बहुत-सा इनाम देकर फ़ौज का सरदार बना दिया।)

टहल करो फ़कीर की, देवे तुम्है असीस।
रैन दिन। राज़ी रहो, जुग में बिस्वा बीस।

स्पष्ट।

टहल करो मां-बाप की, हो संपूरन आस।

या

टहल से जो फिर नरक उन्हीं का बास।

स्पष्ट।

टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी

काम कुछ न करना, मुफ्त का मांगना।

टहलिये को टहल सोहे, बहलिये को बहल सोहे

जिसका काम उसी को शोभा देता है।

टांका पाना मिल गया

समझौता हो गया, दो आदमियों में आपस का झगड़ा खत्म हो गया और वे फिर मित्र बन गए।

टांका पाना =कपड़े का जोड़, सीवन।

टांकी बज रही है

मकान तैयार हो रहा है। किसी की उन्नति देखकर क०।

(टांकी से पत्थर काटते-छांटते हैं और उसकी आवाज़ होती है।)

टांग उठे ना, चढ़ल चाहे हाथी

शक्ति से बाहर काम करने का प्रयास करना।

टांग के नीचे से निकाल दिया

नीचा दिखा दिया; काबू में कर लिया।

टांग पकड़ कर लाये और पूंछ पकड़ के बहा दिया

किसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करना।

टांटे से नाटा भला, जो देवे तुरत जवाब।
वह टांटा किस काम का, जो बरसों करे खराब।

टंटा (झगड़ा) करनेवाले से तो नट जानेवाला अच्छा। वह झगड़ा किस काम का जिससे समय नष्ट हो।

नाटा - वादे से पलट जानेवाला।

टाट, कामला, दोलड़ा, तीनों जात गुलाम
जित चाहे तित बैठकर, तुरत करो बिसराम। (ग्रा०)

टाट, कंबल और दोहर तीनों बड़े काम की चीज़ें हैं, जहां चाहे बिछा लो और आराम करो।

(इनके खराब होने का डर भी नही रहता।)

टाट कामले घर मां घाले, बाहर बतावे शाले दुशाले, (ग्रा०)

झूठी शेखी बघारनेवाले के लिए क०।

कामले =कंबल।

घर मां घाले=घर में खाने को नहीं।

टाट के अंगिया, मूंज की तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसी बनी ? (स्त्रि०)

(१) जब कोई औरत अपनी भद्दी पोशाक सबको दिखाती फिरे, तो उसको ताने में...।

(२) भद्दे और बेतुके काम के लिए भी व्यंग्य में कहा जा सकता है।

टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, मीत, धन, माल।
कोऊ संग न जात है, जब लै जिऊ निकाल।

मरने पर कुछ भी साथ नहीं जाता।
टायर=घोड़ा।

टायर भला न लांगड़ा, रूख भला न झांगड़ा

लंगडा घोड़ा अच्छा नहीं, और न कटीला पेड़ ही।

टाल न भूखे को कभी, जो दे तुझे खुदा।
आधी में से पास जो, उसे बांट कर खा।

स्पष्ट।

टाल बजा के मांगे भीख; उसका जोग रहा क्या ठीक?

जो घंटा बजाकर भीख मांगे उसकी साधना तो व्यर्थ है।
(घटा बजाकर मागनेवाले साधुओ पर व्यग्य।)

टाल बता उसको न तू, जिससे किया करार।
चाहे हो बैरी तेरा, चाहे होवे यार।

किसी के साथ वायदा करके उसे फिर धोखा नही देना चाहिए, चाहे वह शत्रु हो या मित्र।

टालमटोला मत करे, किये बचन भुगताय।
जो नर बचनों से फिरे, वह पत देत गंवाय।

वचन देकर पूरा करना चाहिए, टालना ठीक नही। वादाखिलाफी करनेवाले पर से लोगो का विश्वास उठ जाता है।

'टिकटिक' समझे 'आआ' समझे; कहे सुने से रहे खड़ा।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, अस मानुस के बैल भला।

जड़ बुद्धि मनुष्य के लिए क०।

टिकुला संबुर गेल तो खाने मे भो बज्जुर पड़ब (स्त्रि०)

कोई और आराम न मिले तो क्या भरपेट अन्न भी न मिलेगा? स्त्री अपने अकर्मण्य पति से कह रही है; कोई नौकर भी मालिक से कह सकता है।

टिड्डी का आना काल की निशानी, (कृ०)

क्योंकि टिड्डी जहां जाती है, वहां फ़सल नष्ट कर देती है।

टीमटाम की पगड़ी बांधी, वह भी सदका जोरू का।
नेक पाक का चौका दीना, गोबर गाय-गोरू का।

जोरू के दहेज में से कपड़ा लेकर बांकी पगड़ी बांध रखी है, और गाय के गोबर से लीपकर जगह को पवित्र करते हैं।
(अ-हिन्दुओं का हिन्दुओं पर कटाक्ष।)

टुक जिया तो क्या जिया

थोडे दिनों का जीवित रहना किस काम का?

टुक-टुक करके मन भर खावे, तनक बेगमा नाम बतावे, (स्त्रि०)

नाम तो सुकुमार बेगम है, पर थोड़ा-थोड़ा करके मन भर खा जाती है।

टुकड़ा तोड़ जवाब देना

(१) संक्षेप में जवाब देना। (२) साफ इन्कार कर देना। (३) ऐसा जवाब देना कि फिर कुछ कहा ही न जा सके।

टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए, (स्त्रि०)

ऐसा काम करना, जिससे केवल खाने को मिलता रहे; और कुछ लाभ ही न हो।

टुकड़े दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे जब मारन आया

कृतघ्न व्यक्ति।

टुकड़ों का पाला है

किसी के प्रति उपेक्षा और घृणा से क०।

टूट न रख ले बालके, सबसे मिलकर चाल।
टूटा ढोबर देत हैं गांव गली में डाल।

सबसे मिलकर चलना चाहिए, बिगाड़ करना ठीक नही।
जो टूट (बिगाड़) करता है, उसे लोग इस तरह त्याग देते हैं, जैसे टूटी हाडी गली में फेंक दी जाती है।

टूटले तेली, तो कमर में अधेली

बिगड़ी हालत में भी तेली की कमर में अधेली रहती है।
(तेली प्रायः संपन्न होते हैं।)

टूटा मत रह टोल सूं, राह भीर के बीच।
एक अकेले मनुख को, सूझे ऊंच न नीच।

यात्रा में या लड़ाई में अपने साथियों का संग नहीं

छोड़ना चाहिए। अकेला एक आदमी सब तरह के भले-बुरे की जांच नही कर सकता।
भीर=भीड़, विपत्ति, झगड़ा।

टूटी कमान से डरें नौ जने
टूटे हथियार से भी लोग डरते हैं।

टूटी का क्या जोड़ना? गांठ पड़े और न रहे
टूटी वस्तु कभी जुडती नहीं। (जोड़ने से) गांठ पड़ जाती है और फिर जुड़ने के बाद भी उसकी मज़बूती का क्या ठिकाना? मित्रों में झगड़ा हो जाने पर मेल फिर मुश्किल से होता है।

टूटी की क्या बूटी?
टूटी चीज जुड़ती नहीं। मौत की दवा नही।

टूटी की बूटी बता दो, हकीम जी!
दे० ऊ०।

टूटी टांग, पांव न हाथ, कहे 'चलूं घोड़ों के साथ'
ऐसा काम करने की चेष्टा करना, जिसे अधिक समर्थ भी न कर सकें।

टूटी बांह गले पड़े
बांह जब टूट जाती है, तो उसे डोरी व पट्टी के सहारे बाध कर गले मे लटका लेते है।
(जब कोई घर का आदमी अथवा सगा-संबंधी बिल्कुल गिरी हालत में हो जाता है, और उमसे किसी तरह पिड भी नही छूटता।)

टूटी है तो किसी से जुड़ती नही, और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं
(१) मैत्री या पारस्परिक हित-संबंध के लिए कहते है कि दो आदमियो के बीच अगर वह टूट गया है, तो फिर जुडता नही और नही टूटा तो उसे कोई तोड़ नही सकता।
(२) असाध्य रोगी को धैर्य बधाने को भी कहते है कि यदि आयु शेष है, तो कोई कुछ बिगाड़ नही सकता।

टूम कापड़े जिस घर पावें, एक छोड़ दस बइयर आवें
जहां पहिनने-ओढ़ने को मिले, वहा एक क्या दस औरते आ जाती हैं।
टूम कापड़ा=गहना कपड़ा। बइयर=स्त्री।

टूम बइयर की पत बंधावे, टूम तुझे धनवंत कहावे
गहनों से ही स्त्री की शोभा होती है, गहनों से ही लोग धनवान कहलाते हैं।

टूम बिना बइयर है ऐसी, बिन पानी के खेती जैसी
गहनों के बिना स्त्री ऐसी ही है, जैसे बिना पानी के खेती।

टेंट आंख में, मुंह खुरदीला, कहे 'पिया मोरा छैल छबीला'
कोई एक स्त्री दूसरी स्त्री के पति को लेकर ताना मार रही है। अपनी चीज़ की बहुत डीग हांकना।

टेंट, बेरवा काल के मीत, खायें किसान और गावें गीत, (कृ०)
जंगली फलो की प्रशंसा में, जिनसे दुर्भिक्ष में ग़रीबो का काम चलता है।
टेंट=करील नामक वृक्ष का फल, टेंटी।
बेरवा=बेर।

टेक उन्हीं की रक्खे साईं,
गरब, कपट नहिं जिनके माहीं।
भगवान उन्हीं की सहायता करता है, जिनमें अहं-कार और कपट नही होता।

टेर-टेर के रोवे, अपनी लाज खोवे
अपने नुकसान की बात किसी से न कहे, उससे इज्ज़त घटती है।

टोटा करदे मुंह नूं काला, टोटे बाल जगत दा साला, (पं०, व्या०)
घाटा होने से मुह काला होता है, अर्थात बदनामी होती है। जिसका दिवाला निकल जाता है, उसे सभी लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

टोटा टाला ना टले, जब लग मिटे न लेख।
साध कहे रे बालकं, लाख यतन कर देख।
स्पष्ट।

टोटे मारा बानिया, भर जोगी का भेस।
हांडे भिक्षा मांगता घर-घर देस-बिदेस।
बनिए को जब व्यापार में घाटा होता है, तो वह लोगों का रुपया देने के डर से साधु बन जाता है।

टोटे से हो घर का टीबा, टोटा गया तो खुला नसीबा

टोटे से घर बर्बाद हो जाता है, जब टोटा जाता रहता है, तो समझ लो; अब अच्छे दिन आ गए।

टोना टामक, टोटरू, छाने रहैं न भूल।
यूं परगट हो जगत मां, ज्यूं लश्कर की धूल।

टोना-टोटका या जादू-मंत्र छिपे नही रहते।

टोलन मां घर टोल भला, सब बाजन मां ढोल भला

सब मुहल्लों में घर का मुहल्ला ही अच्छा, अर्थात जहा अपना घर है वह मुहल्ला, और सब बाजों मे ढोल अच्छा।

गाव के उन आलसी व्यक्तियों का कहना, जो घर छोडकर कही जाना पसंद नही करते।

ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है

क्रोधी के सामने शान्त प्रकृतिवाले मनुष्य की हमेशा जीत होती है।

ठंडा है बरफ से भी, मीठा है जैसे ओला।
कुछ पास है तो दे जा, नहीं पी जा राहे मौला।

पानी पिलानेवाले कहा करते है।

ठंडी छांव जो बैठती, जल जाता वह रूख।
जलती बलती मै फिरूं, बन में देती कूक। (स्त्रि०)

किसी वियोगिनी अथवा बहुत ही बदनसीब की उक्ति।

ठग न देखे, देखे कलवार

ठग देखना हो तो कलवार देख ले। अर्थात कलवार पक्का ठग होता है। वह शराब मे पानी मिलाता है।

कलवार=शराब बेचनेवाला।

ठग न देखे, देखे कसाई, शेर न देखे, देखे बिलाई

इनकी प्रकृति एक-सी होती है। जैसा ठग वैसा कसाई, जैसा शेर वैसी बिल्ली।

ठठेरे ठठेरे बदलाई, (स्वं०)

लेन-देन के मामले में, अथवा साधारण तौर से भी जब कोई व्यक्ति दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा दूसरे ने उसके साथ किया; तब यह कहना कि भाई, यह तो ठठेरे-ठठेरे बदलाई की बात है। (एक ठठेरा आवश्यकता पड़ने पर दूसरे को बर्तन दे देता है और बदले में दूसरा बर्तन ले लेता है, मुनाफा नही लेता। उसी से कहा० बनी।)

ठांव गुन काजल, ठांव गुन कालख

एक ही वस्तु, किसी एक स्थान पर अच्छी और दूसरे स्थान पर बुरी जान पड़ती है। जो धुआं काजल बनकर नेत्रो की शोभा बढाता है, वही घर मे जम जाने पर कालिख समझा जाता है और साफ कर दिया जाता है।

(प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा पाती है।)

ठाकुर पत्थर, माला लक्कड़, गंगा जमुना पानी।
जब लग मन में सांच न उपजे, चारों वेद कहानी।

अगर मन मे विश्वास न हो, तो देवता पत्थर है, माला लकडी है, और गगा-जमुना का पानी साधारण पानी है। बिना श्रद्धा के धार्मिक आस्था काम नही देती। धर्म मे आस्था प्रधान है।

ठाली बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी में धरे

जब कोई केवल समय काटने के लिए व्यर्थ का काम करे, तब क०।

ठीक नहीं ठेके का काम; ठेका दो मत खोवो दाम

ठेके का काम अच्छा नही होता।

ठीकरा हाथ में होगा और भीख मांगता फिरेगा

एक प्रकार का शाप। किसी को कोसना।

ठीकरा हाथ में और उसमें बहत्तर छेद

कोसना। दे० ऊ०।

(उर्दू के मशहूर शायर मिर्ज़ा गालिब ने ठीकरे के बारे में एक रोचक घटना लिखी है। उन्होंने एक दिन अपने नौकर को ठीकरे में से अंगारे उठाकर चिलम मे रखते देखा। वह अपने मालिक के लिए तमाखू भर रहा था और बड़बड़ाता जाता था। मिर्ज़ा साहब ने उससे पूछा कि तू ठीकरे* के सामने क्या कह रहा था? नौकर बोला—यही कह

रहा था कि आठ महीने से तनख्वाह नहीं मिली, मैं खाऊं क्या ?

मिर्जा साहब ने फिर पूछा—ठीकरे ने तुझे क्या जवाब दिया? नौकर बोला—ठीकरे ने मुझसे कहा कि कोई फिक्र नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूं। अर्थात मुझे हाथ में लेकर भीख मांगना।)

ठीकरे का सुख, खरची का दुख

रहने को जगह तो बहुत, पर पैसे की तंगी।

(प्राय: वेश्याएं कहा करती हैं, जब उन्हें पूरी उजरत नहीं मिलती।)

ठेंगा थाम, लबेदे हजार, (पू०)

मोटे डंडे को ही संभालना चाहिए, पतले बेंत तो हजारों मिल जाएंगे। मजबूत का सहारा लेना चाहिए।

ठेका ले उस काम का, जो तुझसे हो ठीक

जिस काम को ठीक तौर से किया जा सके, उसी की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

ठेके का काम फीका

स्पष्ट।

ठेस लगे, बुद्ध बढ़े

नुकसान होने पर ही अक्ल आती है।

ठैर ठैर के चालिए, जब हो दूर पड़ाव।
डूब जात अधियाव में, दौड़ चलंती नाव।

काम सावधानी से धीरे-धीरे करना चाहिए, जल्दबाजी से हानि होती है।

अधियाव में—आधे रास्ते में।

(इस संबंध में कछुआ और खरगोश की कहानी प्रसिद्ध है। कछुआ धीमी चाल से चलकर बाजी जीत गया और खरगोश, जो दौड़कर चला था; हार गया।)

ठेंगे मार किया सिर गंजा, कहे 'मेरे हैं हाथ न पंजा'

डंडे मारकर सिर गंजा कर दिया और कहता है—मेरे हाथ और पंजे ही नहीं हैं। जब कोई अपनी हरकत से किसी को नुकसान पहुंचाए और यह कहकर कि मैं यह काम कर ही नहीं सकता, अपने को निर्दोष भी साबित करे; तब क०।

ठोंट चितेरा मन में झींके

लूला चित्रकार मन में पछताता है कि मैं तस्वीर नहीं बना सकता। जब कोई आदमी कारणवश किसी ऐसे काम को करने से वंचित हो जाता है, जिसे वह बहुत अच्छी तरह कर सकता है, अथवा जो उसके मन के बहुत निकट है; तब क०।

ठोक बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम।
बिगड़त नाहीं बालके, देख भाल का काम।

हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए, और देखभाल कर ही दाम देना चाहिए।

ठोकर खावे, बुद्ध पावे

दे०—ठेस लगे...।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़ें घर की सिल

जब कोई मनुष्य बाहर से चोट खाकर आए और घर में अपनी स्त्री अथवा दूसरे लोगों पर उसका गुस्सा उतारे, तब क०।

डढ़ियाला धन, (स्त्रि०)

लंबी दाढ़ीवाले पर व्यंग्य। पुत्र के लिए भी कहा जाता है।

डर न वहशत, उतार फिरी खिशतक, (स्त्रि०)

निर्लज्ज औरत।

खिशतक=(फा० खिश्तक) पायजामा।

डरा सो मरा

अक्सर छूत की बीमारियां फैलने पर लोगों को साहस बंधाने के लिए क०।

डरिए, रंडी, तेरे दीदे से।

गाली।

दीदा=आंख।

डरें लोमड़ी से, नाम दिलेर खां

कायर आदमी।

डरें लोमड़ी से, नाम शेर खां

दे० ऊ०।

डल्लू का दहसेरा।
सबसे निराली चाल।
(डल्लू नाम का कोई बनिया था, जो पसेरी की जगह दससेरा रक्खा करता था।)

डांड़ा सी पूंछी, बुड़हाने का रास्ता
(लोमड़ी की) बांस की तरह लबी पूछ है और बुड़हाने का रास्ता बहुत खराब है, कैसे तै किया जा सकेगा? काम करने के अयोग्य।
(बुडहाना किसी स्थान का नाम है।)

दाढ़ी खुदा का नूर है, (मु०)
मुसलमानों मे दाढी पवित्र मानी जाती है; इसी से क०।

डाबर डूबे जग तिरे, जग डूबे डाबर तिरे, (कृ०)
जब डाबर बरसात के कारण पानी से भर जाते है, तो संसार तर जाता है, अर्थात फसल अच्छी होने से लोग सुखी होते है, और जब जग डूबता है, अर्थात अकाल पडता है, तब डाबर तर जाते है; यानी उनमे फसल अच्छी होती है।
भाव यह है कि नीची ज़मीन के खेत ही हमेशा अच्छे होते है।

डायन को बच्चा सौंपना
महान मूर्खता है। वह तो उसका भेजा और कलेजा खा जाएगी।

डायन को भी दामाद प्यारा
अपनी लड़की के कारण। आशय यह कि मा को लड़की बहुत प्यारी होती है।

डायन खाय तौ मुंह लाल, न खाय तौ मुंह लाल
क्योकि उसके मुह से खून तो लगा ही रहता है, अथवा उसके चेहरे से भयानकता तो टपकती ही रहती है। बदनाम आदमी के लिए। चाहे बुरा काम करे या न करे, पर हर मौके पर बुराई उसे मिलती ही है।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है, (स्त्रि०)
दुष्ट से दुष्ट आदमी भी अपने पड़ोसियों का लिहाज़ करता है। जब कोई अपने ही लोगों को धोखा देता है।

डाल का चूका बंदर और बात का चूका आदमी, ये फिर नहीं संभलते
हानि उठाकर रहते हैं।
बात का चूका=जो वचन देकर पालन न करे।

डाल का टूटा
बिल्कुल ताज़ा (फल)।

डालते देर नहीं, सिर पर कोतवाल
ग़लत काम करते ही पकड़ा जाना।

डील डौल गुम्बज, आवाज़ दर फिस्स
देखने में मोटे-ताजे, पर आवाज़ बहुत धीमी।

डग-डुग बाजे, बहुत नीकी लागे; नौआ नेग मांगे उठा बैठी लागे, (स्त्रि०)
विवाह मे जब ढोल बजता है, तब तो बहुत अच्छा लगता है, पर नाई जब अपना हक मागता है, तो बगले झाकते है।

डूबते को तिनके का सहारा
डूबता आदमी तिनके को भी पकड लेता है। विपद्ग्रस्त को थोड़ा भी सहारा बहुत होता है।

डूबा बंस कबीर का उपजा पूत कमाल
ऐसी सतान का उत्पन्न होना, जो अपने पूर्वजो की चालढाल या धर्म को छोड दे।
(कहते हैं कबीर ने अपने पुत्र कमाल को बचपन मे यह उपदेश दिया था कि सब मनुष्यो को अपना भाई और सब स्त्रियो को मा, बहिन और लड़की के समान समझना चाहिए।
जब कमाल बड़े हुए, तो पिता ने उनसे विवाह करने के लिए कहा। कमाल ने उत्तर दिया—संसार मे मुझे मा, बहिन और बेटी छोड़कर और कोई स्त्री नही दीखती, जिसके साथ मैं विवाह करूं। उन्होने फिर विवाह नही किया और कबीर का वंश लोप हो गया। यह भी कथा है कि कमाल कबीर के वचनो का बहुत खंडन भी किया करते थे। उसी पर किसी ने उपर्युक्त बात कही है।)

डूबी, कंथ, भरोसे तेरे, (स्त्रि०)
जब किसी के भरोसे रहे, और उससे सहायता न मिलने के कारण हानि हो जाए; तब क०।

कंथ=कत; नाथ ।

डूबेगा भाड़ू का भाड़ू, रात समय ने देसं झाड़ू, (लो० वि०)

रात मे झाड़ू नही देनी चाहिए, हानि होती है।

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदी ही बनाते हैं, (मु०)

(१) अपने मन की करते हैं। अथवा

(२) निराली चाल चलते है।

डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते है

दे० ऊ०।

डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई, (स्त्रि०)

व्यर्थ का दिखावा।

डोम और चना, मुंह लगा बुरा

इसलिए कि डोम धृष्ट होता है और चना आदमी खाते-खाते बहुत खा जाता है, जिससे हानि होती है।

डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा

डोम एक गाने-बजानेवाली याचक जाति है। अकसर ये लोग बडे अश्लील गीत गाते है। इसीलिए कहा गया है।

डोम डोली, पाठक प्यादा

डोम तो डोली मे और पुरोहित पैदल। एक अशोभन कार्य। उस समय भी कहा जाता है, जब किसी मूर्ख मालिक को समझदार नौकर मिल जाए।

डोमनी का पूत चपनी बजाय,
अपनी जात आप ही जताय।

किसी का जातिगत स्वभाव नही जाता। डोमनी के लडके को ढोलकी बजाने को नही मिली, तो वह मिट्टी की चपनी ही बजाने लगा।

(जातपात पर आधारित विश्वास।)

डोमनी की लौंडो

गाली।

डोम, बनिया, पोस्ती, तीनों बेईमान

स्पष्ट। जातिवाद का जहर भरा वचन।

पोस्ती=अफ़ीमची।

डोली आई डोली आई, मेरे मन मे चाव;
डोली में से निकल पड़ा, भौंकड़ा बिलाव।

बच्चो की तुकबदी।

बहू जब सयानी और कुरूप आती है, तब क०।

डोली न कहार, बीबी भई हैं तैयार, (स्त्रि०)

कोई सवारी नही आई, कोई बुलाने नही आया, फिर भी बीबी जाने को तैयार।

किसी के यहा बिना बुलाए जाना।

ढडो आई बाल थुतराए

गदी और बेढगी औरत।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा

बेफिक्र के लिए, क०।

ढटीगर=उद्धत, आवारा।

लाहा=लाभ।

ढलती फिरती छांह है

मनुष्य की परिवर्तनशील स्थिति के लिए क०।

ढाक तले की फूहड़, महुवे तले की सुघड़, (स्त्रि०)

जो ढाक तले जाए, वह तो फूहड है और जो महुआ तले जाए वह सुघड, क्योकि ढाक के नीचे न तो छाया मिलती है और न कोई खाने योग्य पदार्थ, जब कि महुआ तले ये दोनो प्राप्त होते है।

ढाके के बंगाल, कूजे के कंगाल, (पू०)

जहा जो चीज़ बहुतायत से होती हो, उसका अभाव होना।

एक अनहोनी बात।

(ढाका मिट्टी के बर्तनो के लिए प्रसिद्ध है।)

कूजा झज्झर, सुराही।

ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड़ बंदीखाने, (पू०)

कायर आदमी। हथियार तो पास मे, पर लडने की हिम्मत नही।

ढाल बांधूं तलवार बांधूं, कसकै बांधूं फेटा।
बीच बजार में डाका मारूं तो बाप का बेटा।

चट आदमी।

ढूंढ लाओ, बता देंगे

बेवकूफ बनाना। टालमटोल करना।

ढेंड्स औ कद्दू, लानत ब हर दू, (फा०)
दोनों पर लानत।
जब दो आदमी आपस में लड़ रहे हों, और वे दोनों ही एक से बुरे हों, तब क०।

ढोरे मरे, न कौवा खाय
न तो ढोर ही मरे, और न कौवा उन्हें खा ही सके। व्यर्थ की आशा।

ढोल के भीतर पोल
(१) (किसी स्थान पर) ऊपरी ठाट-बाट तो अच्छा पर भीतर धांधलबाजी।
(२) ऊपरी शानशौकत बहुत, पर भीतर खोखलापन।

ढाल न डफ, हर हर गीत
बिना साज-सामान के काम।

ढोलबाज दमाम्मे बाजे, (स्त्रि०)
किसी मनुष्य के बुरे चालचलन की पहले थोडी और बाद में बहुत बदनामी होना।

ढोवे के टोकरी, गावे के गीत, (पू०)
(१) हैसियत से बाहर काम करना।
(२) छोटे होकर बड़ की बराबरी करना।

त

तंगी के साथ फराख़ी और फराख़ी के साथ तंगी लगी हुई है
दुख के साथ सुख और सुख के साथ दुख लगा हुआ है।
तंगी=संकीर्णता। ग़रीबी।
फराख़ी=विस्तार। अमीरी।

तंगी गई, फराख़ी आई
ग़रीबी गई, अमीरी आई।

तई की तेरी, खपड़ी की मेरी
तवे की रोटी तेरी, बर्तन की मेरी।
अपना ही मतलब देखना।

तक तिरिया को आपनी, पर तिरिया मत ताक।
पर नारी के ताकने, पड़े सीस पर ख़ाक।
पराई स्त्री को बुरी नज़र से मत देखो।

तकदीर के आगे नहीं तदबीर की चलती
भाग्य के आगे उद्योग काम नहीं करता।

तकदीर के लिखे को तदबीर क्या करे।
गर हाकिम ख़फ़ा हो, वज़ीर क्या करे।
स्पष्ट।

तकदीर सीधी है तो सब कुछ है
भाग्य अनुकूल होने से सब काम बनते हैं।

तकदीरों बाज़ी है
(१) जिसका भाग्य प्रबल होगा उसी की जीत होगी। अथवा (२) देखें जीत किसकी होती है।

तकले का-सा बल निकल गया
जब पिटने या सजा पाने पर किसी की अक्ल ठिकाने आ जाए, तब क०।
तकला=चरखे मे लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता है।
बल=ऐंठन।

तकल्लुफ़ में रेल चल दी
ज्यादा तकल्लुफ से नुकसान होता है।
(इस पर चुटकुला है कि दो शरीफ आदमी कही बाहर जाने के लिए स्टेशन पर पहुचे और टिकट कटा लिये। रेल भी प्लेटफार्म पर आ पहुंची। एक ने दूसरे के प्रति शिष्टाचार दिखाने के लिए कहा—हज़रत सवार हूजिए। दूसरे ने कहा—नहीं, क़िबला पहले आप। पहले ने कहा—नही, नही, पहले आप बैठिए, तब मैं बैठूगा। आपस के इस शिष्टाचार में तब तक रेल छूट गई।)

तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर
स्पष्ट। दे० ऊ०।

तकाज़े का हुक्का भी नहीं पिया जाता
हुक्का भी मांगकर नहीं पीना चाहिए। उधार की चीज बुरी होती है।

तका पराया हाथ और गया नरक
(१) दूसरे के पैसे पर नज़र डालना बुरा है। अथवा

(२) दूसरे का सहारा अच्छा नहीं।

तख़्ती पर तख़्ती मियां जी की आई कमबख़्ती, (लो० वि०)

तुकबंदी। मक़तब में पढ़नेवाले लड़के कहा करते हैं। पट्टी पर पट्टी रखे जाने को लड़के मास्टर के लिए हानिकारक समझते हैं।

तजल्ली को तक़रार नहीं

प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की जरूरत नहीं।

तड़के उठ कर खाट से, छोड़-छाड़ सब काम।
माला लेकर हाथ में, जप साईं का नाम।

स्पष्ट।

तड़के का भूला सांझ को आये, तो भूला नहीं कहलाता

(१) सबेरे की भूली हुई बात अगर शाम तक याद आ जाए, तो वह भूली नहीं कहलाती। अथवा (२) सबेरे का खोया हुआ आदमी शाम तक घर लौट आए, तो वह खोया हुआ नही कहलाता। जब कोई मनुष्य बुरे रास्ते पर जाकर बाद में संभल जाए, तब क०।

ततड़ी ने दिया, जनम जली ने खाया, जीभ जलो न सवाद पाया, (स्त्रि०)

जब दो एक से अभागे एक दूसरे की सहायता करने बैठें, तो उससे कोई लाभ नही होता।

(जब कोई बहुत कम चीज़ खाने को दे, तब भी क०।)

ततड़ी जली हुई; दुख से पीड़ित।

तत्ता कौर निगलने का न उगलने का

धर्म संकट में पड़ना।

तत्ती खिचड़ी घी न पाया, अब का सियाला यूं ही गंवाया

अब का जाड़ा यों ही बीत गया, गरम-गरम खिचड़ी के साथ घी खाने को नही मिला। किसी ऐसे मनुष्य का कथन जो खाने का शौकीन हो, पर पैसे से तंग है।

तन उजला, मन सांवला, बगुले का सा भेक।
तोसें तो कागा भला, बाहर भीतर एक।

स्पष्ट। धूर्त्त या कपटी।

तन कसरत में, मन औरत में

दो परस्पर विपरीत काम एक साथ नहीं हो सकते। अथवा नहीं करना चाहिए।

तन का बैरी ताप है, मन का बैरी नेहु।
जिस तन में ये दो रमें, तो गये जीव अरु देह।

स्पष्ट।

ताप=ज्वर।

तन की कर ले तुनतुनी और मन के कर ले तार।
फिर अस गा हरिनाम के, जो तुरत मिले करतार।

अपने शरीर रूपी इकतारे में मन रूपी तार लगाकर ईश्वर का गुणगान कर, तो भगवान तुझे शीघ्र मिलेंगे। भक्तों का कहना।

तन की तनक सराय में, नेक न पावो चैन।
सांस नकारा कूंच का, बाजत है दिन रैन।

मौत कब आ जाए, कुछ ठीक नहीं।

तनक=छोटी।

नकारा=नगाड़ा।

तन को कपड़ा, न पेट को रोटी

बहुत दयनीय हालत।

तन गुदड़ी, मन धागा, कोई कुछ ही लखे, मन लागा

फक्कड़ों का कहना।

तन तकिया मन बिसराम, जहां पड़ रहे वहीं आराम

शरीर तो तकिया है, और तन है सराय, बस जहां लेट रहे, वही आनंद है। फक्कड़ों का कहना।

तन ताजा तो कलंदर राजा

जब पेट भरा होता है, तो फ़कीर भी अपने को राजा समझता है। कलंदर एक प्रकार के मुसलमान फकीर होते हैं।

तन दे, मन ले

मेहनत से काम करो, तो दूसरा आदमी प्रसन्न होगा।

तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत है

सबसे अच्छी वस्तु है।

तन पर चीर न घर मां नाज, दद-ससुरे का रोपा काज

बदन पर कपड़ा नहीं और घर में अनाज नहीं, फिर भी ददिया ससुर का श्राद्ध करने की ठानी है। सामर्थ्य से बाहर काम करना।

तन पर सोहे कापड़ा और रन सोहे रनजीत।
बीर पुरुष वो ही भला (जो) सबसे राखे प्रीत।

कपड़ा शरीर पर शोभा देता है, और बहादुर लड़ाई के

मैदान में। सच्चा वीर वही है, जो सब से प्रेम रखे।

तन पिंजरा, मन तीतरा; सांस जीव का मूल।
जब तीतर उड़ जात है, तो होजा पिंजर धूल।

स्पष्ट।

तन पुतला है खाक़ का, इसे देख मत भूल।
इक दिन ऐसा होयगा, मिले धूल में धूल।

शरीर क्षणभंगुर है।

तन फूहड़ का भैंस सूं भारी; कहे 'कहो मोहे नाजो प्यारी,' (ग्रा०)

देखने में तो फूहड़ औरत भैंस जैसी है और कहती है कि मुझे 'नाजो प्यारी' कहकर बुलाओ। अपने रूप-सौन्दर्य का झूठा गर्व।

नाजो प्रायः दुबली-पतली और सुकुमार लड़की से ही कहते है।

तन मिला तो क्या हुआ, मन की बुझी न प्यास।
जैसे सीप समुद्र में, करे त्रास त्रास।

स्पष्ट।

तन लगी घुपड़ी, तो बला छाये झुपड़ी

ज़रूरत के वक्त ही किसी चीज़ की कमी महसूस होती है। (कथा है कि एक बुढ़िया रात में जाड़ा लगने पर रोज सोच लेती थी कि सुबह होते ही झोपड़ी छा लूगी, पर सुबह होने पर जब धूप निकली तो वह अपना इरादा बदल देती।)

तन सीतल हो सोत सूं, और मन सीतल हो मीत सूं

स्पष्ट।

सीत शीत; ठंडक।

तन सुखाय पिंजर करें, धरै रैन दिन ध्यान।
तुलसी मिटै न बासना, बिना बिचारे ज्ञान।

ज्ञान के बिना वासनाएं नहीं मिटतीं।

तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है

शरीर के स्वस्थ रहने से ही मन प्रसन्न रहता है।

तन सुखी तो मन सुखी

दे० ऊ०।

तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर जीन धरो बाबा।
अब मौत नकारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

बुढ़ापे के लिए कहा गया है।

तनूरवाली और अल्लाह राजी, (मु०)

तंदूरवाले से रोटी मांगकर खाना और मौज करना। फ़क़ीरों का कहना।

(मुसलमान फकीर प्रायः नियम से तंदूरवाले के पास जाकर रोटी मागते हैं। उसी से कहावत की सार्थकता।)

तनूर तदूर, रोटी सेकने की एक प्रकार की भट्टी।

तपे जेठ तो बरखा हो भरपेट, (कृ०)

जेठ (जून) में खूब गर्मी पडने से वर्षा अच्छी होती है।

तपे नखत मृगसिरा जोय, तब बरखा जग पूरन होय, (कृ०)

मृगशिरा नक्षत्र मे अगर खूब गर्मी पड़े, तो वर्षा ज्यादा होती है। (मृगशिरा एक चान्द्र नक्षत्र है, जो जुलाई अगस्त मे लगता है।)

तब लग झूठ न बोलिये, जब लग पार बसाय

जब तक वश चले झूठ नहीं बोलना चाहिए। विवशता की बात दूसरी है।

तमाचा मारे मुंह लाल रखते है

ऊपरी हालत को ठीक रखकर अपनी हीन स्थिति को छिपाने की कोशिश करना।

तमा रा सेह हरफ अस्त हर सेह तिही, (फ़ा०)

तमा (ईर्ष्या) शब्द में तीन अक्षर हैं और तीनों ही नुक्तो से शून्य हैं।

फारसी में 'तमा' शब्द के तोय, मीम, और ऐन इन तीनो अक्षरो में नुक्ता नही लगता। उससे कहावत का भाव यह हुआ कि लोभी या ईर्ष्यालु मनुष्य के पास कभी पैसा इकट्ठा नही होता।

तरकश में तो तीर नहीं, पर शरमा-शरमी लड़ते हैं

सफलता की आशा न होने पर भी अपनी शर्म रखने के लिए कोई काम करना। उर्दू के किसी शायर ने यह वास्तव में आंखों के सबध में कहा है।

तरवर आछा छांवला, और रूप सुहाना सांवला

वृक्ष छायादार अच्छा, और रूप सांवला।

सांवला=न बहुत गोरा न बहुत काला; गेहुंआ।

तराजू से खड़े होकर न तोलो, बरकत जाती है, (लो० वि०)
तराजू से खड़े होकर नही तोलना चाहिए, हानि होती है।

तल धार, ऊपर धार
मूसलाधार पानी बरसना।

तल मुंड़िया, पताल ढुंढ़िया
नीचा सिर किए पाताल खोजता है।
बहुत बड़े धूर्त्त के लिए क०, जो हमेशा कुछ-न-कुछ शरारत सोचा करता है।

तलवरिया वाको मत कहो, जो खांड़ा लेकर हाथ। रन से भागे एकला, छोड़ टोल का साथ।
जो लडाई के मैदान से अपने साथियों को छोड़कर भागे, उसे सिपाही नही कहना चाहिए।
तलवरिया तलवार पकड़नेवाला; योद्धा।

तलवरिया वो ही भला, जो रन में हाथ दिखाय। बैरी के टुकड़े करे, और आप साफ़ बच जाय।
स्पष्ट।

तलवार का खेत हरा नहीं होता
(१) लडाई से जो खेत नष्ट हो जाता है, वह फिर हरा नही होता।
(२) सिपाही की खेती कभी सफल नही होती। क्योकि उसे फ़ौज में रहना पड़ता है, खेत कौन देखे ?
(३) पशुबल मे बरकत नही।

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता
कोई ऐसी बात कह दे, जो मन पर असर कर जाए; तो वह कभी नही भूलती।

तलवार की आंच के सामने कोई बिरला ही ठहरता है
कठिन परीक्षा का मुकाबला थोड़े लोग ही कर पाते हैं।

तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार
क्योंकि जिसका भी अहसान लो, वह हर मौक़े पर अहसान जताकर दबाता है।

तलवों की-सी कहूं या जीभ की-सी
(किस्सा है कि किसी हाकिम ने एक मुकदमे में वादी और प्रतिवादी, दोनों ही से रिश्वत ले ली। एक ने उसे मिठाई और फल भेंट किए और दूसरे ने चुपके से उसके पैर तले एक अशर्फी खिसका दी। तब वह बडी चिंता में पड़ गया और ऊपर की बात सोचने लगा।)
रिश्वत या घूस खानेवाले अकसर इस तरह की कठिनाई मे पड़ जाते हैं। कहा० उसी पर लागू होती है।

तलवों से लगी, सिर में से निकल गई
क्रोध से भड़क उठना।

तलवों से लगी है
(१) बहुत गुस्से में हैं, चैन नही पड़ रहा है, बात दिल पर असर कर गई है।
(२) वेश्या के लिए भी प्रयुक्त कि वह पीछा नही छोड़ती।

तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर
कोई बुरी खबर सुनकर स्तब्ध रह जाना।

तले के दांत तले रह गये, ऊपर के ऊपर
मुंह खुला ही रह गया, आश्चर्य-चकित हो गए।

तले घेरा, ऊपर सेहरा
कोरी शान।
(घेरा से यहा मतलब साफ मैदान से है।)

तले टांग, ऊपर मांग
बुरी हालत हो जाना।
मांग=सिर; स्त्री के सिर से मतलब है, जिसमें माग कढ़ी होती है।

तले धरती, ऊपर राम
किसी असहाय का कहना।

तले पड़ी का मोल क्या
(१) सरल स्वभाव की स्त्री का कहना।
(२) जो वस्तु अपने अधिकार मे होती है, उसका कोई मूल्य नही होता।
(३) गई-गुजरी बात की चर्चा में समय नष्ट करना ठीक नही।

तवा बढ़ा और जीव बढ़ा
भोजन मिलने की उम्मीद हुई, और चित्त प्रसन्न हुआ।

तवा चढ़ा बैठी मिसुरानी, घर में नाज, अगन ना पानी

बिना साज-सरंजाम के ही काम की तैयारी।

मिसरानी = भोजन बनानेवाली ब्राह्मणी।

तवा, तगारी, आग, जल, अन, ईंधन जित होय।
बारा झून उजाड़ में भूखे मनुख न रोय।

घने जंगल में भी यदि ये सब चीजें मिल जाएं, तो वहां भी मनुष्य भूखों नही मर सकता।

तगारी = चूल्हा।

तवा न कुंडा न चुलहारी, कहे नार मैं हूं भटियारी, (स्त्रि०)

न तो तवा है, न कुंडा है, न चूल्हा ही है, फिर भी औरत अपने को भटियारिन बताती है।

(१) कोरी शेखी,

(२) अपने विषय में झूठी बात।

तवा न तगारी; काहे की भटियारी

स्पष्ट। दे० ऊ०।

तवायफ़ के बिछौने पर बना है काम सोने का।
न ठहरेगा, मुलम्मा है, अबस है जर के खाने का।

वेश्या के सबंध में कहा गया है।

अबस = (अ०) व्यर्थ। ज़र = संपत्ति; धन।

तवे की तेरी, तगारी की मेरी

अपना ही मतलब देखना।

तवे की तेरी, हाथ की मेरी

दे० ऊ०।

तवे पर की बूंद

क्षणस्थायी, अथवा ऐसी वस्तु जो किसी काम की न हो।

(भोजन बनाते समय स्त्रियां तवा गरम हुआ या नहीं, यह जानने के लिए उस पर पानी की बूंद डालती हैं। यदि वह बूंद छन्न होकर तुरंत सूख जाए तो तवा गरम हुआ समझा जाता है। उसी से उक्त मुहावरा बना।)

तबेले की बला बंदर के सिर

सबकी मुसीबत किसी एक के सिर।

(लोगों का विश्वास है कि तबेले अर्थात अस्तबल में यदि बंदर बांध दिया जाए, तो घोड़ों के सब रोग बंदर को लग जाते हैं, और घोड़े तन्दुरुस्त रहते हैं। इस उद्देश्य से बड़े अस्तबल में प्रायः बंदर बांध देते हैं; उसी प्रथा पर कहा० आधारित है।)

तसबीह फेरूं, किस को घेरूं, (मु०)

माला फेर रहे हैं, और मन में सोच रहे हैं, आज किसकी जेब तराशूं? बगला भगत की उक्ति या उस पर व्यंग्य।

तस मुकुंद तस पावन घोड़ी, बिध ने आन मिलाई जोड़ी, (पू०)

दोनो एक से (ऐबवाले)।

तसलवा तोर कि मोर,

तसला तेरा है या मेरा? जबर्दस्ती किसी की चीज़ पर कब्जा जमाना।

(कहते हैं कि किसी समय मिथिला में घोर अकाल पडा। लोग एक दूसरे का छीनकर खाने लगे। कोई अगर भात बनाता, तो दो-चार आदमी उसके पास जाकर कहते थे कि 'तसला तोर कि मोर।' यदि वह 'तोर' अर्थात 'तेरा' कहता था, तो उसे माफ कर देते, अन्यथा ('मोर' कहने से) छीन कर खा लेते थे।)

तांत बाजी, राग पाया

तार बजा और राग समझ मे आ गया।

(आदमी के मुंह से बात निकलते ही उसकी योग्यता या उसके मन की स्थिति का पता चल जाता है।)

तांत सारंगी का तार।

तांत-सी देह, पांव न हाथ, लड़न चली सूरन के साथ

शक्ति से बाहर काम करने का दुस्साहस।

तांबा देखे चीतना, मन देखे व्योपार, (व्य०)

पैसा देखकर ही सौदा तै होता है, और आदमी देखकर ही व्यापार किया जाता है।

ताक झांककर चाल मत, यह है बुरा सुभाव।
जार कहें या चोरटा, या फिर ऊदबिलाव।

स्पष्ट।

जार = परस्त्रीगामी।

ताकत कमर में चाहिए औलाद के लिए।
रखते नहीं हैं सिर्फ़ भरोसा मदार का।

अपने बूते से ही सब काम करना चाहिए, किसी का भरोसा नहीं।

(मदार साहब मुसलमानों के एक पहुंचे हुए संत हो गए हैं। मकनपुर में उनकी समाधि है।)

ताक पर बैठा उल्लू, मांगे भर-भर चुल्लू
ऐसे नीच आदमी के लिए क०, जो किसी बड़े ओहदे पर पहुचकर अपने से बड़ों पर हुक्म चलाए।

ताजी को मारा और तुरकी कांपा
एक पर रोब जमा लेने से दूसरे पर भी रोब जम जाता है।
(ताजी और तुरकी घोड़ों की जातियां है।)

ताजी मार खाय तुरकी आश पाय
योग्य पुरुष तो कष्ट उठाए और नालायक मौज करें।
आश — (फा०) भोजन।

ताज़ी में कारीगरां मुआफ़, (फा०)
कारीगर अगर किसी का अदब करना भूल जाए, तो उसका ख्याल नही करना चाहिए।

ताता, तीता, आमला, तीनों धात बिनास
गरम, चरपरी और खट्टी चीजे स्वास्थ्य को हानि पहुंचाती है।
धात धातु, शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।

ताते दूध बिलार नाचे
गरम दूध देखकर बिल्ली नाचती है। परेशान होती है, क्योकि गरम दूध पी नही सकती।

ताना बाना, सूत पुराना
ताना और बाना दोनो ही पुराने सूत के है। व्यर्थ का परिश्रम।

तानाशाह दीवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना
(१) तानाशाह मूर्ख है, जो अपना ठीक हिसाब नही रखते, बाद में फिर झंझट में फंसते है। अथवा (२) तानाशाह दीवान को चिट्ठी या परवाना लिखने की जरूरत नही पड़ती। उनका ज़बानी हुक्म ही परवाना है।

तानी घाट कि बानी घाट?
ताने (के सूत) में कमी हो गई या बाने में? त्रुटि किस ओर है? दोनों ओर या एक ओर?

तामझाम लगे
लाओ तामझाम। झूठी या व्यर्थ की शान दिखाना।
(कथा है कि एक मूर्ख को कही से एक पालकी मिल गई। वह हर काम के लिए उसका उपयोग करता। यहां तक कि बाज़ार में सौदा लेने जाता, तो पालकी पर बैठकर। उसकी स्त्री जब कहती: 'मिर्च नहीं है' तो वह कहता—'तामझाम लगे।' वह जब फिर कहती—'नमक मंगाना तो भूल ही गई।' तो वह तुरंत कहता—'तामझाम लगे।' प्रायः मूर्खतापूर्ण दंभ के लिए कहावत का प्रयोग होता है।)

ताल उझल कर उझले बयार, जब बरसा हो पूरंधार, (कृ०)
खूब ज़ोर की वर्षा होने पर तालाबों और खेतों में पानी बह निकलता है।
अथवा तालाबों और खेतो में जब पानी उमड़ पड़े, तो समझो कि खूब ज़ोर की वर्षा हुई।

ताल तो भोपाल ताल और सब तलैयां
भोपाल के ताल की प्रशंसा में।
(भोपाल वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी है। वहां का ताल प्रसिद्ध है। उक्त कहावत पूरी इस प्रकार है—ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया। गढ तो चित्तौरगढ़ और सब गढैयां। राजा तो छत्रसाल और सब रजैयां। रानी तो कमलापत और सब रनैयां।

ताल न तलैया, बोओ सिंघाड़े भैया, (कृ०)
बिना साधन और सामान के काम।

ताल में चमके ताल मछरिया रन चमके तरवार।
तंबुआ चमके सैयां पगड़िया, सेज पै बिंदिया हमार।
ताल में तो मछली चमकती है, और युद्धक्षेत्र में तलवार, (लड़ाई के) तंबू में तो स्वामी की पगड़ी चमकती है, और सेज पर मेरे माथे की बिन्दी। अपने-अपने स्थान पर सब वस्तुएं शोभा पाती है।

ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय।
मरे पुरानी पीत को, चुन-चुन कंकड़ खाय।
स्पष्ट। सच्ची लगन का उदाहरण।
पटपर=समतल, चौरस।

ताल से तलैया गहरी, सांप से संपोला जहरी

कभी-कभी बेटा बाप से भी बढ़कर निकलता है।

तालियां बजा ले बच्चो, ब्याह होगा

किसी बात की खुशी मनाने के लिए हँसी में बच्चो से क०।

ताली दोऊ कर बाजे

दो के बिना लड़ाई नही होती।

दे०—एक हाथ. . .।

ताली बिन कैसा ताला, जोरू बिन कैसा साला

स्पष्ट।

तावल मत कर कार मां धीरा धीर बना।
ताता भोजन बालके देवत जीभ जला।

काम मे उतावली नही करनी चाहिए।

तावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा

उतावले को पागल समझना चाहिए। जो धैर्य से काम ले, वही गभीर है।

ताश पर मूंज का बखिया, (स्त्रि०)

असगत काम।

ताँश—एक प्रकार का सलमे-सितारे का रेशमी कपडा।

तित्तर बित्तर हो गये, सगर डोम के काम।
निमड़ गए जजमान, जब गांठ गिरह के दाम।

पैसे के विना सब काम गडबड हो रहा है, किसी डोम याचक का अपने जजम ा से क०।

तिनका उतारे का अहसान होता है

छोटे से छोटे काम का अहसान माना जाता है। सिर पर से कोई तिनका अलग कर दे, तो उसका भी अहसान है।

तिनका गिरा गयंद मुख, नेक न घटो अहार।
सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार।

हाथी के मुह से तिनका (भोजन का कण) नीचे गिरने पर उसके आहार मे कोई कमी नही हो जाती। चीटी उसे उठाकर ले जाती है, जिससे उसके परिवार का पालन होता है।

बड़े आदमियो के लिए जो बेकार हो जाती है, छोटों का उसी चीज से काम चलता है।

गयद—हाथी। पिपीलिका—चीटी।

तिनका हो तो तोड़ लूं, पीत न तोड़ी जाय।
पीत लगत टूटत नहीं, जब लग मौत न आय।

स्पष्ट।

तिनके की ओट पहाड

आख के सामने तिनका रखने से पहाड़ भी छिप जाता है।

(१) कभी-कभी बहुत छोटे कारण से ही बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

(२) छोटी चीज के पीछे कोई बडा रहस्य छिपा रहता है।

तिनके की चटाई, नौ बीघा फैलाई

जितना काम किया, उससे अधिक करने का दिखावा करना।

तिरिया चरित्र और चोर की घात; पाई पड़े ना, कह गये नाथ

स्पष्ट।

तिरिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मार के सती होय

स्त्री के चरित्र को समझना बडा कठिन है, वह अपने पति को मार कर फिर उसके साथ सती होती है, अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए।

(यह पुरुष-प्रधान समाज की कहावत है। पुरुष भी ऐसे होते है।)

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान

स्त्रिया धनुष की तरह होती हैं, उन्हे जहा चाहो, वहा झुका लो या जितना चाहो उतना झुका लो। (यह पुरुषो का दभ सूचक है।)

तिरिया तुझ में तीन गुन, अवगुन हैं लख चार।
मंगल गावे, सत रचे, और कोखन उपजें लाल।

स्त्री मे तीन गुण और लाखो अवगुण भरे है। वह मंगलगीत गाती है, पति के साथ सती होती है और उसकी कोख से वीर पुत्र उत्पन्न होते हैं।

तिरिया तुझसे जो कहे, भूल न तू वह मान।
तिरिया मत पर जो चले, वह नर है निरज्ञान।

स्त्री जो कुछ कहे, उसे कभी नही मानना चाहिए।

जो स्त्री की सलाह पर चलता है, वह मूर्ख है। पुरुषप्रधान समाज की मूर्खतापूर्ण मान्यता।
मूल=बिल्कुल।

तिरिया तेरह, मर्द अठारह
लड़की की उम्र अगर तेरह हो, तो लड़के की अठारह होनी चाहिए। विवाह के लिए यह जोड़ ठीक रहता है।

तिरिया तो है शोभा घर की, जो हो लाज रखावा नर की
स्पष्ट।

तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान।
जैसे हाथ लिखेर का, कांपत हो नुक़सान।
स्पष्ट।
लिखेर=लिखनेवाला; चितेरा।

तिरिया पुरख बिन है दुखी, जैसे अन बिन देह।
जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती बिन मेह।
स्पष्ट।
पुरख=पुरुष।
जीवड़ा=जी; हृदय।

तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राहबटाऊ होवे जैसा
स्त्री के बिना पुरुष वैसा ही है जैसा राह-चलता रास्ता-गीर। वह बेठिकाने का होता है।

तिरिया बिस की बेल है, या सूं बचकर चाल।
याका नेहा खोवत है, दीन, धरम, धन माल।
स्पष्ट। (पुरुषप्रधान समाज की दंभोक्ति।)

तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा संग करे भलाई
स्पष्ट।

तिरिया भी नर बिन है ऐसी, बिना धनी के खेती जैसी
पुरुष के बिना स्त्री वैसे ही है जैसे बिना मालिक के खेती नष्ट हो जाती है।

तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोवे मेह बिना, (कृ०)
स्पष्ट।

तिल की ओझल पहाड़
दे०—तिनके की...।

तिल-गुड़ भोजन, तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे कड़ुवाई
तिल और गुड़ के भोजन और मुसलमान की मित्रता ये पहले तो अच्छे लगते हैं, पर बाद में कड़वाहट पैदा करते हैं। यह कहावत मुसलमान मित्र पर कोई चिरन्तन सत्य नहीं। हिन्दू मित्र भी धोखेबाज़ हो सकते हैं।

तिलचोर सो बज्जुर चोर
चोरी-चोरी सब बराबर। छोटी चीज़ चुरानेवाले को भी शातिर चोर समझना चाहिए।
बज्जुर=वज्र जैसा, अर्थात बहुत बड़ा।

तिल, तीखुर, दाना, घी शक्कर में साना; खाय बूढ़ा हो जवाना
तिल, तवाखीर और पोस्तादाना इन तीन को घी शक्कर के साथ खाने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है। (स्वास्थ्य का नुसखा।)

तिल रहे तो तेल निकले
तेल तो तिलों से ही निकलता है; अर्थात पूंजी के सुरक्षित रहने से ही कोई व्यापार चल सकता है। (ग्राहक जब किसी चीज़ के दाम कम करना चाहता है और उसमें कमी की गुंजाइश नहीं होती, तब प्रायः दूकानदार कहा करते हैं।)

तीज पड़े खेत में बीज, (कृ०)
सावन की तीज को खेत में बीज पड़ता है। (सावन अर्थात जुलाई के महीने में खरीफ़ की बुवाई होती है।)

तीतर के मुंह लच्छमी
हाकिम की जबान में सब कुछ है; वह जो कहेगा, वही होगा, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। (तीतर की बोली से शकुन विचारते हैं। उसी से कहावत बनी।)

तीतर बायें बोल जा तो सगर कार हो ठीक।
दाहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख। (लो० वि०)
पक्षी शकुन। तीतर का बाईं ओर बोलना शुभ और दाहिनी ओर बोलना अशुभ होता है।

'तीन कचौरी, नौ बराती, खाओ चूरमचूर।'
'अये, घरबसी, तेरे ब्याह है या लूटमलूट।'
'बंदी जब करती है जब ऐसा ही करते,
किसी के यहां ब्याह है, मालकिन कहती है—'नौ

बराती, और तीन कचौड़िया हैं, लो, खूब डटकर खाओ।' तब उसकी यह उदारता देखकर दूसरी औरत कहती है कि 'अए घरबसी ! तेरे यहा ब्याह है या लूट मची है यानी तू इतना अनापसनाप खर्च कर रही है।' तब वह जवाब देती है कि 'मैं तो जब करती हूं, तब ऐसा ही करती हू।'
(इन पक्तियो मे किसी कजूस के घर की दावत का मजाक उड़ाया गया है।)

तीन का टट्टू तेरह का जीन
जितने की कोई चीज नही, उसके लवाजमे मे उससे ज्यादा का खर्च।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है, (मु०)
अपराध करके जब कोई माफी मागे, तब प्राय वह कहता है।
बख्शता है माफ करता है।

तीन टांग की घोड़ी, नौ मन की लदनी
किसी अयोग्य को कोई बडा काम सौप देना।

तीन तिकट महा बिकट, चार का मुंह काला, पाच हों तो भाला
स्त्रियो का विश्वास। तीन और चार की सख्या बुरी होती है, पाच तो बहुत ही बुरी सख्या है।

तीन तिरहुतिया मिले, पकना रह गया
जहा तीन तिरहुतिये इकट्ठे हो जाएं, वहां भोजन नही बन पाता।
(मैथिल ब्राह्मणो मे छुआछूत बहुत मानते है, उसी पर कटाक्ष है।)

तीन तिताला, चौथे का मुंह काला
बच्चो की तुकबंदी।

तीन तेरह हो गये
तितर-बितर हो गए। बर्बाद हो गए।

तीन थान, चौथा मैदान
स्थान की कमी होने पर क०।
थान—ढोरो के बधने की जगह; स्थान।

तीन थान, चौथी जान, उनका अल्लाह निगहबान
तीन लड़के, चौथा मैं, उनको ईश्वर रक्षा करे। अपनी असहाय अवस्था प्रकट करने को कह रहा है।
(थान का अर्थ अदद भी होता है, जैसे कपडे के तीन थान। यहा लडकों से अभिप्राय है।)

तीन दिन क़ब्र में भी भारी होते हैं, (मु०)
स्पष्ट।
(मुसलमानो का विश्वास है कि मरने के बाद तीन दिन तक मृतक को ईश्वर के सामने अपनी जिन्दगी का हिसाब देना पडता है। इसलिए कहा गया है कि कब्र मे तीन दिन मुसीबत के होते है।)

तीन दिन के छोकरा, हमें सिखावत बात।
जबले वह लिहें ठीकरा, तब ले मारब लात। (भो०)
तीन दिन का छोकडा, मुझे सिखाने चला है। जब तक वह (मुझे मारने को) पत्थर उठाएगा, तब तक मै खीचकर लात मारूगा।
(धृष्ट लडके के सबध मे बूढे की उक्ति।)

तीन दिये और तेरह पाये, कैसे लोभ ब्याज का जाय
सूदखोरों पर व्यंग्य।

तीन नरी में तेरह गज
तीन बकरियों का चमडा फैलाने से तेरह गज हुआ। एक अद्भुत बात।

तीन पाव की तीन पकाई, सवा सेर की एक।
जेठ निपूता तीनों खा गया, मै संतोखन एक।
सबसे अधिक ले लेने पर भी यह कहना कि हमने तो बहुत ही कम लिया। तीन पाव की तीन रोटियो मे से एक सवा सेर की ज्यादा भारी है ही।

तीन पाव भीतर, तो देवता और पीतर, (हिं०)
पेट भरा होने पर ही धर्म-कर्म सूझता है।

तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहां की रीत।
बाहरवाले खा गये (और) घर के गावें गीत।
जब किसी जगह बिना बुलाए बहुत से फालतू आदमी पहुच जाए, तब क०।

तीन बुलाये तेरह आये, दे दाल में पानी
दे० ऊ०।

तीन बुलाये तेरह आये, सुनो ज्ञान की बानी।
राघव चेतन यों कहें, तुम देव दाल में पानी।
दे० ऊ०।
(यह ऊपर की कहावत का ही पूरा रूप है।)

तीन में न तेरह में, न सेर भर सुतली में, न करवा भर राई में

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती में न हो।

(किस्सा है कि किसी वेश्या ने अपने प्रेमियों को अलग-अलग कई श्रेणियों में बांट रक्खा था। पहली श्रेणी में तीन व्यक्ति थे, जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी; फिर तेरह थे; फिर वे थे, जिनकी गिनती उसने सुतली मे गांठें लगाकर कर रक्खी थी; सबसे अत में थे वे साधारण व्यक्ति, जिनके नाम का राई का एक दाना वह एक करवे मे डाल दिया करती थी। एक बार उसके यहां एक व्यक्ति आया और बोला कि मै पहले भी आया करता था और तुम्हें बहुत द्रव्य मैने दिया है। पर वेश्या ने उसे नही पहचाना और अपने नौकर से कहा कि देखो यह किसमे है। तब उसने उक्त जवाब दिया।)

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परंपरा के विरुद्ध काम करने पर क०।

तीन हैं साह किसान के झांद, जाल और कैर,(कृ०)

दुर्भिक्ष पड़ने पर झांद, जाल और कैर इन तीन से किसान अपना पेट पालते है।

झाद एक तरह की टोकनी, जिससे मछली पकड़ते हैं।

जाल चिड़ियां और जंगली जानवर फंसाने का जाल।

कैर खैर, जंगली लकड़ी, जो ईधन के काम आती है और जिससे कत्था बनता है।

तीनों त्रिलोक दिखाई दे गये

बहुत आनंद आ गया। कष्ट के लिए भी कह सकते है।

तीर, कव्वे, तीर

धूर्त को सावधान करने के लिए क०।

तीर जुदाई आ लगा, दिया कलेजा छेद।
पी अपना परदेश मां, किससे कहिये भेद।

किसी विरहिणी की उक्ति। स्पष्ट।

तीर, तुरमती, इसतिरी, छूटत बस ना आयं।
झूठ जो माने यह बचन, बे नर कूढ़ कहायं।

तीर, बाज और स्त्री, ये हाथ से बाहर निकलने पर फिर काबू में नहीं आते।

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध

तीर्थ स्थान में जाने पर मुंडन करा ही लेना चाहिए।

(१) किसी एक काम से किसी जगह जाने पर यदि दूसरा काम भी बन रहा हो, तो उसे अवश्य कर लेना चाहिए।

(२) किसी काम को अगर हाथ में ले, तो उसे फिर अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, खर्च का मुंह नही देखना चाहिए।

तीरथ, मूरत पूजकर, मत ना उमर गंवाय।
पूजा कर करतार की, जो तुरत मुक्त हो जाय।

स्पष्ट। कबीरपंथी साधुओं का कहना।

तीर न कमान, काहे के पठान, (मु०)

झूठी शेखी हांकने वाले से क०।

पठान से मतलब सिपाही से है।

तीर न कमान, मियां का अल्लाह निगहबान

दे० ऊ०।

तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लड़े।

दे० ऊ०।

तीवन बिन ना रोटी सोहे, गूंथे बिन ना चोटी सोहे

बिना चटनी के रोटी अच्छी नहीं लगती, बिना गुथी चोटी भी अच्छी नही लगती।

तीसमार खां बने फिरते है

जो अपने को बहुत समझता और झूठी शेखी हांकता फिरता है, उससे क०।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति बड़ा निकम्मा और आलसी था। वह उससे रोज़ कहा करती थी कि तुम घर बैठे रहते हो, कुछ काम-धधा क्यों नही करते। स्त्री की बातों से तंग आकर उसने एक दिन नौकरी की तलाश मे बाहर जाने का इरादा किया। उसकी स्त्री ने एक महीने के खाने लायक उसे लड्डू बना दिए। पर ग़लती से उनमे कोई ज़हरीला कीड़ा मिल गया, जिससे सब लड्डू ज़हरीले हो गए। घर से चलकर जब वह पहली ही मंज़िल में ठहरा, तो तीस चोरों ने उसे घेर लिया, पर उसके पास तीस लड्डुओं के सिवाय और कुछ नहीं निकला। चोरों ने तीसों लड्डू आपस में एक-एक बांट

खाया। उनको खाते ही वे सब के सब मर गए। जब सिपाही ने उनको मरा देखा, तो उन सबकी नाक काटकर अपने पास रख ली। सुबह होते ही यह बात चारों ओर फैल गई कि किसी आदमी ने तीस चोरों को मार डाला है। जब उस देश के राजा ने यह बात सुनी तो, पूरे किस्से की छानबीन की। पता चला कि वही तीस चोर थे, जिन्होंने बहुत दिनों से राज्य में उपद्रव मचा रक्खा था और जो पकड़ाई नहीं दे रहे थे। जब उस व्यक्ति ने राजा के पास जाकर कहा कि इन चोरों को मैंने मारा है और ये उनकी नाकें हैं, जो मैंने काट ली थीं, तो राजा उसकी बहादुरी से बड़ा खुश हुआ और उसे तीसमारखां की उपाधि देकर अपना वज़ीर बना लिया।)

तीसरे दिन मुरदा भी हलाल है, (मु०)
कहते हैं कि मुसलमानों के धार्मिक विचारों के अनुसार कोई आदमी अगर तीन दिन का भूखा हो अथवा भूख से मर रहा हो, तो वह फिर कोई भी चीज़ खाकर अपना पेट भर सकता है।
(सं०—आपत्तिकाले धर्मोनास्ति।)

तीसी के खेत में जुलाहा मुतलाने, (पू०)
अलसी के खेत में जुलाहे रास्ता भूल गए। जुलाहे अपनी सिधाई के लिए प्रसिद्ध हैं।
(कथा है कि कुछ जुलाहे कहीं जा रहे थे। रास्ते में अलसी का खेत मिला। उसे नदी समझकर वे पार करने की तैयारी करने लगे। तब तक एक घुड़सवार वहां आ गया, जिसने उन्हें किसी तरह समझाया कि यह तो अलसी का खेत है, नदी नहीं। तब वे उस रास्ते से निकले।)

तुई तो मुई, न तुई तो मुई
(गाय का) गर्भपात हो गया, तो भी मरेगी, न हुआ तो भी मरेगी। हरहालत में खराबी।

तुख्म तासीर, सोहबत का असर
बीज का गुण और सोहबत का असर नहीं जाता। खोटे की खोटी संतान होती है और भले की भली।

तुम पर पड़े जो औसरा, दिल बिच मत घबराय।
जब साईं की हो दया, काम तुरत बन जाय। (ग्रा०)
विपत्ति में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

तुझे पराई क्या पड़ी, अपनी निबेड़ तू
अपना काम छोड़कर व्यर्थ दूसरे के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

तुनतुनी बजाते मियां खाते शक्कर घी, नौकरी की ऐसी तैसी, अब के बचे जी
किसी फक्कड़ सिपाही का कहना, जो लड़ाई पर जा रहा है।

तुम अंत गये, हम अंत कर आयो, मड़ो चून कुत्तन ने खाओ, (पू०)
तुम एक रास्ते से गए, हम दूसरे से गए, तब तक गुंधा हुआ चून कुत्तों ने खा लिया। परिवार के लोगों में झगड़ा होने पर दूसरे लाभ उठाते हैं।
अंत=दूसरी जगह।

तुम काटो मेरी नाक और कान;
मैं न छोड़ूं अपनी बान, (स्त्रि०)
हठी आदमी या औरत।

तुम किस खेत के बथुए हो?
मैं तुम्हें कोई चीज़ नहीं समझता।
(बथुआ एक बहुत साधारण साग होता है।

तुम किस खेत की मूली हो?
दे० ऊ०।

तुमको हमसी अनेक हैं, हमको तुम-सा एक।
रवि को कमल अनेक हैं, कमलन को रवि एक। (स्त्रि०)
प्रेमिका का कहना अपने प्रेमी के प्रति।

तुम क्यों फटे में पांव देते हो
क्यों पराये झगड़े में पड़ते हो?

तुम जानो तुम्हारा काम जाने
हमारी बात नहीं मानते, तो चाहे जो करो।

तुम डाल-डाल, हम पात-पात
हमारे सामने तुम्हारी चालाकी नहीं चलने की। हम तुमसे ज्यादा होशियार हैं।

तुम तो अकल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो
उसे भगाने के लिए। जब कोई बिना सोचे

बिचारे मूर्खतापूर्ण ढग से काम करता है, तब क०।

तुम तो कुछ जानते ही नहीं, ओछे मुंह दूध पीते हो

जब कोई भोला और अनजान बने, तब क०।

तुम तो जब मां के पेट से भी नहीं निकले होगे

तुम तो तब पैदा भी नहीं हुए होगे, फिर तुम्हे क्या खबर कि उस वक्त क्या हुआ?

तुम तो मुझे छेड़ोगे

झूठमूठ का नखरा करना। कोई व्यक्ति यदि किसी से बोलने (या किसी को छेडने) के लिए तैयार नही, तो भी प्रकारान्तर से उसके मन मे बोलने (या छेडने) की इच्छा जाग्रत करना। (कथा है कि किसी स्त्री की, जो अपने सिर पर एक खाली घडा रखे जा रही थी, एक पुरुष से भेट हो गई, जो अपने दोनो हाथो मे दो कबूतर लिये आ रहा था। स्त्री ने उसे देखने की कहा—देखो जी, मुझे छेडना नही। पुरुष ने कहा—मै यह कैसे कर सकता हू। मेरे हाथो मे तो कबूतर है। स्त्री ने जवाब दिया—उन्हे तुम मेरे घडे मे रख दोगे। और फिर मुझे छेडोगे।)

तुम थूकते हो, हम थूकते भी नहीं

किसी ने कहा—हम ऐसे काम पर थूकते है, अर्थात बहुत घृणा करते है। दूसरे ने जवाब दिया—तुम थूकते हो, हम वह भी नही करते। अर्थात हम ऐसे काम से तुमसे भी अधिक घृणा करते है।

तुम दाता दुख भंजन हो, सुनो नाथ मोर गुहार।
हौं अपराधी जनम कौ, नख सिख भरो विकार।

स्पष्ट।

तुमने उड़ाई, हमने भून-भून खाई

तुमने (बाते) उडाईं, अर्थात मेरे बारे मे झूठी बाते कही, मैने उन्हे भून-भून कर खाया, अर्थात उनकी कतई परवाह नही की।

तुम बड़ा नन्हा कातती हो, (स्त्रि०)

बहुत बारीकी करती हो। जब कोई देने-लेने मे बहुत कजूसी करे, तब क०।

तुम बिन ऐसी गत भई, सुन मेरी अब पीय।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन जीव।

स्पष्ट। कोई विरहिणी कहती है।

तुम भी कहोगे 'कोई मुझे जोरू करे'

जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे क०।

तुम भी कहोगे 'मुझे चरखा ले दे'

अर्थात तुम औरतों का ही काम कर सकते हो। मूर्ख से क०।

तुम भी कोरे चालीस सेरे ऊत हो

निरे मूर्ख हो। कोई कसर नही।

चालीस सेर=पूरा एक मन।

तुम रूठे, हम छूटे, (स्त्रि०)

जब कोई बहुत नाराज हो जाए और मनाने से भी न माने तब क०। चलो अच्छा है, तुम नही मानते, हमने भी छुट्टी पाई।

तुम सरीखे सकड़ों फिरते हैं

अर्थात मैं तुम्हारी कोई परवाह नहीं करता।

तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर

तुम जो खर्च कर रहे हो, वह तुम्हारे माथे ही जाएगा।

तुम्हारी बराबरी वह करे, जो टांग उठाकर मूते

अर्थात तुम तो कुत्ते हो। तुम से कौन बात करे? डीग हाकनेवालो से व्यग मे क०।

तुम्हारी बराबरी वह करे, जो दौड़ते हिरन को पकड़े

दे० ऊ०।

तुम्हारी बात उठाई जाय, न धरी जाय

अर्थात तुम्हारी बात समझ में नही आती। तुम किसी मशरफ (उपयोगी) की बात नही करते।

तुम्हारी बात का एतबार क्या?

बहुत झूठ बोलनेवाले से क०।

तुम्हारी बात थल की न बेड़े की

तुम्हारी बात न ज़मीन की, न पानी की, अर्थात बेहूदी।

तुम्हारी बात मे बंद क्या?

तुम्हारी बात का भरोसा क्या?

बंद=बाधने की चीज़, अर्थात दृढ़ता।

तुम्हारे काटे तो कुछ भी नहीं रहे हैं
धूर्त मनुष्य। जिसके पीछे पड गया, उसे बर्बाद करके छोड़ा।
(टिड्डिया जिस पेड पर बैठ जाती है, उसे चाटकर साफ कर देती है। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

तुम्हारे पान का उगाल, हमारे पेट का आधार
गरीब का अमीर से कहना कि हम तो आपका जूठन खाकर ही रहते है। अत्यत विनम्रता दिखाना।

तुम्हारे पेट में चींटे की गांठ है
तुम बहुत कम खाते हो।

तुम्हारे फरिश्तों को भी खबर नहीं है, (मु०)
फिर तुम कैसे जान सकते हो? अर्थात तुम्हे किसी बात का पता ही नही।
(मुसलमानो के अनुसार हर मनुष्य के साथ दो फरिश्ते रहते है, जो उसके प्रत्येक कार्य को देखते रहते है।)

तुम्हारे बैल, हमारे भैंसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा?
बैल भैंस से जल्दी चलता है, इसलिए दोनो का साथ निभ नही सकता। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्य एक साथ नही रह सकते।

तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करो कि बेटवा होय, (पू०)
रडुए का खूबसूरनी के साथ विधवा से कहना कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हू।
(दो निठल्ले आदमी एक दूसरे से कह सकते है कि भाई कुछ ऐसा किया जाए, जिससे पेट का धधा चले।)

तुम्हारे मरे देस खाक, हमारे मरे देस पाक
तुम्हारे मरने से देश बर्बाद हो जायगा, हमारे मरने से धरती का बोझ कम होगा।
बहुत अधिक विनम्रता दिखाना।

तुम्हारे मरे देस पाक, हमारे मरे देस खाक
मूर्खतापूर्ण दम।

तुम्हारे मुंह का उगाल, हमारे पेट का आधार
दे०—तुम्हारे पान का उगाल. ।

तुम्हारे मुंह में के दांत हैं, यह तो कोई पूछता ही नहीं
आप हैं कौन, कोई यह भी नही पूछता।

तुम्हारे मुंह में घी शक्कर
जब कोई अच्छी खबर सुनाए, तब क०।

तुम्हारे लड़के भी घुटनियों चलेंगे? (स्त्रि०)
तुम कभी अपना वादा भी पूरा करोगे? अथवा क्या तुम कभी सच भी बोलोगे?

तुरई कद्दू, लानत हरदू
दोनो पर लानत। दोनो ही निकम्मी।

तुरक काके मीत, सरप से का प्रीत
स्पष्ट। जातिविद्वेष भरी बात।

तुरक, ततैया, तोतरा, ना यह किसी के मीत। भीड़ परत मुंह फेर लें, राखे ना परतीत। (ग्रा०)
मुसलमान, बर्र और तोता ये किसी की मुरव्वत नही करते। जातिविद्वेषमूलक।

तूरक हू हुए तो भी ना, (ग्रा०)
मुसलमान भी हुए, तो भी नाही करनी है, अर्थात तो भी अभीष्ट सिद्ध नही हुआ।

तुरकी तमाम हुई
तुरकी छाटना बद हो गया। घमड दूर हो गया।

तुरकी पीटे ताजी कांपे
एक को दड देने से दूसरा भी सावधान हो जाता है।

तुरकी पीटे, ताजी के कान हों
दे० ऊ०।

तुरक की पोई तुरक ही खाओ; बासी खा मत ओझ बढाओ
ताजी रोटी ही खानी चाहिए। बासी से तोद बढ़ती है।

तुरत दान महा कल्यान, (हि०)
किसी को कुछ देना हो, तो तुरत देकर छुट्टी पानी चाहिए।

तुरत दान महा पुन्न
दे० ऊ०।

तुरत फतेह हो उसके ताईं, जिसका हामी होवे साईं
भगवान जिसके सहायक होते हैं, उसकी जीत होती है।

तुरत फुरत हो वह भी कार, मदद करे जिसकी सरकार
स्पष्ट।

तुरत फुरत हों सगरे काम, जब होवें मुट्ठी में दाम
गांठ में पैसा होने से सब काम जल्दी होते हैं।

तुरत भलाई वह नर पावे, जो धन दाता नाम लुटावे
जो ईश्वर के नाम पर खर्च करता है, उसे तुरंत यश मिलता।

तुरत मजूरी जो परखावे, वाका कार तुरत हो जावे
जो मजदूरी तुरंत चुकाता है, उसका काम जल्दी होता है।

तुरता फुर्ती काम मे, अच्छी नाहीं जान;
सांच कहा है साधने, जल्दी मां नुकसान।
काम मे जल्दबाजी ठीक नही। उससे नुकसान होता है।

तुरफतुल-एन में
पलक मारते, फौरन।

तुलसी अच्छर करम के, मेट न सक्के कोय।
मेटे तो अचरज नहीं, पर समझ किया है जोय।
भाग्य का लिखा नही मिटता, अगर मिट भी जाए तो समझो, भगवान ने वैसा सोच-विचार कर ही किया होगा।

तुलसी अपने राम को, भजिये जैसे लूट।
यह तन घड़ा है कांच का, छिन मे जैहै टूट।
स्पष्ट।

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो कै खीज।
खेत पड़ें सब ऊपजें, उल्टे सीधे बीज।
स्पष्ट। ईश्वर का ध्यान किसी प्रकार भी करो, उस सब का फल मिलता है।

तुलसी अपनो जान के, कीनी थी परतीत।
धोखो दे न्यारे भये, भली निबाही रीत।
स्पष्ट।

तुलसी आम कुलीन है, नवे बड़प्पन जान।
ओछा पेड़ अरंड का, रहे सीस धर तान।
स्पष्ट।

तुलसी आह ग़रीब की, हरि से सही न जाय।
मरी खाल की फूंक से, लोह भसम हो जाय।
स्पष्ट।
(मरी खाल से अभिप्राय लुहार की धौंकनी से है।)

तुलसी ऐसी पीत कर, जैसे भोर तला।
झोलझाल के पी लिया, फेर लगा गला।
प्रेम तो ऐसा करना चाहिए, जैसे कि सबेरे के तालाब की काई। पानी पीने के लिए लोग उसे अलग करते हैं, लेकिन वह फिर जुड़ जाती है।

तुलसी ऐसे जीव को, कहा करे कोई साख।
लेके दे चाहत नहीं, किरिया करत है लाख।
स्पष्ट।
किरिया=सौगध।

तुलसी ऐसे जीव क्यों, नरक कुंड ना जायं।
मन के कपटी मित्र हैं, पाग उतारे चायं।
स्पष्ट।
पाग उतारे चाय=पगड़ी उतारना चाहते है, इज्जत लेना चाहते है।

तुलसी ऐसे नरन को, कैसे गत मत होय।
बाप ने राखी पातुरी, ताके ढिग रहं सोय।
स्पष्ट।
कैसे गत मत होय=कैसे मुक्ति मिल सकती है।
पातुरी=वेश्या।

तुलसी ऐसे नरन से, मन फाटे जस दूध।
नीके काम को ना चलें, बुरे को हरदम ऊध।
स्पष्ट।
ऊध ऊर्ध्व, ऊचे, तैयार खड़े।

तुलसी ऐसे पतित को, बारबार धिक्कार।
राम भजन को आलसी, खाने को तैयार।
स्पष्ट।

तुलसी ऐसे मित्र के, कोट फांद के जाय।
आवत ही तो हँस मिले और चलत रहे मुरझाय।
ऐसे मित्र के यहा तो दीवार लाघकर, अर्थात सब तरह के कष्ट उठाकर जाना चाहिए; जो आते ही हँसकर मिले, और चलते समय दुख प्रकट करे।
कोट=ऊची दीवार, परकोटा।

तुलसी कभी न छांड़िये, छिमा, सील, संतोस।
ज्ञान, ग़रीबी, हरिभजन, कोमल बचन अदोस।
स्पष्ट।

कधी=कमी।

(फैलन ने अधिकांश स्थलों पर कमी के स्थान पर कधी का प्रयोग किया है।)

तुलसी कर से कर्म कर, मुख से भज ले राम।
ऐसो समय न पायगो, जो लाखो खरचो दाम।

स्पष्ट।

तुलसी कलयुग के समय, देखो यह करतूत।
रामनाम को छांड़ के, पूजत हैं अब भूत।

स्पष्ट।

तुलसी कहत पुकार के, सुनो सकल दे कान।
हेमदान, गजदान से, बड़ा दान सनमान।

दूसरे का उचित सम्मान ही सबसे बडा दान है।

हेमदान=स्वर्ण का दान। गजदान—हाथी का दान।

तुलसी का पत्ता कौन छोटा कौन बड़ा? (हिं०)

सभी पत्ते समान रूप से पवित्र और पूजनीय होते है। जहा कई पूज्यजन मौजूद हो, वहा क०।

तुलसी कारी कामरी, चढ़े न दूजा रंग

स्वामाविक प्रवृत्ति नही बदलती।

तुलसी काहू चोर ने, चोरी जाय करी।
मूसमास के धन लियो, पूरी नाह परी।

चोरी के धन से कमी किसी का भला नही होना।

मूसमास के=चुराकर।

तुलसी चंदन बिटप बस, बिन बिख भयो न भुजंग।
नीच निचाई ना तजे, जो पावे सतसंग।

स्पष्ट।

बस=बसकर, रह कर।

बिख=विष, जहर।

तुलसी छलबल छौड़के, कीजे राम सनेह।
अंतर पति से है कहा, जिन देखी सब देह।

स्पष्ट।

अतर-भेद, दुराव, छिपाव।

पति-स्वामी, परमात्मा।

तुलसी जग में आय के, औगुन तज दे चार।
चोरी, जारी, जामिनी, और पराई नार।

स्पष्ट।

जारी=जार कर्म; पर-स्त्रीगमन।

जामिनी=जमानत देना। यहा अभिप्राय झूठ की जमानत से है।

तुलसी जग में आय के, निश्चय भजिये राम।
मनुख मजूरी देत है, क्यों राखें भगवान।

स्पष्ट।

तुलसी जग में आय के, सीख ऊ र से लेव।
जो तुझको अनरस करे, रस वाको तू देव।

स्पष्ट।

अनरस=रस-रहित।

तुलसी जग मे जस रहे, या रहे राम का नाम।

स्पष्ट।

तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत लेय।
राम नाम शमशीर है, जम के सिर में देय।

स्पष्ट।

शमशीर-तलवार।

तुलसी तब ही जानिये, परमेश्वर सों प्रीत।
हरख उठे, आदर करे, आवत देख अतीत।

स्पष्ट।

अतीत-अतिथि, साधु।

तुलसी तहां न जाइये, जहाँ जनम का ठांव।
आवभगत जाने नहीं, धरें पाछिलो नांव।

जन्मस्थान मे नही जाना चाहिए। वहा आदर नही होता।

(तुम चाहे जितने योग्य बन जाओ, लोग वहा बचपन के नाम से ही पुकारते हैं।)

तुलसी तहां न जाइये, जहां न वर्ण विवेक।
रांग, रूप, रुआ, भुआ, सेत सेत सब एक।

जहा सफेद रग की सब चीजे लोगो के लिए एक हों; जहा गुण-अवगुण का कोई विचार न हो, वहा नही जाना चाहिए। रागा, चादी, रूई, सेमर (या आक) का भुआ, ये सब चीजें सफेद होती है, यद्यपि इनके गुण-धर्म मे बहुत अंतर है।

तुलसी तुम तो कहत हो, संगत में सब होत।
बीच ऊख रामसर तेहि रस काहु न होत।

सत्संग में बड़ा प्रभाव है, फिर भी मनुष्य के जन्मजात स्वभाव को नहीं बदला जा सकता; ऊख के खेत में

लगे सरकंडे में रस पैदा नही होता, वह रूखा का रूखा ही रहता है।

तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घट में प्रान।
कबहुं तो दीनदयाल के, भनक परेगी कान।

दया के सम्बन्ध मे कहा गया है।

तुलसी धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक टूक के कारने, स्वान घरे घर जाय।

स्पष्ट।

मन भर=एक मन। जी भरकर।

तुलसी पर घर जायके, दुख न कहिये रोय।
भरम गंवावे आपनो, बांट न सक्के कोय।

स्पष्ट।

भरम गवावे भेद खुल जाता है, अपनी बात दूसरो को मालूम हो जाती है।

तुलसी पिछले पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे जुर के अंत मे, भूख बिदा हो जाय।

स्पष्ट।

जुर= ज्वर; बुखार।

तुलसी पैसा पास का, सब से नीको होय।
होते के सब कोय है, अनहोते की जोय।

गाठ का पैसा ही काम आता है। बहिन और बाप सब लोग धन के ही साथी होते है। केवल स्त्री ही निर्धनता मे साथ देती है। (यह द्रष्टव्य है कि दूसरी कहावतो मे स्त्री की निन्दा की गई है। सत्य निकल पडा है।)

तुलसी प्रतिमा पूजिबो, ज्यों गुड़ियों का खेल।
भेंट भई जब पीव से, धरो पिटारी मेल।

प्रतिमा का पूजन तो गुडियो के खेल की तरह है। जब स्वय प्रियतम से ही भेट हो गई, तो (गुडियो की) पिटारी को अलग रख देना चाहिए। (उपासना के सम्बन्ध मे।)

तुलसी बिदेस जु जात है, करें समान अनंत।
ना जानूं परलोक को, कैसे नर निश्चंत।

स्पष्ट।

तुलसी बिरवा बाग के, सींचतहू कुम्हलाय।
राम भरोसे जो रहैं, पर्वत पर हरयाय।

स्पष्ट।

बिरवा=वृक्ष।

सीचतहू=सीचने पर भी।

तुलसी बुरो न मानिये, जो गंवार कह जाय।
सावन केसे नरदुआ, बुरो-भलो बह जाय।

नासमझ के कहने का बुरा नही मानना चाहिए।

नरदुआ - नाबदान।

तुलसी भरोसे राम के, लिये पाप भर भोट।
ज्यों व्यभिचारी नारको, बड़ी खसम की ओट।

स्पष्ट।

नार=नारी; स्त्री।

ओट=आड़।

तुलसी मीठा बोलिये, सबसे करके प्रीत।
करें प्रेम तासें सभी, लख कोकिल की रीत।

स्पष्ट।

तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजे चहुं ओर।
बसीकरन यह मंत्र है, तज दे बचन कठोर।

स्पष्ट।

तुलसी मूढ़ न मानिहैं, जब लग खता न खाय।
जैसे बिधवा इसतिरी, गरभ रहे पछताय।

स्पष्ट।

खता=धोखा, ठोकर।

इसतिरी स्त्री।

तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार।
साधु मिलन अरु हरिभजन, दया, धर्म, उपकार।

स्पष्ट।

तुलसी या संसार में, पाखंडी को मान।
सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान।

स्पष्ट।

मान=सम्मान।

सीधा अन्न, भोजन।

तुलसी या संसार में, सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस भेष में, नारायन मिल जाय।

स्पष्ट।

तुलसी राम की भगति बिन, धिक दाढ़ी, धिक मूंछ।
पशु गढ़ंते नर भयो, भूल्यो सींग अरु पूंछ।

स्पष्ट।

तुलसी वह दाऊ गये, पंडित और गृहस्थ।
आते आदर ना कियो, जात दिया ना हस्त।
स्पष्ट।
जात दिया ना हस्त=हाथ से कुछ दिया नही।

तुलसी वेश्या देख के, करन लगे तकझांक।
आवत देखो संत को, मुंह लीन्हों झट ढांक।
स्पष्ट।

तुलसी सरन है राम की, सुन ले मेरी टेर।
गज को छुड़ायो ग्राह से, मेरी बार क्यों देर।
स्पष्ट।
(पुराणों में गज-ग्राह के युद्ध की कथा प्रसिद्ध है। दोहे मे उसी का उल्लेख है।)

तुलसी हरि की भगति बिन, ये आवे किहि काज।
अरब खरब लौं लच्छमी, उदय अस्त लौं राज।
स्पष्ट।

तुलू ओर गुरूब के वक्त सिजदा मना है, (उ० वि०)
ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सिजदा नही करना चाहिए। मुसलमानों की मान्यता।
सिजदा ईश्वर की प्रार्थना।

तू किथ्यां दा खां खां साब-एं? (प०)
तू कहां का खां साहब है? कहां का बड़ा आदमी है?

तू कन के लानें फिरत क्यों मन में पछतायो।
जिसने जैसा दियो है, तिसने तैसो पायो।
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
कन अन्न। धन।
लानें लिए।

तू कर अपना काम, तबलया भूसन दे, (पू०)
तू अपना काम देख, कुत्ते को भूकने दे।
तबलया=तबेले में बैठा हुआ। कुत्ते से अभिप्राय है।

तू कहे सो सच है बुड्ढा, तू कहं सो सच
किसी की सच बात को भी अनसुनी करना।
(इसकी कथा है कि एक बार होली के अवसर पर कुछ चोरों ने एक बुढ़िया के घर का सब सामान लूट लिया और उसे एक चारपाई से बांधकर रास्ते-रास्ते घुमाते फिरे। बुढ़िया तो चिल्ला-चिल्ला कर कहती थी कि इन लोगों ने मुझे लूट लिया, पर चोर उसकी बात को अनसुनी करने के लिए ऊपर का वाक्य कहते जा रहे थे। होली का मौक़ा होने की वजह से लोगों ने उसे एक स्वांग समझा और उस पर कुछ ध्यान नही दिया।)

तू खोल मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना, (स्त्रि०)
नवविवाहिता स्त्री पहली बार ससुराल आते ही कह रही है कि हटाओ मेरा यह घूघट, मैं अपना घर सभालूगी। तेज तर्रार औरत के लिए क०।

तू गधी कुम्हार की तुझे राम से कौथ
तू कुम्हार की गधी, तुझे राम से क्या मतलब? जब कोई फालतू आदमी किसी काम मे व्यर्थ हस्तक्षेप करे, तब क०।

तुम गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों
भरपूर बदला चुकाना।
गोर-कब्र।

तू चाहे मेरी जाई को, मै चाहू तेरा खाट के पाए को, (स्त्रि०)
सास का दामाद से कहना। यह भाव प्रकट करने के लिए कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ उतना ही अच्छा व्यवहार करेंगे।
जाई=बेटी।

तू छुए और मे मुई, (स्त्रि०)
बहुत सुकुमारता प्रकट करना।
(प्रसव वेदना से पीडित होकर कोई कह रही है।)

तूती चुगे तो ऊंच चुग, नीचा चुगन मत जाह।
कुके लजावे आपने, कहें अकब्बर साह।
किसी का एहसान ही लेना हो तो बड़े आदमी का लेना चाहिए; ओछे का एहसान लेना ठीक नहीं।

तूती पालें चूतिया, और आशक पालें लाल।
कबूतर पालें चोट्टा, जो तकें पराया माल।
तूती बेवकूफ़ पालते हैं, आशक-मिजाज़ लाल पालते हैं और चोर कबूतर पालते हैं; जो दूसरों का माल उड़ाने की फ़िक्र में रहते हैं।

तू तेली का बैल, तुझे क्या सैर, लगा रह घानी से
तू तो तेली का बैल है, तुझे मौज-मजा से क्या मतलब। घानी पेरता रह।
(जो चौबीसों घंटे काम में जुटा रहे, उससे व्यंग्य में क०।)

तूने की रामजनी, मैंने किया राम जना
स्त्री का अपने पर-स्त्रीगामी पति से गुस्से में कहना कि तुमने अगर औरत रख ली, तो मैंने भी आदमी रख लिया है।
तूने जब ऐसा किया, तो मैंने भी ऐसा किया, यह भाव प्रकट करने को क०।

तूफ़ान, शैतान, अल्लाह निगहबान
तूफ़ान और शैतान इन दोनों से ईश्वर बचाए।

तू भी रानी, मैं भी रानी; कौन भरे कुएं का पानी ? (स्त्रि०)
जहां सभी आदमी अपने को बडा समझ रहे हो, और किसी कार्य को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझ कर उसे करने में हीला-हवाला करें, वहां क०।

तू मुझको, तो मै तुझको
समान व्यवहार।

तू मेरा लड़का खिला, मै तेरी खिचड़ी पकाऊं, (स्त्रि०)
दे०—ऊ०।

तू मेरे बारे को चाहे, तो मैं तेरे बूढ़े को चाहूं
दे० तू मुझको...।

तू रह री हौं ही लखूं, चढ़ न अटा ब्रज बाल।
बिना समय ससि के उदय, दइहैं अरघ अकाल।
यह बिहारी का प्रसिद्ध दोहा है। नायिका ने गणेश चतुर्थी का व्रत किया है। चंद्रमा को देखने के लिए वह बार-बार अटारी पर जाती है। सखी उसका श्रम बचाने के निमित्त उसको फिर चढ़ने से रोकती है, पर यह कह कर नही कि निराहार रहने के कारण तुझे श्रम होगा, बल्कि उसके रूप की प्रशंसा करती हुई यह कहकर रोकती है कि तेरा मुख चंद्रमा के समान प्रकाशमान है, इसलिए उसे ही चन्द्रमा समझकर स्त्रियां चंद्रमा के उदय के बिना ही अकाल में अर्घ्य दे देंगी। (जो ठीक नहीं है।)

तूल, तेल तापना, जाड़ मास को आपना
रूई के कपड़े, तेल और तापने को मिले तो फिर जाड़ा अपना ही है।

तू सच्चा, तेरा गुरु सच्चा
व्यंग्य में झूठे से क०।

तेतरी बेटी राज रजावे, तेतरा बेटा भीख मंगावे, (लो० वि०)
दो लड़कों के बाद लड़की का होना अच्छा होता है, दो लड़कियों के बाद लड़का होना अच्छा नहीं।

तेते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर
धन के अनुसार ही काम करना चाहिए।

तेरहवीं सदी में शरह की बातें कोई नहीं मानता, (मु०)
आजकल धार्मिक नियमो को कोई नहीं मानता।
(तेरहवी सदी से यहा मतलब हिजरी सन् की तेरहवीं सदी अर्थात वर्तमान समय से ही है। यह ईस्वी सन ६२२ में चालू हुआ। हिजरी सन की १४-वी सदी चल रही है।)

तेरा किया तेरे आगे आ
शाप देना।

तेरा ढका रहे, मेरा बिक जाय, (व्यं०)
तेरी चीज़ रक्खी रहे, मेरी बिक जाय।
अपना मतलब देखना।

तेरा पानी मै भरूं, मेरे भरे कहार, (स्त्रि०)
झूठा बड़प्पन दिखाना।

तेरा पी तोमें बसे, ज्यों पत्थर में आग।
देखा चहे दीदार को, चकमक होके लाग।
स्पष्ट।
दीदार आमने सामने। दर्शन।
चकमक=आग निकालने का चकमक पत्थर।

तेरा माल सो मेरा माल, मेरा माल सो हैं हैं
जो दूसरे की चीज़ तो हथिया ले, पर अपनी चीज़ न छूने दे।

तेरा हाथ और मेरा मुंह, (स्त्रि०)
कमाओ और मुझे खिलाओ।
स्वार्थी के लिए क०।

तेरा है सो मेरा था, कराय खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि०)
सास का कहना बहू के प्रति, जिसने उसके लड़के को (अपने स्वामी को) पूरी तरह काबू मे कर रखा है।

तेरी आन या तेरे गुसइयां की
एक स्त्री का दूसरी से कहना कि मैं तेरी सौगंध खाऊ या तेरे स्वामी की।

तेरी आवाज मक्के मदीने मे, (स्त्रि०)
शुभ समाचार सुनानेवाले को आशीर्वाद।
जब कोई बहुत या चिल्लाकर बात करे।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे
हममें से हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा।
मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ किया (अर्थात जो भलाई की) और उसके बदले मे तुमने जो कुछ किया (अर्थात मेरे साथ जो बदी की), उसे ईश्वर जानता है, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क०।

तेरी कुदरत के आगे कोई जोर किसी का चले नहीं, चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी मरे नही।
स्पष्ट। ईश्वर की लीला विचित्र है।

तेरी कुदरत के कुरबान
हे ईश्वर! तेरी अद्‌भुत लीला की बलिहारी।

तेरी गोद मे बैठू और तेरी ही दाढ़ी नोचू
धृष्ट और कृतघ्न आदमी के लिए क०।

तेरे जो, तेरी बराती, चाहे जैसे काट
मुझे कुछ मतलब नही।
दगती हँसिया।

तेरे दया धरम नहि मन मे, मुखड़ा क्या देखे दरपन मे
पाखंडी। निर्दयी।

तेरे बैंगन मेरी छाछ
अपनी छोटी वस्तु के बदले मे दूसरे की बहुत चाहना।
चतुराई से काम लेना।

तेरे मुंह मे घी शक्कर
खुशखबरी सुनानेवाले से क०।
शुभकामना करनेवाले से भी।

तेरे मेरे सबके में उसको ओक पेट से
किसी नपुंसक की स्त्री को गर्भ रह गया, तब मजाक मे कहा जा रहा है।

तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाय, (स्त्रि०)
आशा तो बहुत देना, पर करना कुछ नहीं।

तेल जल चुका
(१) जिंदगी खत्म हो चुकी।
(२) पैसा उड़ गया, खर्च के लिए अब कुछ नही।

तेल जले घी, घी जले तेल
तेल बहुत पकने से घी जैसा हो जाता है और घी तेल जैसा।
(स्त्रियो की ऐसी धारणा है।)

तेल डाल कमली का साझा
किसी के किसी काम मे नाम मात्र की सहायता करके अपने को उसका साझीदार समझने लगना। (किसी गडरिये ने एक कंबल तैयार करके उसे चिकना करने के लिए एक दूसरे आदमी से उस पर तेल मलने को कहा। जब उसने तेल से कंबल को चिकना कर दिया, तो बोला कि इसमे मेरा भी साझा है और इसे बेचने से जो दाम आए, उसमे से आधा मुझे देना, क्योंकि इसे चिकना मैंने ही किया है।

तेल तिलो ही मे से निकलेगा, (व्य०)
कोई अपनी गाठ से नुकसान नही देगा। मुनाफा तो लागत मे से ही निकलेगा। प्राय दूकानदार ग्राहक से कहता है।

तेल देखो, तेल की धार देखो
प्रत्येक कार्य धीरज के साथ सोच समझकर करना चाहिए।
(कथा है कि किसी राजकुमार के चार मित्र थे—सिपाही, ब्राह्मण, उठेरा और तेली। जब वह पिता के मरने पर गद्दी पर बैठा, तो उन चारो को अपना मंत्री बनाया। पडोस के एक राजा ने जब उसे मूर्ख मंत्रियो से घिरा और भोग-विलास मे डूबा पाया, तो उस पर चढाई कर दी। राजकुमार ने तब अपने चारो मंत्रियों को बुलाया और उस बारे मे उनकी राय मांगी। जो सिपाही था, उसने तुरंत लड़ने को कहा। ब्राह्मण ने कहा—जैसे भी हो सुलह कर लो। उठेरे ने कहा—जल्दी किस बात की है। देखिए,

ऊंट किस करवट बैठता है। तेली ने तब उसी का समर्थन करते हुए कहा—घबड़ाइए नहीं, अभी तेल देखिए, तेल की धार देखिए, अर्थात उतावली मत कीजिए।

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई; (स्त्रि०)
बिना साधन के काम की तैयारी।

तेलन से क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाट (स्त्रि०)
दोनों एक से विकट, कोई किसी से कम नहीं।
घाट घट, कम।
मूसल कपड़े कूटने की मोगरी।
लाट कोल्हू के बीच में लगा मोटा लट्ठ, जिससे तेल पिरता है।

तेली का काम तमोली करे, चूल्हे में आग उठे
जिसका काम उसी को शोभा देता है। कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है।

तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिये का नोंन गिरा दूना हुआ
तेल गिरा तो जमीन सोख गई, और नोंन गिरा तो उसके साथ मिट्टी मिल गई, जिससे वजन बढ़ गया।
किसी को अपनी हानि से ही लाभ होता है।

तेली का तेल जले, मसालची का दिल जले
एक को खर्च करते देख दूसरा परेशान हो।
पाठा०—तेली का तेल जले, मसालची के पोद फटें।

तेली का तेल, भगत भैय्या जी की
खर्च कोई करे, नाम किसी का हो। तेली ने मंदिर में जलाने के लिए तेल दिया, पर नाम पुजारी का हुआ।

तेली का बैल ले के कुम्हारिन सती होय, (स्त्रि०)
व्यर्थ की सहानुभूति।

तेली का बैल हो गया
रात-दिन काम में लगे रहनेवाले से क०।

तेली के तीनों मरें और ऊपर से टूटे लाठ
दोनों बैल और तीसरा हांकनेवाला, तेली के ये तीनो मरें, मुझसे क्या मतलब?
(किसी से कोई प्रयोजन न होना।)

तेली के बैल को घर ही कोस पचास
जिसे घर में ही दिन-रात काम करना पड़े, उसके लिए क०।

तेली क्या जाने मुश्क की सार
जिसने जो चीज़ कभी देखी ही नहीं, वह उसकी क़द्र क्या जाने!

तेली खसम किया और रूखा खाया, (स्त्रि०)
समर्थ का आश्रय पाकर भी कष्ट में रहना। एक मूर्खता।

तेली जोड़े पली-पली रहमान उड़ावें कुप्पे
(१) घर में जब एक आदमी तो कमानेवाला हो, और दूसरा लुटाए, प्रायः तब क०।
(२) कहावत का यह भाव भी है कि मनुष्य यत्नपूर्वक जो काम करता है, ईश्वर उस पर एक बार में ही पानी फेर देता है।

तेली रोवे तेल को, मकसूदन रोवें खली को
सबको अपने-अपने स्वार्थ की पड़ी रहती है।
मकसूदन -नाम विशेष। यहा तेली के नौकर से मतलब है।

तैराक ही डूबते है
कर्मठ व्यक्ति ही असफल होते है। जो कुछ काम ही नही करता, उसके लिए सफलता-असफलता का प्रश्न क्या?

तैरेगा सो डूबेगा
स्पष्ट। दे० ऊ०।

तोको न भुनाऊं, तोरा भइया और बंधाऊं, (पू०)
कंजूस के प्रति व्यंग्य में, जब वह किसी काम में खर्च नहीं करना चाहता।
(किस्सा है कि कोई पुरबिया रुपया भुनाने के लिए बाजार गया, पर उसे भुनाने में बड़ा कष्ट हो रहा था। वह कई दूकानों पर गया, पर रुपया उससे नही छोड़ा गया। मुट्ठी के बंद रहने के कारण उसके हाथ मे जब पसीना आने लगा, तो उसने समझा कि रुपया मुझसे जुदा होने की बात सोच-कर रो रहा है। इसी पर उसने कहावत के उपर्युक्त शब्द कहे।)

तोको लेवन मैं चाली, तू मोहें घेर लिया।
अब तू मोको छोड़ दे, मैं तोहे छोड़ दिया। (स्त्रि०)
मैं जब तुमसे कोई मतलब नही रखना चाहता, तो तुम भी मेरा पिंड छोड़ो।

तोड़ डाल तागा, तू किस भड़ुवे के मुंह लागा, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री के पति से कहा जा रहा है, जो विवाह होते ही कुपथगामिनी हो गई है। दुष्ट का साथ छोडने के लिए भी। तागा से मतलब विवाह-सूत्र से है।

तोड़ने आये चारा और खेत पर इजारा
घास काटने आए और खेत पर कब्जा करने लगे। अनुचित दावा।

तोते की-सी आंखें फेर लेता है
बेमुरव्वत आदमी। तोते को चाहे जितनी अच्छी तरह से रक्खो, पर ज्यो ही मौका पाता है, उड़ जाता है।

तोतेचश्म आदमी है
दे० ऊ०।

तोरी बनत-बनत बन जाई, तू हरि से लागा रहु भाई
तू भगवान का भजन करता रह, धीरे–धीरे तेरा काम बनेगा।
(तुझे मुक्ति मिलेगी।)

तोरी होयलो मूली, खरपतवा भइलो साग।
अगवारे पछवारे बैठ लो, सोहो भइलो सरदार। (पू०)
मूली तो (उसके लिए) तुरई हो गई, और खर-पतवार हो गया साग, जो आदमी इधर-उधर बैठा करता था, वह अब सरदार बन गया। किसी साधारण मनुष्य ने बड़प्पन दिखाया, तब उससे कहा जा रहा है।

तोला के पेट में घुंघची
बड़े के पेट में छोटा समाता है।

तोला भर की आरसी, नानी बोले फ़ारसी
लंबी-चौड़ी बात करना।

तोला भर की चार कचौड़ी खुरमा माशे ढाई का,
लाला जी ने ब्याह रचाया लहगा बेच लुगाई का।
किसी कंजूस के यहां के ब्याह का मज़ाक। यह पूरी तुकबदी इस प्रकार है—
तोला भर की चार कचौड़ी, खुरमा माशे ढाई का,
घर मे रोवें बहिन-भानजी, बाहर रोवे नाई का,
धीरे-धीरे जीमो पचो देखो गजब खुदाई का,
लाला जी ने ब्याह रचाया, लहगा बेच लुगाई का।

तोले भर की तीन चपाती, कहे जिमाने वालो हाथी
झूठी शान।

तोहरा बूते कन भूसा एको न छूटी, (पू०)
तुझसे कोई काम नही होने का।

तौबा कर बंदे इस गंदे रोज़गार से, (मु०)
इस गदे रोज़गार को मत करो, भाई।
किसी बुरे काम से रोकने के लिए क०।

तौबा का दरवाज़ा खुला है, (मु०)
अपने कसूर की आदमी हमेशा क्षमा माग सकता है।

तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए, (मु०)
अपराधी के लिए प्रायश्चित्त बड़ी ढाल है।

त्रेता के बीजों को पहुंच गये
त्रेता के युग मे पहुच गए, अर्थात बहुत ईमानदार और सच्चे बन गए।

थकल पैराकू फेन चाट, (पू०)
थका तैराक फेन चाटता है।
(१) मनुष्य की जब सारी सपत्ति नष्ट हो जाती है, तो वह विवश होकर थोडे पर ही सतोष करता है।
(२) परिस्थितियो से बाध्य होकर मनुष्य को ओछे से ओछा काम करना पड़ता है।

थका ऊंट सराय तकता है
(१) दिन भर के परिश्रम के बाद मनुष्य आराम से लेटने की जगह चाहता है।

(२) थके मजदूर को अपना घर याद आता है।

थके बैल, गौन भई भारी, अब क्या लादोगे व्यापारी ?

वृद्धावस्था के लिए कहा है कि शरीर शक्तिहीन हो गया, पापों का बोझ भी बढ़ गया है, अब ठहर कर क्या होगा ? चलना चाहिए।

गौन=एक प्रकार का दोहरा थैला, जिसमे सामान भरकर बैलों पर लादते है।

थाली गिरी, झनकार सबने सुनी

जब कभी कही कोई लड़ाई-झगडा या कोई विशेष घटना होती है, तो उसका पता पड़ ही जाता है।

थाली पर से भूखा नहीं उठा जाता

जब कोई आदमी किसी वजह से नाराज होकर भोजन छोड़े, तब क०।

थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी

(१) किसी पर झूठा सदेह करना। किसी ने कहा कि अमुक व्यक्ति ने थाली तोड दी, पर जब उसे साबुत थाली लाकर दिखा दी गई, तो उसने कहा—थाली टूटी हो या न टूटी हो, पर गिरने की आवाज तो मैने सुनी।

(२) दो मनुष्यो मे झगडा हो जाए, तब भी। तात्पर्य यह कि उनमे आपस मे बिगाड़ हुआ हो या न हुआ हो, पर यह तो सभी जानते है कि उनमे तू-तू मैं-मैं हो गई। भाइयो के सबध मे क०।

था सोच जो कुछ अव्वल, आखिर वही पेश आया

जिस बात का पहले से सदेह था, आखिर वही सामने आई।

थूक कर चाटना

कहकर बदल जाना।

थूक दाढ़ी, फिटे मुंह

किसी को धिक्कारना।

थूक बिलोना

बेहूदी बात करना।

थूकों सत्तू नहीं सनता

जहां अधिक पैसे की जरूरत है, वहां कम में काम नही चल सकता।

थैलियां भी सिला लीं

जब कही से कोई झूठमूठ ही रुपए मिलने की आशा लगाए बैठा हो, तब उससे व्यंग्य में क०।

थैली में रुपया, मुंह में गुड़

पास में रुपया हो और जबान मीठी हो, तो इन दो ही से मनुष्य सुखी रहता है।

थोड़ मोल की कामली, करे बड़ों का काम।
महमूदी और बाफ्ता, सबके रक्खे मान।

कबल बडे काम की चीज है, वह दूसरे कीमती कपड़ों की इज्जत रखता है, उसकी वजह से वे खराब नही हो पाते।

महमूदी—एक प्रकार की मलमल, बोलचाल की भाषा मे इसे मामद कहते है।

बाफ्ता—एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

थोड़ा आपको, बहुत ग़ैर को

(१) अपने लिए चाहे थोड़ा करे, पर दूसरों के लिए बहुत करना चाहिए, अर्थात हमेशा दूसरो का ध्यान रक्खे।

(२) जो अपने घरवालो के साथ तो कम, पर बाहर-वालो से अधिक अच्छा व्यवहार करे, उसके प्रति भी कह सकते है।

थोड़ा करें गाजी मियां, बहुत करें डफाली

संत-महात्माओं की अपनी शक्ति तो थोडी ही होती है, पर उनके शिष्य उसे बहुत बढ़ा दिया करते है। (गाजी सालार उर्फ़ गाजी मियां महमूद गजनवी के भतीजे थे। सन १०३३ मे बहराइच में इनकी मृत्यु हुई। वहां इनकी समाधि है। ये मुसलमानों के बड़े पीर माने जाते हैं।)

डफाली—डफ या ढोल बजानेवाला।

थोड़ा खाना और इज्जत से रहना

फ़िजूलखर्ची नहीं करनी चाहिए।

थोड़ा खाना और बनारस में रहना

प्रायः ऐसे अवसर पर कहते है, जब कोई मनुष्य थोड़ी आमदनी से सतुष्ट रहकर घर में ही रहना पसंद करे।

थोड़ा खाना जवानी की मौत

थोड़ा खाने से तो आदमी दुबला होकर जल्दी मर

जाता है। यह एक विश्वास है। अगली कहावत मे इसके विरुद्ध बात कही गई है।

थोड़ा खाना, सुखी रहना
संतोषी का कहना।

थोड़ा-थोड़ा करके ही बहुत हो जाता है
स्पष्ट।

थोड़ा देना, बहुत आरजू करना
मिले थोड़ा, पर बिनती बहुत करनी पड़े।

थोड़ी आस मदार की, बहुत आस गुल्गुलों की
कुछ मिलने की आशा से ही लोग बड़े आदमियो के पास जाते है।
(शाहमदार, मुसलमानो के एक बडे पीर हो गए है, जिनकी मृत्यु सन १४३२ मे हुई। मकनपुर म उनकी दरगाह है। प्रतिवर्ष वहा मेला लगता है और प्रसाद मे गुलगुले बटते है। उसी से कहावत का मतलब यह कि मदार साहब के दर्शनो के लिए तो लोग कम ही जाते है, पर गुल्गुलो के लालच मे अधिक।)

थोड़ी पूंजी खसमों खाय
थोडी पूजी दूकानदार को नष्ट कर देती है, क्योंकि माल कम होने से मुनाफा थोडा होता है, और खर्च के कारण अत मे नुकसान होता है।

थोड़े धन मे खल इतराय
ओछा आदमी थोडा धन पाकर घमड करने लगता है।
(क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जिमि थोरे धन खल बौराई। तुलसी।)

थोड़े पानी में उभरे फिरते है
थोडा पैसा पाकर ही जब कोई दम से फल उठे, तब क०।

थोथा चना, बाजे घना
अकर्मण्य बात बहुत करता है।

थोथे फटके उड़-उड़ जायं
पोला या घुना अनाज फटकने से उड जाता है।
(१) मूर्ख या झूटा आदमी परीक्षा करने से ठहरता नही। अथवा
(२) मूर्ख आदमी गभीर नही होता।

दक्खन गये न बहुरे, रहे चंदेरी छाया, (स्त्रि०)
ऐसे आदमी के लिए कहते है जो घर छोडकर विदेश मे रह जाए।
(औरगजेब की फ़ौज के सबध मे कहा जाता है कि वह १२ वर्ष तक चदेरी का घेरा डाले पडी रही।)

दखल दर माकूलात करना
उचित काम मे हस्तक्षेप करना।

दबक शीरे के मटके मे
अनायास कोई सुयोग किसी के हाथ लग जाए, तब कहते है—जाओ लाभ उठाओ, मिठाई के मटके मे मुह मारो।

दबते को सब दबाते है
कमजोर पर सब रोब जमाते है।

दबा पाई गूजरी, 'गहरा बासन लाओ'
किसी को अपने अधीन जानकर जब अनुचित लाभ उठाया जाए तब क०।
गूजरी - ग्वालिन।

दबा बनिया पूरा तोले
बनिए को किसी से कोई भय हो, तो वह उसे पूरा तौलता है।

दबा हाकिम महकूम के ताबे
रिश्वतखोर हाकिम अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से डरता है।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटावे
किसी व्यक्ति मे यदि जब किसी प्रकार की कमजोरी हो, तो उसे अपने से छोटे आदमियो के सामने भी दबना पडता है।

दबे पर चींटी भी चोट करती हैं
सताने से कमजोर भी बदला लेता है।

दबे पर सब शेर हैं
जो दबता है उस पर सभी जबर्दस्त बन जाते हैं।

दम का क्या भरोसा है? आया, न आया?
ज़िंदगी का कोई ठिकाना नही, न जाने कब सास निकल जाए।

दम का दमामा है
ज़िंदगी का ही सारा खेल है।

दम= सांस।
दमामा=ढोल।

दम ग़नीमत है
आदमी जब तक ज़िंदा है, तभी तक ग़नीमत है।

दमड़ी का पोस्ती
निकम्मे आदमी के लिए क०।
पोस्ती=(१) अफीमची।
(२) बच्चों के खेलने का गुड्डा, जिसका सिर अफ़ीमची की तरह हिलता रहता है।

दमड़ी की अरहर, सारी रात खड़हर, (स्त्रि०)
ज़रा-से काम को बहुत करके दिखाना।

दमड़ी की गुड़िया, टका डोली का, (स्त्रि०)
जितने की चीज़ नही, उस पर उतने से अधिक ख़र्च।

दमड़ी की घोड़ी, छः पसेरी दाना, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

दमड़ी की चूं-चूं
निकम्मी चीज़।

दमड़ी की दाल, आप ही कुटनी, आप ही छिनाल, (स्त्रि०)
किसी वस्तु का इतना कम होना कि उससे एक आदमी का भी काम न चले।

दमड़ी की दाल 'बुआ पतली न हो', (स्त्रि०)
जो ज़रूरत से ज्यादा कजूसी करे, उसके लिए क०।

दमड़ी की निहारी में टाट के टुकड़े, (स्त्रि०)
थोड़े पैसो मे कोई अच्छी चीज कैसे आ सकती है?
निहारी=नाश्ता, कलेवा।

दमड़ी की पाग, अधेली का जूता
उल्टा-सीधा काम।
पाग के दाम जूते से अधिक होने चाहिए।

दमड़ी की बुढ़िया, टका सिर मुंड़ाई
दे०—दमड़ी की घोड़ी...।

दमड़ी की बुलबुल, टका छुटाई
किसी काम में मुनाफ़ा कम और खर्च अधिक।
छुटाई पंखों की सफाई।

दमड़ी की मुर्गी, नौ टका निकयाई, (पू०)
दे० ऊ०।
निकयाई=पंखों के अलग करने की मजदूरी।

दमड़ी की लाई बनैनी खाय, 'ये घर रहे कि जाय', (पू०)
बनियों की कृपणता पर।

दमड़ी की हांड़ी लेते हैं, तो ठोंक बजा कर लेते हैं
हर चीज़ देखभाल कर लेनी चाहिए।

दमड़ी की हांड़ी गई, तो कुत्ते की जात पहचानी
नुकसान हुआ सो हुआ, पर किसी एक आदमी के स्वभाव का पता तो चल गया।

दमड़ी के पान बनैनी खाय, कहो 'ये घर रहे के जाय'
दे०—दमड़ी की लाई...।
तथा—टके की लौग...।

दमड़ों में दम नहीं, ख़ैर मांगो जान की
निराश अवस्था में कहते है।

दम दरूद न होना
सास बंद हो जाना। अंतिम सांस लेना।

दम नहीं बदन, में नाम ज़ोरावर खां
बहुत दिखावा करनेवाले के लिए क०।

दम नाक में आ गया
बहुत परेशानी की हालत में होना।

दम बना रहे
आशीर्वाद। चिरायु होओ।

दम बना रहे, फूंक निकल जाय
जब ऊपर से कोई किसी का भला चाहे, पर भीतर से हानि पहुचाने की चेष्टा करे, तब क०।

दम भर की ख़बर नहीं
अगले क्षण क्या हो, ठीक नही।

दम मारने की जगह नहीं
जब काम से बिल्कुल फ़र्सत न मिले, तब क०।

दम में हज़ार दम
एक के सहारे बहुतों की गुज़र होती है।

दम है, जब तक ग़म है
जब तक ज़िंदगी है, तब तक परेशानियां भी हैं।

दम हैं तो क्या ग़म है?
ज़िंदा अगर है, तो फिर चिन्ता किस बात की?

दमा दम के साथ

दमा दम के साथ ही जाता है।

दमा=श्वास संबंधी एक रोग।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घट मे प्रान।

स्पष्ट।

दया बिन संत कसाई

स्पष्ट।

दर-दर मांगते फिरते है

किसी की गिरी हुई हालत के लिए क०।

दर-बदर, खाक बसर फिरा है

सिर पर धूल डालकर दरवाजे-दरवाजे फिरता है। बहुत शोचनीय स्थिति मे है।

दरया को कूजे मे भरना

गागर मे सागर भरना।

(१) थोडे मे बहुत कह जाना।

(२) असंभव को संभव बनाना।

दरया पे जाना और प्यासे आना

एक मूर्खतापूर्ण कार्य। जहां आसानी से अपना कार्य सिद्ध हो रहा हो, वहा से खाली हाथ लौटना।

दरया में रहना और मगरमच्छ से बैर

जिसके आश्रित रहे, उससे बैर करना ठीक नही।

दरवाजे पर आई बारात, समधिन को लगी हगास, (स्त्रि०)

काम के समय गायब हो जाना।

(दरवाजे पर बरात आने पर समधिन की सबसे पहले आवश्यकता पड़ती है।)

दरे तौबा बाज है, (मु०)

भूल के लिए कभी भी खेद प्रकट किया जा सकता है।

दरोग को फ़रोग नहीं

झूठा फलता-फूलता नही।

दरोग गो को हाफ़िज़ा नहीं होता

झूठे की स्मरणशक्ति कमज़ोर होती है। वह भूल जाता है कि उसने कब क्या कहा।

दरोग ब गर्दने-रावी (फ़ा०)

झूठ का पाप झूठ बोलनेवाले के सिर पड़ता है।

दर्जी की सुई, कभी ताश में, कभी टाट में

दर्जी की सुई कभी रेशम की सिलाई करती है तो कभी टाट की।

परिस्थितिवश कभी एक-सी नही रहती।

दर्द को वह समझे, जो खुद दर्दमंद हो

दयावान ही दूसरे के दुख को समझ सकता है।

दर्शन के नैना लोभी

स्पष्ट।

दर्शन थोड़े नाम बहुत

जब किसी मे ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाए, तब क०। कहावत का प्रचलित पाठ—'नाम बड़ा दर्शन थोडे' है।

('नाम बहुत' पहले कर देने से कहावत को इस स्थान से हटाना पडेगा। इसलिए फैलन ने जैसा लिखा है वैसा ही रहने दिया।)

दर्शना मोटा, पेड़ा खोटा, (हिं०)

दर्शन तो अच्छे, पर मार्ग बुरा।

(जैसा बद्रीनाथ की यात्रा का है।)

दलिद्दर घर मे नोंन पकवान, (स्त्रि०)

कंजूस के घर मे नमक ही पकवान माना जाता है।

(बोलचाल मे दालिद्री का अर्थ कजूस होता है।)

दवा और दुआ दोनों

एक साथ सब काम साधना। दवा भी हो और ईश्वर-प्रार्थना भी हो।

दवा की दवा, गिज़ा की गिज़ा

ऐसी वस्तु, जो दवा का भी काम करे और जिससे पेट भी भरे।

गिज़ा=भोजन।

दवा के लिए ढूंढ़ो तो नहीं मिलती

बहुत दुर्लभ चीज़।

दवात कलम

कोरी दवात कलम है। कागज़ में रोकड़ नही है।

दस नकटों में नाकवाला नक्कू

जैसे समाज में रहे, वैसी ही चाल चले। दस नकटो मे अगर कोई नाकवाला पहुच जाए, तो वे 'नक्कू' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाएगे।

(नक्कू के यहां दो अर्थ है 'नाकवाला' और 'बदनाम'।)

दसों उंगलियां, दसों चिराग, (मु० स्त्रि०)
सब तरह से चतुर और काम करनेवाली स्त्री के लिए क०।

दस्तरखान की बिल्ली, (मु०)
ऐसा व्यक्ति जो हर जगह दावत में बिना बुलाए खाने पहुंच जाए। मुफ्तखोर, खुशामदी।

दस्तरखान की मक्खी, (मु०)
मुफ़्तखोर के लिए घृणापूर्वक क०।

दस्तरखान के बिछाने में सौ ऐब, न बिछाने में एक ऐब, (मु०)
कोई काम अगर किया जाए, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए, अन्यथा उसे न करना ही अच्छा। काम न करने पर केवल यही बदनामी होगी कि नही किया। पर उसे यदि ढग से न किया गया, तो अधिक बदनामी होने की सभावना रहती है।

दस्तार, गुफ्तार अपनी ही काम आती है
पगडी और बात अपनी ही काम आती है।
किसी से कुछ कहना है, तो स्वय ही कहना चाहिए, दूसरे से कहलवाना ठीक नही।

दस्तार, गुफ्तार, रफ्तार जुदी-जुदा
पगड़ी बाधने, बोलने ओर चलने का ढग, सबका अलग-अलग होता है।

दह दर दुनिया, सद दर आखरत, (मु०)
इस लोक में दस देने से परलोक मे सौ मिलते है। मुसलमान फकीरो की टेर।
आखरत (आखिरत) क़यामत। परलोक।

दह'पोइस' खलीता भारी
एक ओर हटो, बोझ बहुत है।
(सड़क पर भारी बोझ लेकर चलनेवाले मज़दूर 'पोइस' 'पोइस' चिल्लाते जाते है।)

दही की गवाही चूड़ा (पू०)
दोनों का जोड़ है। दही और शक्कर के साथ चूड़ा खाया जाता है।

दही बेचन चलीं, पीठ पिछाड़ कमोहया, (स्त्रि०)
जब कोई अपना काम करने में शर्माए, तब क०।
(दही तो बेचने जा रही है और मटकी पीठ के पीछे छुपा रक्खी है, जिससे कोई देख न ले।)

दही भात का मूसल
हर काम में हस्तक्षेप करनेवाला। व्यर्थ बीच में बोलनेवाला। दही भात दोनो ही मुलायम चीजें है। उनके लिए मूसल की आवश्यकता नही पड़ती। (यह कहावत 'दही भात मे मूसल' अधिकतर इस प्रकार ही प्रचलित है। दाल-भात मे मूसल या मूसलचंद भी क०।)

दांड़ा बाला, जाड़ा ढाला; (ग्रा०)
लक्कड़ जलाने से जाड़ा भाग जाता है।
(प्रयास करने से कार्य सिद्ध होता है।)

दांत काटी रोटी है
गहरी दोस्ती के लिए क०।

दांत कुरेदने को तिनका नहीं बचा
अग्नि में सब स्वाहा हो गया। अग्निकांड की भीषणता को प्रकट करने के लिए क०।

दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ न बोझा लेय। ऐसे बूढ़े बैल को, कौन बांध भुस देय।
(१) बहुत बूढे और कमज़ोर बैल के लिए कहते है, उससे कोई काम नही लिया जा सकता।
(२) निकम्मे आदमी के लिए भी व्यंग्य मे क०।

दांत पर मल नहीं
बहुत ग़रीबी की हालत में होना।

दाई के सिर पान फूला (मु० स्त्रि०)
पुत्र उत्पन्न होने की खुशी में दाई से क०।
(बच्चे आख-मिचौनी के खेल मे इस वाक्य का करते प्रयोग है। वही से लिया गया है। पान फूल एक गहना भी होता है।)

दाई चंबेली के मिरजा मोगरा
जब कोई तुच्छ आदमी अपना झूठा बड़प्पन दिखाए, तब व्यग्य मे क०।
(चमेली और मोगरा फूलों के नाम हैं। वे मनुष्यों के नाम भी होते है।)

दाई जाने अपनी हाई, (स्त्रि०)
दाई अपने जैसी ही स्थिति सबकी समझती है।

जब कोई दूसरे के कष्ट को कम करके बताए, तब क०।

(बच्चा जनाते समय दाई प्रसूता की पीड़ा की ओर ध्यान नहीं देती और उसे धैर्य बंधाने के लिए यही कहा करती है कि 'अरे व्यर्थ चिल्लाती हो, क्या बात है।' कहावत में उसी का जवाब है।)

दाई दाई ऊंटनी, सवा घड़ी मुतनी

बच्चों की तुकबंदी ।

दाई री दाई! तेरे सात हों भाई

बच्चों की तुकबंदी।

दाई से पेट छिपाना, (स्त्रि०)

किसी मनुष्य से ऐसी बात छिपाना, जो पहले से ही भेद जानता है।

दाई से पेट नहीं छिपता

जिस आदमी को रोज़ जो काम करना पड़ता है, उससे उस सम्बन्ध की कोई बात छिपती नहीं।

दाई हो मीठी, दादा हो मीठा, तो स्वर्ग कौन जाये?

यह लूं या वह लूं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर क०।

दाग लगाये लंगोटिया यार

क्योंकि वह तुम्हारा कच्चा चिट्ठा जानता है। तुम अगर उसे कोई नुकसान पहुंचाओगे, तो वह तुम्हारा भेद खोल देगा।

दागे के सांड तो दाग ले लोहार, (पू०)

सांड को दगवाना है, तो लोहार ही दाग सकता है। जिसका जो काम है, उसे वही करता है।

दागना=लालगरम लोहे से जानवर की पीठ पर निशान बनाना।

दाता की नाव पहाड़ चढ़े

दानशील के सभी काम सफल होते हैं।

दाता के घर लच्छमी, ठाड़ी रहत हजूर।
जैसे गारा राज को, भर-भर देत मजूर।

दानशील जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है।

गारा=चूने और पानी का गाढ़ा मिश्रण, जो मकान बनाने के काम आता है।

राज=कारीगर।

दाता के तीन गुन, दे, दिलावे, छीन ले, (हिं०)

ईश्वर के लिए कहा गया है कि वही देता है, वही दिलाता है। और वही छीन भी लेता है। राजा या मालिक के लिए भी कह सकते हैं।

दाता को राम छप्पर फाड़ के देता है

ईश्वर दाता को कहीं-न-कहीं से देता है।

दाता दाता मर गये (और) रह गये मक्खीचूस।
देन लेन को कुछ नहीं लड़ने को मौजूद।

किसी याचक का कहना, जिसे कुछ मिला नहीं।

दाता दातार, सुथनी उतार, (स्त्रि०)

(१) कोई स्त्री अपने पति की दानशीलता से ऊबी हुई है और खीझकर कहती है कि वह हजरत इतने उदार हैं कि मेरा पैजामा भी उतार कर दे सकते हैं। (२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि दाता तो वही है, जो अपनी बीवी की सुथनी तक उतार कर दे दे।

दाता दे कंजूस झुर-झुर जाये

दाता को देते देख कंजूस दुखी होता है।

दाता दे भंडारी का पेट फटे

जब मालिक तो देना चाहे, पर जिसके हाथ में कुंजी है, वह देने में आनाकानी करे, तब क०। मराठी में भी है—खरचणाराचें खरचतें, कांठा वाळ्याचें पोट दुखते।

दाता दे, भंडारी पेट पीटे

दे० ऊ०।

दाता देवे और शरमावे, बादल बरसे और गरमावे

दाता देकर शर्माता है कि मैंने कम दिया, इसी तरह बादल बरसकर शर्माता है, अर्थात और अधिक बरसना चाहता है। वर्षा में वायुमंडल का गरम होना और ज्यादा वर्षा का सूचक है।

दाता पुन्न करे, कंजूस झुरझुर मरे

दे०—दाता दे कंजूस...।

दाता सदा बलिस्री

क्योंकि वह अपने पास कुछ नहीं रखता।

दादा कहने से बनिया गुड़ देता है

(१) हर आदमी खुशामद-पसंद है। अथवा

(२) खुशामद बड़ी चीज़ है।

दादा जान पराये बरदे आज़ाद करते थे

अर्थात हम ऐसे आदमी नहीं, जो अपनी गांठ से कुछ खर्च करेंगे। हम तो मुफ्त की वाहवाही लूटनेवाले आदमी है।

(पराये बरदे आज़ाद करने का अर्थ होता है, दूसरो का खर्च कराकर स्वय नेकनामी लूटना।)

दादा पड़दादा के राज की बातें करता है

लंबी-चौड़ी हांकनेवाले के लिए क०।

दादा मरिहै तो भोज करिहै, (पू०)

किसी काम को अनिश्चित काल के लिए टालना। अथवा उसके लिए कोई ऐसी शर्त लगाना, जिससे वह पूरा हो ही न सके।

दादा मरेंगे, जब बैल बटेंगे

दे० ऊ०।

दादा मरेंगे, जब मीरास बटेगी

दे०—दादा मरिहै...।

मीरास=संपत्ति।

दादा मरेंगे तो पोता राज करेंगे, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

(ऊपर की चारो कहावतो का लगभग एक-सा भाव है।)

दादू दुनियां बावरी, फिर-फिर मांगे दान।
लिखनहारा लिख गया, मेटनहारा कान।

दादू कहते हैं कि ईश्वर से बार-बार कोई प्रार्थना करना व्यर्थ है। भाग्य में जो लिखा है, वही होगा।

दादे राज न खाय पान, दांत दिखावत गये प्रान, (पू०)

साधारण आदमी दिखावा करे, तब क०।

दान वित्त समान, (हिं०)

सामर्थ्य के अनुसार दान देना चाहिए।

दाना खा मोठ का, पानी पी सोंठ का

मोठ की दाल वायुकारक होती है, इसलिए उस पर सोंठ का पानी पीना चाहिए।

सोंठ वायुनाशक मानी जाती है।

दाना खाय न पानी पीवे, वह आदमी कैसे जीवे ?

आदमी से अगर काम लेना है, तो उसे खाने को भी मिलना चाहिए।

दाना जल्दबाज़ी नहीं करते

सोच-विचार कर काम करे।

दाना छितराना तहां जाना जरूर है, (पू०)

जहां अन्नजल है, वहीं आदमी को जाना पड़ता है।

दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर

बुद्धिमान शत्रु मूर्ख मित्र से अच्छा।

दाना न घास, खरहरा छः-छः बार

(१) आवश्यक वस्तु न देकर व्यर्थ की चीज देने पर क०।

(२) झूठी सेवा-सुश्रूषा करने पर भी क०।

दाना न घास, घोड़े तेरी आस

किसी चीज के रख-रखाव मे कुछ खर्च न करके यह आशा करे कि वह वक्त पर काम आएगी, तब क०।

दाना न घास, पानी छः-छः बार

दे०—दाना न घास खरहरा...।

दाना न घास, हिन-हिन करे

घोडे को अगर दाना और घास न दिया जाए तो वह हिनहिनाएगा। भूखा आदमी शोर मचाता है।

दानी की भाखा खाली न जाय

सज्जन पुरुष की बात खाली नही जाती।

दाने को टापे, सवारी को पादे

खाने को तैयार, पर काम से मुह चुराना।

दाने-दाने को मोहताज है

बहुत गिरी हालत में है।

दाने-दाने पर मुहर है

बिना भाग्य के एक दाना भी नही मिलता।

दाने-पानी के इख्तियार है

भाग्यवादी की उक्ति।

दाने-पानी के हाथ है

दे० ऊ०।

दाम आवे काम

पैसा वक्त पर काम आता है।

दाम करे सब काम
पैसे से ही सब काम होता है।
दाम दीजे, काम लीजे
पैसा दो और काम कराओ।
दामों टेरी या हाड़ों ढेरी
या तो पैसा इकट्ठा करो या हड्डियों का ढेर बनो। यानी बिना पैसे के बेमौत मरो।
दामों रूठा, बातों से नहीं मानता
जिसे अपना पैसा लेना है, वह खाली बातो से नही मानता। उसे तो पैसा चाहिए।
दारू ये—गजब खामोशी, (फ़ा०)
क्रोध की सबसे अच्छी दवा मौन है। अर्थात चुप रहने से क्रोध शान्त हो जाता है।
दाल-भात, खिचड़ी
किसी चीज का गड्डमगड्ड।
दाल मे काला है
कुछ गड़बड़ है।
दावत नहीं, अदावत है
दावत नही, मुसीबत है।
(खिलाने-पिलाने मे खर्च होता है, इसी से क०।)
दासी करम कहार से नीचे, (हिं०)
नौकरानी का पेशा सबसे बुरा।
दाहना धोवे बायें को, और बायां धोवे दायें को
परस्पर सहयोग से ही काम चलता है।
दिन अच्छे होते हैं, तो कंकड जवाहर हो जाते है
समय अच्छा आने पर सब काम बनते है।
दिन ईद और रात शबेबरात, (मु०)
हमेशा मौज-मजे में रहनेवाला।
दिन को ऊनी-ऊनी, रात को चरखा पूनी, (स्त्रि०)
दिन मे अलसाती है और रात मे चरखा-पूनी लेकर बैठती है।
(समय पर काम न करके वेवक्त करे, तब क०। बंगला मे है—दिन गेल हेसे खेले रात होले बउ कापास डले। यानी दिन तो हँस-खेलकर बीत जाता है, रात को वह रूई सहलाती है यानी मजे ही मजे हैं।)

दिन को शर्म, रात को बगल गर्म
जब कोई स्त्री दिन में अपने पति या अपने किसी प्रेमी से बहुत शर्म करे, तब क०।
दिन खसा, मजदूर हँसा
इसलिए कि काम से छुट्टी मिलेगी।
दिन जब बुरे आते हैं, तो सोने पै हाथ डालो मट्टी हो जाता है
स्पष्ट।
दिन जब भले आते है तो मट्टी में हाथ डालो सोना होता है
स्पष्ट।
दिन जाते देर नही लगती
स्पष्ट।
दिन दस आदर पाय के, करलें आप बखान।
जो लग काग सराध पख, तो लग तो सन्मान।
थोड़े दिनो की प्रतिष्ठा मिलने पर जब कोई उसी पर अभिमान करने लगे, तब क०।
दिन दीवाली हो गये
बहुत आनद उत्सव मनाया जाना।
दिन दूनी रात चोगुनी
तेजी से वृद्धि के लिए क०। आशीर्वाद में क०। दिन दूनी रात चौगुनी बढती हो।
दिन नीके बीते जाते हैं, फेर नही वह आते हैं
अच्छा समय फिर नही आता।
दिन भर चले अढाई कोस
आलसी आदमी।
दिन भले आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे
उन्हे बुलाना नही पड़ता।
दिन मे सोवै, रोजी खोवै, (लो० वि०)
दिन में सोना अच्छा नहीं।
दिमका के खाइल पेंड़, सोच के मारल देह कवनों काम के न रहे
दीमक का खाया पेड़ और चिंता का मारा शरीर किसी काम का नही रहता।
दिया तो चांद था, न दिया तो मुंह मांद था
किसी की इच्छा पूरी कर दो, तो प्रसन्न हो जाता है। न करो तो नाराज रहता है।

दिया दान मांगे मुसलमान, (हिं०)
दिया हुआ दान मुसलमान ही वापस लेते हैं। (मुसलमानों में यह प्रथा है कि लड़की के मरने पर दहेज में दिए धन को फिर वापस मांग लेते है। यह स्त्री के फायदे के लिए है, पर इसका उल्टा अर्थ लगाया गया।)

दिया दूर से, लागी साथ खाने, (स्त्रि०)
मांगने पर किसी को कोई चीज दे दो, तो वह धृष्ट बन जाता है। फिर मागने लगता है।

दिया न बाती, मंडो फिरे इतराती, (स्त्रि०)
कोरा घमड।

दिया फ़ातिहा को, लगे लुटाने, (मु०)
किसी चीज का दुरुपयोग। फातिहा वह चढ़ावा कहलाता है, जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाता है।

दिया वस्त अनूप है, दिया कहे सब कोय।
धरा वस्त ना पाइये, जो पाये दिया न होय।
स्पष्ट।
दिया के यहा दो अर्थ हैं। (१) दी हुई वस्तु, अर्थात दान; तथा (२) दीपक। पाये पास। इस दोहे का शुद्ध रूप इस प्रकार है—
दिया वस्तु अनूप है, दिया करो सब कोय।
धरी वस्तु ना पाइये, जो कर दिया न होय।

दिया लिया ही आड़ो आता है
अच्छे कर्म ही अंत समय काम आते है।

दिया हाथ, खाने लगा साथ
किसी को थोड़ा सहारा देने पर जब वह गले पड़ जाए, तब क०।

दिया है तो देख ले
(१) दान दिया है तो फल मिलेगा।
(२) हाथ मे दीपक हो, तो उससे सब देखा जा सकता है।

दिये की रोशनी महशर तक, (स्त्रि०)
यहां दिये के दो अर्थ हैं—
(१) दीपक और (२) दान। दीपक का प्रकाश जग में फैलता है, पर दान का प्रकाश स्वर्ग तक।

दिये तले अंधेरा
दे०—चिराग़ तले...।

दिल का दिल आइना है
एक के हृदय की बात दूसरे से छुपी नही रहती।

दिल का मालिक खुदा है
वह जिससे भी जैसा काम करवा ले।

दिल की थी मैं सादो, जिसका पाती उसका खाती
किसी भोली स्त्री का कहना कि जातपांत का कोई भेद मैने नही किया, जिसका मिल जाता उसी का खा लेती।

दिल को दिल से राह है
एक हृदय से दूसरे के लिए हमेशा रास्ता रहता है। इसका शुद्ध रूप 'दिल को दिल से राहत है'। राहत आराम।

दिल को हो करार तो सब सूझें त्यौहार
मन निश्चिन्त होने पर ही त्योहार अच्छे लगते है।

दिल में आई को रखे सो भड़वा
मन मे आई बात को छिपाना न चाहिए।

दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर
सच्चे और ईमानदार आदमी की सब इज्जत करते है।

दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है ?
प्रेम में रूप-कुरूप नहीं दिखाई देता।

दिल लगा मेढकी से तो पद्मिनी क्या चीज है ?
दे० ऊ०।

दिल सोज, खाना तराश
दिल की आग, घर का चाकू।
बुरा लड़का या बुरी पत्नी।

दिलेरी मर्दों का गहना है
वीरता से ही मनुष्य की शोभा है।

दिल्ली की कमाई, दिल्ली ही में गंवाई
नौकरी में कुछ बचा न पाना।

दिल्ली की बेटी, मथुरा की गाय; करम फूटे तो बाहर जाय
यदि दिल्ली जैसे बड़े शहर की लड़की या मथुरा जैसे पुनीत स्थान की गाय किसी दूसरी जगह जाए,

तो यह तो उसके लिए एक दुर्भाग्य की ही बात है। प्रचलित रूप—गोकुल की बेटी।

दिल्ली के बिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली

शहर के छैल-चिकनियों के लिए। खाने को चाहे न हो, पर ऊपर साफ़-शौकीन बने रहते हैं।

दिल्ली ग़दर पहले चमन बनी हुई थी

मुग़लों के ज़माने की याद में किसी का कहना।

दिल्ली दूर है

अभी रास्ता बहुत तै करना है।

दिल्ली से मैं आऊं, ख़बर कहे मेरा भाई

(१) जब कोई आदमी किसी जानी हुई बात को स्वयं न कहकर किसी दूसरे से पूछने के लिए कहे, जिसे उसका कोई ज्ञान नहीं, तब क०। (२) जब जानी हुई बात को कोई दूसरा सुनाने आए, तब भी कह सकते हैं।

दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पक्के

दिल्ली से हींग आने पर बड़े तैयार हुए।

(१) व्यर्थ का आडंबर।

(२) किसी काम में आवश्यकता से अधिक विलंब लगना।

दिवाल रहेगी तो लेब बहुतेरे चढ़ रहेंगे, (स्त्रि०)

जान बचेगी तो शरीर पर मांस भी चढ़ जाएगा। लेब=लेप, पलस्तर।

दिवालिये की साख पताल में

दिवालिए की कोई साख नहीं होती।

दीवारबाज़ी और मौला राज़ी

खूबसूरत औरतों से नज़रबाजी करने में ईश्वर नाराज़ नहीं होता, यह शोहदों का कहना है।

दीन दुनिया की दम-बदम कीजे, किसकी शादी वो किसका ग़म कीजे

अपने लोक-परलोक को बनाना चाहिए, दूसरों के झगड़े में कोई कहां तक पड़ सकता है?

दीन व दुनिया में उसका होय बुरा, जो किसी का कोई बुरा चीते

जो दूसरों का बुरा चाहता है, उसका लोक-परलोक दोनों जगह बुरा होता है।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है

(१) धर्म-पालन करके दुनिया में रहना मुश्किल है।

(२) ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है, पर दुनिया को प्रसन्न रखना कठिन है।

दीन से दुनिया है

धर्म के सहारे ही संसार टिका है।

दीवाना बकारे खुद हुशियार

(१) पागल, पर अपने काम में होशियार।

(२) पागल भी अपने काम में होशियार होता है।

दीवाना है व लेकिन बात कहता है ठिकाने की

दिमाग़ ठीक नहीं, लेकिन बात पते की कहता है।

दीवानी आदमी को दीवाना कर देती है

दीवानी के मुकदमे आदमी को पागल बना देते हैं। वे वर्षों चलते हैं।

दीवाने को बात बताई, उसने ले छप्पर चढ़ाई

नासमझ से कोई भेद की बात नहीं कहना चाहिए।

दीवाने से आंख नहीं मिलाइये

ऊटपटांग आदमी से बात न करना ही ठीक है।

दीवानों के क्या सिर सींग होते हैं

जब कोई बेसिर-पैर की बात कहे।

दीवार के भी कान होते हैं

गुप्त बात को किसी से कहते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए, ऐसा न हो कोई दूसरा सुन ले।

दीवार खाई आलों ने, घर खाया सालों ने

आलों से दीवार कमज़ोर होती है। और सालों से घर नष्ट होता है, क्योंकि बहिन की वजह से वे मनमाना खाते-पीते हैं।

दीवाली की कुल्हिया

देखने में अच्छी, पर किसी काम की नहीं। (दीपावली में रंग-बिरंगे कुल्हड़ और मिट्टी के अन्य बर्तन बनाए जाते हैं। वे देखने में सुन्दर होते हैं, पर बाद में किसी उपयोग में नहीं आते।)

दीवाली की रात को बूटी बूटी पुकारती है, (लो० वि०)

दीवाली की रात में लोग जड़ी-बूटियां खोदकर

लाते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस दिन खोद कर लाई गई जड़ी-बूटी अधिक गुण दिखाती है। उसी से आशय है।

दीवाली के दिये चाटकर जायेंगे

मुफ़्तखोरे के लिए क०।

दीवाली जीत, साल भर जीत, (लो० वि०)

स्पष्ट। दीवाली में जुए में जीतना शुभ मानते है।

दीवाली बरस में एक दिन

शुभ दिन या उत्सव का दिन रोज-रोज नही आता।

दुआ और दवा, नित करनी चाहिए

बीमारी की हालत मे ईश्वर से नित्य प्रार्थना भी करनी चाहिए और दवा भी खानी चाहिए।

दुआर धनी के पड रहे, धका धनी का खाय

धनी के पास रहने और उसकी खुशामद करते रहने से कुछ-न-कुछ लाभ होता ही है। पूरा दोहा इस प्रकार है—

द्वार धनी के पड रहै, धका धनी के खाय।
कबहूं धनी नेवाजही, जो दर छाडि न जाय।

यह दूसरी पक्ति इस प्रकार भी सुनने मे आती है—

एक दिन ऐसा होयगा आप धनी ह्वै जाए।

दुखते चोट, कनौड़े भेंट

चोट लगी, और काने से भेंट। जिस आदमी से बचना चाहते हो, उसी का मिल जाना।

काने का रास्ते मे मिलना अपशकुन मानते है।

दुखते दांत को उखाड़ना ही चाहिए

जिससे निरंतर कष्ट मिले, उसे अलग ही कर देना चाहिए।

दुख भरें बी फ़ाख़्ता, कौवे मेवे खायें

कोई तो मेहनत करे, और कोई उसका फल भोगे।

फ़ाख़्ता=एक चिड़िया।

दुख में सुख की कदर होती है

स्पष्ट।

दुख में हर को सब भजे, सुख में भजे न कोय।
जो सुख में हर को भजे, तो दुख काहे को होय।

स्पष्ट।

दुख सुख निस दिन संग है, मेट सके ना कोय।
जैसे छाया देह की, न्यारी नेक न होय।

जीवन में सुख-दुख हमेशा लगे रहते हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

नेक=ज़रा भी।

दुख सुख बहिन भाई हैं

दुख-सुख का जोड़ा है।

दुख सुख सबके साथ लगा हुआ है

दुनिया मे सभी सुख-दुख भोगते है।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे, (स्त्रि०)

यह देखने के लिए कि वह अपना क्या मतलब गांठ सकता है। (फैलन की टिप्पणी है कि यह वकीलों के लिए कही जाती है।)

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे

स्पष्ट।

दुधैल गाय की दो लातें भी सही जाती हैं

जब किसी से कुछ मिलने की आशा होती है, तो उसके नाज-नखरे भी उठाने पडते हैं।

बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करवे बैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन। (वृन्द)

दुनियां ठगिये मक्कर से, रोटी खाइये शक्कर से

दुनिया का चालाकी से लाभ उठाए और अपनी रोटी शक्कर से खाए। मतलब, दुनिया मे सीधे आदमी की गुजर नही।

प्रचलित पाठ—'दुनिया ठगिए मक्कर से' भी है।

दुनियां चंद रोज़ा है

दुनिया कुछ दिनों की है।

दुनियां जाए उम्मेद है

दुनिया नष्ट हो जाए, पर आशा फिर भी रहती है। वह कभी नहीं मिटती।

दुनियां ज़ाहिरपरस्त है

दुनिया दिखावट को पसंद करती है।

दुनियां दुरंगी, मकारा सराय,
कहीं ख़ैर-ख़ूबी, कहीं हाय-हाय

स्पष्ट।

मकारा सराय=धोखेबाज़ो की जगह।

दुनियां धुंध का पसारा है, (हिं०)
संसार एक माया है, अथवा असार है।
दुनियां धोखे की टट्टी है
संसार मिथ्या है।
दुनियां बउम्मेद कायम है
संसार आशा पर टिका है।
दुनियां बेसबात है
ससार नश्वर है।
बेसबात जिसकी स्थिरता न हो। क्षण-स्थायी।
दुनिया मुर्दा पसन्द है, (मु०)
दुनिया मरे हुओ की ही प्रशसा करती है। जीवित को कोई नही पूछता।
दुनियां में ऐसे रहिए, जैसे साबुन में तार
अर्थात दुनिया में उससे अलग होकर इस तरह रहना चाहिए, जैसे साबुन मे तार रहता है। साबुन को काटते समय तार उससे बिल्कुल अलग हो जाता है। साबुन से चिपकता नही।
दुनियां में चार पैसे बड़ी चीज है
स्पष्ट।
दुनियां में दो ही चीज है; बेटा, बेटी
जब किसी को लडके की आकांक्षा रही हो, और लडकी पैदा हो, तब उसे सतोष देने के लिए क०।
दुनियां में साढ़े तीन दल हैं
चीटी, टीढी और बादल, ये तीन दल कहलाते हैं। आधे मे सारी दुनिया है।
दुनियां है और खुशामद
खुशामद से ही आप अपना काम बना सकते हैं और रह सकते हैं।
दुनियां है और मतलब
मतलब के सिवा दुनिया मे कुछ नही। हर आदमी मतलब चाहता है।
दुबला कुनबा, सराप की आस
किसी कमजोर घर के लोगों को अगर कोई सताए तो उनके पास सिवा कोसने और गाली देने के और कोई सहारा नहीं होता।
दुबले कलावंत की कौन सुने ?
गरीब गायक का गाना कोई नही सुनता। दुर्बल की सब उपेक्षा करते है।
दुबले मारें शाह मदार
शाह मदार भी दुर्बल को ही सताते है।
(स०---दैवो दुर्बल घातक।)
(शाहमदार मुसलमानो के एक प्रसिद्ध सत हो गए है, जिनकी मकनपुर मे कब्र है।)
दुविधा मे दोनों गये, माया मिली न राम
संशय की स्थिति मे होना। दो में से कोई काम न कर पाना।
दुम दबा के भागना
डरपोक कुत्ते की तरह डर कर भागना।
दुम मे नमदा बांध के चांदनी को सौंप दिया
किसी का मजाक उडाने के लिए क०।
नमदा=जमाए हुए कंबल या कपड़े का टुकड़ा।
दुरंगी छोड दे, एक रंग हो जा।
सरासर मोम हो या संग हो जा।
दुनिया मे रहकर दुहरा व्यवहार ठीक नही, या तो मोम की तरह नरम होकर रहे, या पत्थर की तरह सख्त।
दुलारी बिटिया, ईंटे का लटकन, (पू०)
बेढगा शृंगार।
लटकन=कान का एक गहना।
दुशाले में लपेट कर मारना
मीठे शब्दों में डांटना।
दुश्मन की निगाह जूती पर
अर्थात दुश्मन कभी चेहरे की तरफ नही देखता। (शायद इस डर से कि कही आप उसे जूता उतार कर मार तो नही रहे है।)
दुश्मन के दिल में जगह करने को हुनर चाहिए
दुश्मन के दिल को जीतने के लिए बड़ी होशियारी चाहिए।
दुश्मन को कम न समझिए
शत्रु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
दुश्मन के मन का चेता हुआ
दुश्मन जो चाहते थे, वही हुआ।

दुश्मन कौन? कि 'मां का पेट'
सगे भाई के बराबर दुश्मन कोई नहीं।
(संपत्ति के लिए भाइयों में झगड़ा होता है, उसी से अभिप्राय है।)

दुश्मन सोये न सोने दे
स्पष्ट।

दुश्मनों में यूं रहिए, जैसे बत्तीस दांतों में जबान
दुश्मनों के बीच संभलकर रहना चाहिए।

दुष्ट न छांड़े दुष्टता, कैसी हू सिख देय।
धोये हू सौ बार के, काजर स्वेत न होय।
स्पष्ट।

दूध का जला, छाछ फूंक-फूंक कर पीता है
एक बार धोखा खाने पर मनुष्य भविष्य के लिए सावधान हो जाता है।

दूध का दूध, पानी का पानी
सही न्याय।

दूध का-सा उबाल है, आया चला गया
बहुत क्रोधी स्वभाव का होना, पर जल्दी शान्त भी हो जाना।

दूध की अभी बू आती है
अर्थात अभी तुम्हारा बचपन दूर नहीं हुआ।

दूध की-सी मक्खी निकाल कर फेंक दी
तिरस्कारपूर्वक अलग कर दिया, कोई सम्बन्ध नहीं रखा।

दूध के दांत भी अभी नहीं टूटे हैं
अभी तुम लड़के हो।

दूध पूत क़िस्मत से
धन और पुत्र भाग्य से मिलते हैं।

दूध भी धोला, छाछ भी धौली
दो चीजें ऊपर से देखने में भले ही एक-सी हों, पर उनके गुण में अंतर होता है।

दूध में की मक्खी किसने चक्खी?
घृणित की परीक्षा किसने की? भोजन में अगर मक्खी गिर जाए तो उस भोजन को ही फिर अलग कर देते हैं।

दूधों नहाओ, पूतों फलो, (स्त्रि०)
आशीर्वाद।

दूर के ढोल सुहावने, (स्त्रि०)
दूर की सब चीजें अच्छी लगती हैं अथवा अच्छी मानी जाती हैं।

दूल्हा के पत्तल न, बजनिए के थार (पू०)
वास्तव में जिसे मिलना चाहिए, उसे कुछ न मिले और ऊपरवाले उड़ा ले जाएं।

दूल्हा गयल बरात
दूल्हा के चलने पर ही (उसके पीछे) बरात चलती है।

दूल्हा ढाई दिन का बादशाह है
क्योंकि ब्याह में सब तरह से उसकी इज्जत होती है।

दूल्हा दुल्हिन पाय, सहबाला लाते खाय
स्पष्ट।
सहबाला=(शहबाला) वह छोटा लड़का, जो दूल्हे के साथ बरात में जाता है।

दूल्हा दुल्हिन मिल गये, झूठी पड़ी बरात
जब दो आदमी अपने-अपने समर्थकों को लेकर आपस में लड़ रहे हों, पर बाद मे उनमें तो आपस में समझौता हो जाए और उनके साथियो को मूर्ख बनना पड़े, तब क०।

दूसरी बात दूसरे कहते हैं
अर्थात दूसरे कुछ कहें, मैं हमेशा सच कहता हूं।

दूसरे का सेंदुर देख अपना लिलाट फोड़े, (पू०)
दूसरे की बढ़ती देख ईर्ष्या करना।

दूसरों का ऐब बड़ी जल्दी देख सकते हैं
पर अपना ऐब कोई नहीं देखता।

देखता है सो कहता नहीं, कहता है सो देखता नहीं
आंख और जीभ पर कहा गया है। आंख देखती है, पर कह नही सकती, जीभ कह सकती है, पर देख नहीं सकती।
(तु०—गिरा अनयन नयन बिन बानी।)

देख तिरिया के चाले, सिर मुंडा मुंह काले।
देख मर्दों की फेरी, मां तेरी कि मेरी।
(कथा है कि कोई चालाक औरत बीमारी का बहाना करके लेट गई और अपने पति से बोली कि जब तक

तुम अपनी मां को सिर मुड़ाकर गधे पर सवार कराके नही लाओगे तब तक मैं अच्छी नहीं हो सकती। पति भी बड़ा होशियार था। वह अपनी ससुराल पहुचा और सास से बोला कि तुम्हारी लड़की बहुत बीमार है। अब अगर तुम सिर मुंड़ाकर और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुचो तब तो वह अच्छी हो सकती है, अन्यथा नही। मां बेचारी सीधी-सादी थी। लड़की की खातिर उससे जैसा कहा गया वैसा ही उसने किया। जब वह उसके दरवाज़े पर आई तो लड़की यह देखकर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई कि उसकी चालाकी काम कर गई, और उसने कहावत की प्रारभ की पक्ति अपने पति को सुनाई, किन्तु जब जवाब में उसके पति ने दूसरी आधी पक्ति कही, तो वह बहुत निराश हुई और लज्जित होकर रह गई।)

कहावत का कोई विशेष अर्थ नही, सिवा इसके कि स्त्री अगर चालाक होती है तो पुरुष भी इस मामले मे उससे कम नही।

देखतो आंखों मक्खी नही निगली जाती

देखने-सुनने में बुरा हो, तो जानबूझकर कोई अवांछनीय काम नही किया जाता।

दे०—जीती मक्खी नही .।

देखन के अतीत है, बेस्वा से रहे फंस।
माथे तिलक लगाये हैं, माला गल में दस।

स्पष्ट।

अतीत -सन्यासी, यति; साधु।

देखना सो पेखना, (स्त्रि०)

दोनों एक ही बात है।

देखने और सुनने में बड़ा फ़र्क है

सुनी हुई बात झूठ हो सकती है, पर देखी हुई नही।

देखने को बुलबुल निगलने को डुमरिया बड़, (पू०)

देखने में दुबला-पतला पर काम में मज़बूत।

डुमरिया बड़=जंगली बटवृक्ष।

देखने में न, सो चखने में क्या ?

जो वस्तु देखने में अच्छी नहीं, वह चखने में क्या अच्छी हो सकती है ?

देख पड़ोसन जल मरी

ईर्ष्यालु के लिए क०।

देख पराई चूपड़ी गिर पड़ बेईमान।

एक घड़ी की बेहियाई दिन भर का आराम।

मुफ्त का माल खाने के लिए मिले तो छोड़ना नहीं चाहिए।

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।
मिस्सी कुस्सी खाय के ठंडा पानी पी।

स्पष्ट।

मिस्सी=चने की रोटी।

देख-भाल के पांव रखना चाहिए

स्पष्ट।

देखादेखी साधे जोग, छीजे काया बाढ़े रोग

दूसरों का ग़लत अनुकरण ठीक नहीं।

देखा न भाला, सदके गई ख़ाला, (स्त्रि०)

बिना देखे ही किसी की प्रशंसा करने लग जाना।

सदका—न्योछावर।

सदके जाना—न्योछावर होना।

देखा भाला तोपची और चपरा सैयद होय

सब जानते है कि वह एक मामूली तोपची है, पर सैयद बना फिरता है।

झूठा बड़प्पन दिखाना।

देखा मीरदाद तेरा रंबा, गाजरों की रेलपेल, रोटियों का चंबा

मियां मीरदाद, तुम्हारे हल की करामात हमने देख ली। गाजरें तो बहुत हुईं, पर रोटियों का पता नही, अर्थात गेहूं हुए ही नही, जिनसे पेट भरता। कहावत का भाव बहुत स्पष्ट नही। फैलन ने चंबा का अर्थ 'अभाव' किया है, जो स्पष्ट नहीं है।

देखा शहर बंगाला, दांत लाल, मुंह काला

बंगाली पान बहुत खाते हैं, शायद इसीलिए कहा गया है। पर यह कोरी तुकबंदी है, कोई विशेष अर्थ नहीं जान पड़ता।

देखा सो खाया, न मुंह पांव जोगा, (पू०, स्त्रि०)

जो मिला सो खा लिया, मुंह-पांव की ओर नहीं देखा, अर्थात उनके लिए कुछ बचाया नहीं।

देखिये ऊंट किस कल बैठता है?
देखें, अंत में क्या होता है?
(कथा है कि किसी कुम्हार और कुंजड़े ने एक ऊंट किराये पर किया। एक ओर कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लादे और दूसरी ओर कुंजड़े ने अपनी शाक-भाजी। रास्ते में ऊंट ने कुंजड़े की शाक-भाजी पर मुंह मारना शुरू कर दिया। तब यह देखकर कुम्हार खुश हुआ कि उसका कुछ नुकसान नहीं हो सकता, क्योंकि ऊंट बर्तन नही खा सकता। इस पर कुंजड़े ने कहा—घबराओ नही, देखे कि ऊंट किस करवट बैठता है। जब ठिकाने पर पहुचे तो ऊंट उसी करवट बैठ गया, जिधर कुम्हार के बर्तन रखे थे। हुआ यह कि वर्तन सब दबकर चकनाचूर हो गए। इससे शिक्षा यह मिलती है कि किसी भी बात का अंतिम परिणाम देखे बिना उसके संबंध मे अपना फैसला नही देना चाहिए।)

देखिये कसाई की नजर और खिलाइये सोने का निवाला
बच्चों के लालन-पालन के संबंध में कहा गया है कि उनका ज्यादा लाड़-प्यार नहीं करना चाहिए। उन्हें खूब अच्छा खिलाए-पिलाए, और पहिनाए, पर उन पर कड़ी नजर भी रखनी चाहिए।

देखिये दीवार और मारिये पैजार, (स्त्रि०)
औरतों को आंख से देख भले ही ले, पर उनसे दूर रहना चाहिए। वेश्याओं के लिए कहा गया है। पैजार=जूता।

देखी ठोक बजा क दुनिया तालिब जर की
दुनिया मे सभी धन की इच्छा रखते हैं।

देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजाड़
कोरा नाम असलियत कुछ नहीं।
(कालपी उत्तर प्रदेश में जमुना किनारे जालौन जिले का एक पुराना नगर है। यहां मुग़ल जमाने के खंडहर बहुत हैं। उसी से कहावत चली।)

देखी पीर तेरी करामात, (स्त्रि०)
अर्थात कोरा नाम ही नाम, करतूत कुछ नहीं।

देखी राम! तेरी करतूत, (स्त्रि०)
देख लिया कि तुमने क्या किया?

देखे बौरहया आवे पांचों पीर, (स्त्रि०)
देखने में पागल है, पर पांचो पीर सिर आते हैं, अर्थात बड़ी चालाक है। मुसलमानों के पांच प्रसिद्ध पीर हज़रत मुहम्मद, अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन। पर इनके अलावा और भी कई पीर हुए है। उनमें से किसी भी पांच से यहां आशय है।

देखे को बुड्ढ, काम को आंधी, (स्त्रि०)
देखने में कमजोर पर काम में फुर्तीली।

देखे-भाले शेखजी और चिड़ियें सैय्यद होंयं
शेख जी को सब जानते हैं कि वे कैसे हैं, पर चिड़ियों को पकड़ने के लिए सत बनते हैं, अर्थात लोगों को अपने जाल में फंसाने के लिए भलमनसाहत का जामा पहिनते है।

देखे राही, बोले सिपाही
कही लूटमार होने पर राहगीर तो खड़ा-खड़ा तमाशा देखता है, पर बोलता तो सिपाही ही है। अर्थात सामने तो हिम्मतवाला ही आता है।

देखो मियां के छंदबद, फाटा जामा तीन बंद, (स्त्रि०)
कोरे शौक़ीन के लिए क०।
(मियां के जामे में सिर्फ तीन बंद है, होने चाहिए आठ या नौ।)

देखो रे, अहिरिनियां के ढोठा, छंटलास चावर, परोसलल पीठा (पू०, स्त्रि०)
इस अहीरनी की ढिठाई तो देखो, चावल तो इसने अलग कर लिये और मांड़ परोसा है। चालाक औरत के लिए।

देता भले, न लेता
एहसान करना तो अच्छा, पर किसी का एहसान लेना अच्छा नहीं।

देता भूले, ना लेता, (व्य०)
कर्जदार कर्ज का रुपया देना भूल जाता है, पर लेनेवाला नही भूलता।

दे दाल में पानी, पैगा बह चले चौहानी, (पू०)
डालो दाल में इतना पानी कि चारों तरफ़ धार बह चले। (१) जब खानेवाले अधिक आ गए

हों, और शाक-भाजी कम पड़ रही हो, तब हँसी में।
(२) कंजूस के लिए भी कह सकते हैं।
चौहानी=चौमुहानी।

दे दिलावे, दे दे करे, सो प्रानी भव सागर तरे, (हिं०)
स्पष्ट।
दान के संबंध में कहा गया है।

दे दुआ समधियाने को, नहीं फिरती दो-दो दाने को, (स्त्रि०)
किसी औरत को समधियाने का मुफ्त का माल मिल गया, इस पर कोई दूसरी औरत मौका पाकर कहती है कि समधियाने की कुशल मनाओ कि जो तुम्हारी माली हालत सुधर गई, नहीं तो अभी भूखों मर जाती।
(औरतें आपसी झगड़ों में प्राय: इस तरह की ताने-बाजी किया करती हैं।)

दे दे बारूद में आग, किसकी रही और किसकी रह जायगी ?
अर्थात खूब खर्च करो, उड़ाओ खाओ, कंजूसी किसलिए ?

देना और मरना बराबर है
किसी का देनदार होना बड़े अपमान की बात है।

देना थोड़ा, दिलासा बहुत
जो वक्त पर मदद तो कम करे पर बात बहुत, उससे क०।

देना भला न बाप का, बेटी भली न एक।
चलना भला न कोस का, साईं राखे टेक।
किसी का भी कर्जदार होना अच्छा नही, बेटी एक भी अच्छी नहीं, और एक कोस भी पैदल चलना पड़े, तो वह भी अच्छा नहीं।

देना लेना काम डोम-ढाढ़ियों का, मुहब्बत बड़ी चीज है
किसी का लेकर जो नहीं देते हैं, उनकी उक्ति में क०।
(डोम और ढाढ़ी राजपूताने की दो छोटी याचक जातियां हैं।)

देनी पड़ी बुनाई और घटा बतावे सूत
जब बुनाई देनी पड़ी, तब कहते हैं 'सूत कम हो गया। देने में जो हीला-हवाला करे, उसके लिए क०।
(कहावत उस समय की है जब लोग चरखे से सूत कात कर जुलाहों को बुनने के लिए दे दिया करते थे। किसी ने बुनने के लिए सूत दिया, पर जब मजदूरी देने का वक्त आया, तो यह बताया कि हमारा सूत घट गया।)

देने के नाम तो दरवाजे के किवाड़ भी नहीं देते
किसी कंजूस या ना-देनदार के लिए कहा गया है कि वह तो देने का नाम ही नहीं जानता। और तो और, घर के किवाड़ भी नहीं देता। यहां देने से मतलब लगाने या भेड़ने से है।

देनेवाले से दिलानेवाले को ज्यादा सवाब है
परोपकारी की अपेक्षा परोपकार करानेवाले को अधिक पुण्य मिलता है।

देवी दिन काटें, लोग परचौ मांगें, (हिं०)
देवी दिन काट रही है, और लोग उनकी महिमा देखना चाहते हैं।
जब कोई स्वयं विपत्ति में हो, और उससे सहायता मांगी जाए तब क०।

देवी मदार का कौन साथ ?
देवी हिन्दुओं की है और मदार साहब मुसलमानों के पीर हैं। दोनों अनमेल का साथ हो कैसे सकता है ?
(कट्टर लोगों का कहना है, जब कि जनता इस तरह के भेदभाव नहीं मानती।)

देर आये दुरुस्त आये
जो काम देर से होता है, वह ठीक होता है।
(फा०—देर आयद दुरुस्त आयद।)

देवता वासना के भूखे है, (हिं०)
देवता प्रेम और भक्ति चाहते हैं।

देव न मारे डींग से, कुमति देत चढ़ाय
ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता, मनुष्य की कुबुद्धि ही उसे ले डूबती है।
(डींग का अर्थ फैलन ने 'डंडा' किया है, पर खुल्लम-खुल्ला अथवा 'शेखी' भी उसका अर्थ यहां हो सकता है।)

देवेगा सो पावेगा, बोवेगा सो काटेगा
स्पष्ट।

देस चोरी न, परदेस भीख
ऐसी जगह रहकर, जहां सब लोग जानते हों, चोरी करने की अपेक्षा बाहर जाकर भीख मांगना अच्छा, क्योंकि वहां कोई पहिचानेगा नही और उसमें शर्म की कोई बात नहीं होगी।

देस चोरी, परदेस भीख
ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जिसका चोरी या भीख के सिवा गुज़र-बसर का और कोई ज़रिया नही। घर रहकर वह चोरी करके काम चलाता है, क्योंकि यह काम चुपचाप किया जा सकता है और बाहर जाकर भीख मांगता है, क्योंकि वहां वैसा करने में कोई कठिनाई नहीं ।

देस पर चढ़ाव, सिर दुक्खे न पांव
घर आने के लिए कितना ही रास्ता तै करना पड़े, पर न सिर दर्द करता है, न पैर। घर की ममता का प्रमाण।

देसा-देसा चाल, कुला-कुला व्योहार
अपने-अपने देश के रीति-रिवाज और अपने-अपने कुल के व्यवहार अलग-अलग होते है।

देसी गधा, पंजाबी रेंक
अपनी रहन-सहन या भाषा छोड़कर जब कोई दूसरे की रहन-सहन या भाषा बरते, तब क०।

देसी गधा, पूर्बी चाल
दे० ऊ०।

देसी घोड़ी मराठी चाल
दे० ऊ०।

देसी मुर्गी, बिलायती बोली
दे० ऊ०।
(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक ही आशय है।)

देह धरे के दंड हैं, (हिं०)
संसार में आकर नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।

देह में अनेक रोग भरे हैं, (हिं०)
स्पष्ट।
(सं०—शरीरं व्याधि मंदिरम्।)

देह में न लत्ता, लूटे के कलकत्ता, (पू०)
पास में पैसा नहीं, फिर भी कलकत्ते को जाकर लूटेंगे। दुस्साहस ।

दै। न मारे डंग से, कुमति देत चढ़ाय
ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता। समय बुरा आने पर आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वही उसे ले डूबती है।

दो आदमियों की गवाही से तो फांसी होती है
तब फिर साधारण मामलों में तो दो मनुष्यों की गवाही या उनकी सलाह मानी ही जानी चाहिए।

दो कसाइयों में गाय मुरदार, (मु०)
दो कसाइयों में तो गाय अपने-आप ही मर जाती है। फिर वह खाने के काम की नही रहती। मुसलमानों में ज़िबह किये गए जानवर का मांस ही खाते हैं।

दो खसम की जोरू, चौसर की गोट
जिसका दाव लगा, उसी ने कब्ज़ा कर लिया।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आनाकानी
मुसलमानों के केवल दो तो घर, और वे भी आंपस में लडते रहते है। सजातीय लोग थोड़े हों और वे भी लड़ें, तब क०।

दो चून के भी बुरे होते हैं
दो का मुकाबला करना मुश्किल होना है।

दो जोरू का खसम, चौसर का पासा
कभी इधर से, कभी उधर से ढकेल दिया जाता है।

दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी ? (मु०)
किसी मामले मे अगर दोनों पक्ष राज़ी हैं, तो उसमें फिर कोई कुछ नही कर सकता।

दोनों खोये जोगिया, मुद्रा और आदेस; (हिं०)
जोगी ने अपना तिलक-छाप भी खोया और मान-सम्मान भी। जब कोई व्यक्ति अपने धर्म व कर्त्तव्य से च्युत होकर बदनाम और अपमानित होता है, तब क०।
आदेस=प्रणाम, नमस्कार ।

दोनों दीन से गये पांड़े, हलवा मिला न मांड़े
जब कोई आदमी अपने नियमित कर्म को छोड़कर

कोई दूसरा काम करने लगता है, और उसमें सफल नहीं हो पाता, साथ ही अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठता है, तब क० ।

मांड़े=मैदा की बनी एक प्रकार की बहुत पतली रोटी, जो तवे पर ही सेकी जाती है, आग पर नहीं सिकती।

दोनों बेर जो घूमे फिरे, तीन काल जो खाय।
सदा निरोगी चंग रहे, जो प्रात: उठ नहाय।

स्पष्ट। स्वास्थ्य संबंधी उपदेश।

दोनों वक्त मिले नहीं सींते, सूरज की आंख फूट जायगी, (लो० शि०)

एक अंधविश्वास। संध्या समय सिलाई का काम नही करना चाहिए। उससे सूरज अंधा हो जाता है।

दोनों हाथों ताली बजती है

दो आदमियों में जब लड़ाई होती है, तो उसमें किसी एक का अपराध नही होता। दोनों दोषी होते हैं।

दोनों हाथों पगड़ी संभालनी पड़ती है

अर्थात उसे कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

दोनों हाथों संभाले नहीं संभलती

इज्जत बचाना मुश्किल हो रहा है। (कहावत में पगड़ी से मतलब है।)

दो प्याले पी तो लें, हरामजदगी तो पेट में है

दो प्याले (शराब के) पीने में क्या हर्ज है? इस पेट के अंदर तो न जाने कितने ऐब भरे हैं।

दो मुल्लों में मुर्गी हराम (मु०)

दो आदमियों की बहस से जब कोई काम ही आगे न बढ़ सके, तब क० ।

(मुसलमानों में जानवर के खाने के लिए जिबह करते वक्त इस तरह उसकी गरदन पर छुरी फेरते हैं कि उसकी श्वास नली, अन्न नली और रक्त की नाड़ी एक साथ कट जाए। अगर इन तीन में से एक भी कटने से रह जाए, तो उस जानवर के मांस को खाना हलाल या धर्मसंगत नहीं माना जाता। यह काम एक ही आदमी करता है । अब यदि दो मुल्ला एक साथ मुर्गी को जिबह करने बैठें, तो यह स्वाभाविक है कि उसकी गर्दन एक ही झटके में नही कटेगी और वह खाने के योग्य नही मानी जाएगी।)

हराम=विधि विरुद्ध; निषिद्ध।

दो में तीसरा, आंखों में ठीकरा

दो के बीच में तीसरे की उपस्थिति खटकती है।

दो रक़ाबा घोड़ा बख्शी का दामाद

बख्शी का दो रक़ाबा घोड़ा क्या है, उनका दामाद है। मतलब, उसके भी ठाट-बाट निराले हैं। बड़े आदमी की कृपादृष्टि जिस पर हो, उसके लिए क० ।

दो लड़ेंगे तो एक गिरेगा ही

स्पष्ट।

दोस्त का दुश्मन दुश्मन, दुश्मन का दुश्मन दोस्त

स्पष्ट।

दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते

एक सहज कामना। आशीर्वाद के रूप में भी क० ।

दोस्तों का हिसाब दिल में

स्पष्ट।

दो ही चीज़ हैं, बेटा या बेटी

जब कोई लड़का होने की उम्मीद कर रहा हो, और उसके लड़की पैदा हो, तब यह कहते है कि भई क्या किया जाए . . .।

दो ही चीज है, हार या जीत

जब कोई हार जाए, तब उसके मन को तसल्ली देने के लिए क० ।

दौड़कर चलेगा तो गिरेगा

जल्दबाजी करनेवाला हानि उठाता है।

दौड़ चले न औंधा गिरे

दे० ऊ० ।

दौड़ चले न चौपट गिरे

दे० ऊ० ।

दौलत अंधी होती है
(१) धनी आदमी गरीबों का ख्याल नही करता।
(२) दौलत यह नही देखती कि वह किसके पास रहे और किसके पास न रहे।

दौलत का खेल है
पैसे से चाहे जो कर लो।

दौलत के पर लग गये
देखते-देखते गायब हो गई।

दौलत के पांव लग गये
दे० ऊ०।

दौलत खर्च के वास्ते दी गई है
उसे बद करके रखना ठीक नही।

दौलतमद की डेवढ़ी को सब सिजदा करते हैं
रुपएवाले की डेवढ़ी पर सब सिर झुकाते है। अर्थात सब उसकी खुशामद करते है।

धड़ी धड़ी करके लूटा
अच्छी तरह लूटा, एक पैसा पास नही बचने दिया।

धड़ी भर का सिर हिला दिया, पैसा भर की जबान न हिलाई गई
जब कोई जवाब मे 'हा' या 'ना' करने के लिए केवल सिर हिला देता है और मुह से कुछ नही बोलता, तब क०। (कहावत का प्रयोग प्रायः बच्चो के लिए उस समय होता है, जब वे रूठकर बैठ जाते है, और केवल सिर हिलाकर 'हा' 'हू' करते है।)

धधायगा सो बुतायगा. (स्त्रि०)
धधकती आग फौरन बुझ जाती है। जो बहुत जुल्म करता है, उसका विनाश भी जल्दी हो जाता है। अथवा दम बहुत दिनो नही ठहरता।

धन और गेंद खेल की, दोऊ एक सुभाव। कर आवत छिन एक में, छिन में कर स जाव।
धन और खेल की गेंद इन दोनों का एक स्वभाव है, कभी हाथ में आ जाते हैं, कभी चले जाते हैं। तात्पर्य, पैसा चलती-फिरती चीज है।

धन का धन गया और मीत की मीत गई
किसी ने अपने मित्र को पैसा उधार दिया। वह वापस नही मिला। तब वह मनुष्य कहता है।
मीत=मित्रता।

धनके पंद्रह, मकर के पचीस, चिल्ला जाड़े दिन चालीस
पद्रह दिन धनु के और पचीस मकर के, ये चालीस दिन खूब कडाके की सर्दी पडती है। इसी को चिल्ला जाड़ा क०। लगभग १५ दिसबर से १० फरवरी सूर्य क्रम से धनु और मकर राशि मे रहता है।

धन चाहे तो धरम कर, मुक्त चाहे भज राम
स्पष्ट।

धन दे जी को राखिए और जी दे राखे लाज, (नी० वा०)
धन देकर प्राणो की रक्षा करे और प्राण देकर इज्जत बचाना चाहिए।

धन नाती हुक्का, पोशाक नाती जुल्फ, (पू०)
धन के नाम केवल हुक्का है और पोशाक के नाम केवल जुल्फे। (बहुत गरीब।)

धन में धन, तीन आंटी सन
नही के बराबर।

धनवंती के कांटा लगा, दौड़े लोग हजार। निर्धन गिरा पहाड से, कोई न आया कार।
धनवान के सब हितैषी बनते है, निर्धन का कोई नही।

धन्ना सेठ के नाती बने है
अपने को बहुत बड़ा समझते हैं।

धबले में खाक
लहगे पर धूल। गाली।

धमकाय पाया बनिया, धर दी डेढ़ सेरी
बनिए को सीधा जानकर उससे सेर की जगह डेढ़ सेर तुलवा लिया। किसी की सिधाई से अनुचित लाभ उठाने पर क०।

धमधूसर काहे मोटा, बंज करे न आवे टोटा
धमधूसर मोटा क्यों? व्यापार नहीं करता, इसलिए टोटे का सवाल नहीं। मतलब, बेफ़िक्र रहता है।
धमधूसर का अर्थ ही मोटा-ताजा आदमी है।

धर चल सिर कोल्हू की लाट, मत चल साथ कुचाल के बाट
सिर पर कोल्हू की लाट रखकर भले ही चले, पर बुरे की संगत न करे।

धर जा, मर जा
ऐसे आदमी के लिए क०, जो दूसरों की रकम हज़म कर लिया करता है। वह यही चाहता है कि कोई मनुष्य उसके पास धरोहर रख जाए और मर जाए, तो माल उसका हो जाए।

धरती माता बोझ संभाले
अनाचरी के लिए क०।

धरती की मां सांझ, (हिं०)
संध्या धरती की माता है। दिन के परिश्रम के बाद सबको उसकी गोद में शांति मिलती है। (यहां धरती का अर्थ धैर्यवान भी हो सकता है।)

धरम की जड़ सदा हरी, (हिं०)
धर्म के मार्ग पर चलनेवाला हमेशा फलता-फूलता है।

धरम रहे तो उस्सर में जुरे
ईमानदार और सच्चे आदमी की खेती ऊसर में भी सफल होती है।

धरम हार धन कोई खाय, (हिं०)
(१) बेईमानी से कोई भी पैसा कमा सकता है।
(२) बेईमानी से कोई पैसा नहीं कमा सकता, यह अर्थ भी होता है।

धाओ, जो बिध लिखा सो पाओ, (हिं०)
कितनी ही दौड़धूप करो, मगर मिलेगा वही जो भाग्य में लिखा है। आलसियों की उक्ति।

धाओ, धाओ, करम लिखा सो पाओ, (स्त्रि०)
स्पष्ट। दे० ऊ०।

धान का गांव पुआल से जाना जाता है, (कृ०)
अगर गांव में बहुत पुआल नज़र आए, तो उससे पता चल जाता है कि यहां धान की खेती होती है।
मनुष्य के ऊपरी व्यवहार और रहन-सहन से उसकी स्थिति जानी जाती है।

धान, पान, पनियाव ले, नान्ह जात लतियावले; (कृ०)
धान और पान अच्छी तरह सींचने से और नीच लतियाने से ठीक रहता है।

धान, पान, पानी, कातिक सवाद जानी; (स्त्रि०)
धान, पान और पानी का सवाद कार्तिक में ही मिलता है। कार्तिक में धान पक जाता है, पान में भी कुरकुरापन आ जाता है और पानी भी निर्मल बन जाता है।

धान पान हो रही है
कुम्हला रही है। सुकुमार स्त्री के लिए क०।

धान विचारे भल्ले, जो कूटा, खाया, चल्ले, (पू०)
धान बहुत अच्छी चीज़ है। कूटा, खाया और अपना रास्ता लिया। व्यंग्य में क०। वास्तव में धान कूट कर भात बनाना इतना आसान नहीं है। कहावत अधूरी है। इसकी कथा है, जिससे कहावत का भाव स्पष्ट होता है।
(किसी जगह दो यात्री ठहरे हुए थे। उनमें से एक के पास सत्तू और दूसरे के पास थोड़े धान थे। जब परस्पर खाने की चर्चा चली, तो पहले ने कहा कि मेरे पास तो सत्तू है, उसको चटपट खाकर यात्रा आरंभ कर दूंगा। दूसरे ने कहा—तुम्हें बहुत देर लगेगी। मेरे पास धान हैं, अभी कूटकर और खा कर चल दूंगा। सत्तू मन भत्तू जब घोलो तब खाओ, धान विचारे भल्ले, कूटा खाया चल्ले। पहला आदमी बहुत सीधा था। दूसरे की बातों में आ गया और धान के साथ अपना सत्तू बदल दिया। तब वह तो सत्तू घोलकर और खा-पीकर चलता बना और पहला बिचारा धान कटता ही रह गया।)

धान सूखता है, कौवा टरटराता है, (स्त्रि०)
(१) किसी के चीखने-चिल्लाने से कोई काम नहीं रुकता।
(२) जहां खाने को होता है, वहां मुफ़्तखोर इकट्ठे होते है।

धावेगा सः पावेगा, (हिं०)
जो मेहनत करेगा उसे मिलेगा।

धिया, ताको कहूं, वहुरिया, तू कान धर
कोई सास अपनी वहू पर रोब जमाने के लिए लड़की और बहू दोनों को डाट रही है कि 'धी' तुझ से भी कहती हू और बहू तू भी ध्यान से सुन...। आगे के लिए सावधान रह।

धिया पूत के न गाती, बिलैया के गाती, (स्त्रि०)
लड़के और लड़की के लिए तो कपड़े नहीं, बिल्ली के लिए कपडे।
बिल्ली से यहा मतलब रखैल औरत से है।

धींगा धीगा, बल्लू का राजा।
बहुत अंधेर के लिए क०।
(कहा जाता है बल्लू एक जाट राजा था, जिस के राज मे 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ होती थी।)

धीवर के बस परी, (स्त्रि०)
बुरे के हाथ पड़ी हूं। पति के अत्याचार से पीडित किसी स्त्री का कथन।

धी छोड़ दामाद प्यारा
(१) लड़की से दामाद प्यारा। उल्टी बात। अथवा (२) यह एक सहज उक्ति भी हो सकती है कि लड़की से दामाद प्यारा होता है। वह लड़के का स्थान ले लेता है।

धी, जंवाई, भानजा, ये तीनों नहि अपना
क्योकि विवाह के बाद लड़की पराई हो जाती है, दामाद तो पराया लड़का है ही और भानजे से कोई विशेष सम्बन्ध नही रहता।

धी न धियाना, आप ही कमाना, आप ही खाना, (स्त्रि०)
उसके न लड़की है न दामाद, जो कुछ कमाता है सो खा लेता है।
खाऊ उड़ाऊ के लिए क०।

धी न धौंकड़, अल्ला मियां का नौकर
(१) मोटे और आलसी मनुष्य के लिए क०।
(२) अलमस्त, फक्कड़ के लिए भी कह सकते हैं।

धी न बेटी, उड़ल गई समधेरी, (स्त्रि०)
लड़की है ही नहीं, फिर भी यह कहना कि लड़की की ननद घर से निकल गई। एक बेसिर-पैर की बात।

धी पराई, आंख लजाई
(१) बहू जब कोई गलत काम करे, तब क०, कि पराई लड़की ने मेरी आंख नीची करवाई।
(२) विवाह हो जाने पर लड़की लज्जाशील बन जाती है।
(३) विवाह कर देने पर लड़की को ससुरालवालों से दबना पड़ता है।

धी बेटी अपने घर भली, (स्त्रि०)
विवाह के बाद लडकी का अपने (पति के) घर रहना ही अच्छा है।

धी मारूं, पुतोह ले त्रास
लड़की को मैं इसलिए पीटती हूं कि बहू पर मेरा रोब जम जाए। किसी सास का कथन।
नए आदमी को यह बताना कि हम बहुत ही टेढ़े स्वभाव के आदमी है।

धी मुई, जंवाई चोर, (स्त्रि०)
लड़की मरने पर जंवाई चोर के समान हो जाता है। उसकी फिर कोई क़द्र नही रहती।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नार।
आपत काल परखिए चार।
धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पड़ने पर होती है।

धीरा काम रहमानी, शिताब काज शैतानी
धीमा काम अच्छा और जल्दी का बुरा होता है।

धीरा सो गंभीरा
धैर्यवान गंभीर होता है। किसी काम में जल्दबाजी नहीं करता।

धूंधूं कार मेह बरस रहा है
खूब जल बरस रहा है।

धूनी पानी का संजोग है, (हिं०)
जब दो अपरिचित व्यक्ति, खास कर दो साधु कही मिल जाते है, तब क०।

धूप पड़त जो दायं चलावे, रास नाज वह तुरत उठावे, (कृ०)
धूप पडने पर जो दाय करता हे, उसे अनाज शीघ्र मिल जाता है।
(कटी हुई फसल से दाना प्राप्त करने के लिए उसे बैलो की सहायता से कुचलने की जो क्रिया की जाती है, उसे दाय चलाना या करना कहते है।)

धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं
उम्र यो ही नही गवाई है। दुनिया का अनुभव है।

धूल की रस्सी बटना, (ग्रा०)
असंभव कार्य करने की चेष्टा करना । हवाई-घोडे दौडाना।

धूलकोट का खरबूजा, जैसे मिश्री का कूजा
धूलकोट का खरबूजा बहुत मीठा होता है।
(यह धूलकोट दिल्ली के पास तक कछार की भूमि है।)

धेला सिर मुंड़ाई, टका बदलाई
सिर मुडाई का तो अधेला ही देना पडा, पर रुपए भुनाई का बट्टा दो पैसा लग गया।
मुख्य काम मे तो कम खर्च हो, पर ऊपरी अधिक खर्च हो जाए, तब क० ।

धोई-धाई भेड़ी पंके लागी, (पू०)
भेड को धो-धाकर साफ किया, पर वह फिर कीचड मे चली गई। किया-कराया काम फिर चौपट हो गया।

धोके की टट्टी
भ्रम में डालनेवाली वस्तु। दिखाऊ वस्तु।

धोती थी दो पांव, धोने पड़े चार पांव, (स्त्रि०)
(१) विवाहित जीवन से ऊबी हुई स्त्री का कहना। पहले तो उसे केवल दो ही पैर धोने पड़ते थे, पर अब दो अपने और दो पति के धोने पड़ते हैं।
(२) किसी ऐसी स्त्री का भी कथन हो सकता है, जिसका पति बहुत आलसी है।

धोती में सब नंगे
अदर से सब एक से। सब मे कुछ-न-कुछ दोष हैं।

धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का
बेठिकाने का आदमी।

धोबी का छैला, एक उजला एक मैला
धोबी के लडके को अपने ग्राहको के मुफ्त के कपड़े पहिनने को मिलते है। इसलिए जैसे मिले, वैसे ही पहिन लिये, उजले और मैले की कोई परवाह नही करता।

धोबी के घर ब्याह, गधे का छुट्टी भेल, (पू०)
धोबी के घर ब्याह होने पर गधे को छुट्टी मिल जाती है। वह भी खुशी मनाता है।

धोबी के ब्याह, गधे के माथे मोर
धोबी के यहा ब्याह होने पर गधे की भी इज्जत होती है।

धोबी छोड़ सक्का किया, रही खिजर के घाट, (स्त्रि०)
धोबी छोडकर भिश्ती से ब्याह किया, फिर भी पानी से पिड न छूटा । मुसीबत ज्यो-की-त्यो रही।
(ख्वाजा खिजर मुसलमानो मे पानी के देवता माने जाते है।)

धोबी पर धोबी, खेंधड़े में साबुन
(१) कोई धोबी अगर दूसरे धोबी से अपने कपड़े धुलवाए, तो वह वैसा ही जैसे गुदडी मे साबुन लगाना। अथवा
(२) धोबी पर धोबी बदलना, वैसा ही जैसे गुदडी. . .।
मतलब घडी-घड़ी नौकर बदलना ठीक नही।

धोबी पर बस न चला, गधैया के कान मरोड़े
कमज़ोर पर गुस्सा उतारना।

धोबी बेटा चांद-सा, सीटी और पटाक
धोबी का लडका अपने ग्राहकों के धुले-धुलाए कपडे पहन कर चाद-सा बना रहता है। उसके पास अपनी दो ही चीजें होती हैं। 'सीटी' और 'पटाक'। धोबी कपड़े धोते समय पत्थर पर पटाक

से पछाड़ते हैं, साथ ही सीटी भी बजाते जाते हैं। जो दूसरों के पैसे पर साफ़-शौकीन बने फिरते हैं, उनके लिए क०।

धोबी रोवे धुलाई को, मियां रोवें कपड़ों को

धोबी अपनी धुलाई का तक़ाज़ा करता है और ग्राहक अपने कपड़ों का। दोनों ही अपनी-अपनी जगह रोते हैं।

(जब दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे को अपने नुकसान का कारण बताकर रोएं।)

धौला बाल मौत की निशानी

बाल स.फ़ेद होने पर बुढ़ापा आ जाता है, और बुढ़ापा आया तो समझ लो कि मरने के दिन नज़दीक आ गए।

नंग धड़ंग

जिसे न किसी का डर हो, न किसी की लाज हो, और चाहे जिसके आड़े आ जाए।

(१) बिल्कुल=नंगा। (२) बेशर्म।

नंगा लड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले

जिसके पास कुछ है नहीं, उसकी कोई क्या हानि करेगा?

नंगा खुदा से बड़ा

नंगे को किसी बात का भय नहीं होता।

नंगा नाचे फटे क्या

जिसके पास कपड़े ही नहीं उसका फटेगा क्या?

नंगा मादरज़ाद

बिल्कुल नंगा; जैसा पैदा हुआ था, वैसा ही।

नंगा साठ रुपये कमाये, तीन पैसे खाये

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जिसके घर-गृहस्थी न हो, और उस वजह से आमदनी की अपेक्षा खर्च बहुत कम हो।

नंगी क्या नहायेगी और क्या निचोड़ेगी?

जिसके पास कुछ है ही नहीं, वह क्या अपने पर खर्च करेगा और क्या दूसरों पर।

नंगी ने घाट रोका, नहावे न नहाने दे

दूसरों को उसके पास जाने में शर्म लगती है, पर वह निर्लज्ज होकर नहा रही है। बेशर्म से सब घबराते हैं।

नंगी भली कि छींके पांव

नंगी अच्छी या छीके से उल्टे पैरों लटकी अच्छी। दो बुरी चीज़ों में से कम बुरी चीज़ ही पसंद की जा सकती है।

नंगी भली कि टेटक मचवा, (स्त्रि०)

नंगी अच्छी या टंटा मचाना।

इसका भाव भी ऊपर की कहावत जैसा ही है।

नंगी हो के काता सूत, बुड्ढी होकर जाया पूत, (स्त्रि०)

यदि पहले ही लड़का जनती तो बुढ़ापे के लिए आराम न हो जाता। समय निकल जाने पर काम करना।

नंगों को भूखों ने लूट लिया

अनहोनी बात।

न ईंट डालो, न छींटो भरो

न किसी से बुरा कहोगे न सुनोगे।

नई घोसन और उपलों का तकिया

अटपटा शौक़।

नई जवानी मांझा ढीला

स्पष्ट।

नई नाइन और बांस की नहरनी

नहरनी लोहे की होती है बांस की नहीं। जब कोई नौसिखिया ऊटपटांग ढंग से काम करता है।

नई नागन टंगे पर फन

सांप का बच्चा और फन पूंछ पर।

दे० ऊ०।

नई नौ दाम, पुरानी छः दाम

नई चीज़ तो महंगी मिलेगी ही।

नई फ़ौजदारी और मुर्गी पर नक्कारा

किसी नये नियम या कायदा-कानून के सम्बन्ध में अपना असंतोष—निरादर प्रकट करने के लिए कोई कह रहा है।

नई बहू टाट का लंहगा
दे०—नई नाइन...।

नई बस्ती और अरंडी का फुलेल
नया और ऊटपटांग शौक़।

नउवा के घर चोरी भेल, तीन चोंगा बार गेल, (पू०)
नाई के घर चोरी हुई, तीन चोंगा बाल गए। उस के यहां और रखा क्या था?

नउवा देख ले कांखे बार, (भो०)
नाई को देखकर कांख में बाल हो आए। चीज़ सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो आती है।

नकटा जीवे बुरा हवाल
सब उसकी तरफ़ उंगली उठाते हैं। नकटा के यहां दो अर्थ हैं (१) जिसकी नाक कटी हो, और (२) जो समाज में बदनाम हो।

नकटा बूचा सबसे ऊंचा
व्यंग्य में ही क०।
बूचा=जिसका कान कटा हो।

नकटी, मैया पानी पिला, 'पूता इन्हीं गुनन' (पू०, स्त्रि०)
नकटी औरत से किसी ने यह कहकर पानी मांगा कि नकटी मैया पानी पिला। उसने जवाब दिया—बेटा, क्या तुम्हारी इसी तरह की बोली से?

नकटे का खाइये, उकटे का न खाइये, (स्त्रि०)
बदनाम आदमी के यहां जाकर भले खा ले, पर ओछे के यहां जाकर न खाए। इसलिए कि वह बार-बार खिलाने का एहसान जताएगा।

नकटे की नाक कटी, सवा गज और बढ़ी
बेशर्म के लिए क०।

नकद को छोड़ नफ़े को न दौड़िये
किसी मुनाफ़े के लोभ से गांठ के नक़द पैसे को नहीं छोड़ना चाहिए।

नक़द ह् हुरमत ह्, (अ०)
नकद दो और साख रखो।

न कोई आता था घर में, न कोई जाता था।
न कोई गोद में लेकर मुझे सुलाता था।
(कथा है कि कोई मनुष्य अपनी स्त्री को घर पर छोड़ कर विदेश चला गया। उसकी अनुपस्थिति में एक दिन उसके पुत्र ने पूछा—कौन आया था? स्त्री ने उत्तर दिया—न कोई आया, न कोई गया। पुत्र ने यही समझा कि इसका नाम 'न कोई' है। जब कुछ दिनों बाद वह मनुष्य घर लौटा तो वह लड़के को गोद में लेकर प्यार करने लगा और थपथपाकर सुलाने लगा। लड़के से जब उसने पूछा कि मेरे पीछे तुम्हें इस तरह कौन सुलाता होगा, तो उसने ऊपर की कहावत कही। बाप तो यही समझा कि मेरे लड़के को प्यार करनेवाला कोई नहीं था। पर लड़के ने तो असली बात कह ही दी थी।)

नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है?
बड़ों के आगे ग़रीब और असहायों की बात कोई नहीं सुनता।

नक्कारे बाजे दमामे बाज गये
बड़े ढोल भी बज गए और छोटे भी। अर्थात दुनिया में न जाने कितने लोग आए और अपनी तड़क-भड़क दिखाकर चले गए।

नक़्ल रा चे अक़्ल, (फ़ा०)
नकल में अक़्ल की क्या ज़रूरत?

नक़्ले कुफ़् कुफ़् न बाशद, (फ़ा०)
काफ़िर की नक़ल करने से कोई काफ़िर नहीं होता।

नख से शिख तक
नीचे से ऊपर तक।

न ख़ुदा ही मिला, न बिसाले सनम।
न इधर के हुए, न उधर के हुए।
किसी निराश फ़क़ीर का कहना।
बिसाले सनम=प्रेमी से भेंट।

न गाढ़ी भर आशनाई, न जौ भर नाता
मुझे किसी से कोई मतलब नहीं, अथवा मुझे किसी से कोई मतलब नहीं रखना।

न गाय के थन, न किसान के भांडे
न गाय के थन हैं और न किसान के पास बर्तन। (जब किसी काम का कोई सिलसिला ही न हो, तब क०।)

न गू में ढेला डालो, न छींटे उड़ें

न बुरा काम करो, न बुराई हाथ लगे।

न जीने की शादी, न मरने का ग़म

किसी ऐसे मनुष्य का कथन, जो दुनिया से उदास है।

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय

जाट बडे चतुर होते हैं।

(इसकी कथा यो है—एक राजा ने किमी नटनी को वचन दिया कि अगर नट-विद्या मे उसे कोई नही जीत मकेगा, तो मैं उसे अपना राज दे दूगा। उस जगह एक देहाती जाट खडा था। उमने नटनी के लोहे के दस्ताने हाथो मे पहिन लिये और झट बास पर चढ गया। ऊपर जाकर उसने चारो ओर घूमकर पेशाब करना शुरू कर दिया। उसका यह तमाशा देखकर नटनी ने हार मान ली और राजा का राज्य भी बच गया।)

न तेल तली, न ऊपर पली, (स्त्रि०)

न नीचे बर्तन मे तेल, न ऊपर पली।

जब किसी को बहुत थोडी चीज़ दी जाए।

नदिया, नाव, घाट बहुतेरा, कहे कबीर नाम के फेर।

चीज एक ही होती है, पर उसके नाम अनेक होते है। ईश्वर के लिए कहा गया है।

नदी किनारे रूखड़ा, जब तब होय विनास

खतरे का काम करनेवाला कभी भी हानि उठा सकता हे।

नदी तू घर्राती क्यों, मै पांव ही नहीं रखता

किसी का ऐसे व्यक्ति से कहना जो बहुत रोब और घमड दिखाता है।

नदी नाव संयोग

दो आदमियों का अचानक कही मिल जाना।

नदी में जाना और प्यासे आना

साधनो के मौजूद रहते हुए अपने उद्देश्य को पूरा न कर पाना।

न दौड़ चलेंगे, न ठस लगेगी, (पू०)

" काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

नमद का ननदोई, गले लाग रोई, (स्त्रि०)

जिससे कोई सम्बन्ध ही नही, उससे प्रेम दिखाना।

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी

जब कोई आदमी किसी काम को न करना चाहे, और अपने इस इरादे को छिपाने के लिए किसी ऐसी शर्त पर उसे करने को तैयार हो, जिसे पूरा करना लगभग असभव हो।

(कहा जाता है कि किसी जगह राधा नाम की एक वेश्या थी, जो नाचने के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गई थी। पर वास्तव मे उसे उतना अच्छा नाचना नही आता था। वह भी इस बात को जानती थी। इसलिए जब कोई उसे नाचने के लिए बुलाता, तो वह यही कहती कि नौ मन तेल के चिराग जलाओ, तब नाचूगी। लोग न नौ मन तेल इकट्ठा कर पाते और न उसका नाच गाना ही हो पाता। कहावत मे कृष्ण की राधा से कोई मतलब नही। वह केवल एक नाम विशेष है।)

नन्हें होकर रहिये, जैसे नन्हीं दूब

आदमी को विनम्र बनकर रहना चाहिए।

नपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दरिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

नफ़री में झगड़ा क्या ?

जो हमे मिलना चाहिए उसमे झगडा क्या ?

नफरी दैनिक वेतन।

नमाज़ छुड़ाने गये थे, रोजे गले पड़े, (मु०)

दे०—गये थे रोजा छुडाने ।

(कहा जाता है कि एक बार मुसलमानो ने मूसा पैगम्बर से कहा कि खुदा से सिफारिश करके पाच व त की नमाज से हमारा छुटकारा कराइए। खुदा मज़हब मे उनकी ऐसी लापरवाही देखकर बडे अप्रसन्न हुए और सज़ा के तौर पर उन्हे साल मे एक महीने तक रोज़ा रखने को कहा।)

नमाज़ी का टका, (मु०)

(कथा है कि एक शरारती लडके को यह आदत पड़ गई थी कि जब कोई मसजिद मे जाकर नमाज़ पढ़ता, तो वह पीछे से जाकर उसका पैर पकड़ कर घसीट लेता। जब एक बूढ़े नमाज़ी के साथ उसने ऐसा

किया, तो उसने लड़के को एक टका दिया। इससे लडके की हिम्मत बढ गई और उसने इस बार एक पठान की टाग पकडकर खीची। इस पर पठान ने घूमकर उसे ऐसे घूसे जमाए कि वह वही खत्म हो गया।)

न मारे मरे, न काटे कटे

घर के ऐसे उद्धत लडके के लिए क०, जिससे लोग परेशान रहते हो।

न मूद बे मूद, (फा०)

कोरी दिखावट, त व कुछ नही।

न मैं कहूं तेरी, न तू कहे मेरी, (स्त्रि०)

न मैं तेरी बुराई करू, न तू मेरी कर।

न मै जलाऊं तेरी, न तू जला मेरी, (स्त्रि०)

न मैं तेरा नुकसान करू, न तू मेरा कर। यहा जलाने से मतलब लकडी जलाने से भी हो सकता है और छाती जलाने से भी।

नया अतीत, पेड़ पर अलाव, (हिं०)

जब कोई नौसिखिया ऊटपटाग ढंग से काम करता है, अथवा किसी बेतुकी चीज़ से काम लेता है तब क०। (साधु लोग सहारे के लिए काठ का एक साधन बनाकर रखते है, जिसे बैरागिन कहते है। वे उस पर हाथ रखकर एक ही आसन से दिन भर बैठे रहते है और थकते नही। अब अगर इस 'बैरागिन' को कोई पेड़ का सहारा देकर बैठे तो उससे वह और थक जाएगा।) यहा अलाव का अर्थ आग के लिए इकट्ठा किया गया ईधन भी हो सकता है। अतीत साधु।

नया चिकनिया रेंड़ी का कुलेल, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

नया जोगी और गाजर का शंख, (हिं०)

दे०—नया अतीत ।

नया दाना, नया पानी

मालिक के बदल जाने अथवा नई नौकरी कर लेने पर क०।

नया-नया राज, डब-डब बाज, (पू०)

जब कोई नया हाकिम, या अधिकारी नई बातें चलाता है, तब व्यग्य मे क०।

नया-नया राज भेल, गगरिल अनाज भेल

नया राज होने पर घडे अनाज से भर जाते हैं। लोगो को नई नौकरिया मिलती हैं।

नया नौकर मारे हिरना

वह अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए ऐसा करता है।

नया नौकर शेर मारे

दे० ऊ०।

नया नौ गंडा, पुराना छः गंडा, (पू०)

पुरानी की अपेक्षा नई चीज़ महगी होती है, अथवा नई की कद्र अधिक होती है।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन

नई चीज़ तो थोडे दिनो ही रहती है। पुरानी पर ही निर्भर करना चाहिए।

नया मुसलमान अल्लाह ही अल्लाह पुकारे, (मु०)

नये काम मे जोश बहुत होता है।

नया हकीम, दे अफ़ीम

अनाडी हकीम की दवा का विश्वास नही करना चाहिए। वह कभी ज़हर भी खाने को दे सकता है।

नये नमाज़ी, बोरिये का तहमद, (मु०)

दे०—नया जोगी ।

नये-नये हाकिम, नई-नई बातें

जब हाकिम नए होते है, तो नए-नए कानून भी बनते है।

नये नवाब, आसमान पर दिमाग़

नया आदमी थोडी भी प्रतिभा पाकर इतराने लगता है।

नये बावर्ची, साग में शोरवा

(१) नयापन दिखाना। अथवा

(२) फूहड़पन के लिए भी कह सकते है।

नये सिपाही, मूंछ में ढांटा

बेतुका काम। ढाटा दाढी मे बाधा जाता है, जिससे वह बिखरती नही।

न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी

जिस वस्तु के रहने से कष्ट होता हो, उसे जड़ से ही नष्ट कर देना चाहिए।

(कहावत मे सकेत कृष्ण की बांसुरी की ओर है।

गोपियां कृष्ण की बांसुरी को सुनकर इतनी अधिक प्रेम-विह्वल हो उठती थी कि वे कहने लगती थीं कि उस बास को ही यदि नष्ट कर दिया जाए, जिससे यह बांसुरी बनती है, तो न उसका स्वर हमें सुनने को मिलेगा और न हमारे हृदय में प्रेम की यह हूक उठेगी। गोपियों के प्रेम का वर्णन करते समय कई हिन्दी कवियो ने इस तरह की बात उनके मुख से कहलाई हैं।)

न रहे मान, न रहे मानी, आखिर दुनिया फ़ानी, (मु०)

ससार की नश्वरता पर कहा गया है।

नर्म चोबरा किर्म मी खुरद, (फ़ा०)

नर्म काठ को कीडे खा जाते हैं। बहुत सीधा होना अच्छा नही।

नल का मारा नलवा टूटे

मामूली सरकडे की चोट से पिंडली टूट जाती है। या रक्त बहने लगता है। साधारण कारण से ही कभी-कभी भारी हानि हो जाती है।

नशा उसने पिया, खुमार तुम्हें चढ़ा

जब कोई आदमी किसी उच्च स्थान पर पहुंच जाए और उसके सगे-सम्बन्धी अपने को वैसा ही बड़ा समझने लगें, तब क०।

न सांप मरे, न लाठी टूटे

काम भी हो जाए और दोनो ओर से कोई हानि भी न हो। आपसी समझौता।

न सूप दूसे जोग, न चलनी सराहे जोग, (स्त्रि०)

न सूप की बुराई की जा सकती है, और न चलनी की सराहना। दोनो एक से।

(सूप मे भी छेद होते हैं, और चलनी मे भी।)

नाई की बरात में सब ही ठाकुर

नाई सबकी बरात में सेवा-टहल करते हैं, पर उनकी बरात मे यह कौन करे। जहां सभी अपने को बराबर समझें और कोई छोटा अथवा परिश्रम का काम न करना चाहे, वहां क०। यहां ठाकुर से मतलब बड़े आदमी से है।

नाई, दाई, बैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई, (हिं०)

इन चार का अशौच कभी नही जाता, क्योकि नाई का मृतक से हमेशा काम पड़ता है, दाई बच्चा जनाती है, बैद का कोई-न-कोई रोगी मरता रहता है और कसाई तो ढोरो का वध करता ही है।

नाई, नाई, बाल कितने ? जिजमान आगे ही आते हैं

जो बात स्वयं ही सामने आनेवाली हो उसके विषय मे किसी से कुछ पूछने की क्या आवश्यकता ?

नाई सबके पांव धोये, अपने धोते लजाये

अपना काम अपने हाथ से करने मे लोगो को शर्म लगती है, उसी पर क० कही गई है।

नाऊ की-सी आरसी, हर काहू के पास

ऐसी वस्तु जिसका उपयोग हर कोई करे।

नाक कटी बला से, दुश्मन की बद-सगुनी तो हुई

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो अपना नुकसान करके इसलिए खुश होता है कि उससे दूसरो की भी हानि होनेवाली है।

नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत, (स्त्रि०)

निर्लज्ज के लिए क०।

नाक के बाल हो रहे हैं

घनिष्ठ मित्र बने है।

नाक तो कटी, पर वह खूब ही में मरी

कोई बदनाम औरत नेकनामी के साथ मरी, उसी पर कहा गया है।

खूब ही—अच्छाई के साथ।

नाक दे, या नहरनी दे

किसी को असमंजस मे डालना।

नाक पकड़े दम निकलता है

बहुत कमज़ोर, अथवा सुकुमार।

नाक पर दिया बालकर आए हैं

अर्थात बहुत देर करके आए हैं। रात मे आए हैं।

नाक पर सुपाड़ी तोड़ती हैं, (स्त्रि०)

बड़ी तुनुक मिजाज है।

नाक हो तो नथिया सोहै, (स्त्रि०)
नथ पहिनने को भी अच्छी नाक चाहिए।
नाकों चने चबवाना
बहुत परेशान करना।
नालायक बेटे से बेटी भली
अकर्मण्य लड़के से तो लड़की भली।
नाचत आन मेई ना, आंगन बांकड़े,
रांधना मेई ना, ओली लांकड़े, (पू०)
नाचना आता नही, आंगन टेढा। रसोई बनाना जानती नही, लकडी गीली।
(जब कोई आदमी किसी काम को करना न जाने, पर अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए साधनो को दोष दे।)
नाच न सकूं, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
प्र० पा०—नाच न जाने आगन टेढ़ा।
नाचने निकली तो घूंघट क्या? (स्त्रि०)
जब किसी काम को करने ही बैठे, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। उसमे शर्म क्या?
नाचे-कूदे तोड़े तान, वाका दुनिया राखे मान
जो बहुत उछल-कूद मचाते हैं, यानी आत्मविज्ञापन *करते है, दुनिया उनकी ही इज्जत करती है।* सीधे को कोई नही पूछता।
नाचे-कूदे बानरा, मेरे माल मदारी खायें
परिश्रम कोई करे और मज़ा कोई उड़ाये, तब क०।
नाचेगा सो पावेगा
(१) जो दौड़ धूप करेगा, उसे ही मिलेगा। अथवा (२) जो खुशामद करेगा, वही पाएगा।
नाचे बामन, देखे धोबी
समाज की उल्टी रीति।
नाट का बच्चा तो कलाबाजी ही करेगा
(१) वंश या जाति का प्रभाव प्रकट होकर रहता है।
(२) बापदादे जैसा करते रहे लड़के भी वैसा ही करेंगे।
नाट=नट।
नाटा सबसे टांटा
(१) नाटा सबसे मजबूत होता है।
(२) नाटा सबसे टंटा या झगड़ा करता है।
नाड़ी की कुछ सुरत नहीं है, दवा सभों की करते हैं।
वैदों का क्या जाता है, बीमार बेचारे मरते हैं।
स्पष्ट। अनाड़ी वैद्यो पर।
नात का न गोत का, बांटा मांगे पोष का, (प्रा०)
न नाते का, न गोत का, फिर भी पैतृक संपत्ति में हिस्सा बटाना चाहता है।
अनुचित या बेतुकी माग पर।
नाता न गोता, खड़ा होकर रोता, (स्त्रि०)
बे मतलब हस्तक्षेप करनेवालों पर क०।
नातिन सिखावे आजी को कि बारह दुपोड़े आठ, (पू०, स्त्रि०)
छोटे का बड़े को सीख देना।
आजी=दादी, पिता की मा।
नादान की दोस्ती जी का जियान
मूर्ख की मित्रता प्राणलेवा होती है।
नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला
मूर्खमित्र की अपेक्षा ज्ञानवान शत्रु अच्छा।
नादान बात करे, दाना क़यास करे
मूर्ख कोरी बात करता है, ज्ञानी सोचता है।
नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्हीं दूब।
पेड़ बड़े गिर जायेंगे, दूब खूब की खूब।
नम्र होकर रहे। बडे पेड तो गिर जाते है, पर दूब जो नीचे होती है, हमेशा हरी बनी रहती है।
नान चुक देवता, तिलक उराय ले, (पू०)
नन्हें से देवता, तिलक लगने में ही खत्म हो गए। किसी का झूठमूठ का आदर-सम्मान किये जाने पर कहावत।
नाना की दौलत पर नवासा ऐंड़ा फिरे
दूसरे के धन पर ऐंठना।
नवासा=बेटी का लड़का।
नाना के टुकड़े खावे, दादा का पोता कहावे
किसी काम का श्रेय जिसे मिलना चाहिए, उसे न मिलकर किसी दूसरे को मिलना।
नानी के आगे ननसार की बातें, (स्त्रि०)
जो अपने से अधिक जानता है, उसके आगे ज्ञानवान बनना।

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे, (स्त्रि०)
नानी ने खसम किया और नवासा को (बिरादरी में) उसका दंड भरना पड़ा। किसी की भूल का कोई प्रायश्चित्त करे।

नानी तो क्वांरी ही मर गई और नवासे के साढ़े सत्रह बान
जब कोई छोटा आदमी यकायक धनी बनकर ऐंठ दिखाने लगे, तब उसके लिए क०।
(बान विवाह के समय का एक दस्तूर होता है, जिसमे वर और कन्या को स्नान कराया जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि नानी ने तो विवाह का स्नान किया ही नही और नवासे के एक-दो नही, साढ़े सत्रह स्नान हो रहे है।)

नानी मरी, नाता टूटा
नानी का दाहने पर बड़ा प्रेम होता है।

नाप न तोल, भर दे झोल
अपने मतलब की कहना, नापो-तोलो नही, हमारा झोला भर दो।

नापे सौ गज, फाड़े न एक गज
ऐसे मनुष्य के लिए क०, जो हमेशा वादा करता रहे, पर पूरा न करे।

नाम इमरत, पिलाये विष
देखने-सुनने मे अच्छा पर व्यवहार मे विपरीत।

नाम की नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी
अर्थात देखने मे छोटी है पर बडी चालाक।
नन्ही = छोटी।
धन्नी = कड़ी, शहतीर।

नाम के बाबा जी, करनी छाबर
नाम तो बड़ा पर करनी कुछ नही।
छाबर खाक।

'नाम क्या?' "शकरपारा',' रोटी कितनी खाई?' 'बस बारा'; 'पानी कितना पिये?' 'मटका सारा'— काम करने को लड़का बिचारा; (स्त्रि०)
छोटे लड़कों से हँसी मे ही क०।

नाम बड़ा ऊंचा, कान दोनों बूंचा, (पू०)
स्पष्ट। इसे तुकबंदी ही समझनी चाहिए।

नाम बड़ा और दर्शन थोड़े
जब किसी मे उसकी ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाए, तब क०।

नाम बड़ा या दाम?
धन की अपेक्षा कीर्ति बड़ी चीज है।

नाम बसंती, मुंह कूकुर-सा, (स्त्रि०)
नाम के अनुसार गुण न होना।

नाम मेरा, गांव तेरा
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जो दूसरे की सपत्ति से लाभ उठाना चाहता है।

नाम लेवा न पानी देवा
सतानहीन के लिए क०।
पानी देवा पितरो का श्राद्ध कर्म करनेवाला।

नामी साहू कमा खाये, नामी चोर मारा जाये
कही नाम हो जाने से लाभ होता है, कही हानि। अथवा जब कोई आदमी एक बार बदनाम हो जाता है, तो लोग उसे ही पकडते है।
(साहू का नाम हो जाए, तो उसका लाभ होता है, लेकिन चोर बदनाम हो जाए तो पकडा जाता है।)

नाम हीरामल, दमक कंकड़-सी भी नहीं
नाम के विपरीत गुण।
नाम के अनुसार गुण नही।

नार ने निकाला दंत, मर्द ने ताड़ा अंत
स्त्री हँसी नही कि पुरुष उसका मतलब समझ लेता है।

नार सुलक्खनी कुटुम छकावे, आप तले की खुरचन खावे, (स्त्रि०)
अच्छी स्त्रिया परिवार के लोगो को भरपेट खिलाती हैं, और स्वय बचाखुचा खाकर ही सतुष्ट रहती है।
सुलक्खनी = सुलक्षणी।

नारियल में पानी, नहीं जानते खट्टा कि मीठा
संदेहजनक की स्थिति के लिए क०।

नारी के बस भये गुसाईं, नाचत हैं मर्कट की नाईं
स्त्रियों के वश होकर पुरुष बंदर की तरह नाचा करते है।
इसका शुद्ध रूप है—

नारि विवश कर सकल गुसाईं।
नाचहि नर मर्कट की नाईं।

नाले मूंज बगड़, नाले देवी दा दर्शन, (पं०)
नाले के किनारे मूज और बगड भी मिलेगी और देवी के दर्शन भी होगे। एक पथ दो काज।
(मूज और बगड घास की किस्मे है, जो रस्सी बनाने के काम आती है। ये घासे नदी-नाले के किनारे ही होती है, जहा प्राय देवी-देवताओ के मदिर भी बने होते है।)

नालैन, तहतुलऐन, (अ०)
अपने जूते अपनी नजर के सामने रखो। नही तो वे चोरी चले जाएगे।

नाव किसने डुबाई ? ख्वाजा खिज़र ने
अपनी करनी का दोष दूसरे के सिर मढना। ख्वाजा खिजर मुसलमानो मे बाढ और जल के देवता माने जाते है।

नाहक डंड, पुत्र का सोग, नित उठ पथ चलें जो लोग
जिन वृद्धा मे मर गई नारी, बिन आगी ये जर गये चारी
जिसे समाज ने निरपराध दंड दिया हो, जिसे पुत्र का शोक हो, जिसे नित्य (अपने धधे से) पैदल चलना पडे और वृद्धावस्था मे जिसकी स्त्री मर गई हो, ये चारो बिना अग्नि के ही (चिन्ता की आग मे) जलते रहते है।

निकली हलक़ से, चढ़ी खलक़ स
बात मुंह से निकलते ही दुनिया मे फैल जाती है।

निकली होठों, चढ़ी कोठों
दे० ऊ०।

निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मंदा
सच के आगे झूठ नहीं टिकता।

निकाह की शर्त करना
ऐसी शर्तें रखना कि समझौता मुश्किल से हो पाए।

निकाही न ब्याही, मुंडो बहू कहां से आई, (मु०)
न निकाह हुआ, न विवाह; फिर यह मुंडी बहू कहां से आ गई ? झूठ-मूठ का रिश्ता जोडना।
निकाह=मुसलमानी प्रथा से किया गया ब्याह।

निकौड़िया गये हाट, ककड़ी देखे जियरा फाट, (पू०)
इसलिए कि खरीदने के लिए पैसा नहीं था।
निकौडिया—बिना कौडी का, जिसकी जेब खाली हो।
जियरा जी, हृदय।

निखट्टू आवे लड़ता, कमाऊ आवे डरता, (स्त्रि०)
निकम्मा आकर लडता है, कमाऊ शान्त और विनम्र रहता है।
स्त्रिया प्राय अपने अकर्मण्य पति के लिए कहती हैं।

निचंट सोवे हेरू, जिसके गाय न गेरू
हेरू बेफिक्र सोता है, क्योंकि उसके पास न गाय है; न बछडा।
निचट=निश्चिंत।

निठल्ला बनिया पत्थर तोले
बनिया कभी खाली नहीं बैठता, वह कुछ-न-कुछ करता रहता है। जब कोई बेमतलब का काम करता है, तब यह क० कहते है।

नित खोदना, नित पानी पीना
रोज़ कमाना, रोज़ खाना। कठिनाई मे जीवन व्यतीत करना।

निन्नानबे के फेर मे पड़ गये
(१) घर-गृहस्थी की चिन्ता मे पड जाना।
(२) गहरे असमजस मे पडना।
(कथा है कि दो बहिने थी। एक का विवाह धनी के साथ हुआ, दूसरे का गरीब के साथ। जो ग़रीब थी उसने अपनी बहिन से सहायता मागी। उसने निन्नानवे रुपए उसे दिए। वह यद्यपि ग़रीब थी, पर अभी तक बहुत सतोषपूर्वक रहती थी। पर निन्नानबे रुपए देखकर वह पूरे सौ रुपए करने की फिक्र मे पड़ गई और इस प्रकार उसका कष्ट और बढ़ गया। उपदेश निकला कि धन से सतोष अच्छा।
(२) इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है। किसी शहर मे एक पुरुष और उसकी स्त्री दोनों रहते थे। वे बड़े गरीब थे और चार पैसे रोज़ में अपनी गुज़र करते थे। फिर भी वे बड़े सतोषी थे, और उनका जीवन सुखपूर्वक बीतता था।

उसकी एक भावज थी, जो बहुत धनाढ्य थी। उससे उनका सुख नहीं देखा गया, और उनको कष्ट पहुंचाने के लिए एक दिन उसने निन्नानबे रुपए एक थैली में रखकर उनके घर में फेंक दिए। वे बेचारे कठिनाई में तो रहते ही थे। रुपए देखकर बड़े खुश हुए। गिने तो निन्नानबे थे। अब उन्हें इस बात की फ़िक्र हुई कि किसी प्रकार सौ पूरे करें। उन्होंने अपने खर्चे में से एक पैसा रोज़ बचाना शुरू कर दिया। इस प्रकार जब पूरे सौ हो गए, तो उन्होंने सोचा कि अगर वे केवल दो पैसे रोज़ में अपना ख़र्चा चलाएं तो कुछ दिनों में इसके दूने हो जाएंगे। उन्होंने वैसा ही करना शुरू कर दिया। ज्यों-ज्यों उनके पास पैसा बढ़ता गया, त्यों-त्यों उनकी चिन्ता और लालच भी बढ़ती गई। कुछ दिनों में वे बड़े दुर्बल हो गए और उनकी सुख-शांति सदा के लिए बिदा हो गई।)

निपूती का घर सूना, मूरख का हिरदा सूना, दलिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

हिरदा=हृदय।

दलिद्री=(१) दरिद्र।(२) कंजूस।

निपूती के मुंह देख ले साथ उपास, (स्त्रि०)

लोक-विश्वास। बांझ का मुंह सुबह-सुबह देखना बुरा समझा जाता है।

नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती, आधा खाऊं, (स्त्रि०)

कोई बहू सास से अलग हो गई है, अलग अपना भोजन बनाती है और कहती है—ऐ न्यारे चूल्हे, मैं तुझ पर न्योछावर हूं। पहले सास जो कुछ देती थी, वह सब खा लेती थी, फिर भी पेट नहीं भरता था, पर अब मैं इतना अधिक बनाती हूं कि आधा खाती हूं और आधा बचाकर रख लेती हूं।

निर्बल के धन गिरधारी

ग़रीब के सहायक भगवान हैं।

निस दिन खाना, काम को असकताना

कामचोर के लिए क०।

असकताना=आलस्य करना।

निहंग लाड़ला सदा सुखी

स्वच्छन्द आदमी हमेशा ही सुखी।

(निहंग लाड़ला ऐसे लड़के को कहते हैं, जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत उद्दंड हो गया हो।)

निहंग=अकेला।

नीक-नीक मोरे भाग, एक-एक मछलिया की दो-दो मछलिया, (स्त्रि०)

मैं कितना खुश-किस्मत हूं, एक की जगह मुझे दो मछलियां मिल गई।

(कोई व्यक्ति आशा से अधिक मिल जाने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा है।)

नीच जात, एक न एक उदमाद

ओछे आदमी एक-न-एक उत्पात करते रहते हैं।

उदमाद=उत्पात।

नीच जातों में अब भी बड़ा एका है

स्पष्ट।

नीचन कूटन, देवन पूजन

(१) ओछा आदमी पिटने से और देवता पूजने से ठीक रहते हैं।

(२) ओछे आदमी पिटते हैं, बड़ों की पूजा की जाती है।

नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई

स्पष्ट।

नीच हँसे, हुलसे रहें, लिये गेंद को पोत।
ज्यों-ज्यों माथे मारिये, त्यों-त्यों ऊंचे होत। (बिहारी)

नीच मनुष्य गेंद के स्वभाव को धारण किए हुए प्रसन्न रहते हैं। ज्यों-ज्यों वे माथे पर मारे जाते हैं (अपने सिर पर चोट खाते हैं), त्यों-त्यों ऊंचे होते हैं (अपने को श्रेष्ठ समझते हैं)।

(हँसे के स्थान पर शुद्ध पाठ 'हिये' है।)

नीचे से जड़ काटना, ऊपर से पानी देना

ऊपर से भले बनकर भीतर-ही-भीतर हानि पहुंचाना।

नीम न मीठा होय, सींच गुड़ घ्यु से।
जाको जौन सुभाव जाय नहिं ज्यु से।

जब कोई बहुत समझाने पर भी बात नहीं मानता।

नीम हकीम खतरा-ए-जान।
नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान। (फ़ा०)
थोड़ा ज्ञान बहुत हानिकर होता है।
नीयत साबित मंज़िल आसान, (मु०)
जिसकी नीयत अच्छी होती है, उसके सब काम बनते हैं।
नीलकंठ कोड़ा भखें, मुखहिं बिराजें राम।
खोट कपट क्या देखिए, दर्शन से है काम।
स्पष्ट। नीलकंठ पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते हैं। विजयादशमी के दिन प्रात.काल विशेष रूप से लोग उसके दर्शनों के लिए बाग-बगीचे छानते फिरते है।
नील का टीका, कोढ़ का दाग
ये कभी नहीं छूटते।
नील का टीका लगना=मु०; चरित्र में लगा धब्बा। कलक लगना।
नील का माठ बिगड़ा है
जब कोई पूरे का पूरा काम नष्ट हो जाए तब क०। (पुराने ज़माने मे जब रासायनिक रंगो का आविष्कार नही हुआ था, नीला रंग नील से बनता था। इसके लिए नील की जडो और डठलो को काटकर हौज मे सडाते थे। यही नील का माठ कहलाता था। कभी-कभी बिगड जाता था, और तब डंठलों और जड़ो से रंग नही उतरता था।)
नीलटांस जिस सिर मंडरावे, मुकट पती सूं लाभ पावे
जिसके सिर पर नीलकण्ठ पक्षी घूम जाए, उसे राजा से धन-सम्मान मिलता है। लोक-विश्वास।
नूनवाले का नून गिरा, उसने उठा लिया।
तेलवाले का तेल गिरा, तो क्या उठा लेगा?
स्पष्ट।
नूनवाले का नून गिरा, दूना हुआ,
तेली का तेल गिरा, ऊना हुआ
नमकवाले का नमक ज़मीन पर गिरे, तो वह वज़न में दुगुना हो जाएगा, क्योंकि उसमें धूल मिल जाएगी। तेली का तेल गिरे, तो वह कम हो जाएगा, क्योंकि सब उठाया नहीं जा सकेगा।

नेक अंदर बद, बद अंदर नेक, (मु०)
अच्छे आदमी में भी कुछ-न-कुछ बुराई और बुरे में भी कुछ-न-कुछ अच्छाई होती है।
नेक नाम बनिया, बदनाम चोर
वाणिज्य करनेवाले की साख होती है, चोर की नहीं।
नेक बात का पूछना क्या ?
स्पष्ट।
नेकी और पूछ-पूछ
भलाई करने में क्या पूछना। कोई भलाई करना चाहे तो उसे पूछने की क्या ज़रूरत है?
नेकी कर और दरिया में डाल
किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए।
नेकी करनेवाले को नेकी का मज़ा और मूज़ी को टक्कर का
भले को भलाई का मज़ा मिलता है और बुरे को बुराई का, वह पिटता है।
नेकी करो खुदा से पाओ
भलाई का बदला ईश्वर देता है।
नेकी का बदला बदी
किसी को भलाई का बदला बुराई से दिया जाए, तब क०।
नेकी की जड़ पताल में
भलाई का फल हमेशा मिलता रहता है।
नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम, (मु०)
नेकी तो चूल्हे-भाड़ में गई, उसके बदले बुराई मिली।
(दे०—व्याख्या के लिए नेकी का बदला बदी।)
नेकी ही रह जाती है
मनुष्य मर जाता है, पर उसके अच्छे काम जीवित रहते हैं।
नेमी पांडे कमर में जटा
ढोंगी के लिए क०।
नेमी=नियम से रहनेवाले।
नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर, (पू०)
ब्राह्मण को न्योता दिया और मानो घर में शत्रु बुला लिया। ब्राह्मण बहुत खाने के लिए बदनाम हैं।

नेस्ती में बरखुरदारी

गरीबी में बच्चों का पालन-पोषण एक कठिन काम हो जाता है।

नैन छुपाये न छुपें, पट घूंघट की ओट।
चतुर नार उर सूरमा, करें लाख में चोट।

स्पष्ट।

नैनन को नेह न टूटे, जैसे बेल बिरछ को लिपटे, सूख जाय ना छूटे

स्पष्ट।

बेल – लता।

बिरछ – वृक्ष।

नैना तोहे पटक दूं, टूक-टूक ह्वै जाय।
पहले नेह लगाय के, पाछे अलग ह्वै जाय।

स्पष्ट।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कह देत।

स्पष्ट।

नौ कनौजिया और नब्बे चूल्हे

कान्यकुब्ज ब्राह्मण बहुत छूत-छात मानते है। उसी पर व्यग्य मे क०।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर

नौकर का नौकर कुत्ते के समान होता है।

नौकर को चाकर, मड़ई को उसारा, (पू०)

नौकर का नौकर वैसा ही, जैसे झोपडी मे बरामदा। शोभा नही देते। अथवा व्यर्थ होते है।

नौकर लाट कपूर के, होंठ मलें और हक़ लें

लाट कपूर के नौकर ज़बर्दस्ती हक लेते है। किसी ढीट याचक का कथन।

(अकबर के समय मे लाट कपूर एक प्रसिद्ध गायक हो गए है। जब वह किसी अमीर के यहा गाने जाते और उनको कोई इनाम देता और सम्मानपूर्वक यह कहता कि यह आपके नौकरो के लिए है, तो उनके नौकर तुरत सामने आ जाते और यह कह कर उनके हाथ से वह रकम ले लेते कि यह तो हमे दी गई है।)

नौकरी अरंड की जड़

नौकरी का कुछ ठिकाना नही रहता, कब छूट जाए। अरंड वृक्ष की जड़ बहुत कमज़ोर होती है।

नौकरी की जड़ ज़बान पर

दे० ऊ०।

नौकरी ताड़ की छांव

नौकरी का बहुत कम आसरा करना चाहिए।

नौकरी नित नई

रोज़ कुछ-न-कुछ नया काम करना पडता है। अथवा (२) कब नया मालिक आ जाए, इसका कुछ ठीक नही रहता।

नौकरी पेशे का घर क्या? कभी यहां कभी वहां

नौकरी मे आदमी को मारा-मारा फिरना पडता है।

नौकरी है या भाईबंदी

नौकर जब ठीक तौर पर काम न करे, तब क०।

नौ की लकड़ी, नब्बे ढुलाई

जितने का काम नही, उस पर उतने से अधिक खर्च हो जाना।

नौ कूंड़े और दस नेगी, (पू०)

जितनी चीज नही, उससे अधिक मागनेवाले। (नेगी वे लोग कहलाते है, जिन्हे विवाह के अवसर पर नेग या दस्तूर मिलता है।)

नौ तेरस बाईस न बताइये

किसी से कहा गया कि नौ और तेरह बाईस होते है, पर वह मानने को तैयार नही। कहता है, नही ऐसा मत कहो।

जब कोई व्यक्ति सही बात को न माने और तर्क करे, तब क०।

(आप जबर्दस्ती किसी से अपनी बात नही मनवा सकते।)

नौ दिन चले अढ़ाई कोस

बहुत सुस्त आदमी के लिए क०।

नौ नगद, न तेरह उधार

उधार तेरह मे बेचने की अपेक्षा नकद नौ मे बेचना अच्छा है।

नौ मन तेल खाये, फिर तिलेर का तिलेर

ऐसे लडके को क०, जिसे खूब अच्छा खाने-पीने

को मिलता रहे, फिर भी वह दुबला-पतला रहे।
तिलेर=एक पक्षी विशेष।

नौ महीने मां के पेट में कैसे रहा होगा ?
चंचल और ऊधमी लड़के के लिए क०।

नोमी गूगा पीर मनाऊं, ना चरखे के हाथ लगाऊं (स्त्रि०)
काम न करने के लिए जब कोई व्यर्थ का बहाना ढूंढ़े, तब क०। (गूगा नाम के एक पीर हो गए हैं। सन १०२४ में उनकी मृत्यु हुई। भादो बदी नवमी को उनकी यादगार में मेला लगता है।)

नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली, (मु०)
जिसने जन्म भर बुरे कर्म किए हो, और अंत में वह संत-महात्मा बन बैठे, तब क०।
(बिलार-व्रत की कथा जातक में मिलती है और महाभारत में भी।)

नौह भर खाया तो खाया, मुंह भर खाया तो खाया
थोड़ा खाया तो, बहुत खाया तो, खाने का नाम तो हुआ। चोरी चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी, कहलाएगी तो वह चोरी ही।
नौह भर=नाखून भर। बहुत थोडा।

पंच कहें बिल्ली, तो बिल्ली ही सही
जो सबकी राय होगी, वही हम मान लेंगे।
(कथा है कि रात के समय किसी बनिए के घर मे चोर घुस गया। बनिए को जब पता चला, तो उसने चुपचाप उठकर उस कोठे के किवाड़ बद कर दिए और बाहर से कुंडी लगा दी, जिसमें चोर था। चोर भीतर से बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करने लगा। तब बनिए ने कहा कि सबेरे अगर पंच तुझे बिल्ली कहेंगे तो बिल्ली ही समझकर छोड़ देंगे। इस समय तो अब तुम बंद रहो।)

पंच जहां परमेश्वर, (हिं०)
पंच परमेश्वर के बराबर होते है। जहां पांच आदमी इकट्ठे होकर किसी बात का फ़ैसला कर देते हैं, वह ठीक ही होता है।

पंचफूला रानी बनी है, (स्त्रि०)
अपने को बड़ी रूपवती समझती है।
(भारतीय लोककथाओं में पंचफूला रानी का बहुत नाम आता है। वह एक सुन्दर राजकन्या थी, जो वज़न में इतनी हल्की मानी गई कि पांच फूलों से तुला करती थी।)

पंच माने खुदा, खुदा माने पंच, (मु०)
पंच और परमेश्वर में कोई अंतर नहीं।

पंच मिल खुदा और खुदा मिल पंच, (मु०)
पंचों में ईश्वर का वास होता है और ईश्वर में पंचों का।

पंच मुख परमेश्वर
पंचो की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा होती है।

पंचों का कहना सिर आंखों पर, मगर परनाला यहीं गिरेगा
जब कोई आदमी ऊपर से तो यह कहता जाए कि आप जो कहेगे वही करेंगे, पर करे अपने मन की।
(किसी मनुष्य के घर की मोरी का पानी उसके पड़ोसी के घर में जाता था। पंचों ने आकर फैसला किया कि वह अपनी मोरी हटाकर दूसरी जगह बनवा ले। किन्तु उसने नहीं माना और उत्तर में उसने ऊपर की बात कही।)

पंचों का जूता और मेरा सिर
मैं हर तरह से पंचों की बात मानने को तैयार हूं।

पंचों शामिल मर गये, जानों गये बरात
पंचों के साथ कष्ट भोगना वैसा ही है, जैसा बरात में जाना। सबके साथ जो कष्ट उठाना पड़ता है, वह अखरता नहीं।

पंज ऐब शरई हैं
उसमें पांच ऐब हैं।

पंडियान की मीठी-मीठी बतियां
मीठी बात करके अपना काम बनानेवाली स्त्री।

पंडित पोथी बांचते, मुल्ला पढ़ें कुरान।
लोग दिखावो लख करो, नाहिं मिलें भगवान।
स्पष्ट।

पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत।
भाव भगत जानी नहीं, भये जंगल के भूत।
सच्ची भक्ति के बिना ईश्वर नहीं मिलता।

पकले गूलर, कउवे के नींद आवा ले, (भो०)
गूलर पक रहे हैं, भला कौए को नींद कैसे आएगी? जब किसी अच्छी लगनेवाली वस्तु को पाने के लिए कोई बेचैन हो उठे, तब क०।
(कौवे गूलर बहुत खाते हैं।)

पका फोड़ा हो रहा है
बहुत टीस उठ रही है।
कष्टदायक वस्तु के लिए क०।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और।
दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और।
(१) जो मेहनत करे, उसे न मिले; दूसरे मज़ा उड़ाएं।
(२) जो मेहनत करेगा सो पाएगा, नही तो दूसरे उसका लाभ उठाएंगे।

पकी फली नहीं फोड़ता है
बहुत ही आलसी है। कोई काम नही करता।

पके आम के टपकने का डर है
बूढ़ा आदमी, न जाने कब चल बसे।

पक्का पान खांसी न जुकाम
नया पान कफ़ पैदा करता है, पक्का नही।

पक्का होना चाहे तो पक्के के संग खेल, कच्ची सरसों पेर के, खली होय ना तेल
योग्य बनना चाहते हो, तो योग्य पुरुष के साथ रहो। कच्ची सरसो से तेल नही मिल सकता।

पखाल का लादना और डाक का लादना एक-सा
दोनों ही कामों में बोझा लेकर और जल्दी चलना पड़ता है।
पखाल -मशक।

पगड़ी अटकी है
इज्ज़त खतरे में है।

पगड़ी दोनों हाथों से थामी जाती है
इज्ज़त को बचाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए।

पगड़ी भीतर रख
अपनी इज्ज़त बनाए रखो। ऐसा न हो, कोई पगड़ी उछाल दे।

पगड़ी रख, घी चख
इज्ज़त से भी रहो, और अच्छा खाओ-पीओ।

पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान।
मुख पवित्र जब होत है, भज ले श्री भगवान।
तीर्थयात्रा से पैर पवित्र होते हैं, दान से हाथ पवित्र होते हैं और ईश्वर-भजन से मुख पवित्र होता है।

पग बिन कटे न पंथ
बिना चले रास्ता तय नही होता। करने से ही काम होता है।

पछवा चले, खेती फले, (कृ०)
पश्चिम की वायु खेती के लिए लाभदायक होती है।

पठान का पूत, घड़ी में औलिया, घड़ी में भूत
घड़ी-घडी में जिसका मिजाज़ बदले, उसके लिए क०।
औलिया सत।

पठानों ने गांव मारा, जुलाहों की चढ़ बनी
क्योंकि उन्हें नौकरी मिल जाएगी। कुनबापरस्ती।

पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने धस, (पू०, स्त्रि०)
कोई पतिव्रता स्त्री अपने अत्याचारी पति के प्रति कह रही है।
विवश होकर किसी का अनाचार सहन करना पड़े, तब क०।

पड़वा गमन न कीजिये, जो सोने को होय
पडवा (प्रतिपदा) को यात्रा नही करनी चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यों न होनेवाला हो। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पड़वा को यात्रा के लिए अशुभ मानते हैं।

'ड़ोस छोड़ पीत करे'
पड़ोसियों को छोड़ कर दूसरों को मित्र बनाना। बुरे आदमी के लिए क०।

पड़ोसी के मेंह बरसेगा तो बौछार यहां भी आयेगी
धनी के पड़ोस में रहने से किसी-न-किसी तरह का लाभ होगा ही।

पढ़ा न लिखा, नाम विद्याधर
बेशऊर के लिए क०।

पढ़ा न लिखा, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल, (मु०)
दे० ऊ०।

पढ़िये भैया सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई, (पू०)
वही विद्या पढ़नी चाहिए, जिससे पेट का धंधा चले।

पढ़ी न, कज़ा की, (मु०)
जो पांच वक्त नमाज़ नही पढ़ता, वह पाप करता है। नियत समय पर नमाज़ न पढ़ने के अपराध को कज़ा कहते है।

पढ़े के पास बैठिये, दूना लाभ
ज्ञानी के पास बैठने से दुगुना लाभ होता है। समय का सदुपयोग होता है। अच्छी बाते सीखने को मिलती हैं।

पढ़े घर की पढ़ी बिल्ली
शिक्षा का दूसरो पर प्रभाव पडता है। जहा एक पढा होता है, वहा दूसरा भी पढ़ जाता है।

पढ़े तोता, पढ़े मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढ़ा है?
सिपाहियों पर फब्ती। वे प्राय अशिक्षित होते है।

पढ़े तो है, पर गुने नहीं
विद्या तो पढी, पर उसका मनन नही किया। अनुभवहीन पढे-लिखे।

पढ़े फ़ारसी बेचें तेल, यह देखो कुदरत का खेल
क़िस्मत की मार से पढे-लिखे मनुष्य भी मारे-मारे फिरते है।

पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसों में कौवा
स्पष्ट।
(स०—सभा मध्ये न शोभन्ते हस मध्ये बको यथा)

पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पिंजरा खाली करो
(१) लड़के जब पढ़ते, नहीं तो उनसे क०।
(२) निकम्मे नौकर से भी क०।

पतुरिया का डेरा, जैसे ठगों का घेरा
क्योंकि वहा भी आदमी जाकर लुटता है।
पतुरिया = वेश्या।
(एक घुमक्कड़ जाति के लोग होते हैं, उनकी स्त्रियों को भी पतुरिया कहते हैं। ये चोरी के लिए बदनाम हैं। यहां उनके डेरे से भी अभिप्राय हो सकता है।)

पतुरिया रूठी, धरम बचा
क्योंकि उसके पास फिर जाएंगे ही नहीं।
(जब कोई किसी काम के लिए इन्कार कर देता है, तब क०, कि चलो अच्छा हुआ, एहसान से बचे।)

पतोर ताको गजी नहीं, बेसवा ओढ़े खासा
(१) पतिव्रताओं को तो गाढा पहिनने को नहीं मिलता, और वेश्याए रेशम पहिनती है। अथवा
(२) ऐसे पुरुष के लिए भी कह सकते हैं, जो अपनी स्त्री का ख्याल न करे, और किसी दूसरे से प्रेम करे।

पत्थर को जोंक नहीं लगती
(१) निर्दयी के आगे रोने से कोई लाभ नहीं होता।
(२) मूर्ख को शिक्षा नही लगती।

पत्थर मारे मौत नहीं आती
(१) घर के लोग जिससे परेशान हों, ऐसे व्यक्ति के लिए क०।
(२) पत्थर मारने से कोई नही मर जाता। जब मौत आती है तभी मरता है।

पत्थर मोम नहीं होता
हृदयहीन को दया नहीं आती।

पदनी आइल, न पेठया लागल, (पू०)
किसी दुराचारिणी के विषय में कहा गया है कि न वह आई, न हाट लगी; अर्थात उसके बिना बाजार में रौनक नही आई।

पद्मिनी चमारों में होती है
चमारों में भी सुन्दर स्त्रिया होती है।

पर आसा नित उपासा
दूसरों पर निर्भर करनेवाला हमेशा भूखो मरता है।

पर उपकारी, धरमधारी
दूसरों का भला करनेवाला ही धर्मात्मा होता है।

परकल घोड़ भुसौले ठाढ़, (पू०)
जहां जिसे खाने को मिलता है, वह उसी जगह बार-बार पहुंचता है।
परकल = लपका हुआ।

पर का धन गौरैया मार, (पू०)
पराए धन को चिड़ियां खा जाएं, हमें क्या मतलब ?
पर की खेती, पर की गाय, वह पापी जो मारन जाय
मनुष्य का स्वभाव है कि वह दूसरे की हानि को चुपचाप देखता रहता है, हस्तक्षेप नहीं करता। उसी पर कहा० कही गई है।
दे०—अनकर खेती....।
पर के धन पर चोर रोवे
चोर मुफ्त का माल चाहता है।
पर को कुआ खोदिये और आप ही डूब-डूब मरिये
जो दूसरों को हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, वह स्वयं हानि उठाता है।
परगट आन, पांछे कह आना।
अधम न एक जग ताहि समाना।
जो मुंह पर कुछ कहे और पीठ पीछे कुछ कहे, उसे बड़ा नीच समझना चाहिए।
पर घर कूदें मूसलचंद
जो बिना बुलाए किसी के घर जाए, अथवा बिना पूछे किसी के काम में हस्तक्षेप करता फिरे, उसके लिए क०।
पर घर नाचें तीन जने, कायथ, बैद, दलाल
क्लर्क, वैद्य, और दलाल, ये अपनी आमदनी के लिए दूसरों पर ही निर्भर करते हैं।
परचे परतीत है
मिलने-जुलने से ही विश्वास उत्पन्न होता है।
परजा मरन, राजा की हाँसी
राजा के सुख के लिए प्रजा मरती है। सामंती जमाने में राजा लोग अपने आराम के लिए रिआया से कर्ज लेते थे। उसी से मतलब है।
पर तिरिया पर धन के ऊपर जो कोई सुता धरे है,
जब छूटे हैं प्रान, प्यारे, जाके नरक पड़े हैं
जो पराए धन और पराई स्त्री पर दृष्टि डालता है वह नरक में जाता है।
सुता धरे है=सुर्त करता है। सुर्त से मतलब ध्यान से है।
परदे की बीबी और बटाई का लहंगा
प्रतिष्ठा के अनुकूल पहिनावा न होना।
परदे की बीवी=पर्दानशीन औरत। परदे में बड़े आदमियों की स्त्रियां ही रहती हैं।
परदे में जर्दा लगाती हैं, (स्त्रि०)
अपना नाम कलंकित करती हैं।
जर्दा=धब्बा।
परदेस कलेस नरेशन को, (हिं०)
घर से बाहर जाने पर राजाओं को भी कष्ट होता है, फिर साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या ?
परदेसी का जी आधा होता है
(१) अजनबी आदमी संकोचशील होता है।
(२) बाहर जाकर आदमी हिम्मत से काम नहीं ले पाता।
परदेसी की प्रीत को, सबका मन ललचाय।
वोइ बात की खोट है, रहे न संग ले जाय। (स्त्रि०)
स्पष्ट
खोट=कमी; त्रुटि; शंका।
परदेसी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलों में बास नहीं, (स्त्रि०)
परदेशी से प्रेम करना व्यर्थ है, क्योंकि वह न जाने कब छोड़कर चलता बने।
पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाओ संग।
दसों सीस रावन के ढह गए, इस नारी के संग।
स्पष्ट।
(सीता को चुराने के लिए रावण मारा गया था।)
परवत को राई करे, राई परवत मान।
ईश्वर में बड़ी शक्ति है, वह असंभव को भी संभव कर सकता है।
परबस में सुख है नहीं, निसबस हो सुख भोग।
यातें परबस त्याग कें, रहें सुबस बुध लोग।
पराधीनता में सुख नहीं मिलता।
पर मुई सासू, आसों आये आंसू, (स्त्रि०)
सास पारसाल मरी और आंसू इस साल आए।
बनावटी दुख।
परहेज बड़ी दवा है
खाने-पीने आदि के संयम से बहुत से रोग दूर होते हैं।

परहेज भी आधा इलाज है
दे० ऊ० ।
पराई जेब में अपनी जेब से धरना मुश्किल है
दूसरे का पैसा लेना आसान नहीं।
पराई तोंद का घूंसा
अपने को उसका कष्ट नही होता।
पराई थैली का मुंह सकरा
अपना धन कोई आसानी से नही देना चाहता।
दे०—पराई जेब से...।
पराई धी और हँसे बटाऊ लोग
पराई लडकी को देखकर राहगीर हँसते है।
(उन्हे हँसना नही चाहिए।)
पराई नौकरी करनी ओर सांप का खिलाना बराबर है
दोनो ही काम खतरे के है।
पराई सराय में कौन धुआं करता है ?
दूसरे के घर जाकर चूल्हा सुलगाना ठीक नही। (भोजन के लिए ।)
अपना निजी काम अपने घर ही करना चाहिए।
परा गन्दह रोजी, परा गन्दह दिल, (फ़ा०)
जिसकी नौकरी का ठीक नहीं, उसके दिमाग का भी ठीक नही। अर्थात बेरोजगार आदमी अस्थिर चित्त रहता हे।
पराधीन सपने सुख नाहीं
जो दूसरे की नौकरी करता है, अथवा दूसरे के अधीन रहता है, उसे कभी सुख नही मिलता।
पराया दिल परदेस बराबर
उसका हाल मालूम नहीं रहता।
पराया दिल समन्दर के पार
दे० ऊ० ।
पराया माल झांट का बाल
पराए माल को तुच्छ समझें।
पराया सिर कद्दू बराबर
दूसरे के माल की परवाह न करना।
पराया सिर कुरान की जगह, (मु०)
क़सम खाने के लिए पराया सिर। पराई वस्तु की वक़त न करना। (मुसलमान लोग कुरान की कसम खाते है। इसके अलावा अपने अथवा पराए सिर की कसम भी खाई जाती है। लोक-विश्वास है कि किसी के सिर की झूठी कसम खाने से वह आदमी मर जाता है। इसी पर कहावत आधारित है।)
पराया सिर पसेरी बराबर
दे०—पराया सिर कद्दू . . . ।
पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, (स्त्रि०)
(१) पराये सौभाग्य पर ईर्ष्या करना। अथवा (२) यह एक सीधा प्रश्न भी हो सकता है कि क्या हम पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड डालेगे, अर्थात क्या अपनी हानि कर लेंगे ? हिन्दू स्त्रिया माग मे सेंदुर भरती है, जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। कहावत मे उसी से मतलब है।
पराये गंडों के भरोसे न रहना
अर्थात कार्य तो पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है, गडे या तावीज से नही।
गडा-मत्र पढ़कर बनाया गया धागा, जिसे लोग अपनी किसी मनोकामना को पूरा करने अथवा रोग और भूत प्रेतादि की बाधा को दूर करने के लिए गले में पहिनते हैं।
पराये धन पर झींगुर नाचे
दूसरे के धन पर ऐंठना।
परायेधन पर लक्ष्मीनारायन, (हिं०)
पराये धन पर मौज करना।
(भोज के प्रारभ मे जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा है। जिसका अर्थ होता है कि अब भोजन प्रारंभ किया जाए।)
पराये बरदे औजाद करते है
दूसरे के नौकरों को छुटकारा दिलाते हैं।
पराये बूते पर परोपकार करना।
बरदे=बैल। (यहां नौकरों से ही मतलब है।)
पराये भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ, काल मुआ
पराये भरोसे जुआ खेलनेवाला नुकसान उठाकर रहता है। (यहां सट्टा से मतलब है।)

पराये माल पं, या हुसेन, (मु०)
पराया माल खाने को हमेशा तैयार।
दे०—पराये धन पर लक्ष्मीनरायन।

पराये हाथ पं शिकरा पालते हो
पराये भरोसे रहना ठीक नहीं। शिकरा एक प्रकार का शिकारी बाज़ पक्षी होता है। उसे इस प्रकार सिखाते है कि वह चिड़ियो को पकड़कर मालिक के पास ले आता है।

पल पखवाड़ा, घड़ी महीन , चौघड़िये का साल। जिसको लाला 'काल' कहत हैं, उसका कौन हवाल।
वादा खिलाफी करना। काम के लिए रोज़ टालना। (लालाजी का एक पल एक पखवाड़े के बराबर, एक घड़ी एक महीने के बराबर, और चार घड़ी एक साल के बराबर होती है। अब अगर वह 'कल' कह दें तो उसका न जाने क्या हाल होगा।)

पलास के तीन पात
सदा एक-सी हालत में रहना।

पशु का सताना, निरा पाप कमाना
पशु को नहीं सताना चाहिए ।

पहली बोहनी अल्ला मियां की आस, (मु० व्य०)
सुबह दुकान पर पहला ग्राहक आने पर मुसलमान दूकानदार कहा करते है। दूकानदार सुबह की पहली बिक्री को बड़ा महत्व देते है। वे उससे दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते है। पहले ग्राहक को वे कभी वापस नही करते।

पहले अपनी ही दाढ़ी की आग बुझाई जाती है
पहले अपना ही काम देखा जाता है।
(एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा कि अगर मेरी और तुम्हारी दाढ़ी मे आग लग जाए, तो तुम पहले किसकी दाढ़ी बुझाओगे। बीरबल ने जवाब दिया—पहले अपनी ही बुझाऊंगा।)

पहले खाना, पीछे बात करना
पहले सामने का काम पूरा करो।
खाने के समय बहुत बोलनेवाले के लिए।

पहले घर में तो पीछे मस्जिद में, (मु०)
पहले घर देखो, फिर बाहर।

पहले चुम्मे गाल काटा
किसी आदमी को पहले-पहल जब कोई काम सौंपा जाए, और वह उसे चौपट कर दे।

पहले पहरे सब कोई जागे, दूजे पहरे भोगी। तीजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी।
रात के पहले पहर में सब कोई जागते हैं, दूसरे में भोगी, तीसरे में चोर और चौथे में योगी जागता है।

पहले पीवे जोगी, बीच में पीवे भोगी, पीछे पीवे रोगी
(१) तमाखू पीने के लिए।
(२) भोजन के समय पानी पीने के लिए भी कुछ लोग कहते हैं, पर इस सम्बन्ध में यह कहावत कोई अन्तिम वाक्य नही।

पहले पीवे मकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे पीवे चिलम-चट, (पू०)
तमाखू पीनेवालों का कहना है कि पहले तो मूर्ख पीता है, फिर जो तमाखू का मज़ा जानता है वह पीता है, फिर सबसे बाद मे चिलमचट पीता है। शुरू में चिलम में केवल धुआं निकलता है, फिर तमाखू के थोड़ा जल उठने पर उसमे पीने का स्वाद आता है, बाद में केवल राख रह जाती है और कोई मज़ा नही रहता, इसी से ऐसा कहा है।

पहले बो, पहले काट, (कृ०)
काम में जो शीघ्रता करेगा, उसका फल भी उसे शीघ्र मिलेगा।

पहले मित्तर, तब देवता पित्तर
पहले पेट पूजा फिर देव पूजा।

पहले मारे सो मीरी
मैदान में जो आगे बढ़कर हाथ मारता है, वही जीतता है।
(शतरंज के खेल में प्यादा यदि आगे बढ़कर दूसरे खिलाड़ी के वज़ीर, या बादशाह के खाने में पहुंच जाए, तो वह वज़ीर बन जाता है।)

पहले सोच विचार, पीछे कीजे कार
काम सोच-विचार कर करना चाहिए।

पहले ही गस्से में बाल आया
पहले ही कौर में बाल आया, अर्थात अशकुन हुआ।

(भोजन में बाल निकलना अशुभ मानते हैं, और यदि पहले ही कौर में बाल आ जाए, तो फिर भोजन नही करते।)

पहले ही बिस्मिल्ला ग़लत, (मु०)

शुरू में ही काम बिगडा।

(मुसलमानो मे कोई कार्य आरंभ करने के समय 'बिस्मिल्लाह अर्रहमानुर्रहीम' कहने की प्रथा है। 'बिस्मिल्लाह' उसी का पूर्वार्द्ध और सक्षिप्त पद है, जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से।)

पहाड़ की उतराई चढ़ाई दोनों पर लानत

दोनो से कष्ट होता है।

पहाड़ के अठगन सिलूत, (पू०)

पहाड पत्थरों के सहारे टिका है। छोटों से ही बडों का बडप्पन है।

अठगन = अटकन; सहारा।

सिलूत - सिल, पत्थर।

पहाड़ी गधा, पूर्वी रेंक

अपनी चाल-ढाल छोडकर दूसरों की चाल-ढाल का अनुकरण करना।

पांच जूतियां और हुक्के का पानी

तुम्हें यही मिलना चाहिए।

जब कोई ऐसी माग करे, जिसके वह बिल्कुल ही योग्य न हो, तब क०।

पांच पंच मिल कीजे काज, हारे-जीते नाहीं लाज

पाच आदमियो से सलाह लेकर काम करना चाहिए। उसमे अगर नुकसान भी हो जाए, तो अपने सिर बदनामी नही आती।

पांच महीना ब्याह के बीते, पेट कहां से लाई? (स्त्रि०)

अप्रत्याशित बात।

पांच आम, पचासे इमली

पांच वर्ष में आम और पचास में इमली में फल आता है। पूरी शुद्ध कहावत इस प्रकार है: पाँचे आम, पचीसे महुआ, तीस बरस में इमली औ' कहुआ। फैलन ने उक्त वाक्य का अर्थ किया है—आम के पांच पेड़ इमली के पचास पेड़ के बराबर होते हैं।

पांचे मीत, पचासे ठाकुर

मित्र पांच रुपए में और राजा या ज़मींदार पचास रुपए में मान जाता है।

पांचों उंगलियां घी में, छठा सिर कढ़ाई में

जिसकी खूब दाल गल रही हो, उसके लिए क०।

(इसका शुरू का आधा भाग ही कहावत के रूप में प्रचलित है।)

पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं

(१) कोई चीज सब एक-सी नही होती।

(२) सब मनुष्य एक-से नही होते।

पांचों पंडे छठे नरायन

पांचों पांडव और छठे श्रीकृष्ण।

ऐसी जगह क०, जहा दस-पाच आदमियों के गुट में अकस्मात ऐसा मनुष्य पहुंच जाए, जो उनका नेतृत्व कर सकता हो और जहां उसकी ज़रूरत भी हो।

(कहावत का प्रयोग प्रायः व्यंग्य में ही होता है।)

पांचों सवारों में मिलना

अपने को ऐसे मनुष्यो के बराबर समझना, जो योग्यता में अपने से बहुत बडे हों।

(कथा है कि किसी समय चार शाही घुड़सवार सजे-धजे और हथियारों से लैस कहीं जा रहे थे। उनके पीछे एक कमज़ोर-सा निहत्था आदमी एक सड़ियल टट्टू पर सवार हो चल रहा था। जब किसी ने उससे पूछा कि तुम कहा जा रहे हो? तो उसने उत्तर दिया—हम पाचो सवार दिल्ली से आ रहे हैं।)

पांडे जी पछतायेंगे, वही चने की खायेंगे

जब कोई मनुष्य बहुत समझाने पर भी किसी बात को न माने और बाद में अपनी खुशी से वही करे जो कहा गया था, तब कहते हैं।

पांडे दोऊ दीन से गये

(१) जब कोई मनुष्य एक काम को छोड़कर दूसरा काम करने जाए और उसमें सफल न हो, और अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठे।

(२) जब कोई किसी बड़ी चीज़ की आशा से छोटी चीज़ को छोड दे, और बाद में उसे बड़ी भी न मिले, और न छोटी।

(कथा है कि कोई ब्राह्मण मुसलमान हो गया। कुछ दिनों बाद जब उसने अपने इस नए मजहब में कोई खास तत्व न देखा, तो उसने फिर ब्राह्मण होने की इच्छा प्रकट की। परन्तु ऐसा उसके लिए संभव नहीं हो सका; क्योंकि हिन्दू उन दिनों शुद्धि नहीं करते थे और वह दोनों तरफ़ से मारा गया।)

पांव गोर में लटकाये बैठे हैं

मरने के करीब हैं।

पांव तले की जमीन सरकी जाती है

(१) किसी बहुत झूठी या कुत्सित बात के सुनने पर घृणा या क्षोभ से।

(२) भय या आश्चर्य होने पर भी।

पांव में जूती न सिर पर चपोटी

(१) गिलबिल्ला।

(२) बहुत गरीब।

चपोटी=टोपी।

पांव लों बिनती, सौ लों गिनती (हिं०)

जिस प्रकार सौ से अधिक गिनती नहीं होती, उसी प्रकार पैर पड़ने से अधिक कोई बिनती नहीं हो सकती। जब कोई अपने किसी काम को करने के लिए सब तरह से प्रार्थना करके थक जाए तब क०।

पांसा पड़े, अनाड़ी जीते

पांसा पड़ने से अनाड़ी भी जीतता है।

पांसा पड़े सो दांव, हाकिम करे सो न्याव

दैववशात जो सामने आता है, वह सहना पड़ता है। (हाकिम की जगह राजा भी कहा जाता है।)

पाक नाम अल्लाह का, (मु०)

पवित्र नाम ईश्वर का है।

पाक रह, बेबाक रह, (मु०)

जिसका दिल साफ है, उसे कोई डर नहीं रहता।

पाजी तो पाजी, वह बड़ा पजोड़ा है

पाजी से भी बड़ा कमीना है।

पात-पात को आप लुटावे, काला मुंह कर जग दिखलावे, तब लालों में लाली पावे

यह पहेली है पलास वृक्ष पर। पहले पलास अपने सब पत्ते गिरा देता है, अर्थात बिल्कुल नंगा हो जाता है, फिर उसमें काले रंग की कलियां लगती हैं, अर्थात संसार में बदनाम होकर उसका मुंह काला होता है; बाद में लाल रंग के फूल उसमें लगते हैं, जिससे सारा वन दमक उठता है, अर्थात अपने गुणों से वह सम्मान योग्य बनता है। तात्पर्य यह कि बिना कष्ट झेले मनुष्य को सफलता नहीं मिलती।

बादशाहों और दरयाओं का फेर किसने पाया है?

राजाओं और नदियों का सच्चा हाल किसने जाना है?

पान और ईमान फेरे ही से अच्छा रहता है

पान और ईमान पलटते रहने से ही ठीक रहते हैं। यहां पलटने के दो अर्थ है—(१) लौटना-पलटना। (२) लौट-पलट कर साफ करना।

पान पुराना घृत नया, और कुलवंती नार।
यह तीनों तब पाइये, जब प्रसन्न होय मुरार।

स्पष्ट।

पान पुराना ही अच्छा माना जाता है, जो महंगा मिलता है। घी तो ताजा अच्छा होता ही है।

मुरार=मुरारी; कृष्ण भगवान।

पान-सा पतला, चांद-सा चकला

केवल तुकबंदी।

चकला=गोला।

पानी का-सा बुलबुला है

क्षणभंगुर वस्तु। मानव शरीर के लिए क०।

पानी का हगा ऊपर आता है

बुरा कर्म छिपता नहीं।

पानी दें और जड़ काटें

ऊपर से प्रेम, भीतर से शत्रुता।

पानी पीकर जात पूछते हो

काम कर चुकने के बाद उसका विचार करना।

पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलो विचार। (वृ०)

पानी पी घर पूछना

दे० ऊ०।

पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के, (हिं०)

पानी छान कर पीना चाहिए और गुरु देखभाल कर करना चाहिए।

पानी पीवें छान के जीव मारें जान के

जैनियों के लिए क०।

पानी बाढ़ा नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयाना काम।

यदि तिरती नाव मे पानी भर जावे और कोई कर्ज में दब जावे तो इनसे छुटकारा पाने में देरी नही करनी चाहिए। मतलब, आफ़त का मुक़ाबिला तुरत करे।

पानी में पत्थर नहीं सड़ता, (व्य०)

रकम किसी मातबर आदमी के पास जमा हो, तो वह डूब नही सकती।

पानी में पखान, भीगे पर छीजे नहीं।
मूरख के आगे ज्ञान, रीझे पर बूझे नहीं।

मूर्ख को शिक्षा देने से कोई लाभ नही होता।

पानी में मछली, नौ-नौ टुकड़ा हिस्सा, (पू०)

किसी चीज के हाथ मे आने के पहले ही उसका गुताडा लगाने लगना।

पानी से पतला कर डाला

बहुत जलील कर डाला।

पानी से पहले पुल बांधते हो

दे०—पानी मे मछली ।

पाप उभरे पर उभरे

बुरा काम छिपता नही।

पाप का घड़ा भर कर डूबता है

पापी की भले ही पहले उन्नति हो, पर अंत मे विनाश होता है।

पाप छिपाये ना छिपे, जस लहसुन की बास

पाप प्रकट होकर रहता है।

पाप भी कभी छिपाये से छिपता है ?

स्पष्ट।

पापियों के मारने को पाप महाबली

पापी अपने बुरे कर्मों से ही मारा जाता है।

पापी का माल अकारथ जाय

बुरी कमाई बुरे कामों में ही खर्च होती है।

पापी का माल पिराचत जाय, दंड भरे या चोर ले जाय

पापी का माल प्रायश्चित्त में ही खर्च हो जाता है, अर्थात बुरे कर्मों के दड मे जाता है।

पापी की नाव डूबे पर डूबे

पापी नष्ट होकर रहता है।

पापी की नाव भर के डूबे

पापी पहले सफल होता है, पर अन्त मे नष्ट हो जाता है।

पापी के मन में पाप ही बसे

स्पष्ट।

पाबंद फंसे, आजाद हँसे

कैदी को बंधा हुआ देखकर स्वाधीन मनुष्य हँसता है। संसार की रीति यही है।

पायजामे में से क्यों निकले पडते हो ?

अर्थात क्यो इतने बिगडते हो?

पार उतरूं तो बकरा दूं

जब कोई विपत्ति के समय तो देवी-देवता मनावे, पर छुटकारा पाने पर भूल जाए।

(इसकी कथा है कि कोई मुसलमान नाव में बैठकर नदी पार कर रहा था। बीच मे पहुंचा, तो बडे जोर का तूफान आया। उसने किसी पीर की मिन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुंच जाऊ तो बकरा चढाऊंगा। तूफान जब बद हुआ, तो उसे बकरे का मोह हुआ और उसने कहा कि अगर बकरा नही चढा सका तो मुर्गी अवश्य चढाऊंगा। अन्त मे जब वह राजी-खुशी पार पहुच गया, तो मुर्गी के लिए भी उसका मन अचकचाने लगा और अपने वादे को पूरा करने के लिए कपडो मे से एक चीलर निकाल कर मार डाला और बोला—जान के बदले मे जान मैने दी।)

पार कहे सो वार है, वार कहें सो पार।
पकड़ किनारा बैठ रह, यही पार, यही वार।

नदी के इस किनारे के लोग उस किनारे को पार और अपने किनारे को वार कहते हैं। इसी तरह उस किनारे के लोग अपने किनारे को वार और इस किनारे को पार कहते हैं। तू इस पार या उस पार के झगडे मे मत पड। कोई एक किनारा पकड़कर बैठ रह। इसी मे तेरी भलाई है।

पार गये, और हो आये

शेखचिल्ली की गप।

पारवाले कहें बारवाले अच्छे, बारवाले कहें पार-वाले अच्छे

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी अपेक्षा दूसरों को सुखी और अपने को दुखी समझा करता है। (उसी पर कहा गया है।)

पारसनाथ से चक्की भली, जो आटा देवे पीस।
कूढ़ नर से मुर्गी भली, जो अंडे देवे बीस।

स्पष्ट।

पाल पाल, तेरे जी का होगा काल

जिन्हें तू पाल-पोसकर बडा कर रहा है वही तेरे शत्रु बन जाएंगे।

पासंग का चोर तीन जगह डंडाय, झुकता तोले, रूंगन दे, पासंग दिखाये, (व्य०)

झूठे बांट रखनेवाला दूकानदार तीन जगह से नुकसान उठाता है। उसे ज्यादा तोलना पडता है, रूंगन देना पडता है, और अपनी तराजू दिखानी पडती है कि वह ठीक है या नही।

(तराजू की डंडी को बराबर करने के लिए उठे हुए पलडे पर रखा हुआ बोझ पासंग कहलाता है।

पासंग होना—(मु०), तराजू की डंडी बराबर न होना। कहावत का अभिप्राय यह है कि जो दूकानदार तराजू मे पासंग रखता है, उसे पकडे जाने के भय से कभी-कभी ज्यादा तोलना पडता है।)

पास का कुत्ता, न दूर का भाई

दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा; क्योकि वह काम आता है।

पास कौड़ी, न बाजार लेखा

(१) ऐसा व्यक्ति, जिसे किसी को कुछ देना-लेना न हो।

(२) बेफिक्र आदमी।

पाहन में कौ मारबो, चोखा तीर नसाय, (पू०)

पत्थर पर निशाना लगाने से एक अच्छा तीर खराब जाता है।

पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय

स्त्रियों का विश्वास है कि जो सबसे अन्त की बनी रोटी खाता है, उसकी बुद्धि कम हो जाती है। इसलिए वे बच्चो को पिछली रोटी नही देती, जानवरों को खिला देती हैं।

पिटारी में बन्द कर रखने के लायक हैं

ऐसे अजीब हैं, या ऐसे मोटू है। मजाक में ही कहते हैं।

पिया की कमाई मोहे नाहिं लहना,
मो पै बाजूबंद नहीं और सब गहना। (स्त्रि०)

अनुचित असंतोष।

पिया जिसे चाहे, वही सुहागन

(१) सुहाग उसी का सार्थक है, जिसे पति चाहे।

(२) जिन पर मालिक की कृपादृष्टि होती है, वही बडप्पन पा जाता है।

पिसनहारी के पूत को चबेना ही लाभ

गरीब को जो मिल जाए, वही बहुत।

पी कारन पीरी भई, लोग कहें पिंड रोग।
छिप छिप लंघन मैं किये, पी मिलन के जोग।

विरहिणी का कहना।

पिंड रोग पाडु रोग, पीलिया।

पी के पातन सिर धरो, धरो चरन पर सीस।
बासा हो बैकुंठ में, फिर तो बिसवे बीस। (स्त्रि०)

स्पष्ट। स्त्री को उपदेश दिया गया है।

पातन=जूता। (फैलन ने यही अर्थ किया है।)

पीच पी, नेमत खाई

मांड पिया, बढिया-बढिया माल-मसाले मैने खाए। (किसी ऐसे व्यक्ति का कथन, जो किसी दूसरे के साथ रहते-रहते अथवा नौकरी करते-करते कष्टो से ऊब गया है। कहता है—बस, बहुत हो गई, रहने दो। मुझे अब तुम्हारा कुछ न चाहिए।)

नेमत=नियामत मिली हुई कोई उत्तम वस्तु।

पीछा पीछा ही है

वर्तमान से बढकर नहीं हो सकता।

पीठ पीछे कुछ भी हो

मेरे पीछे कुछ होता रहे।

पीठ पीछे डोम राजा

पीठ पीछे डोम भी अपने को राजा समझता है।

पीठ पीछे बादशाह को भी बुरा कहते हैं

स्पष्ट।

पीत करी थी नीच सैं, पल्ले लागी कीच ।
सीस काट आगे धरा, अन्त नीच का नीच ।
नीच से प्रेम करने पर बदनामी के सिवा और कुछ हाथ नही लगता।

पीत की रीत निराली है
स्पष्ट ।

पीत तो ऐसी कीजिये, जैसे रुई कपास ।
जीते-जी तो संग रहे, मुये पै होवे साथ ।
स्पष्ट।
(जीते-जी शरीर सूत के कपडो से ढका रहता है और मरन पर कफन मे लपेटा जाता है, जो सूत का ही होता है।)

पीत तो ऐसी कीजिये, ज्यो हिंदू को जोय ।
जीते-जी तो संग रहे, मरे पै सत्ती होय ।
स्पष्ट ।
किसी मुसलमान कवि का कहना है।

पीतम तू मत जानियो, भयो दूर कौ बास।
देह, गेह कितहू रहे, प्रान तिहारे पास।
किसी विरहिणी स्त्री का अपने प्रियतम के प्रति कहना कि यह मत समझो कि तुम मुझसे दूर हो। मेरा शरीर और घर कही भी रहे, पर मेरे प्राण तो तुम्हारे ही पास है।

पीतम तेरी पीत को, झुक-झुक करूं सलाम।
जब से तो सग नेहा करो, सुनो न सुख को नाम।
कोई स्त्री, जिसे अपने पति के पास सुख नही मिला, ताना मार कर कहती है।

पीतम बसे पहाड़ पर (और) हम जमना के तीर ।
अब का मिलना कठिन है (कि) पांव पड़ी जंजीर ।
स्पष्ट।

पीने को पानी नहीं, छिड़कने को गुलाब
झूठी शान।

पीपल काटे, पाल बिनासे, भगवां भेस सतावे।
काया गढ़ी में दया न व्यापे, जरा मूर से जावे।
जो पीपल का वृक्ष काटता है, घर नष्ट करता है। साधुओ को सताता है, मन मे दया नही रखता, ऐसे मनुष्य का सर्वनाश होता है। लोक-विश्वास।

पीपल पूजन मैं चली, निगम बोध के घाट।
पीपल पूजत पी मिले, एक पंथ दो काज।
एक काम मे दो काम सिद्ध हो जाना।

पी प्याला, मार भाला
मतलब यह कि सोच-विचार कुछ न करो, बस मारने मे जुट जाओ, या बस जाओ, अपना काम सिद्ध करो।
प्याले से अभिप्राय शराब के प्याले से है।

पीर आप ही दरमांदह शफाअत किसकी करेंगे
पीर साहब खुद ही बीमार पडे है, फिर इलाज किसका करेंगे? जिसकी सहायता चाहते है, वह स्वय ही विपत्ति मे पड़ा है।

पीर को न शहीद को, पहले नकटे देव को, (स्त्रि०)
जो वस्तु दूसरो के लिए तैयार की गई हो, उसे जब कोई बहुत अयोग्य व्यक्ति मागे, तब क० ।

पीर जी की सगाई मीर जी के यहां, (स्त्रि०)
जो जैसा है, उसका व्यवहार वैसे के साथ ही होना।

पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर
ब्राह्मणों पर व्यंग्य ।
(एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि लाओ बीरन ऐसा नर, पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर । बीरबल ने एक ब्राह्मण ले जाकर खडा कर दिया और कहा कि ये पडित जी चारो काम कर सकते है।)

पीर शव, बिआयोज (फ़ा०)
बूढे होने पर भी ज्ञान प्राप्त करते रहो।

पीरां न परंद, मुरीदा परांद, (फ़ा०)
पीरों के पंख नही होते, पख तो उनके चेले लगा दिया करते है। अर्थात सत-महात्माओ की कीर्ति उनके चेलो पर ही निर्भर करती है। वे बाहर जाकर उनका गुणगान कर उल्लू सीधा करते है।

पीसने वालियां पीस ले जायेंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जायेंगी, (स्त्रि०)
एक स्त्री ने दूसरी स्त्री की चक्की से कुछ पीसना चाहा। उसने इन्कार कर दिया। तब तीसरी ने उक्त वाक्य पहली स्त्री से कहा कि 'पीस क्यो नही लेने देती? इसमें तुम्हारा क्या नुकसान है? वह

तुम्हारी चक्की का डंडा तो उखाड़ नहीं ले जाएगी' यह बात तीसरी स्त्री की ओर से बहुत सहज में भी कही जा सकती है और इसलिए भी कि वह केवल उसे उपदेश दे रही है और स्वयं उससे चक्की मांगी जाए, तो वह देना पसंद नहीं करेगी। कहावत का सीधा अभिप्राय यह है कि अपनी कोई हानि किए बिना यदि दूसरे का कोई काम बनता हो, तो उसके लिए इन्कार नहीं करना चाहिए।

पीस मुई, पका मुई, आये लौठे खा गये, (स्त्रि०)
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लड़के से कहना कि मुझ से आकर कहता है—पीस मुई, पका मुई और आकर खा जाता है; काम-धंधा कुछ नहीं करता।

पीस लूं तो पीटूं, (स्त्रि०)
मां अपने ऊधमी लड़के से कहती है; मत समझो कि तुम बच जाओगे।

पुन्न की जड़ सदा हरी
पुण्यात्मा हमेशा फलता-फूलता है।

पुरख की माया, बिरछ की छाया, (स्त्रि०)
जब तक मनुष्य रहता है, तभी तक उसका नाम-धाम रहता है।

पुरख-सा पखेरू कोई नहीं
मनुष्य जैसा (विलक्षण) जीव कोई नहीं।

पुरख साठा सो पाठा, स्त्री बीसी सो खीसी
मनुष्य साठ वर्ष की उम्र तक भी जवान रहता है, पर स्त्री का यौवन बीस के बाद ढलने लगता है।

पुराना ठीकरा और कलई की भड़क
बूढ़ी औरत और जवानी का-सा बनाव-ठनाव।

पुरवा बहल, सूखल घाव फफंदल, (भोज०)
पुरवाई चलने से सूखा घाव हरा हो जाता है। (लो० वि०)
(पूरब की हवा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं मानी जाती।)

पुराने गुम्बद पर कलई करना
किसी पुरानी वस्तु को नई बनाने की वृथा चेष्टा।

पुराने चावलों में मजा होता है
बूढ़े-पुराने लोगों की बात बड़े काम की होती है।

पुराने ठीकरे पर नई कलई
दे०—पुराने गुम्बद पर...।

पुरानों को झिड़की, नयों को प्यार
ऐसा करना ठीक नहीं। बूढ़ों का सम्मान करना चाहिए।

पुल बांधल जाए, बहू कजरी खेले, (पू०, स्त्रि०)
पुल बंध रहा है। (सास वहां काम करने गई है।) और बहू कजरी खेल रही है। ऐसी बहू के लिए कहा गया है, जिसे घर के काम-धंधे की फ़िक्र नहीं। (कजरी श्रावण के महीने का एक त्योहार होता है।)

पूछते-पूछते तो दिल्ली चले जाते हैं
स्वयं अपनी सहज बुद्धि से काम लेकर बहुत-कुछ किया जा सकता है।

पूजले देवता, छोड़ले भूत, (पू०)
पूजो तो देवता, नहीं तो भूत।

पूत करे, भतार के आगे आवे
लड़के के दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त बाप को करना पड़ता है।

पूत की जात को सौ जोखों
लड़के को पचास व्याधियां लगी रहती हैं। (मतलब यह है कि लड़की की अपेक्षा लड़के को रोग-दोख अधिक सताते हैं।)

पूत कुपूत हो जाय तो हो, पर मां कुमाता नहीं होती, (स्त्रि०)
स्पष्ट।

पूत के पांव पालने में पहचाने जाते हैं
बचपन में ही पता लग जाता है कि लड़का कैसा बनेगा। जब किसी बात के आसार पहले से दीखने लगें।

पूत न भतार, पोछो हो टांय टांय, (स्त्रि०)
उसका न तो लड़का ही लगता है और न पति, फिर भी उसके जाने पर (अथवा उसके मरने पर) वह व्यर्थ ही चीख चिल्ला रही है। जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति, जिससे उसका किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है, झूठी सहानुभूति प्रकट करता है।

पूत फकीरनो का, चाल अहदियां की-सी
झूठी शान दिखाना।

अकबर के जमाने मे अहदी उन सरदारो को कहते थे, जिन्हे राज्य की ओर से वज़ीफा मिलता था और कोई विपत्ति पडने पर बुलाए जाते थे। ये लोग अपने को बड़ा मातबर समझा करते थे।

पूत भये सयाने, दुख भये बिराने, (स्त्रि०)
लडके जब कमाने योग्य हो जाते हैं, तो दुख दूर हो जाते है।

पूत मांगे गई, भतार लेती आई (स्त्रि०)
उन स्त्रियों पर व्यंग्य, जो लडका मांगने के लिए प्राय फकीरो के पास जाया करती है।
भतार=खसम, पति।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया केह कर खाऊं, (पू०, स्त्रि०)
लडका भी प्यारा, पति भी प्यारा, सौगध खाऊ, तो किसकी खाऊ। दो मे से कोई भी एक काम न कर पाना, अथवा दो मे से कोई एक चीज न छोड पाना। असमजस मे पडना।

पूत सपूत तो क्यों संचे, पूत कपूत तो क्यों संचे? (हिं०)
लडका होशियार होगा, तो धन संचय करने की क्या जरूरत है, वह आप ही पैदा कर लेगा और निकम्मा होगा, तो सब उडा देगा, इसलिए धन-सचय बेकार हे।

पूतों रात दुलंभनी, (स्त्रि०)
लडका मुश्किल से मिलता है।
दुलमनी दुर्लभ।

पूरब जाओ या पच्छम, वही करम के लच्छन
(१) कहीर हो, भाग्य पीछा नही छोडता। अथवा (२) अकर्मण्य व्यक्ति कही कुछ नही कर सकता, चाहे जहा जाए।

पूरा तोल चाहे महंगा बेच, (ध्यं०)
वजन में या नाप में कम नहीं देना चाहिए, दाम चाहे ज्यादा ले ले।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे
जो घर का अभाव दूर कर सके, वही सपूत कहलाता है।

पूरा पडना = (मु०) सामग्री न घटना, सपन्न होना।

पूरी लपसी घर में खाय, झूठी देवी से आस लगाय
लोग पूडी-लपसी स्वयं खाते हैं, और देवी से अपनी मनोकामनाओ के पूरा होने की झूठी आशा रखते है।

पूरी से पूरी पड़े तो सभी न पूरी खायें
कोई आदमी हमेशा पूरी खाकर नहीं रह सकता। हमेशा मौज-मजा नही किया जा सकता।

पूरे गुरु घंटाल है
बडे घुटे हुए है, बहुत चालाक है।

पूले तले गुज़रान करते है
किसी बहुत गरीब का कहना कि किसी प्रकार झोपडी मे गुज़र-बसर कर रहे है।
पूले तले फूस की छाया के नीचे।

पूले पूले आंच है
घास के हर पूले मे आग मौजूद है, अथवा हर पूले मे आग लग सकती हे। कष्ट सभी को होता है।
पूला घास की बधी हुई छोटी मुट्ठी।

पूस कोने घूस
पूस में आदमी सर्दी से बचने के लिए कोने मे जाकर बैठता है।

पेट कुई, मुंह सुई
पेट बडा, मुह छोटा। बहुत खानेवाले के लिए क०।

पेट के आगे 'ना' है
जब पेट भरा होता है, तभी 'ना' कहते है।

पेट के वास्ते परदेस जाते है
पेट के लिए घर छोडकर बाहर जाना पडता है।

पेट चले, मन बल्तों को
दस्त लग रहे हैं और दाल खाने का मन हो रहा है। तब कहते हैं जब कोई विपद्ग्रस्त आदमी ऐसा काम करने की इच्छा करे, जिससे उसकी विपत्ति और बढ़ जाए। (फ़ैलन ने बल्तो का अर्थ दाल किया है।)

पेट जो चाहे, सो करावे
पेट के लिए न जाने क्या-क्या करना पडता है।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है
स्वार्थी मनुष्य के लिए कहा०, जो दूसरों को खिलाना नहीं जानता।

पेट पिटारी, मुंह सुपारी
(१) जिस लड़के का पेट बड़ा हो, उसके लिए।
(२) बहुत खानेवाले के लिए भी कहा०।

पेट बिच्च पई रोटियां, तां सभी गल्लां मोटियां, (पं०)
पेट भरा होने पर सभी को बड़ी-बड़ी बातें सूझती हैं।

पेट बुरी बला है
पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है।

पेट भर और पीठ लाद
खाओ और मेहनत करो।
पेट भरा हो तभी मेहनत हो सकती है।

पेट भरे की बातें
जब कोई आदमी काम के प्रति उपेक्षा दिखाए और किसी काम को करने के लिए उचित से अधिक मजदूरी मांगे। तात्पर्य यह है कि आदमी का जब पेट भरा होता है, तो वह काम नहीं करना चाहता, और सौ तरह की बातें बनाता है।

पेट भरे के खोटे चाले
(१) पेट भरा होने पर बदमाशी सूझती है।
(२) बड़े आदमियों का पैसा प्रायः बुरे कामों में खर्च होता है।

पेट भरे के गुन
(१) किसी आदमी को जब किसी तरह खुश ही न किया जा सके, तब कहा०।
(२) प्रायः उस समय लड़कों से कहते हैं, जब खाना खा लेने के बाद वे काम में हीला-हवाला करते हैं।

पेट भरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये
नीच का पेट भरा हो तो उससे, और शरीफ़ भूखा हो, तो उससे डरना चाहिए। क्योंकि नीच आदमी धनवान बनकर दुष्टता कर सकता है और इसी तरह भला आदमी ग़रीब बन जाने पर कष्टप्रद सिद्ध हो सकता है।

पेट भी खाली, गोद भी खाली, (स्त्रि०)
(१) न खाने को है, न बाल-बच्चा ही है।
(२) न बच्चा पेट में है, न गोद में है।

पेट में आंत, न मुंह में दांत
बूढ़े आदमी का कहना कि पेट तो भरना ही पड़ता है और खा नहीं पाते।

पेट में घुसे तो भेद मिले
किसी के मन की बात जानना बहुत मुश्किल है, अथवा किसी के मन की बात उसके घनिष्ठ संपर्क में आने से ही जानी जा सकती है।

पेट में चूहे कलाबाजियां खा रहे हैं
बहुत भूख लगी है।

पेट भेंट, कार समेट
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसे वेतन तो थोड़ा ही मिलता है, पर काम बहुत करना पड़ रहा है। कह रहा है कि यह खूब रहे, जो मुझसे चाहते हैं कि अपना पेट अलग कर दूं और काम करता रहूं।

पेट में पड़ा चारा, कूदने लगा बिचारा, (स्त्रि०)
खाने को मिल जाने पर आदमी को उछल-कूद सूझती है।

पेट में पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि०)
गर्भ रहते ही निश्चय कर लिया कि लड़का होगा। काम होने के पहले ही उसका गुंताड़ा लगाना।

पेट में पांव हैं
खाना मिलने पर ही आदमी काम कर सकता है।

पेट सब रखते हैं
खाने के लिए सबको चाहिए।

पेट से पांव काढ़े हैं
ऐसा व्यक्ति, जो देखने में सीधासादा पर वास्तव में धृष्ट हो।

पेटहा चाकर, घसहा घोड़; खाय बहुत काम करे थोड़, (पू०)
बड़े पेट का नौकर और मोटा घोड़ा, खाता तो बहुत, पर काम कम करता है।

पेट है या कुठार ?
बहुत खानेवाले के लिए क०।
कुठार=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।

पेट है या बेईमान की क़ब्र
बड़े पेटवाले के लिए क०।

पेटू मरे पेट को, नामी मरे नाम को
पेटू केवल खाने की चिन्ता करता है और महत्वाकांक्षी यश की।

पेड़ बड़े यों ही दिखाई देता है
यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी वैसा ही करते, जैसा मैं करता हूं।
पेड़ बोये बबूल के तो आम कहां से खाय ?
बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।
पेश-ए-तबीब मराओ, पेश-ए-कार आजमूदा बिराओ, (फ़ा०)
वैद्य के पास मत जाओ, अनुभवी के पास जाओ। ज्ञान से अनुभव बड़ा होता है।
पेशा हबीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह, (मु०)
ईश्वर काम करनेवालों से प्रसन्न और न करनेवालों से अप्रसन्न रहता है।
पैदल और सवार का क्या साथ
स्पष्ट।
पैदा हुआ नापैद के वास्ते
जन्म होता है मरने के लिए।
पैसा कभी नहीं टिकता
भाग्य एक-सा नही रहता।
लक्ष्मी स्थिर नही रहती।
पैसा गांठ का, जोरू साथ की
वक़्त पर यही काम आते है।
पैसा न कौड़ी, बाजार में दौड़ी
व्यर्थ की उछल-कूद। साधन हैं नहीं, फिर भी काम करने की हविस।
पैसा न कौड़ी, बांकीपुर की सैर, (स्त्रि०)
छैल-चिकनियों के लिए क०।
पैसा है नही, फिर भी शौक करना चाहते हैं।
पैसा नहीं पास, तो कैसे सूंघें बास
जब पैसा ही नही, तो इत्र कहा से लगाएं ?
पैसा नहीं हाथ, चले नवाब के साथ
बड़ों की नक़ल करना।
पैसा पास का, घोड़ी रान की
वक्त पड़े पर काम आते हैं।
(रान की घोड़ी से मतलब है ऐसी घोड़ी, जिस पर बराबर सवारी की जाती हो।)
रान=जांघ।

पैसे पै घर के बोटियां उड़ाऊं, तौ भी दर्द न आवे, (स्त्रि०)
मां-बाप का ऊधमी लड़के से क०।
पैसा=चक्की का पाट, सिल।
पोथी तो थोथी भई, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।
स्पष्ट।
पोस्ती की आंच ऊपर को नहीं जाने की
अफीम का धुआं ऊपर नही जाता। कमरे में ही भरा रहता है।
(मतलब यह कि दुखिया की आह व्यर्थ नहीं जाती।)
पौ-बारह हो गए
काम बन गया; जीत हो गई।
(चौपड के खेल में पौ-बारह अर्थात एक और बारह का पासा बहुत अच्छा माना जाता है।)
प्यासा कुएं के पास आता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता
जिसकी गरज होती है, वही जाता है।
प्रातःकाल करो असनाना, रोग-दोष तुमको नहिं आना
स्पष्ट।
प्रीत करें से बावरे, करके तोड़ें छैल।
गल में रस्सा डाल के, ओर निबाहवें बैल।
जो प्रेम करे, वह पागल है; कर के तोड़े, वह गंभीर पुरुष नही; गले मे जब रस्सी पड़ जाती है, तो बैल भी अंत तक अपने कर्तव्य का पालन करता है।
प्रीत जो कीजे ईख से, जामें रस की खान।
गांठ-गांठ में रस नहीं, यही प्रीत की हान।
प्रेम तो ईख से करना चाहिए, जिसमें रस ही रस भरा होता है। बस कमी इतनी है कि उसकी गांठों मे रस नही होता।
प्रीत डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय।
नेह नगर की रीत है, तन-मन दोनों खोय।
स्पष्ट।
प्रीत न जाने जात कुजात।
नींद न जाने टूटी खाट।
भूख न जाने बासी भात।
प्यास न जाने धोबी घाट।

प्रीत जात-कुजात नही देखती, नींद टूटी खाट नही देखती, भूख बासी भात नही देखती और प्यास भी अच्छा-बुरा पानी नही देखती।
(सं०—क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धिः
तृष्णातुराणां न च पात्र शुद्धिः।
कामातुराणां न भयं न लज्जा,
निद्रातुराणां न च भूमिशय्या।)

प्रीत न टूटे अनमिले,
उत्तम मन की लाग।
सौ जुग पानी में रहे,
चकमक तजे न आग।

सच्ची प्रीति कभी छूटती नही।

प्रीतम, हर से नेह कर, जैसे खेत किसान।
घाटा दे उर डंड भरे, फेर खेत से ध्यान।

ईश्वर से उसी तरह प्रेम करना चाहिए, जैसे किसान अपने खेत मे करता है। हानि उठाता है, लगान भी देता है, फिर भी अपने खेत को नही छोडता।

प्रीतम प्रीतम सब कहें,
प्रीतम जाने नहिं कोय।
एक बार जो प्रीतम मिलें,
सदा अनंदी होय।

स्पष्ट।

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखी री आय।
पी ढूंढ़न को मै गई, आई आप हिराय।

ऐ सखी! मेरी प्रेम कहानी सुन। मै प्रियतम को ढूंढ़ने गई थी, किन्तु अपने-आपको खोकर आ गई।

प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दच्छना देइ।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का लेइ।

प्रेम तो वही कर सकता है, जो सिर काट कर दे सके। वह क्या प्रेम करेगा, जिसे अपने प्राणों का मोह हो।

प्रेम पीत की रीत में, यह अनरीत सुहाय।
बरसें आंखें, सूखे हिया, आग लगे जिय मांह।

प्रेम की रीति मे सब से बड़ी उल्टी बात यह है कि आंखें तो बरसती हैं (आंसू निकलते है), हृदय सूखता है और छाती (बिरह से) जलती है।

फ़कत तावीज़ से ही काम नहीं निकलता, कुछ कमर में भी बूता चाहिए

कोई आदमी फकीर से लड़का मांगने गया। उसने मंत्र पढ़ कर तावीज़ दिया, साथ ही उक्त बात कही।
(केवल दैव के भरोसे रहने से काम नही चलता, कुछ अपना पुरुषार्थ भी करना चाहिए।)

फ़कीर अपनी कमली में ही खुश है

जो है, उसी मे संतोष करता है।

फ़कीर, कर्ज़दार, लड़का, तीनों नहीं समझते

तीनों ही हठी होते है।

फ़कीर की ज़बान किसने कीली है

फकीर के मुंह को कोई बंद नही कर सकता।
कीलना—मेख जडना, कील ठोक कर बंद करना, मंत्र पढ़कर किसी चीज के प्रभाव को नष्ट करना।

फ़कीर की झोली में सब कुछ

फ़कीर सब कुछ दे सकता है।

फ़कीर की सूरत ही सवाल है

फकीर को मांगने की जरूरत नही पडती। देखने से ही मालूम हो जाता है कि वह कुछ चाहता है।

फ़कीर को कंबल ही दुशाला

थोड़े में ही संतोष करता है।

फ़कीर को जहां रात हो गई, वहीं सराय है

उसके रहने का कोई ठिकाना नहीं होता।

फ़कीर को तीन चीज़ चाहिए फ़ाका, कनात और रियाज़

स्पष्ट।
(फ़ारसी मे फ़कीर शब्द तीन अक्षरों से लिखा जाता है--फे, काफ और रे जो कि क्रम से फाका (व्रत), कनात (संतोष) और रियाज़ (अभ्यास) इन तीन शब्दों के प्रथमाक्षर हैं।)

फ़कीर रा ब मुज़ावला चे कार? (फ़ा०)

फ़कीर को लड़ने से क्या मतलब?

फ़कीरी शेर का बुरका है

फ़कीरों में बड़ी शक्ति होती है।
बुरका—(अ० बुर्कः) एक प्रकार का आच्छादन या

पहिनावा जिससे मुसलमान स्त्रिया सिर से पैर तक अपने को ढके रहती हैं। आवरण।

फजर फजर की 'नाह' कुछ नहीं

सुबह-सुबह कोई ग्राहक जब सौदा लेने से इन्कार कर देता है, तब दूकानदार कहा करता है।
(दूकान खुलते ही कोई ग्राहक सौदा लेने आए और यो ही वापिस चला जाए, तो दूकानदार इसे अपशकुन मानते है।)

फजर फजर 'न हां' मत करो

दे० ऊ०।

फ़जल करे तां छुट्टियां, अदल करे तां लुट्टियां, (पं०)

दया करने से तो मै छूट सकता हू, पर न्याय से तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा।
(अपराधी दोष को स्वीकार करता हुआ क्षमा याचना के रूप मे कहता हे।)

फटाहा तिलक और मधुरी बानी,
दग़ाबाज की यही निशानी

पाखडियो के लिए क०।
तिलक साधु लोग ही लगाया करते है।
फटाहा चौडा।

फटे को न सिये और रूठे को न मनाए, तो क्यों कर गुज़ारा होय ? (स्त्रि०)

दे०—रूठे को मनाइए नही ।

फटे न फूटे, जिउ जान न छूटे

किसी चीज से जी ऊब जाए, तब क०।

फटे मे पांव, दफ़्तर में नांव

झगडे मे पडने ही से अदालत मे नाम लिखा जाता है। (गवाही के वास्ते।)

फ़तह और शिकस्त खुदा के हाथ है

हार-जीत ईश्वर के अधीन है।

फ़तह तो खुदा के हाथ है, पर मार मार तो किये जाओ

होगा वही, जो ईश्वर को करना है, पर अपना उद्योग तो किए जाओ।

फ़तह दाद इलाही है

जीत तो ईश्वर की देन है।

फ़रज़ंद वह जो पंद माने, और बाप का कहना फ़र्ज़ जाने

लड़का तो वही, जो उपदेश माने और बाप के कहने पर चले।

फ़रज़ंद वही, जो खलफ़ हो

आज्ञाकारी लड़का ही लडका है।

फर न फरी, बगीचा के नांव, (पू०)

फल न फली नाम बगीचा।
कोरा दिखावा।

फ़रिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी, (पू०, स्त्रि०)

झूठी शेखी बघारनेवाला।

फरिश्तों के भी पर जलते हैं

ऐसी जगह जहा (काम करने या पहुचने मे) बडे-बडे भी घबराते है।

फ़रिश्तों को भी खबर नहीं

बहुत ही गुप्त बात।

फ़रीद शकरगंज

मरतुल्ले टट्टू पर जब कोई बूढा आदमी बैठा जा रहा हो, तो लडके उसे चिढाने के लिए कहा करते है।
(फरीद शकरगज के लिए दे० नीचे।)

फरीद शकरगंज, न रहे दुख न रहे रंज

फरीद शकरगज करे कि तुम्हे कोई दुख और शोक न हो।
फरीद शकरगज मुसलमानो के कोई औलिया हो गए है।

फर्ज़ से अदा हो गये

अपना कर्तव्य-पालन कर चुके।
(लडके-लडकियो का विवाह कर चुकने के बाद प्राय मा-बाप कहा करते है।)

फल खाना आसान नहीं

फल मुश्किल से खाने को मिलते है। पहले पेड लगाना पडता है, वह बढता है, तब उसमे फल आते हैं।
बिना परिश्रम के कोई काम नही होता।

फलसा टूटा, गांव लूटा

फाटक टूटने पर गाव आसानी से लूटा जा सकता है।

फलाने की माँ ने खसम किया, 'बहुत बुरा किया'; 'कर के छोड़ दिया' और भी बुरा किया

(१) अव्वल तो कोई काम करना नहीं चाहिए, और यदि करे; तो उसका परिणाम देखे बिना अधूरा छोड़ना नहीं चाहिए। जो कर लिया सो कर लिया। (२) एक भूल सुधारने के लिए दूसरी भूल कर बैठना।

फलाने की=अमुक की।

फ़ाकाकशी की नौबत पहुंची

माली हालत बहुत खराब हो गई।

फ़ाकामस्ती

जो मिले वही खाकर मस्त रहना।

फाटक टूटा, गढ़ लूटा

फाटक टूटने से किला फ़तह हो सकता है। मोरचा मारा और काम बना।

**फाटे से जुड़ते नहीं, कोटन करो उपाय।
मन, मोती और दूध रस, इनका यही सुभाव।**

एक बार फटने पर फिर नहीं जुड़ते, चाहे जितना उपाय करो; मन, मोती और दूध का यही स्वभाव है।

फटना=दरार पड़ना।

मन फटना=विरक्ति हो जाना, संबंध रखने को जी न चाहना।

दूध फटना=उसका इस तरह बिगड जाना जिससे पानी और सार-भाग अलग-अलग हो जाएं।

फ़ातिहा न दरूद, खा गये मरदूद!

निकम्मे कहीं के, बिना फ़ातिहा पढ़े ही खा गए? फालतू आदमी के लिए क०।

फ़ातिहा=प्रार्थना। भोजन के पहले मुसलमानों में ईश्वर की प्रार्थना करने का नियम है।

फ़ातिहा न दरूद, खाने को मौजूद

स्पष्ट। दे० ऊ०।

फ़ारखती लिखवाना

कर्ज से छुटकारा पाने के लिए कागज लिखवाने को फ़ारखती लिखवाना कहते हैं।

'जो हमने दिया था, सो सब मिल गया; अब हमारी जान छोड़ो'—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहावत।

(इस पर एक कहानी है—किसी कर्जदार ने अपने महाजन को कर्जा चुकाने के लिए अपने घर बुलाया जब वह काग़ज़-पत्र लेकर अपना हिसाब चुकाने आया, तब कर्जदार ने अपने दरवाज़े पर बाजा बजाने का हुक्म दिया। बाजा जब जोर से बजने लगा, तब कर्जदार ने महाजन को पीटना शुरू कर दिया और तब छोड़ा जब उससे फ़ारखती लिखवा ली। बाजों के कारण महाजन का चिल्लाना कोई नहीं सुन सका।)

फ़ारसी रा टंग तोड़म, ताकि ऊ लंगड़ी शवद

फ़ारसी की टांग तोड़ दूंगा, जिससे कि वह लंगड़ी हो जाए।

(कम पढ़े-लिखे फ़ारसीदां के लिए व्यंग्य में क०।)

फ़ाल की कौड़ियां मुल्ला को हलाल

हक़ का पैसा सब को पचता है।

(पांसा या कौड़ियां फेंककर शुभ-अशुभ बताने की क्रिया को फ़ाल कहते हैं।)

फ़ाल ज़बान या फ़ाल कुरान

शुभ-अशुभ या तो (फ़कीर की) ज़बान से या कुरान से जाना जा सकता है, कोई और उपाय नहीं।

फालूदा खाते दांत टूटें तो बला से

फालूदा खाने से दांत तभी टूटेगा, जब वह पहले से ही बिल्कुल सड़ गया हो।

(ऐसी विपत्ति के लिए खेद करना वृथा है, जिससे बचना मुश्किल रहा हो।

फालूदा=गेहूं के सत की बनी एक प्रकार की वस्तु।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार, (स्त्री०)

झूठी शेखी बघारना।

फावड़े का नाम गुलसफा

जब किसी आदमी के पीछे बहुत दिनों तक घूमना और खुशामद करना व्यर्थ सिद्ध हो और कोई लाभ की आशा न हो, तब क०।

(कथा है कि कोई आदमी एक फ़कीर की प्रशंसा सुनकर उसका चेला बन गया। किन्तु बारह वर्ष

तक उसके साथ रहने पर भी उसे कोई बात सीखने को नहीं मिली। इस बीच उसने एक दिन फावड़े के लिए दूसरा शब्द पूछा। इस पर गुरु ने ऊपर लिखा जवाब दिया। वास्तव में गुलसफ्फा का कुछ भी अर्थ नहीं होता।)

फ़िक्र और ज़िक्र दोनों चाहिए

फ़कीरों को ध्यान और आराधना दोनों ही करनी चाहिए।

फ़िक्र करे क्या होता है, होना था सो हो गया

बीती बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

फ़िक्र बुरा फ़ाका भला, फ़िकर फ़कीरा खाये

चिन्ता बुरी चीज़ है, फ़कीरों को भी बीमार बना देती है, इससे फ़ाका अच्छा।

फिट वाका जीना, जो तके पराई आस

स्पष्ट।

फिरनी फालूदा एक भाव नहीं होता

अच्छी-बुरी सब चीज़ एक भाव नहीं मिलती।

(फिरनी चावल और दूध से बनती है और फालूदा गेहूं तथा दूध से, जो फिरनी से श्रेष्ठ मानी जाती है।)

फिर वे घोड़े यहीं से

किसी को डाट बताकर भगाना।

फिर भी मोची के मोची रहे

जैसे थे वैसे ही रहे, कोई उन्नति नहीं कर सके।

फिर मुड़ली बेल तले, (पू०)

फिर जोखिम में पड़े।

(बेल तले सिर मुड़वाने से सिर फूटने का डर है, क्योंकि बेल का फल बहुत सख्त होता है।)

फूंक-फूंक के कदम रखते हैं

होशियारी से चलते हैं।

फूंक मशाल, उठा चौपाला

मशाल जलाओ और उठाओ पालकी। अर्थात जल्दी करो।

फूंके के न फांके के, टांग उठा के तापे के, (पू०, स्त्री०)

आग को न फूंकना न फांकना, केवल पैर उठाकर तापना।

(स्वार्थी और आलसी आदमी को क०।)

फूई-फूई कर के तालाब भरता है

थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा होने से ही बहुत हो जाता है। फूई-फूई=बूंद-बूंद।

फूटी आंख का तारा

विधवा का इकलौता लड़का।

फूटी देगची, कलई की भड़क

दिखावटी चीज़।

फूटी सही, आंजी न सही

आंख जाती रही, वह मंजूर हुआ; मगर अंजन की जलन सहना मंजूर नहीं हुआ।

(ऐसे कंजूस के लिए क०, जो अपनी किसी कीमती चीज़ की रक्षा के लिए थोड़ा भी खर्च न करना चाहे।)

फूफी मिस लेना, भतीजे मिस देना

एक रिश्ते से लेना, दूसरे से देना। व्यवहार चुका देना।

फूल आये हैं तो फल भी लगेंगे, (स्त्रि०)

यहां फूल से मतलब स्त्रियों के ऋतुधर्म से है और फल से मतलब बच्चों से। अभिप्राय यह कि जब स्त्री ऋतुमती होने लगी है, तो उसके बच्चा भी होगा।

फूल की डाल नीचे को झुके

भला आदमी सदैव विनम्र होता है।

फूल की बैरन धूप, घी का बैरी कूप

फूल धूप में सूख जाता है और घी कुप्पे में रखा-रखा खराब हो जाता है।

फूल झड़े तो फल लगे

(१) फूल गिरता है, तो फल लगता है।

(२) स्त्री ऋतुमती होगी, तो बाल-बच्चा भी होगा।

फूल टहनी में ही अच्छा लगता है

हर चीज़ अपने स्थान पर ही शोभा देती है।

फूल-फूल कर के चंगेर भरती है

थोड़ा-थोड़ा कर के बहुत हो जाता है।

फूल नहीं, पंखुड़ी ही सही

(१) बहुत नहीं, तो थोड़ा ही सही।

(२) जो मिला, वही बहुत।

फूल सूंघ कर रहते हो
बहुत थोड़ा खानेवाले से क०।

फूला बदन में नहीं समाता
बहुत प्रसन्न है।

फूलो-फूलो गौने को, ठसक निकल गई रोने को, (स्त्रि०)
विवाह के बाद स्त्रियों को ससुराल आने की बड़ी प्रसन्नता होती है, पर बाद में वहां जब कष्ट होते हैं, तो अपनी सब शान भूल जाती है।

फूले-फूले फिरत हैं, आज हमारो ब्याव।
तुलसी गाय बजाय के, देत काठ में पाव।
गृहस्थ-जीवन में फंसना जानबूझकर एक मुसीबत मोल लेना है।

फूहड़ करे सिंगार, मांग ईंटों से फोड़े, (स्त्रि०)
फूहड़ का सिंगार भी अजीब होता है। वह सेंदुर की जगह ईंट घिसकर माग भरती है। ईंट घिसने से खून निकल आता है।

फूहड़ का माल सराह-सराह खाइये
मूर्ख का माल खुशामद से खाया जाता है। उसकी प्रशंसा करते जाओ और उससे चाहे जो चीज़ झटक लो।

फूहड़ का माल हँस हँस खाइए
स्पष्ट।
दे० ऊ०।

फूहड़ के घर उगी चमेली, गोबर मांड़ उसी पर गेरी, (स्त्रि०)
मूर्ख अच्छी चीज़ की कद्र करना नहीं जानता।

फूहड़ के घर खिड़की लगी, सब कुत्तों को चिंता पड़ी,
बंडा कुत्ता बांचे सौन, लगी तो है पर देगा कौन।
फूहड़ के घर में खिड़की लगी देखकर सब कुत्तों को चिंता हुई कि अब हम भीतर कैसे जा सकेंगे? इस पर एक दुमकटा कुत्ता बोला कि खिड़की लगी तो है, पर उसे बंद कौन करेगा? अर्थात हम लोग आसानी से भीतर जा सकेंगे। मूर्ख अपनी सुविधाओं से पूरा लाभ नहीं उठाता।
सौन बांचना=शकुन बांचना, सोच-विचार कर बात कहना।

फूहड़ चाले, नौ घर हाले, (स्त्रि०)
फूहड़ बाहर जाती है, तो नौ घर हिल जाते हैं। अर्थात बहुत गंवारू ढंग से चलती है। अथवा, वह जहां जाएगी वहां कुछ-न-कुछ झगड़ा-फ़साद खड़ा करेगी।

फूहड़ जोरुआ, साग में शोरुआ, (मु०, स्त्रि०)
फूहड़ के सब काम बेतुके होते हैं, वह हरी साग-भाजी का शोरुवा बनाती है।
(सागभाजी सूखी ही बनती है, रसेदार नहीं।)

फूहड़ सीने बैठे, तब सुई तोड़े, (स्त्रि०)
बेशऊर हमेशा भोंड़े ढंग से काम करता है, सीने बैठता है, तो सुई तोड़ देता है।

फेरों की गुनहगार है, (हिं०)
उसका अपराध यही है कि वह उसकी भांवर पड़ गई। हिन्दू घर की बाल-विधवा के लिए क०। बेचारी अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकती।

फ़ौज की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी
इनको संभालना मुश्किल होता है।

फ़ौज बे वकील, साहब बे फ़ील
बिना दूत की फ़ौज और बिना हाथी का सरदार, ये जंचते नहीं।

ब

बंगाला जादू का घर है
प्राचीन काल में बंगाल और कामरूप जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध रहे है, इसी से कहावत बनी।

बंगाली जो आदमी, तो प्रेत कहो किसको?
स्पष्ट।

बंगाले को बंगालिन जादू भरो
दे०—बंगाला जादू...।

बंद के जाये बंद में नहीं रहते, (स्त्रि०)
जो पराधीनता में पैदा हुआ हो, वह हमेशा पराधीन नहीं रहता। किसी के सदा दिन एक से नहीं रहते।

बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा
इतनी सेवा की और बदले में यह मामूली इनाम!

बंदगी बेचारगी

नौकरी विवश होकर करनी पडती है।

बंदर एक निसाचरी लाया कर अपनी अर्द्धंगी।

लालदास रघुनाथ दया से उत्पन्न हुए फिरंगी।

अंग्रेजो के लिए क०।

किंवदंती है कि भगवान राम ने हनुमानजी की सेवाओ के लिए उन्हे यह वरदान दिया था कि उनके वशज कलियुग मे भारत मे राज्य करेगे। उसी के आधार पर किसी ने उक्त तुकबदी गढी।)

बंदर का जखम (या घाव)

जो जल्दी नही भरता।

जो मनुष्य अपने घाव या फोडे को हमेशा खजाया या नोचा करता हे और उसे जल्दी सूखने नही देता, उसके लिए क०।

बंदर का हाल मुछंदर जाने

मुछदर बदरो के सरदार को कहते है। उनका हाल वही जान सकता है।

किसी का हाल उसका साथी ही अच्छी तरह जानता है।

बंदर की आशनाई क्या?

किसी मामूली आदमी या धूर्त से क्या मित्रता करना?

बंदर की आशनाई घर मे आग लगाई

धूर्त से मित्रता करने मे हानि उठानी पडती है।

बंदर की टोपी

ऐसा आदमी जो क्षण भर के लिए भी शान्त न बैठे।

बंदर की तुरत, फुरत, सुरत मशहूर है

बंदर बडा चचल, फुर्तीला और समझदार होता है।

बंदर की दोस्ती, जी का जिआन

मूर्ख या नटखट से मित्रता करना अपने लिए एक आफत मोल लेना है।

(यह कहावत प्राय. बच्चो के लिए ही प्रयुक्त होती है।)

बंदर की सेना

शैतान लड़को का झुड।

बंदर के गले में मोतियों की माला

अयोग्य या मूर्ख को ऐसी चीज, जो उसकी कद्र न जाने।

बंदर के हाथ आइना

व्यर्थ है, अव्वल तो वह कुरूप होता है, अपना चेहरा क्या देखेगा? फिर वह उसे फोड डालेगा।

बंदर के हाथ नारियल

वह क्या समझे कि यह क्या वस्तु है। उसे वह फेक देगा।

बंदर क्या जाने आदी का सवाद, (पू०)

मूर्ख किसी अच्छी वस्तु की कद्र नही कर सकता।

आदी—अदरक।

बंदर नाचे, ऊंट जल मरे

बदर को नाचते देखकर ऊट ईर्ष्या से जलता है क्योकि वह स्वय नही नाच सकता।

(दूसरो की प्रसन्नता को न देख सकना।)

बंदर भभकी (या घुड़की)

कोरा डर दिखाना।

बंदा आजिज है, (मु०)

(१) मनुष्य एक दुर्बल प्राणी है। अथवा

(२) मै दुखी हू।

आजिज (१) दीन, विनम्र। (२) तग, परेशान।

बंदा जोड़े पली पली, रहमान उड़ावे कुप्पे

जब किसी का बहुत परिश्रम और कंजूसी से इकट्ठा किया गया धन एकदम नष्ट हो जाए, तब क०।

बंदा बशर है

आदमी आखिर आदमी ही तो है।

जब किसी से भूल होती है, तब क०।

बंदी जब शादी करती है, तब ऐसी ही करती है, (स्त्रि०)

किसी के शादी-ब्याह के असतोषजनक प्रबध पर चुटकी।

बंदे का चाहा कुछ नहीं होता, अल्लाह का चाहा सब कुछ होता है

ईश्वर की इच्छा ही सब कुछ है।

बंधी मुट्ठी लाख बराबर

(१) मुट्ठी बांध कर किसी को जो दान या इनाम दिया जाता है, उसके विषय मे इसका अदाज लगाना कि कितना क्या दिया गया, कठिन है।

लेनेवाला उसे चाहे जितना बढ़ा कर बता सकता है कि मुझे इतना इनाम मिला।

(२) साधारण आदमी की आर्थिक स्थिति का जब तक लोगों को असली पता नहीं चलता, तब तक लोग धनवान ही समझते रहते हैं। पर एक बार भेद खुल जाने पर वह बात नहीं रहती।

बंधी रहे, न टके बिकाय

(१) चीज रखी भले ही रहे, पर सस्ती नहीं देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। अथवा

(२) चीज अगर बहुत दिनों रखी रहे, तो बाद में उसे कोई टके में भी नहीं पूछता, यह अर्थ भी हो सकता है।

बकरा मुटाय, तब लकड़ी खाय

बकरा मोटा होता है, तब मार खाता है; क्योंकि वह लड़ाका हो जाता है।

लालची कर्मचारी के लिए क०।

बकरी करे घास से यारी तो चरने कहां जाय ?

कोई आदमी अगर मेहनताना मांगने में लिहाज़ करे या जो जिस काम को करता है, उसमें मुनाफ़ा न ले, तो उसका ख़र्च कैसे चले ?

बकरी का-सा मुंह चलता ही रहता है

दिन-रात खाया करता है।

बकरी के नसीबों छुरी है

बकरी के भाग्य में तो मरना ही बदा है। अच्छा काम कर के भी उसका फल न मिलना।

बकरी जान से गई, खानेवाले को मजा न आया

जब कोई दूसरे के लिए मर मिटे, पर वह उसका एहसान न माने, तब क०।

बकरी ने दूध दिया, मेंगनी भरा

जब कोई रो-झींककर एहसान करे, तब क०।

बकरी या सस्से की तीन ही टांगें

सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले और उसे सच साबित करने के लिए कटिबद्ध भी रहे, तब क०।

दे—०मुरगी की एक ही...।

बकरी से हल चलता तो बैल कौन रखता ?

जिसका जो काम है, वह उसी से निकलता है।

बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनावे

एक-न-एक दिन मारा ही जाएगा।

बख़्त उड़ गये, बुलंदी रह गई

अच्छे दिन निकल गए, केवल नाम रह गया।

बख़्त दें मारी तो कर घोड़े असवारी।

बख़्त न दें मारी तो कर खा चरवेदारी।

भाग्य से ही सब होता है।

बख़्त—वक्त; समय; भाग्य।

चरवेदारी=साईसी।

बख़्तावर का आटा गीला, कमबख़्त की दाल गीली

पर इसमें पहले की कोई हानि नहीं होती, दूसरे की मुसीबत आ जाती है।

बख़्तावर=भाग्यवान, धन-सम्पन्न।

बख़्तों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया

भाग्य के ऐसे बली कि पकाई तो खीर, बन गया दलिया। बदकिस्मत के लिए क०।

बख़्शी के धगड़

बख़्शी का यार।

व्यर्थ का रोब दिखानेवाले से अवज्ञापूर्वक कहना, जैसे 'लाट का साला'।

बख़्शो बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जियेगा

(कथा है कि एक बार एक बिल्ली ने किसी चहे को पकड़ लिया। बिल्ली से छूट कर चूहा बिल में घुस गया, पर उसकी पूंछ टूट कर बिल्ली के मुंह में रह गई। किंतु बिल्ली तो समूचे चूहे को खाने पर तुली हुई थी। इसलिए चूहे से बोली–'ख़ैर, अब तुम बाहर निकल आओ, मैं तुम्हारी पूंछ जोड़ दंगी।' इस पर चूहे ने उक्त वाक्य कहा कि 'बस, अब रहने दो, मैं बिना दुम के ही जिऊंगा।'

बगड़ में बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई

बुरा पड़ोस।

बगड़=घिरा हुआ मैदान; आंगन; ढोरों के खड़े होने की जगह।

बगल में ईमान दाब कर बात करते हैं

धोखेबाजी की बात करते हैं।

बगल में छुरी, मुंह में राम-राम, (हिं०)
धूर्त ।
बगल में तूती का पींजड़ा, 'नबी जी भेजो'
तोते को कोई पढ़ा रहा है कि हे भगवान, भेजो किसी का मुफ्त का माल!
धूर्त या लोभी।
बगल में मुंह डालो
अपनी तरफ़ देखो। जो बुराई तुम मुझ मे देख रहे हो, वह तुम मे भी है ।
बगल में लड़का, शहर में ढिंढोरा
चीज़ तो बगल मे रखी है, पर उसे इधर-उधर ढूढना।
बगल में सोंटा, नाम गरीबदास
कहने को सीधे-सादे, पर हैं तेज़-तर्रार ।
सोटा छड़ी ।
बगला भगत
(१) धर्म का ढोग करनेवाला।
(२) कपटी, दगाबाज़ ।
(स०—वक परमधार्मिक (रामायण) ।)
(बगला मछली पकडने के लिए तालाब या नदी के किनारे एक पाव उठा कर खडा रहता है, मानो तपस्या कर रहा है, पर ज्यो ही मछली सामने आई, उसे पकड लेता है । उसी से मुहा० बना ।)
बगला भी धोबी का भाई है
क्योकि वह भी पानी मे खडा रहता है।
बगला मारे पंख हाथ
किसी को नुकसान भी पहुचाया और उससे कुछ लाभ भी नही हुआ ।
(बगुले मे पर ही पर होते है, मास बहुत थोडा होता है।
बगली घूंसा
(१) छिपा हुआ दुश्मन ।
(२) धोखे की मार।
बगैर सीखे कुछ नहीं आता
सब काम सीखना पड़ता है।
बचनों का बांधा बड़ा है आसमान
वचन बड़ी चीज़ है। किसी को वचन दे कर तोड़ना नहीं चाहिए।
बच, बे कुम्मा, आंधी आई
आती विपत्ति से सावधान होने के लिए क० ।
बचे नर, हजार घर
एक अच्छे आदमी की रक्षा होने से हज़ार घरों की रक्षा होती है ।
बच्चे ते खिला दें दूध ते भात, बड़े हुए तो मार दे लात, (पं०)
बच्चे को दूध-भात खिला कर पालो, पर बड़ा होने पर वह लात मारता है। कृतघ्न लड़को के लिए क० ।
बछड़ा खूंटी ही के बल कूदता है
छोटा आदमी बडे का सहारा पाकर ही अकड़ दिखाता है
बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो।
आवाज़े खलक को नक्कारे खुदा समझो।
जिस बात को दुनिया ठीक कहे, उसे ही ठीक मानना चाहिए। दुनिया की आवाज़ ईश्वर की ही आवाज है।
नक्कारे खुदा= ईश्वर का डका।
बजाज की गठरी पर झींगुर राजा
क्योकि वह कपडो को खा डालता है। दूसरों की वस्तु पर घमड करना।
बजाज बदज़ात
क्योकि वे अक्सर ठगते हैं ।
बजा दे, खनिया ढोलकी, मियां खैर से आये
शायद कोई आदमी किसी कठिन काम को करने का बीडा लेकर गया था, पर वह उसे नही कर सका, और असफल हो कर लौट रहा है। उसी का मज़ाक उडाया जा रहा है।
खनिया - खना की स्त्री। गाने-बजानेवाली एक याचक जाति।
बजा नक्कारा कूच का उखड़न लागी मेख।
चलनेहारे चल बसे, खड़ा हुआ तू देख।
स्पष्ट।
मेख=खूटी।
बटिया आऊं, बटिया जाऊं; खेतक चराऊं, न खाली जाऊं, (स्त्रि०)
रास्ते से आती हूं, रास्ते से जाती हूं, खेत चराती हूं, खाली नहीं जाती।

दूसरे का सरासर नुकसान कर के अपनी सफ़ाई दे रही है कि मैं किसी का कुछ बिगाड़ती नही। सचमुच ईमानदार।

बटिया की राह, बेनिर्वाह

पगडंडी का रास्ता आदमी को कही-का-कही ले जाता है।

बटुर हाथ दुश्मनवें लागो, (भो०)

दुश्मन को छोड़ना नही चाहिए। जब भी मौका लगे, कड़ी मार मारे।

बटुर हाथ= हाथ बटोर कर मट्ठी बांध कर।

बड़ तले का भूत

ऐसा व्यक्ति, जिससे आसानी से पीछा न छुड़ाया जा सके।

(भूत-प्रेत श्मशान, नदियो के घाटो तथा बड़े वृक्षो पर रहते हुए माने जाते है। उनम बटवृक्ष का भूत बहुत विकट समझा जाता है। इसीलिए कहा गया है।)

बड़ रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के

बड़ा आदमी नाम के लिए रोता है और छोटा भूखो मरता है, इसलिए रोता है। रोने से किसी को छुटकारा नही।

बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया

सयाना आदमी काम से खुश होता है और बच्चा प्यार से।

हिया हृदय।

बड़ा निवाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये

बड़े आदमी बनकर रहो, पर बडी बात किसी से न कहो।

निवाला= कौर।

बड़ा बोल= अप्रिय या कठोर बात।

बड़ा बोल काज़ी का प्यादा

कड़ी बात कहनेवाला काज़ी का प्यादा है, क्योकि वही उद्दंडता से बोलता है।

बड़ा ही पांच है

बड़ा शातिर है।

बड़ी कमाई पर नोंन बिकवा

(१) बहुत कमाई की तो नमक बेचा। अथवा (२) बहुत कमाकर भी नमक बेचना। (नमक बेचना साधारण पंसारियों का काम समझा जाता है।)

बड़ी टेढ़ी खीर है

मामला बडा मुश्किल है।

(कथा है कि एक बार किसी मनुष्य ने एक जन्म के अंधे फ़कीर को खीर खिलानी चाही। अंधे तो शक्की मिज़ाज के होते ही है। इसलिए फ़कीर ने पूछा—'बाबा, यह खीर कैसी होती है?' जवाब मिला—सफेद रग की'। फ़कीर ने फिर पूछा—सफ़ेद रंग कैसा होता है? जवाब मिला—जैसे बगुला। फ़कीर ने पूछा—बगुला कैसा होता है? इस पर उस मनुष्य ने बकरे की गर्दन को बताने के लिए अपना हाथ टेढ़ा कर के कहा—देखो ऐसा होता है। फ़कीर ने उसके टेढे हाथ को जो टटोला तो बड़ा घबराया और बोला—नही बाबा, मैं ऐसी टेढ़ी खीर नही खाऊगा, यह तो मेरे गले मे ही फस जाएगी। इसी से उक्त मुहावरे का जन्म हुआ।)

बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर-सी खड़ी?

भावज का कहना ननद के बारे मे।

(बडी ननद हमेशा भावज पर रोब जमाती है, और उसे डाटने-डपटने से भी नही चूकती। इसीलिए भावज ऐसा क०।)

बड़ी नाकवाले, (हिं०)

बडी इज्ज़तवाले। व्यग्य में ही क०।

बड़ी फ़जर, चूल्हे पर नजर

सवेरा हुआ और खाने की फ़िक्र पड़ी।

बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर में नून डाले, (हिं०)

जब घर की किसी सयानी स्त्री से कोई भूल हो जाए या जब कोई अपने को बहुत चतुर समझे, तब उससे व्यंग्य में क०।

बड़ी बहू, बड़ा भाग, (हिं०)

बहू की उम्र जब वर से अधिक होती है, तब वरपक्ष के लोगों को तसल्ली देने के लिए क०।

बड़ी भाभी मां के थान का, (हिं०)
बड़ी भावज मां के बराबर होती है।

बड़ी भैंस पर महराई
बड़ी भैंस में अधिक मक्खन होता है।

बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है
(१) बलवान निर्बल को सताता है।
(२) एक जीव दूसरे पर आश्रित है।
मत्स्य न्याय।

बड़े अन्नपूरना बने हैं
बड़े दानी बने हैं। व्यंग्य में क०।

बड़े कड़ाही में तले जाते हैं
किसी ने किसी से कहा कि बड़े का अपमान नहीं करना चाहिए, तो उत्तर में उसने उक्त वाक्य कहा। यहां बड़ा शब्द के दो अर्थ हैं (१) उड़द की पीठी के बड़े, जो कड़ाही में तले जाते हैं;
(२) उम्र या प्रतिष्ठा में बड़ा।

बड़े की बड़ाई, न छोटे की छुटाई
ऐसे व्यक्ति को क०, जो बड़े-छोटों का उचित ध्यान नहीं रखता; न बड़ों का सम्मान करता है, और न छोटों से स्नेह।

बड़े घर पड़िये, पत्थर ढो-ढो मरिये
यदि ऐसे घर में ब्याह हो, जहां बड़ा परिवार हो; तो स्त्री को काम बहुत करना पड़ता है। इसीलिए क०।

बड़े चोर का हिस्सा नहीं
क्योंकि उसे जो लेना होता है, वह पहले ही ले लेता है।

बड़े तो थे ही, छोटे सुभान अल्ला
वाक्य का प्रयोग बुरे अर्थ में ही होता है। यह प्रकट करने के लिए कि एक तो धूर्त था ही, पर दूसरा उससे भी बढ़ कर धूर्त है। जब बाप से बेटा या बड़े भाई से छोटा भाई बढ़ कर हो, प्रायः तब क०।

बड़े न बूड़न देत हैं, जाकी पकड़ें बांह।
जैसे लोहा नाव में, तिरत फिरे जल मांह।
बड़े आदमी जिसे सहारा दे देते हैं, उसे वे फिर छोड़ते नहीं।

बड़े-बड़े बहे जायें, गदहा पूछे कितना पानी?
जब किसी काम को एक सामर्थ्यवान पुरुष भी नहीं कर सके, और उसे एक असमर्थ मनुष्य करने का साहस करे, तब क०।

बड़े-बड़े बह गये, बड़ई कहे कितना पानी?
दे० ऊ०।

बड़े बर्तन की खुर्चन भी बहुत है
आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने पर भी बड़े आदमी के घर में जो निकलता है, वही बहुत होता है।

बड़े बोल का सिर नीचा
अहंकारी नीचा देखता है।

बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्ला
दे०—बड़े तो थे ही...।

बड़े शहर का बड़ा ही थाव
(१) बड़े शहर की सब बातें बड़ी होती हैं। अथवा (२) बड़े शहर में बड़े ठग भी रहते हैं। व्यंग्य में क०।

बड़ों का बड़ा ही भाग, (स्त्रि०)
बड़ों का भाग्य भी बड़ा ही होता है।

बड़ों का बड़ा ही मुंह
बड़ों की मांग भी बड़ी ही होती है।

बड़ों की बड़ी बात
(१) बड़ों की बातें (या ख्याल) भी बड़े होते हैं।
(२) जब कोई बड़ा आदमी कोई ओछा काम कर बैठता है, तब व्यंग्य में क०।

बड़ों की बात बड़े पहचानें
बड़े आदमी ही बड़ों की बात समझ सकते हैं।

बड़ों के कहे का और आंवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है
इनकी अच्छाई बाद में प्रकट होती है, पहले तो ये कड़ुवे लगते हैं।

बड़ों से रक्खे आस, न जाये पास
बड़े आदमियों से आशा रखे, पर उनके पास न रहे।

बड़ो बिखौ बिखधर कौ, चलत सीस नवाय।
थोड़ो बिखौ बिच्छू को, चालत दुम अलगाय।
सर्प में अधिक विष होता है, पर वह सिर नवा कर

चलता है, बिच्छू में कम विष होता है, पर वह पूछ उठा कर चलता है। छोटा दंमी होता है।

बढ़ें तो अमीर, घटें तो फ़क़ीर, मरें तो पीर

मुसलमानो के संबंध में हिन्दू कहा करते हैं। माव यह कि वे जीवन की हर स्थिति से लाम उठाते है।

बत्तीस दांत की भाखा खाली नहीं जाती, (स्त्रि०)

(१) किसी मी व्यक्ति का कोसना (अथवा आशीर्वाद देना) व्यर्थ नही जाता।

(२) किसी की प्रार्थना मी व्यर्थ नही जाती।

बद अच्छा, बदनाम बुरा

इसलिए कि बदनाम आदमी कोई बुराई न मी करे, तो मी लोगो का ध्यान उसी की ओर जाता है।

बद घोड़े की मेख़

बदमाश घोडे का खूटा।

बहुत बदमाश आदमी।

बदन में दम नहीं, नाम ज़ोरावरखां

नाम तो बडा, पर काम कुछ नही।

बदन में नहीं लत्ता, पान खायं अलबत्ता

छैल चिकनिया के लिए क०, जिसके पल्ले कुछ नही होता।

बद बदी से न जावे, तो नेक नेकी से भी न जाये

(१) बुरा बुराई नही छोडता तो अच्छा मी भलमनसाहत नही छोडता।

अथवा (२) बुरा अगर बुराई न छोडे तो अच्छे को अपनी अच्छाई भी नही छोडनी चाहिए।

बदली की छांव क्या?

क्षणस्थायी होती है।

बदली की धूप, जब निकले तब तेज

बादलो के बाद की धूप हमेशा तेज होती है।

बदली में दिन न दीसे, फूहड़ बैठी पीसे

बदली के कारण दिन निकल आया या नही, इसका पता नही चलता, इसलिए फूहड दिन को रात जानकर ही चक्की पीस रही है।

बदाऊं के लाला

सिलबिल्ला आदमी।

बदायूंवालों पर व्यंग्य।

बधिया मरी तो मरी, आगरा तो देखा

नुकसान हुआ सो हुआ, पर कुछ नया अनुमव तो हुआ। व्यग्य मे ही क०।

(कथा है कि कोई बजारा माल बेचने आगरे गया। वहा उसका माल कुछ न बिका, साथ ही बैल मर गया, तब उसने उक्त वाक्य कहा।

बन आई कुत्ते की, जो पालकी बैठा जाय

नीच को सम्मान मिलने पर क०।

बन आये की फकीरी भी भली!

अगर करते बने तो, अथवा अगर सफलता मिल जाए तो, फकीरी का पेशा मी अच्छा।

बन आए की बात रे ऊधो

(१) सफलता बडी चीज़ है, ऊधो! अथवा

(२) सब भाग्य की बात है, ऊधो!

(ऊधो कृष्ण के सखा थे। पर यहा इस शब्द का प्रयोग साधारण नाम के रूप मे ही हुआ मानना चाहिए।)

बन के पात बनहिं के लड़िका, केलि करत बारी के लड़िका, (भो०)

जो जगलो मे रहते है, उनके लडके जंगली पत्तो और खडिको से ही खेला करते है, जगल मे और रक्खा ही क्या?

खडिका पतली लकडी।

बनज करेंगे बानिये और करेंगे रीस।
बनज करा था भाट ने, सौ के रह गये तीस।

(१) व्यापार तो बनिए ही कर सकते है।

(२) जिसका जो काम है, वही उसे अच्छी तरह कर सकता है।

बनज करे तो टोटा आवे, बैठ खाय धन छीजे।
कहे कबीर सुनो भई संतों, मांग खाय सो जीते।

व्यापार के झगडे मे पड़ने या बैठे-बैठे खाने और धन खर्च करने की अपेक्षा मांग कर खाना कही अधिक अच्छा।

छीजे=घटता है।

बनज में भाई-बंदी क्या?

व्यापार में मुलाहिज़ा नही करना चाहिए।

बन परतीन बिलारे, मुसा कहली 'जे' हमरी जोय', (पू०)

बिल्ली कही जगल की सैर को चली गई, (तब) चूहा उसे अपनी औरत बनाने लगा।

(१) बडो के बाहर रहने पर छोटो को मौज हो जाती है।

(२) पीठ पीछे बडो को गाली देना आसान होता है।

बन, बालक और भैस, उखारी, जेठ मास मे चार दुखारी, (कु०)

गरमी मे ये चारो कष्ट पाते है, सूखते या विकल होते है।

बन– कपास का खेत।

उखारी= ऊख का खेत।

बन में उपजे सब कोई खाय, घर मे उपजे घर ही खाय

फूट को क०। फूट (ककडी की जाति का फल) खेत मे पैदा होता हे, तो उसे सब कोई खाते है, पर यदि फूट (लडाई-झगडा) घर मे हो, तो वह घर ही खा जाती है, अर्थात उससे घर का नाश हो जाता है।

प्र० पा०—खेत मे उपजे सब कोई खाय, घर मे उपजे घर बह जाय।

बनिया के सुखरज, रजवा क हान,
बैद के पूत ब्याध ना चीन्ह,
भटवा के चुप चुप, बेस्वा के मइल
कहें घाघ पांचों घर गइल।

बनिए का लडका यदि खर्चीला हो, राजा तेजहीन हो, बैद का लडका रोग न पहचानता हो, भाट चुप्पा हो और वेश्या मैली हो, तो घाघ कहते है कि ये पाचो अपने घर का नाश कर देते है।

बनियां जिसका यार, उसको दुश्मन क्या दरकार ?

बनियो पर ताना। विद्वेषमूलक कहावत।

बनियां देता ही नहीं, कहे 'जरा पूरा तौलियो

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसकी किसी माग के लिए उसे एकदम इन्कार कर दिया गया हो, पर वह उसकी परवा न करके अपनी उस माग से भी अधिक पाने की इच्छा प्रकट करता जाए।

बनियां भी अपना गुड़ छिपाकर खाता है

(१) अपने घर का भेद किसी को बताना नहीं चाहिए।

(२) जब कोई स्पष्ट रूप से कोई बुरा काम करे, तब भी क०।

बनियां मारे जान, ठग मारे अनजान

बनिया जान पहिचानवाले को ही ठगता है, ठग तो अनजान को ठगता है।

बनियां मीत, न बेस्वा सती

बनिया किसी का मित्र नही होता, और वेश्या चरित्रवान नही होती।

बनियां रीझे हुर्रे दे

उसके पास और रखा ही क्या ?

बनियो की कृपणता पर क०।

हुर्रे हर्र वृक्ष का फल, जो दवा मे काम आता है।

बनिये का उल्लू

कोई भी निकम्मी चीज जो बहुत यत्न से रखी जाए। निकम्मे मनुष्य के लिए भी क०।

(कथा है कि किसी मूर्ख बनिए ने बाज के धोखे मे एक उल्लू खरीद लिया था और उसे वह बाज कह कर सब को दिखाता फिरता था।)

बनिये का जी धनिये बराबर

बहुत छोटा होता है।

बनिये का बहकाया और जोगी का फिटकारा

बनिए के बहकावे और जोगी के शाप से बचना मुश्किल हे।

(बनिया किस तरह बहकाता है, इस पर एक कहानी है—किसी मनुष्य के पास एक अशर्फी थी, जिसे वह बेचना चाहता था। एक बनिए ने उसे सस्ते दामो मे खरीदना चाहा। उसने अशर्फी का दाम पाच रुपया लगा दिया। जब वह इतने दाम पर देने को राजी न हुआ, तब बनिए ने बढते-बढ़ते उसके दाम चौदह रुपए तक लगा दिए। उस मनुष्य को तब सदेह हुआ कि यह अवश्य अधिक दामो की चीज है, तभी तो इसने चौदह रुपए तक इसके दाम लगा दिए। यह सोच कर उसने बनिए से कहा कि मैं

इसे सराफ़ को दिखाए बगैर नहीं बेचूंगा। बनिए ने उसका यह रुख देख कर उसके प्रति आत्मीयता दिखाते हुए कहा—यह तीस रुपए का माल है। इससे कम मे इसे न बेचना। वह सारे बाजार में उसे लिये फिरा और सब से तीस रुपए दाम कहता, पर इतने में किसी ने उसे नही खरीदा। तब अन्त में निराश हो कर उसने उसी बनिए को चौदह रुपए मे वह अशर्फ़ी दे दी।)

बनिये का बेटा कुछ देख ही के गिरता है
बनिया हर काम मतलब से ही करता है।
(कथा है कि एक बनिए का लड़का सिर पर तेल का घड़ा लिये जा रहा था। रास्ते में एक जगह फिसलकर वह गिर पड़ा, साथ ही घड़ा भी गिर पड़ा। किसी ने उसके बाप को जब इस घटना की खबर दी, तो उत्तर में उसने कहा कि मेरा लड़का बेमतलब नही गिरा होगा, सड़क पर ज़रूर उसे कोई चीज पड़ी दिखाई दी होगी। बात ठीक थी। लड़के को एक अशर्फ़ी पड़ी मिली थी।)

बनिये का मुंह ग्राह और पेट मोम
बनिया पेट काट कर रुपया जमा करता है।
ग्राह मगर।

बनिये का सलाम बेगरज नहीं होता
बनिया बिना मतलब के किसी को 'राम राम' भी नही करता।

बनिये का साहु भड़भूंजा
बनिए पर व्यंग्य।

बनिये की उधापत और घोड़े की दौड़ बराबर
बनिए का (उधार का) हिसाब बहुत जल्दी बढ़ता है।

बनिये के पेशाब में बिच्छू पैदा होता है
बनिया बहुत ही चालाक होता है।
(यहां बिच्छू से मतलब धूर्त या चालाक से है।)

बनिये से सयाना सो दीवाना
बनिए से अधिक चतुर कोई नहीं होता।

बनी के सब यार हैं
अवसर के सब साथी हैं।

बनी के सौ साले, बिगड़ी का एक बहनोई भी नहीं
पास में अगर पैसा हो, तो सब कोई अपनी बहिन ब्याहने को तैयार होते हैं; पर गरीब की बहिन से कोई ब्याह नहीं करना चाहता।

बनी तो बनी, नहीं दाऊदखां पनी
अगर एक जगह काम करते नही बना, तो दूसरी जगह चला जाऊंगा; मुझे किसी बात की चिन्ता नही; ऐसा भाव प्रकट करने को क०।
दाऊद खां पनी=नाम विशेष।

बनी तो भाई, नहीं दुश्मनयाई
आपस में निभ सके तो भाई, नही तो दुश्मनी बनी बनाई।

बनी फिर बेसवा, खोले फिर केसवा, (स्त्रि०)
फिर तू वेश्या बन गई है. फिर तू बाल खोले फिर रही है। बहू को सास की ताड़ना।
(पुराने हिन्दू घरो मे बाल खोलकर फिरना अच्छा नही मानते।)

बनें सब ही सराहें, बिगड़े कहें कमबख्त
(काम में) सफलता मिलने पर सभी सराहना करते है, पर असफल होने पर मूर्ख और अभागा बनाते है।

बर के न मिले भूसा, बराती मांगें चूंड़ा, (पू०)
ऐसी मांग, जो पूरी न की जा सके।

बरधा एक, गांव दुई जोत, कइसे बटिया लागल पोत
बैल एक है और दो गांव में जोत है, किस तरह काम चलाया जाएगा। साधन की कमी।

बर मरे, पटवासी न टूटे
खसम भले ही मर जाए (अथवा भले ही मर गया हो) पर मांग पट्टी काढ़ना नही छूटता।
(मांग पट्टी सधवा स्त्रियां ही काढ़ती है, इसलिए बदचलन विधवा (अथवा बदचलन औरत) के लिए कहा० का प्रयोग होता है।)

बरमे का काम छिदना नहीं होता
बरमे से दूसरी चीज़ में छेद होता है, वह आप नहीं छिदता। ठग को कोई ठग नही सकता।

बरस भर में सभी सूम बराबर हो जाते हैं
सूम का किसी-न-किसी तरह नुकसान होता रहता

है और दाता को श्रेय होती है, इसीलिए क० ।

बरसात वर के साथ, (स्त्रि०)

वर्षा ऋतु तो पति के साथ ही अच्छी तरह कटती है।

बरसात में कड़ाही घर-घर

बरसात में त्योहार बहुत होते हैं, इसलिए घर-घर पकवान बनते हैं।

बरसा थोड़ी, भभरौटी बहुत

उछलकूद बहुत, पर काम थोडा।

भभरौटी=गरज-तरज (बादलो की) ।

बरसे असौज, हो नाज की मौज, (कृ०)

क्वार मे पानी बरसने से फ़सल बहुत अच्छी होती है।

बरसेगा, बरसावेगा, पैसे सेर लगावेगा, (कृ०)

बरसात में बच्चे कहा करते हैं।

बरसेगा मेह होंगे अनन्द; तुम साह के साह, हम नंग के नंग

पानी बरसने से अनाज खूब उपजेगा, सबको आराम होगा, किन्तु तुम साहूकार हो सो साहूकार रहोगे, और हम नगे-के-नगे ही रहेंगे। गरीब किसान का व्यवसायियो के प्रति कहना।

बरसे साढ़ तो बन जा ठाट, (कृ०)

आषाढ मे वर्षा हो, तो मौज हो जाती है।

(क्योकि ग्रीष्म से सभी आकुल बने हुए होते है।)

बरसे सावन, तो हों पांच के बावन, (कृ०)

सावन मे वर्षा होने से कृषि को बहुत लाभ होता है।

बरसो राम धड़ाके से, बुढ़िया मर गई फाके से

वर्षा में बच्चों की तुकबदी।

बरात का छैला, सावन का खैला

बरात मे नौजवान लडके वैसी ही खुशी मनाते हैं (या खुश नज़र आते है), जैसे सावन के महीने में अल्हड़ बछड़ा।

बरात की सोभा बाजा, अर्थी की सोभा स्यापा

बरात में बाजे शोभा देते हैं और मृतक के शोक में रोना।

अर्थी=जनाज़ा।

स्यापा=मरे हुए के शोक मे कुछ समय तक स्त्रियो के प्रति दिन इकट्ठे होकर रोने और शोक मनाने की प्रथा।

बरातियों को खाने की चाह, दुलहे को दुल्हिन की चाह

हर आदमी अपने मतलब से ही मतलब रखता है।

बराती किनारे हो जायेंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पड़ेगा

बाहरवाले तो झगडा करा कर अलग हो जाते हैं, पर सुलझना तो उन लोगो को ही पड़ता है, जिनमे आपस मे झगड़ा होता है।

बरेली जाने का काम करते हो

पागलों जैसा काम करते हो। बरेली मे बडा पागलखाना है। आगरा का भी प्रयोग इसी अर्थ मे होता है।

बरेली कपारेली

बरेली मे चादी बरसती है। जमीन इतनी उपजाऊ है।

बल जाय राज को, मोती लागें ब्याज को

ऐसे राज्य की बलिहारी, जिसमे ब्याज के लिए मोती खर्च करने पड़ें।

बल तो अपना बल, नहीं तो जाय जल

अपना बल ही काम आता है, दूसरे का नही।

बल, बे जुम्मा तेरी धज

बलिहारी रे जम्मा! तेरी धज की।

मै तेरी होशियारी (या सजधज) की बहुत-बहुत प्रशसा करता हू। व्यग्य मे ही क०।

बलवान का हल भूत जोतें

जबर्दस्त का सब काम मुफ्त मे ही हो जाता है। अथवा जबर्दस्त का काम लोग दौडकर करते हैं।

बसंत जाड़े का अंत

बसंत में जाड़ा खत्म हो जाता है।

बस कर मियाँ बस कर, देखा तेरा लश्कर, (स्त्रि०)

शेखीबाज से व्यग्य मे क०।

बस हो चुकी नमाज; मुसल्ला बढ़ाइए, (मु०)

काम हो चुका, अब आप तशरीफ़ ले जाइये; ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मुसल्ला=वह छोटा बिछावन, जिस पर बैठ कर नमाज़ पढ़ी जाती है।

बसाव शहर का, खेत नहर का

दोनों अपनी-अपनी जगह अच्छे होते हैं।

नहर का=नहर के किनारे का।

बहता पानी निर्मला, बंधा गंदीला होय।
साधू जन रमता भला, दाग न लागे कोय।
स्पष्ट।

बहते को बह जाने दे, मत बतलावे ठौर।
समझाये समझे नहीं, तो धक्का दे दे और।
जो समझाने से न मानें, उससे तो फिर बात नहीं करनी चाहिए।

बहते दरिया में जिसका जी चाहे हाथ धो ले
(१) अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए।
(२) किसी का कोई उपकार करते बने, तो करके यश का भागी बन जाना चाहिए।

बह मरें बैल, बैठे खायें तुरंग
बैल तो जुत-जुत कर मरते हैं और घोड़े आराम से बैठे खाते हैं। एक खट कर मरे और दूसरा मौज उड़ाए।

बहरा बहिश्ती, अंधा दोजखी
बहरा अपने कानों से पराई निंदा नहीं सुनता, इसलिए स्वर्ग जाता है। अंधा बेईमान होता है और दूसरे की बुराई सुनता है, इसलिए नरक में जाता है।

बहरा सुने धर्म की कथा
एक हास्यजनक बात।

बहरा सो गहरा
क्योंकि वह किसी की कोई बात न तो सुनता है, न जानता ही है।

बहरे आगे गावना, गूंगे आगे गल्ल।
अंधे आगे नाचना, तीनों अल बिलल्ल।
तीनों ही काम मूर्खतापूर्ण हैं, क्योंकि बहरा गीत नहीं सुन सकता, गूंगा बात का जवाब नहीं दे सकता और अंधा नाच नहीं देख सकता।
गल्ल= वार्तालाप।

कहे मेरा बीर प्यारा, काल कहे मेरा है यह चारा
स्पष्ट।
चारा= भोजन। कौर।

बहिन के घर भाई कुत्ता, सासरे जंवाई कुत्ता, कुत्ता पाले वह कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार, जो बाप रहे बेटी के बार
दे०—कुत्ता पाले वह कुत्ता...।
बार=घर।

बहुत अतातायी जीऊ का काल हा, (ग्रा०)
बहुत उपद्रवी जिंदगी के लिए एक विपत्ति है।

बहुत अतीत, मठ खराबा
किसी मठ में अगर बहुत से साधु हों, तो मठ में खराबी आ जाती है। थोड़े साधुओं से ही मठ पवित्र रह सकता है।

बहुत औलाद भी ग़ज़ब है
बहुत संतान भी एक विपत्ति है।

बहुत कथनी, थोड़ी करनी
कहना बहुत, करना थोड़ा।

बहुत गई, थोड़ी रह गई
बहुत उम्र बीत गई, थोड़ी बाकी है, इसे ईश्वर इज्ज़त से काट दे, यही भाव प्रकट करने को क०।

बहुत सोना दलिद्दर की निशानी
बहुत सोना (अर्थात आलस्य करना) दरिद्रता का लक्षण है।

बहुरिया के बड़ दुलार, हांड़ी बसन छुआ ही ना पावस, (स्त्रि०)
बहू पर प्यार तो बहुत, पर हांड़ी-बर्तन (वह) छूने ही न पाए। दिखावटी प्रेम।

बहू-बेटी सब रखते हैं
जब कोई किसी को मां-बहिन की गाली दे अथवा दूसरे की स्त्री को बुरी नजर से देखे, तब उसे भर्त्सना करते हुए क०।

बहू लाली, धन घर घाली
टिमाक से रहनेवाली बहू धन और घर दोनों का नाश करती है।

बहू शरम की, बेटी करम की
बहू तो शरमदार और बेटी करमैत (अथवा भाग्यशील) अच्छी होती है।

बांगा में सियार गइले, का ओढ़ अइले, का पहल अइले
कपास के खेत में अगर सियार जाए, तो वह वहां क्या तो ओढ़ेगा और क्या पहिनेगा?
(सियार के लिए कपास किस काम का?)

बांझ अच्छी, इकौंख बुरी, (स्त्रि०)
एक लड़केवाली से बांझ अच्छी; क्योंकि एक लडके के मरने का जो दुख होता है, बांझ उससे बची रहती है।

बांझ क्या जाने परसूत की पीड़ा
जिस पर बीतती है वह जानता है।
परसूत=प्रसूति। प्रसव।

बांझ बंजौटी, शैतान की लंगोटी, (स्त्रि०)
गाली। एक स्त्री दूसरी से लड़ते समय क०।

बांझ ब्यानी, सोंठ उड़ानी, (स्त्रि०)
(१) बांझ के अगर लडका हो तो उसकी इज्जत बहुत बढ जाती है। अथवा
(२) जब कोई बात का बतगड बनाए, तब भी क०।
बांझ का ब्याना एक गप्प ही हो सकती है। बच्चा होने पर प्रसूता को सोठ खिलाते हैं।
(भाव यह है कि बाझ के लडका हुआ, तो उसे सोठ पर सोठ खाने को मिलने लगी।)

बांटल भाई पड़ौसी बराबर
अलग रहनेवाला भाई पड़ोसी के समान है।

बांदी के आगे बांदी आई, लोगों ने जाना आंधी आई, (स्त्रि०)
नौकर के नीचे जो नौकर होता है, वह बहुत काम करता है, अथवा उससे बहुत काम लिया जाता है, इसीलिए क०।

बांदी के आगे बांदी, मेह गिने न आंधी, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

बांध खीसा, ले हींसा
किसी से व्यग्य में कहा जा रहा है 'ले अपना हिस्सा और रख ले खीसे में'। वास्तविकता यह है कि उसे कुछ मिलना नही है।

बांधे संकेला, फिरे अकेला
हथियारबंद को किसी का डर नहीं।

बांस की जड़ में घमोय जामे हुए, (ग्रा०)
अच्छे घर में कपूत पैदा हुआ।
घमोय पौधों की एक बीमारी होती है, जिससे वे बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं।

बांस के बांस मल्लाही की मल्लाही
नाव से पार होते समय जिन बांसों से नाव खेई जाती है, अक्सर उनको चोटें खानी पड़ती हैं। इसीसे कहा गया है कि बांस के धक्के भी खाएं और मजदूरी भी देनी पड़ी।
(१) पूरा खर्च कर के भी जब परेशान होना पड़े, तब क०।
(२) हर तरह से अपमानित होना।

बांस गुन बसाउर, चमार गुन अधाउर
जैसा बांस होगा, वैसे ही उसके बासन भी बनेंगे; चमार जैसा होशियार होगा, उतना ही अच्छा चमड़ा भी पकेगा।
अधाउर=अधौरी, पका हुआ चमड़ा।

बांस चढ़ी गुड़ खाय
नटनी के लिए क०। जो प्रयत्न करता है, उसे फल मिलता है।
(नटनी जब अपना खेल दिखाती है, तो उसके लिए लंबे बांस के सिरे पर गुड़ बांध दिया जाता है, जिस पर चढ़ कर वह उसे तोड़ लाती है।)

बांस डूबें, बौरी था मांगे
बास तो डूब जाते हैं और मूर्ख पानी की थाह लेना चाहता है।
दे०—ऊंट बहे जायें...।

बांस बढ़े झुक जाय, अरंड बढ़े टूट जाय
सज्जन पुरुष उच्च स्थान पर पहुंचकर विनम्र बनते हैं, छोटे इतराने लगते हैं।

बांह गहे की लाज
सहारा दे कर अन्त तक निबाहना चाहिए।

बांह छुड़ाए जात हो, निबल जान के मोहि।
हिरदे में से जाओगे तो मर्द बदूंगी तोहि।
स्पष्ट।
(कहा जाता है कि यह दोहा सूरदासजी ने उस समय कहा था, जब चोरों ने उन्हें कुएं में ढकेल दिया था और श्रीकृष्ण भगवान ने उन्हें बाहर निकाला था।)

बांह पकड़े की ओर निबाहना
दे०—बांह गहे की...।

बाकी का मारा गांव और चिलमों का मारा चूल्हा ये फिर ठहरते नहीं।
(किसी गांव पर अगर सरकारी लगान बकाया हो, तो सरकारी कर्मचारी वसूली में ज्यादती करते हैं, और लोगो को उससे नुकसान होता है। इसी तरह किसी चूल्हे से बार-बार चिलम के लिए आग ली जाए, तो वह चूल्हा बुझ जाता है।)

बाकी नाम अल्लाह
प्रयत्न करना चाहिए, उसके बाद तो ईश्वर का नाम।

बाग लागल ना, मंगता डेरा देल, (भो०)
बाग लगकर तैयार नही हुआ, भिक्षुको ने डेरा डाल दिया।
(भिक्षुक अक्सर बगीचो मे आकर ठहरते है।)

बाघ की मौसी बिलाई
बिल्ली बाघ से भी बढकर। अथवा बिल्ली भी बाघ जैसी।

बाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं
बहुत अमन-चैन है।

बाघ मार नदी में डारा, बिलाई देख डरानी
किसी स्त्री ने बाघ मारकर नदी मे फेंक दिया, पर बिल्ली देखकर डर गई।

बाघो के मुंह केहू धोवल है ? (भो०)
शेरो का मुह किसने धोया ?
जो बच्चे अपना मुह नही धोते, अथवा नही धुलवाते; प्रायः उनसे हँसी में क०।

बाजार उसका जो ले के दे, (व्य०)
(१) जो अपना देना चुका देता है, बाजार मे उसी को सब चीज मिल सकती है।
(२) बाजार मे उसी की साख रहती है, जो दूसरो का लेकर दे देता है।

बाजार का सत्तू बाप भी खाय, बेटा भी खाय
वेश्या के लिए क० कि उसके पास कोई भी जा सकता है।

बाजार की गाली किस की ? जो फिरके देखे उसकी?
कौन क्या कहता है, इसकी परवाह नही करनी चाहिए।

बाजार की मिठाई, जिसने चाही उसने खाई
दे०—बाजार का सत्तू ..।
ऐसी वस्तु जो सब के लिए सुलभ हो।

बाजार की मिठाई से निर्वाह नहीं होता
(१) वेश्याओं के लिए क०।
(२) साधारण अर्थ मे भी कह सकते हैं कि घर मे रोटी खाए बिना काम नही चलता।

बाजार के भाव
बाजार के दामो पर।

बाजार के भाव बेचना
बाजार मे जिस चीज के जो दाम हो, उन्ही दामो मे देना।

बाजारी आदमी का क्या इतबार ?
स्पष्ट।
बाजारी आदमी -चलता-फिरता आदमी, साधारण आदमी।

बाजारू चीज बोदी होती है
बाजार की घटिया चीज़े जल्दी खराब होती है।

बाटे घाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी वाचा फरी, (पू०)
कुतिया तो दैवयोग मे रास्ते मे या नदी किनारे मर गई। योगी ने कहा कि मेरा वचन सत्य हुआ। दैव-घटना के सबध मे जो लोग कहते है कि वह हमारे कहने से हुई, उन पर व्यग्य।

बाड़ ही जब खेत को खाय, तो रखवाली कौन करे ?
रक्षक ही जब भक्षक बन जाए, तो काम कैसे चले ? भ्रष्टाचारी कर्मचारी, विशेषकर पुलिस के लिए क०।
(यह फैलन की टिप्पणी है।)

बाड़ी में बारह आम, हट्टी में अठारह आम, (पू०)
बगीचे मे तो (किसी एक मूल्य पर) बारह आम मिलते है और बाजार मे अठारह। उल्टी बात।
(बगीचे मे आम सस्ते मिलने चाहिए।)

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपने कर्मा
पिता के धर्म से पुत्र समृद्धिशाली हो सकता है, पर खेती अपने ही प्रयास से सफल होती है।

बात इन्सान जब तलक कहता नहीं।
नेक औ बद उसका कहीं खुलता नहीं।
स्पष्ट।
बात कहिये जगभाती, रोटी खाइये मन भाती
बात वह कहे जो दूसरों को अच्छी लगे। भोजन वह करे, जो अपने को अच्छा लगे।
बात कही और पराई हुई
मुह से बात निकली और सबको मालूम हुई।
बात कहे की लाज
जो बात कहे, उसे पूरा करना चाहिए।
बात का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर संभलता नहीं
ये फिर हानि उठाकर रहते है।
बात का बतक्कड़ करना
तिल का ताड़ बना देना।
बात की बात, खुराफात की खुराफ़ात
बात ठीक भी है और हँसी की भी।
बात की बात खुराफ़ात की खुराफ़ात।
बकरी के सींगों को चर गये बेरी के पात।
बात सही भी और हँसी की भी, बकरी के सीगो को बेरी के पत्ते चर गए। बात असल मे यह हुई कि बकरी बेरी के पत्तो को चरने के लिए उचकी तो उसके सीग पेड की काटेदार टहनियो मे फसकर टूट गए। शिक्षा यह कि जो दूसरो को हानि पहुचाना चाहता है, उसकी स्वय हानि होती है।
बात की बात में
फौरन।
बात गई फिर हाथ नहीं आती
(१) मुह से निकली बात फिर हाथ नही आती।
(२) इज्जत एक दफे चली जाने पर फिर जल्दी नही मिलती।
बात छीले रूखड़ी, और काठ छीले चीकना
बात छीलने से रूखी, और काठ छीलने से चिकना होता है। किसी बात को बार-बार उकसाना ठीक नही।
बात छीलना=बहस करना।

बात जो चाहे आपनी, तो पानी मांग न पी
अगर अपनी बात (या इज्जत) रखना चाहता है, तो पानी भी मांगकर मत पी। अर्थात किसी से कोई चीज मत मांग।
बात पूछे, बात की जड़ पूछे
बहुत खोद-बिनोद करनेवाले से क०।
बात में बात ऐब है
किसी की बात के बीच मे बोलना बुरा है।
बात रह जाती है, वक्त निकल जाता है
जब कोई व्यक्ति किसी से उचित सहायता की आशा करे, और वह उसे न मिले, तब वह क०।
बात लाख की, करनी खाक की
(१) बाते लबी-चौडी करना, पर काम कुछ न करना।
(२) जब कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई निन्दनीय कार्य कर बैठे, तब भी क०।
बातें अगली करती हैं ख्वार
पुरानी बातो की याद मनुष्य को दुखी बनाती है।
बातें करे मैना की-सी, आँखें बदले तोता की-सी
(१) खतरनाक औरत।
(२) वेश्या से भी क०।
बातें हाथी पाये और बातें हाथी पायें
बातों से ही (इनाम मे) हाथी मिलता है और बातो के ही कारण आदमी हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया जाता है।
पाये=पाता है। पाये- पैरो के नीचे।
बातों चिकना, कामों ख्वार
बाते तो मीठी करे, पर काम कुछ न करे।
बातों-चीतों में बड़ी, करतब बड़ी जिठानी
बातचीत मे तो मैं, और काम करने मे जिठानी बडी है।
देवरानी पर कटाक्ष।
बातों बूढ़ा, करतब ख्वार
बातें बड़े-बूढ़े जैसी करे, पर काम मे निकम्मा।
बातों से काम नहीं चलता
जब काम करने के समय अथवा किसी का पावना देने के समय कोई कोरी बातो से टाले, तब क०।

बादला गड़े से नीम नहीं छिपता
अर्थात उसकी कड़ुवाहट नही जाती।
(१) बुरी आदत आसानी से दूर नहीं होती। अथवा (२) बुरा काम छिपाने से नहीं छिपता। (बादला एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा होता है, जिस पर सोने या चांदी के तारों का काम कढ़ा होता है।)

बादशाही रिआया से है
प्रजा से ही राज्य टिकता है।

बादशाहों की बातें बादशाह ही जानें
बड़ों की बातें बड़े ही जान सकते हैं।

बान जल गया, पर बल न गये
रस्सी जल गई, ऐंठन न गई।
बरबाद हो गये, पर शेखी न छूटी।

बानवाले की बान न जाय, कुत्ता मूते टांग उठाय
जिसे जो आदत पड़ जाती है, वह नहीं छूटती।

बाप ओझा, मां डायन
दोनो एक से। ऐसे मा-बाप का लडका भयकर तो होगा ही, यह भाव छिपा है।
ओझा झाडफूक करनेवाला ऐसा व्यक्ति, जिसके वश मे भूत-प्रेत माने जाते है।

बाप कंटक, पूत हातिम
बाप तो बेहद कजूस, और लडका उदार या खर्चीला।
कटक= विपत्ति; मुसीबत।

बाप करे बाप के आगे आये, बेटा करे बेटे के आगे आये
जो जैसा करता है, उसे उसका वैसा फल मिलता है।

बाप का नाम उआ-पुआ, पूत का नाम जीते खां
साधारण हैसियत का आदमी शेखी बघारे, तब क०।

बाप का नाम दमड़ी, बेटा का नाम छकौड़िया, नाती का नाम पचकौड़िया, तीन पुरसा बीती, छदाम न पूरा भया, (स्त्रि०)
अभिप्राय यह कि तीन पीढी के बाद भी परिवार अपनी कोई इज्जत नही बना सका। या अपने खर्चे पूरे नही कर सका।
दमड़ी=१२ कौडी: और छदाम=२४ कौड़ी, इस प्रकार तीन पीढ़ी का हिसाब २३ कौड़ी हुआ; अर्थात एक कौड़ी फिर भी कम।

बाप का नाम सागपात, पूत का नाम परोर
स्पष्ट।
दे०—बाप का नाम उआ-पुआ ।
परोर=पड़ौरा, एक बेल का फल, जिसका साग बनता है।

बाप की टांग तले आई, और मां कहलाई
बाप की रखैल को भी मां कहना पडता है।
सम्मान के योग्य न होते हुए, विवश होकर जिसका सम्मान करना पड़े; उसके लिए व्यग्य मे क०।

बाप की बरात बेटा जाये !
(१) संतान के रहते हुए जब कोई दूसरा विवाह कर लेता है, तब क०।
(२) असंगत बात या काम के लिए भी क०।

बाप कुंजड़ा, बेटा शेख !
स्पष्ट।

बाप के गले में मोंगरे, पूत के गले में रुद्राक्ष
बाप तो ऐयाश, और लडका साधु !
मोगरे =मोगरे के फूलो का हार।

बाप को आटा न मिले, जो ईंधन को भेजे
बदमाश और कामचोर लडके का कहना: (बाप को आटा (रसोई के लिए) न मिले, जिससे वह मुझे ईंधन लाने के लिए न भेजे।)

बाप चुपचुप, पूत लपझप
बाप तो चुप्पा या सीधा, लडका शरारती।

बाप दिखा, या गोर बता
या तो बाप बताओ कहा गया, या फिर उसकी कब्र बताओ; (जिसमे अगर वह मर गया है, तो उसका मुझे विश्वास हो जाए।)
या तो मै जो चीज माग रहा हूं वह दो या फिर यदि वह नहीं है तो उसका सबूत दो। जब कोई (विशेषकर कोई छोटा लड़का) इस तरह की ज़िद करता है, तब उससे क०।

बाप देवता, पूत राक्षस
बाप बहुत अच्छा, लड़का उसके विपरीत।

बाप न दावे, मार खाँ खावे
झूठी शेखी मारनेवाला ।

बाप न दावे, सात पुश्त हरामजादे
गाली ।
दे० ऊ० भी ।

बाप न मारी पीदड़ी, बेटा तीरंदाज़
लम्बी-चौड़ी हाकनेवाला ।
पीदडी एक छोटा पक्षी, पिद्दी ।

बाप नरकटिया, पूत भगतिया
बाप तो धूर्त या हत्यारा, लडका भगत । व्यंग्य मे क० ।
नरकटिया =गर्दन काटनेवाला ।

बाप पंडित, पूत छिनरा
स्पष्ट । व्यंग्य में० ।

बाप पेट मे, पूत ब्याहने चला
असभव या हास्यजनक व्यापार।

बाप बनिया, पूत नवाब
बाप तो कजूस, लडका खर्चीला ।

बाप-बेटों की लड़ाई क्या ?
बाप-बेटो मे झगडा होता ही रहता है, फिर शान्ति भी हो जाती है।

बाप भला न भैया, सब से भला रुपैया
रुपए के लिए सब नाते टूट जाते हैं।

बाप भिखारी, पूत भंडारी
स्पष्ट । व्यंग्य मे क०। अथवा अपना-अपना भाग्य यह सहज अर्थ भी हो सकता है।

बाप मरले कुंअर, माय मरले तुअर, (पू०)
बाप के मरने पर (गरीब घर का) लडका कुआरा रहता है, और मा के मरने पर अनाथ हो जाता है; क्योंकि बाप उसकी देखभाल नहीं कर सकता ।

बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसमें गया
जितना घाटा हुआ उतना मुनाफ़ा हो गया । प्रायः व्यंग्य में ही क० ।

बाप मरिहें तब पूत राज करिहें, (पू०)
बाप के मरने पर लड़कों की मालिकी हो जाती है; उसके रहते उनकी नहीं चलती ।

बाप मरे पर बैल बटेंगे
किसी काम के करने का लंबे समय का वादा करना ।

बाप मारे का बैर है
जानी दुश्मनी है।

बाप से बैर, पूत से सगाई
बाप से तो दुश्मनी और लडके से मित्रता । (जो उचित नही, अथवा जो अस्वाभाविक है।)

बापै पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-ही-थोड़ा
पुत्र में पिता के और घोडे मे भी अपने पिता के कुछ-न-कुछ गुण अवश्य आते है।
यह कहावत साधारणत इस प्रकार प्रचलित है:
बापै पूत सिपाह पै घोडा, बहुत नही तो थोडा-थोडा ।

बाबा आवें ना घंटा बजे
किसी के बिना कोई काम रुका पडा हो, और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो, तब क० ।

बाबा आये न ताली बजे
बहुत कुछ ऊपर की कहावत जैसा ही भाव है। (ठाकुर जी की पूजा के समय ताली बजाई जाती है; उसी से अभिप्राय है कि न बाबा आए और न पूजा हो।)

बाबा कमावे, बेटा उड़ावे
खर्चीले लडके को क० ।

बाबा के राजे सतुआ मेंहगल, सैयां के राजे सब सहतल
पिता के घर मे सत्तू भी मंहगा था, खाने को नही मिलता था, पर स्वामी के घर मे सब चीज सुलभ है, क्योंकि वहा वह घर की मालकिन है।

बाबाजी का ठेवस बड़
बाबा जी का अगूठा बडा है, अर्थात सबको ठेगा दिखाते हैं। हर चीज़ के लिए इन्कार कर देते है।

बाबा जी के बाबा जी, बजंत्री के बजंत्री
(१) बहुत से साधु इकतारे पर भजन गाकर भीख मांगा करते हैं, उन पर व्यंग्य।
(२) ऐसी चीज़ जिससे दो काम निकलते हो।

बाबा जी चेले बहुत हो गये हैं, बच्चा भूखों मरेंगे तो आप चले आवेंगे
मुफ़्तखोर के लिए क० ।

बाबा मरे, निहालू जायें, वही तीन के तीन
बाबा (पितामह) मरे तो नाती जन्मा, फिर वही तीन के तीन रहे, जिनका पेट भरना है।

बामन का बेटा, बावन बरस तक बौंगा
व्यंग्य से पडिताई करनेवाले उन ब्राह्मणों के लिए क०, जो केवल दान और भिक्षा पर निर्भर रहते है। बौंगा की जगह आमतौर से पोगा ही कहते है।

बामन की बेटी कलमा पढ़े
(१) एक दुखजनक बात; अथवा असंभव बात।
(२) किसी वस्तु की प्रशसा करने के लिए भी कह सकते है कि वह इतनी बढिया या सुस्वादु है कि उसे पाने के लिए ब्राह्मण की लड़की अपना धर्म छोड़ सकती है।

बामन के बबुआ कहले, नान जात लतयावले, (भो०)
ब्राह्मण तो सम्मान पाने से और छोटी जाति के लोग पिटने से ठीक रहते है। यह कहावत ब्राह्मणो की बनाई होगी।

बामन जीमें ही पतयाय
(१) ब्राह्मण भोजन के बाद ही कोई दूसरी बात सुनता है।
(२) ब्राह्मण जब भोजन कर ले, तभी उसकी बात सुननी चाहिए, क्योकि तब वह बहुत प्रसन्न हो जाता है।

बामन नाचें, धोबी देखे
एक फ़ज़ीहत की बात।
यहां नाचने से मतलब है निर्लज्जतापूर्ण काम करना।

बामन बचन परमान
ब्राह्मण की बात ही प्रामाणिक मानी जानी चाहिए। प्राय: व्यंग्य मे ही क०।

बामन बेटा लोटे-पोटे, मूल ब्याज दोनों घोंटे
(१) ब्राह्मण चिकनी-चुपड़ी बातें करके मूल भी हजम कर लेता है और ब्याज भी; अर्थात दोनों नहीं देता। अथवा
(२) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय ब्याज के वसूल नहीं कर लेता, तब तक नहीं छोड़ता।

बामन मंत्री, भाट खवास, उस राजा का होवे नास
जिस राजा का ब्राह्मण तो मंत्री और भाट निजी सेवक हो, उसका नाश होता है।

बामन से दान मांगते हैं
उल्टी रीति बरतते हैं, ब्राह्मण का काम तो दान लेना है न कि देना, क्योंकि ब्राह्मणों ने ऐसा नियम बनाया।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत
केवल जनेऊ गले में डाल लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता, उसे वैसे कर्म भी तो करने चाहिए।

बारह गांव का चौधरी, अस्सी गांव का राव।
अपने काम न आये तो, ऐसी तैसी में जाव।
कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यो न हो, पर उससे अगर कोई अपना मतलब न निकले, तो उसका वह बड़प्पन किस काम का ?

बारह वफ़ात की खिचड़ी, आज है तो कल नहीं
ऐसी वस्तु, जो आज तो बहुतायत से मिल रही हो, फिर न मिले।
(बारावफ़ात मुहम्मद साहब के जीवन के उन अतिम बारह दिनो को कहते है, जब वे बहुत बीमार रहे। इसके अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। इस दिन उनकी यादगार मे खिचड़ी का फातिहा दिया जाता है, और वह लोगो मे बाटी भी जाती है। उसी से कहा० बनी।)

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक
कोई पुराना रोग एक दिन में दूर नही होता।
(इतवार सूर्य का दिन माना जाता है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन व्रत रखने से चर्म रोग दूर होते हैं।)

बारह बरस काठ में रहे, चलती दफा पांव से गये
छूटने की खुशी में जल्दी के मारे गिर पड़े और पैर टूट गया। दुर्भाग्य की बात।
(प्राचीन काल में अपराधी को दंड देने के लिए उसका पैर लकड़ी के कुंदे में फंसा दिया जाता था, इसी को 'काठ मे देना' कहते थे।)

बारह बरस की कन्या, और छठी रात का वर, मन माने सो कर
बालविवाह पर क०।

छठी रात का=छः दिन का।

बारह बरस की पठिया, बीस बरस की टटिया

भारत में स्त्रियां जल्दी बूढ़ी हो जाती हैं। उसी संदर्भ में कहा गया है कि बारह वर्ष की अवस्था में वह युवती थी, पर बीस की होते-होते ठांठ हो गई।

बारह बरस दिल्ली में रहे, भाड़ ही झोंका

व्यर्थ समय खोया। एक अच्छे स्थान में रह कर भी उससे कोई लाभ नहीं उठा सके।

बारह बरस दिल्ली में रहे, महसूल नहीं दिया, 'क्या करते थे'? 'भाड़ झोंकते थे'।

दे० ऊ०।

बारह बरस पीछे कूड़ी के भी दिन फिरते हैं

समय सदा एक-सा नहीं रहता। कभी-न-कभी अवश्य अच्छे दिन आते हैं।

कूड़ी=घूरा।

बारह बरस सेई कासी, मरने को मग्गह की माटी

अन्त बुरा होना।

(हिन्दुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मोक्ष मिलता है, और कोई अगर मगहर में जाकर मरे तो वह नरक में जाता है।)

बारह बाट, अठारह पैंड़े

बारह रास्ते और अठारह पगडंडिया; कौन-सा मार्ग ग्रहण किया जाए?

बहुत उलझा हुआ मामला।

बारह बानी का हो गया

फिर नौजवान हो गया।

(बारह बानी विशेषण का प्रयोग खरे सोने के लिए करते हैं। बारह बानी याने द्वादशवर्ण अर्थात सूर्य जैसी चमक-दमकवाला। उसीसे उक्त मुहावरा लिया गया।

बारह में तीन गये तो रही खाक

बारह में से अगर बरसात के तीन महीने सूखे ही निकल जाएं, तो फिर कुछ बचता नहीं, क्योंकि फिर अन्न पैदा नहीं होगा।

बाड़ जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप। मीठी ऐसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप।

स्पष्ट।

धौली=स्वच्छ।

बालक जाने हिया, मानस जाने किया

बालक प्रेम चाहता है, और उम्र में बड़ा काम।

बालकों को सिखाना बालकपन ही से चाहिए

स्पष्ट।

बाल का कंबल करना

बात का बतंगड़ बनाना।

बाल की खाल, हिन्दी की चिंदी

व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

बाल जंजाल, पलै तो पाल, नहीं तो मूंछों को टाल

बाल एक मुसीबत हैं, रखे जा सकें तो रखो, नहीं तो मूछों को भी हटाओ।

(मूछें साफ रखनेवालों पर व्यंग्य।)

बाल जंजाल, बाल सिंगार

बाल एक विपत्ति हैं और बाल शोभा की वस्तु भी हैं। एक ही चीज कभी सुखकर, कभी कष्टकर होती है।

बाल बांधा गुलाम है

पूरा गुलाम है।

बाल बांधा चोर

बहुत चालाक चोर।

बाल बांध कौड़ी मारता है

अच्छा निशानेबाज।

बाल-बाल गुनहगार, (स्त्रि०)

बहुत विनीत भाव से अपना दोष स्वीकार करना।

बाल हठ, तिरिया हठ, राज हठ

ये तीन हठ प्रसिद्ध हैं।

बालू की भीत, ओछे का संग, पतुरिया की प्रीत, तितली का रंग

ये स्थायी नहीं होते।

बालों हाथ छिनाला, और कागों हाथ संदेसा, (स्त्रि०)

ये दोनों ही काम सिद्ध नहीं होते।

बालों हाथ=बच्चों की सहायता से।

बावन तोले पाव रत्ती

बिल्कुल ठीक बात।

बाव न बतास, तेरा आंचल क्यों कर डोला।
पूत न भतार, तेरा टेंटा क्यों कर फूला।
कुलटा के लिए क०।
टेंटा=स्तन की बोंडी।

बावली को आग बताई, उसने ले घर में लगाई
मूर्ख को कोई खतरे का काम नहीं सौंपना चाहिए। वह उसका जोखिम नहीं जानता।

बावली खाट के बावले पाये; बावली रांड़ के बावले जाये
जैसों के तैसे होते हैं।
बावली=पागल, मूर्ख। खाट के संबंध में टेढ़ी-मेढ़ी से मतलब है।
जाये=लड़के।

बावले की ब्याही गाय, सब मेटी ले वाके धाय, (पू०)
मूर्ख की गाय ब्याई, तो सब उसके यहां मटको लेकर दौड़े, (दूध लेने के लिए।)

बावले कुत्ते ने काटा है
मूर्खता की बातें करना।

बासी कढ़ी को उबाल आया
(१) समय बीतने पर किसी विषय की चर्चा करना।
(२) अकस्मात क्रोध के लिए भी क०।

बासी फूलों में बास नहीं, परदेसी बालम तेरी आस नहीं, (स्त्रि०)
स्पष्ट।

बासी बचे न कुत्ता खाय
(१) गरीबी हालत के लिए क०। (२) जो मनुष्य बहुत मितव्ययिता से काम ले रहा हो, वह भी कहता है।

बासी भात में अल्ला मियां का कौन निहोरा ? (पू०)
जो वस्तु अपने-आप अथवा स्वयं के प्रयत्न से मिल गई हो उसमें किसी का क्या एहसान ?

बासी मुंह फोका पानी औगुन करे है, (स्त्रि०)
सवेरे खाली पानी पीना नुकसान करता है।

बाहर के खायें, घर के गीत गायें, (स्त्रि०)
वाहवाही के लिए जो फ़िजूल खर्च करता है, उससे क०।

बाहर त्याग, भीतर सुहाग
पाखंडी।

बाहर मियां अलल्ले तलल्ले, घर में चहे पकें, (स्त्रि०)
ऊपरी शान बघारना, या ऊपरी दिखावट।

बाहर मियां छैल चिकनियां, घर में लिबड़ी जोय, (पू०, स्त्रि०)
दे० ऊ०।
लिबड़ी=सिलबिल्ली।

बाहर मियां झंग-झंगाले, घर में नंगी जोय, (स्त्रि०)

बाहर मियां पंज हजारी, घर में बीबी करमों मारी (स्त्रि०)

बाहर मियां सूबेदार, घर में बीबी झोंके भाड़, (स्त्रि०)

बाहर लंबी धोती, भीतर मड़वे की रोटी, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
मड़वा कोदों की तरह का एक हल्का अनाज।

बिध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर
जो काम हो जाए, वही सार्थक है। जो नही हुआ, वह व्यर्थ है।

बिख की ओखद क्या ?
विष की कोई दवा नही।

बिख सोने के बर्तन में रखने से अमृत नहीं होता
किसी का स्वामाविक गुण नही बदलता।

बिगड़ी लड़ाई बख्तरपोशों के सिर
लड़ाई की हार के लिए सिपाहियों को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है, (अफ़सर के द्वारा)।

बिगाड़ संवार खुदा के हाथ
बनना-बिगड़ना ईश्वर के आधीन है।

बिच्छू का मंतर न जाने, सांप के बिल में हाथ डाले
जिस काम को बिल्कुल ही नही करना जानते, उसे करने का साहस करना।

बिजया पीवे, सेज्या सोवे, ताके बैद पिछाड़ी रोवे
भंग पी के जो सो जाता है, उसके लिए वैद्य रोता है, अर्थात वह ऐसा बीमार पड़ता है कि फिर अच्छा नहीं होता।

बिजली कांसी पर गिरती है
स्पष्ट।
दुख बड़ों पर ही पड़ता है।
कांसी=कांसा धातु।

बिजली चमके मेहा बरसे
जब बिजली चमकती है, तो पानी बरसता है।

बिजली मेहमान, घर में नहीं तिनका
ग़रीब के घर किसी बड़े आदमी का (भोजन आदि के लिए) आना।

बिजुलिक मारल, लुआठ देख भागे, (पू०)
बिजली का मारा सुलगती लकड़ी देखकर भागता है। (एक बार किसी काम में बहुत हानि हो जाने पर मनुष्य भविष्य में साधारण मामलों में भी बहुत सावधान रहता है।)

बिद्या में बिवाद बसे
जो जितना जानता है, उतना ही तर्क करता है।

बिद्या लोहे के चने हैं
ज्ञान कठिनाई से प्राप्त होता है।

बिन कुटनापे छिनाला नहीं
कोई भी चोरी, व्यभिचार आदि का काम बिचोइए के बिना नहीं होता।

बिन गां--का बंधना
बिना तली का लोटा।
(१) ऐसा मनुष्य जिसका कोई सिद्धान्त न हो।
(२) दुर्बल चरित्र का आदमी।

बिन घरनी घर पावत है, है घरनी घर गाजत है
स्त्री से घर हरा-भरा लगता है।

बिन घरनी घर भूत का डेरा
बिना स्त्री के घर भयावना लगता है।

बिन चूची बारह बरस लड़के को रखता है
झूठा वादा करने वाले से क०।
बिन चूची=बिना दूध पिलाए।

बिन जने का थनैला हुआ है
बच्चा जने बिना ही स्तन का फोड़ा हो गया।
(१) बेमतलब की झंझट सिर आ जाना।
(२) अकारण ही बदनाम होना।

बिन जाने कौन माने ?
स्पष्ट।

बिन जुलाहे ईद
नहीं होती, क्योंकि वह नमाज पढ़ने की दरियां (मुसल्ला) बनाता है।

बिन जुलाहे नमाज नहीं, बिन ढोलक तज़ीर नहीं
बिना जुलाहे के नमाज नहीं होती, और बिना मुनादी के कोई बड़ी सज़ा नहीं दी जाती।

बिन ताल पखावज नाचे है
बिना तबला और मृदंग के ही नाचता है। व्यर्थ की उछल-कूद मचाता है।

बिन दामों के नौकर हैं
(१) विनम्रता दिखा कर कहना कि हम आपके सेवक हैं।
(२) मुफ़्त में किसी की गुलामी करना।

बिन देखा चोर बाप बराबर
जिस मनुष्य को चोरी करते नहीं देखा, उससे कुछ कहा नहीं जा सकता।

बिन परचा परतीत नहीं, (हिं०)
बिना प्रमाण के विश्वास नहीं होता।

बिन पैसा-कौड़ी के तेलो साहू, टूटी हांड़ी कांदू साहू
देहातों में तेली और कांदू (भड़भूंजा) इन दोनों को अक्सर साहू कहते हैं। साहू इन लोगों का एक गोत्र भी होता है; इसीलिए कहा गया है। (तेली और भड़भूंजा, इन दोनों का धंधा ऐसा है कि उसके लिए उन्हें किसी प्रकार की पूंजी की आवश्यकता नहीं पड़ती, इसलिए भी क०। फूटी हांडी से अभिप्राय उन फूटे घड़ों से है जो भड़भूंजे के भाड़ में लगे रहते हैं और जिनमें वह अनाज भूनता है।)

बिन बहू प्रीत नहीं
ससुर अपने जमाई को तभी तक प्यार करता है, जब तक उसकी लड़की जीवित रहती है।

बिन बिद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार
बिना पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष वैसे ही हैं, जैसा कुम्हार का गधा।

बिन बुलाई डोमनी लड़के-बाले समेत आये, (स्त्रि०)
निर्लज्ज, जो बिना बुलाए किसी जगह पहुंच जाए।

बिन बुलाये अहमक, ले दौड़े सहनक, (स्त्रि०)
(१) बिना बुलाये न्योते में आ जाना।
(२) बे मतलब दूसरे के काम में हस्तक्षेप करना।
सहनक=भोजन करने का थाल।

बिन मांगे मोती मिले, और मांगी मिले न भीख
जो मिलनेवाला होता है वह आप ही मिलता है, मांगने से भीख भी नही मिलती।

बिन मांगे मिले सो दूध, और मांगे मिले सो पानी
बिना मांगे जो वस्तु मिले, वही अच्छी होती है।

बिन मारे की तोबा करना
(१) व्यर्थ हाय-हाय करना।
(२) मारने से पहले ही रोना।

बिन रुके बैद की घोड़ी न चले
वह उस स्थान पर अवश्य रुक जाती है; जहां वह रोज खड़ी की जाती है, अर्थात जहां वैद्य रोगी को देखने जाता है। भाव यह है कि वैद्य बिना बुलाए ही अपने हर रोगी के यहां जाता है, जिसमें उसे मेहनताना मिले या दवा बिके।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती
बिना मांगे अपनी इच्छा से कोई कुछ नही देता।

बिन लाग खेले जुआ, आज न मुआ कल मुआ
जो बिना युक्ति के जुआ खेलता है, वह हानि उटाता है।
(लाग वास्तव में ऐसी चालाकी को कहते हैं, जो पकड़ में न आ सके अथवा जिसे चालाकी न समझा जाए।)

बिन होनी होती नहीं, और होनी होवनहार
जो होना होता है, वह होकर रहता है, जो नहीं होना होता, वह नही होता।

बिन ठगे काम नहीं निकलता
बिना धोखे के व्यापार नहीं होता।

बिना वसीले चाकरी, बिना वृद्ध की देह।
बिना गुरु का बालका, सिर में डाले खेह।
स्पष्ट।
वसीला=सहारा, जरिया।
खेह=धूल, मल।

बिनौलों की लूट में बर्छी का घाव
(१) लाभ थोड़ा, हानि बहुत।
(२) सामान्य अपराध के लिए कड़ा दंड, यह अर्थ भी हो सकता है।

बिपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गया जब देने आई
सुख का अवसर आ जाने पर मनुष्य दुख की सब बात भूल जाता है।
भेंट मनाई=देवता को भेंट चढ़ाने का संकल्प किया।
मुकर गया=बदल गया।

बिपत बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय।
क्योंकि उसमें मनुष्य को बहुत अनुभव होते हैं।

बिपत संघाती तीन जने, जोरू, बेटा, आप
विपत्ति में तीन ही जने साथ देते हैं: स्त्री, लड़का और स्वयं।

बिफरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये
असंतुष्ट नीच और भूखे भले आदमी से डरना चाहिए। (वे हानि पहुंचा सकते है)।

बिरादर ए हक़ीक़ी,
दुश्मन-ए मादरजाद है
सगा भाई ही सबसे बड़ा दुश्मन होता है।

बिरछ की माया और पुरुष की छाया, (स्त्रि०)
दे० पुरुष की छाया...।

बिरादरी को न खिलाया, चार कांधी ही जिमा दिये (हिं०)
किसी व्यक्ति की कंजूसी के लिए शिकायत की जा रही है कि उसने मृतक के क्रिया-कर्म में बिरादरीवालों को भोजन नही कराया, केवल अर्थी में कंधा देने-वालों को ही न्योत लिया।

बिल्ली और दूध की रखवाली
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। बिल्ली दूध की रक्षा करेगी, या उसे पी जाएगी।

बिल्ली के ख्वाब में चूहे कूदें
जिसे जिस चीज की आवश्यकता होती है; चौबीसों घंटे उसके दिमाग में वही चीज रहती है।

जब कोई मनुष्य हर मौक़े पर अपनी ही मांग सामने रखता है, तब क०।

बिल्ली के ख्वाब में छीछड़े

दे० ऊ०।

गंदे आदमी को गंदा काम ही सूझता है, यह भाव भी है।

बिल्ली के भागों छींका टूटा, (स्त्रि०)

(१) अचानक कोई ऐसा लाभ हो जाना जिसकी आशा नही की गई थी।

(२) अयोग्य को परिस्थितियों के कारण यकायक ऊंचा ओहदा मिल जाना।

बिल्ली खायेगी नहीं, पर फैला तो भी जायेगी

दुष्ट व्यर्थ की हानि करता है।

बिल्ली चूहा खुदा के वास्ते नहीं मारती

लोग दूसरो का भला भी अपने मतलब के लिए ही करते हैं।

बिल्ली भी दबकर हरबा करती है

चीते की तरह, वह पहले ज़मीन पर झुक जाती है, फिर हमला करती है।

(दूसरों पर काबू पाने के लिए विनम्र बनने की आवश्यकता होती है।)

हरबा=चोट। आक्रमण।

बिल्ली भी मारती है चूहा पेट के लिये

मनुष्य बुरे कर्म करता है, ज़िंदा रहने के लिए।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंह पर पंजा रख लेती है

(१) अपनी रक्षा सब करते है। अथवा

(२) दूसरो पर हमला करने के पहले अपनी रक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

बिसमिल्लाह के गुम्बद में बैठे हैं, (मु०)

(१) साधु-संन्यासियो जैसा जीवन व्यतीत करते हैं।

(२) स्वर्गलोक चले गए, यह अर्थ भी होता है।

(बिसमिल्लाह का अर्थ है, ईश्वर के नाम पर।)

बिसमिल्लाह ही ग़लत है, (मु०)

काम के शुरू मे ही भूल होने पर क०।

(मुसलमानों में कोई कार्य आरंभ करते समय श्रीगणेशायनमः की तरह प्रायः 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पद का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ है उस दयालु ईश्वर के नाम से। बिस्मिल्लाह उसी का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त रूप है।)

बिसयर पकड़, ज़हर को चाट।
पर नारी संग चालन बाट।

विषधर (सर्प) को भले ही पकड़े और भले ही उसका ज़हर चाटे, पर पराई स्त्री के साथ कभी रास्ता न चले।

बिसवा बिस की गांठ

(१) वेश्या ज़हर की पुड़िया होती है, उससे बचना चाहिए। अथवा

(२) बिस्वा, अर्थात ज़मीन लड़ाई की जड़ है।

(बिस्वा बीघा के बीसवे हिस्से को कहते हैं।)

बिसुनी बिलार, डबरी में डेरा, (पू०)

लपकी हुई बिल्ली भोजन के बर्तन मे आकर बैठती है, अर्थात चुपचाप आकर बैठ जाती है। बिना बुलाए मेहमान के लिए क०।

डबरी=(१) मिट्टी का बर्तन, (२) सूखे महुओं को उबालकर बनाया गया एक विशेष प्रकार का व्यजन।

बीच के चले जाएंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पड़ेगा

दे०—बराती किनारे हो जाएंगे...।

बीज बोया नहीं, खेत का दुख

काम तो किया ही नहीं और वह सफल होगा या नही, इसकी चिंता लग गई।

बी दौलती, अपने तेहे मे आप ही खौलती, (स्त्रि०)

जो अपने धन के घमड मे चूर हो, उसके लिए क०।

तेहे मे=ताव मे, आच मे।

बीबी को बांदी कहा हँस दी, बांदी को बांदी कहा रो दी, (स्त्रि०)

नौकर को नौकर कहने से बुरा मानता है।

बीबी खैला, दो चिट्टे, एक मैला, (स्त्रि०)

बीबी खैला के पास दो सफेद और एक मैला (लहंगा) है। ऊपरी दिखावे पर क०।

बीबी खैला, दो जट्टी, एक मेला, (स्त्रि०)

जहां बीबी खैला और जाटनी मिल जाती हैं, वहां मेला हो जाता है।

(जहां दो स्त्रियां इकट्ठी होती हैं वहां या तो बहुत बात करती हैं या लड़ती हैं, इसी से कहा गया है।)

बीबी नेकबख़्त, दमड़ी की दाल तीन वक़्त, (स्त्रि०)
कंजूस औरत।

बीबी बकरी नाव में ख़ाक उड़ाती हो
अपना कोई मतलब पूरा करने के लिए बहाना खोजकर जबर्दस्ती दूसरों से लड़ना।
(प्रसिद्ध कथा है कि एक भेड़िए ने बकरी पर यह झूठा अपराध लगाकर कि तुम नाव में धूल उड़ा रही हो, उसे खा लिया था। उसी से कहावत चली।)

'बीबी बीबी ईद आई', 'चल हरामजादी तुझे क्या'? (स्त्री०)
मालकिन और नौकरानी का वार्तालाप। खर्च की बात बताने से कंजूस चिढ़ जाता है।

'बीबी बीबी ईद आई', 'चल मुरदार, तुझे टिकिये से काम' (स्त्रि०)
अपने स्वार्थ की दृष्टि से कोई बात करना।
दे०—ऊ० भी।
टिकिया= रोटी का टुकड़ा।

बीबी मक्के न गई, लाड़ली हो आई, (स्त्रि०)
बीबी ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया, फिर भी उन्हें लोग प्यार करते हैं। व्यंग्य में क०।

बीबी वारे, बांदी खाय, घर की बला कहीं न जाय
बच्चों की नज़र उतारने या उनकी बीमारी को दूर करने के लिए पकवान या आटे की लोई को सिर पर से घुमाकर बाहर फेंक देते हैं, जहां उसे कुत्ता खा लेता है। (इसी को 'वारना' कहते हैं। कहा० का अर्थ यह है कि मालकिन ने बला को दूर करने के लिए पकवान 'वारा' और उसे बांदी को ही खिला दिया। इस तरह घर की मुसीबत बाहर न जाकर घर में ही रही। जब कोई व्यक्ति कोई अच्छा कार्य करते समय केवल परिवार के लोगों का ही ध्यान रखता है तथा दूसरों को नहीं पूछता, तब क०।)

बीबी हैं भरभाली, कान पीतर की बाली, (स्त्रि०)
बीबी अपनी पीतल की बालियों में ही भूली फिरती हैं। अर्थात उनका उन्हें बड़ा नाज़ है।

बीमार की रात पहाड़ बराबर
बीमार की रात मुश्किल से कटती है, इसलिए कि रात में बीमारी प्रायः बढ़ जाती है।

बीस पचीस के अंदर में, जो पूत सपूत हुआ, सो हुआ, मात पिता कुल तारन को, जो गया न गया, सो कहीं न गया।
जो गया जाकर अपने माता-पिता को पिंड नहीं देता, उसका अन्य (तीर्थ) स्थानों में जाना व्यर्थ होता है। (प्रायः तीर्थ स्थानों के पंडे यह कहा करते हैं।)

बीसी खीसी
बीस वर्ष के बाद स्त्री प्रायः बूढ़ी लगने लगती है। भारत के लिए यह बहुत कुछ सत्य है।

बुड़बक एक गये बड़ गांव, डेरा पायन ऊंचे ठांव। बहे बयार आड़ नहिं पावें, फाटे गांड़ मलार गावें। (भो०)
गंवार के लिए क०।

बुड़बक की जोरू, सब की भौजाई
सब उसकी स्त्री से मजाक करना चाहते हैं।

बुड़बक के धन, फहीम मार खायें
मूर्ख का धन समझदार खाते हैं।

बुड़बक गइले मछली मारे, ताप अइले गंवाय, (भो०)
मूर्ख कोई रोजगार करता है तो गांठ की पूंजी ही खो बैठता है।
ताप=बंसी, जिससे मछली फंसाते हैं।

बुड़बकदास गये हरवाई, दुई बैल में एकौ नाईं, (भो०)
मूर्खराज खेत जोतने गए, और दो बैलों में से दोनो खो बैठे। (अपनी मूर्खता के कारण)।

बुड़बक देबी के कुल्थी के अच्छत, (भो०)
जैसी देवी वैसी पूजा।
कुल्थी=कोदों की तरह का एक बहुत हलकी जाति का चावल।

बुड़बक धनई का रहे की बास, कोठी में चावर घर में उपास, (भो०)
मूर्ख को धन का क्या सुख? कुठले में चावल रखे हैं फिर भी घर के लोग भूखे हैं। मूर्ख धन का उपयोग नहीं जानता।

बुड़बक बर के सांझे बिछौना, (भो०)
मूर्ख दूल्हा के बिस्तरे शाम से ही लग जाते हैं।
बुड़भस लगी है
(१) बुढ़ापे में जवान बनने का शौक़ चर्राया है।
(२) दूसरा लड़कपन सवार है।
बुड्ढा ब्याह करे, पड़ौसियों को सुख हो गया
हँसी में ही क०।
बुड्ढा हुआ ऊंट, पर मूतना न आया
सयाने आदमी को काम का शऊर न होना।
बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम
बेतुका काम।
बुड्ढी बकरी और हुंडार से ठट्ठा
कमज़ोर होकर भी अपने से अधिक ताक़तवर से छेड़खानी करना।
बुड्ढी भैंस का दूध शक्कर का घोलना
बुड्ढे मर्द की जोरू गले का ढोलना
बुड्ढा अपनी औरत को बहुत सहेजकर रखता है।
ढोलना=ताबीज। हार।
बुड्ढी हुई नायका इस हाल को पहुंची।
सिर हिलने लगा छातियां पत्ताल को पहुंची।
(नज़ीर)
बुढ़ापा आने पर अंग शिथिल हो जाते हैं।
बुड्ढे की न मरे जोरू, बारे की न मरे मां
क्योंकि बुढ़ापे में स्त्री के मरने से बड़ा कष्ट होता है और बालक भी मां के मरने से अनाथ हो जाता है।
बुड्ढे की सीख, करे काम को ठीक
बड़े बूढ़े की सीख काम आती है।
बुड्ढों ने जो काम सिखाया, धोका भूल न उसमें पाया
स्पष्ट।
बुढ़ापे में अक़्ल मारी गई है
मूर्खता के काम करते हैं।
बुढ़ापे में मट्टी ख़राब
बूढ़ा कष्ट पाता है और लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं।
बुढ़िया को पैंठ बिना कब सरे?
बुढ़िया को बाजार गए बिना चैन कहां? जब कोई अपनी आदत नहीं छोड़ता तब क०।
बुढ़िया ग़ज़ब की पुड़िया
लड़ाकू बुढ़िया के लिए क०।
बुढ़िया दीवानी हुई, पराये बरतन उठाने लगी
सयाना मूर्ख।
बुढ़िया मर गई तो कुछ ग़म नहीं, पर फ़रिश्तों ने घर देख लिया
अब वे फिर आ सकते हैं।
फ़रिश्ते=मृत्यु के दूत।
बुरा कहनेवाले पर तीन हर्फ़, (मु०)
फारसी के लाम, ऐन और नून इन तीन अक्षरों से बने 'लान' शब्द से मतलब है जिसका अर्थ होता है 'धिक्कार' या 'थू'।
बुरा बेटा, खोटा पैसा, वक़्त पर काम आ जाता है
बुरी चीज भी कभी-न-कभी काम आ ही जाती है; उसका तिरस्कार करना ठीक नहीं।
बुरा हाकिम, ख़ुदा का ग़ज़ब
बुरा अफ़सर ईश्वरीय कोप है।
बुरी घड़ी न आवे
किसी पर कभी विपत्ति न पड़े।
बुरे का साथ दे सो भी बुरा
स्पष्ट।
बुरे का साथी कोई नहीं
स्पष्ट।
बुरे की बुराई से डरिये
बुरे के बुरे कामों से डरना चाहिए।
बुरे तुम से डरिये या तेरी बुराई से?
बुरा स्वयं भी दुष्ट होता है।
बुरे भले में चार अंगुल का फ़र्क़ है
बुरे भले में बहुत अंतर नहीं, वही काम थोड़ी सी सावधानी से सुधरता है, और वही असावधानी से बिगड़ भी जाता है।
बुरे वक़्त का अल्लाह बेली
दुख के समय ईश्वर के सिवा कोई सहायता नहीं करता।
बुरे वक़्त का कौन है जुज़ ख़ुदा
दे० ऊ०।

जुज़=सिवा।

बुरे से खुदा भी डरता है

अतः उससे बचना चाहिए।

बुरे से देव डरायें

दे० ऊ०।

बुलबुल का-सा चोंडा, (स्त्रि०)

बुलबुल की कलगी की तरह सजाए गए बाल। (ऐसे बाल, जिन्हें गृहस्थ परिवार की स्त्रियां नहीं सजाती।)

बुलावे, न चलावे, मोर तीन बखरे, (पू०)

किसी ने उसे न बुलाया, न चलाया, फिर भी वह आकर अपने तीन हिस्से मांगती है।

बिना बुलाए निमंत्रण में पहुंच जाना; अथवा बिना पूछे-ताछे बीच में बोलना।

बुलावें न चलावें, मैं तो दुल्हन की चाची

जबर्दस्ती अपना अधिकार बनाना।

बुवद हम पेशा, बाहम पेशा दुश्मन, (फ़ा०)

एक ही पेशे के दो आदमियो में कभी समझौता नही हो सकता; क्योकि वे एक दूसरे से ईर्ष्या करते है।

बूंट बड़ा होय तो भनसार न फोड़े

एक चना, कितना ही बड़ा हो, भाड़ नही फोड़ सकता।

दे०—अकेला चना...।

बूंद का चूका घड़े ढलकावे

जब कोई मनुष्य मौके पर किसी साधारण मामले में चूक जाए और बाद मे अपनी उस भूल को मिटाने का प्रयत्न करता फिरे, तब क०।

(कथा है कि एक गंधी बहुत-सा इत्र लेकर किसी राजा के पास बेचने गया। इत्र दिखाते समय उसकी एक बूद फर्श पर गिर पड़ी। राजा ने तुरंत उसे उंगली से पोंछा और मूंछों से लगा लिया। राजा का यह क्षुद्र कार्य देख गंधी मुस्करा कर रह गया। राजा का मंत्री उसके चेहरे को देख इस बात को ताड़ गया। उसने गंधी का सब इत्र खरीदकर मुंह मांगा दाम दे दिया। राजा को लोभी समझकर गंधी कहीं दूसरे दरबार में जाकर उसकी हंसी न उड़ाए, इस विचार से उसने फिर वह सब इत्र उस गंधी पर ही ढलवा दिया। गंधी भी सब बात समझ गया, और यह कहता हुआ चला गया कि 'बूंद का चूका घड़े ढलकावे, पर उस बूंद से भेंट कहां?' अर्थात राजा का जो हलकापन उस गिरी हुई बूंद को उठाकर मूंघने से प्रकट हो चुका है, वह अब मेरे ऊपर घड़ा भर इत्र लुढ़काने से छिप नही सकती। 'बूंद से बिगड़ी हौज़ से नहीं सुधरती'—इस प्रकार भी उक्त कहावत प्रचलित है।)

बूंद-बूंद कर के तालाब भरता है

थोड़ा-थोड़ा संचय करने से बहुत इकट्ठा हो जाता है।

बूंद से गई फिर हौज़ से नहीं आती

दे०—बूद का चूका...।

बू गई, बूबार गई, रही खाल की खाल

शरीर की नश्वरता पर क०।

बूचा सबसे ऊंचा

ऐसा मनुष्य (या ऐसी वस्तु) जो सबसे अलग दिखाई पड़े।

बूचा- जिसका कान कटा हो। प्रायः कान कटे कुत्ते को ही बूचा कहते हैं।

बूड़ा बंस कबीर का उपजे पूत कमाल

दे०—डूबा बंस...।

बूढ़ न सवाद घीव खिचड़ी, (स्त्रि०)

बूढ़ा अच्छी चीज़ खाना नही जानता।

बूढ़ भइलन, नाक लगे रहिलन, (पू०)

बूढ़े तो हो गए, पर नाक लगी हुई है।

जो सयाना होकर भी लड़कों जैसा काम करे, उससे क०।

बूढ़ भइल, बुढ़चौस न छूटल, (स्त्रि०)

बूढ़े हो गए पर लड़कपन नहीं छूटा।

बूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर वैसे

बूढ़ी हो गई, पर दिमाग वैसे ही हैं, (जैसे जवानी मे थे।)

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम

रूप-गुण के विरुद्ध नाम।

बूढ़ा चोचला जनाखें के साथ, (स्त्रि०)
बूढ़ी औरत के नखरे मरने पर ही छूटते हैं ।

बूढ़ा जाने किया, बालक जाने हिया
दे०—बालक जाने...।

बूढ़ा बनिया और बेर चुनने जाये !
एक असमव बात । बनिया ऐसा काम नही करेगा, जिसमे उसे कोई लाम न हो ।

बूढ़ा बाला बराबर होता है
बूढे और लडको की कुछ आदते एक-सी होती है ।

बूढ़ी जुरवा, नाम खतीजा
रूपगुण के विरुद्ध नाम ।
(खतीजा का अर्थ रूपवती होता है ।)

बूढ़े कलावंत की कौन सुने
बूढ़े गवैये का गाना कोई नही सुनता ।

बूढ़े तोते भी कहीं पढ़ते हैं ?
बडे आदमी को कोई काम नये सिरे से नही सिखाया जा सकता ।

बूढ़े मुंह मुहासे, लोग आये तमाशे
बूढी आदमी अगर जवानो का-सा आचरण करे तो वह एक हँसी की बात हो जाती है ।
(मुहासे चेहरे की फुन्सिया होती है जो जवान लडको को ही निकलती है। बूढो को निकले तो लोग निस्सदेह तमाशा देखने आएगे।)

बूर के लड्डू खाय सो पछिताय, न खाय वह भी पछताय
दे०—खाए तो पछताए ।

बेअदब बेनसीब, बाअदब बानसीब, (फ़ा०)
बडो का सम्मान न करनेवाला अभागा होता है, सम्मान करनेवाला भाग्यवान ।

बे ऐब ज़ात खुदा की
केवल ईश्वर ही निष्कलक है।

बेकार मवास कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़ कर सीया कर
बैठे रहने से कुछ-न-कुछ करना अच्छा है।
मवास=(मवाश), मत रह ।

बेकारी बिकारी
खाली बैठे रहने से स्वास्थ्य खराब होता है ।
बिकारी=(विकारी) विकार उत्पन्न करनेवाला।

बेकारी से बेगारी भली
बैठे रहने की अपेक्षा मुफ्त में ही दूसरो का काम कर देना अच्छा ।

बेखर्ची में आटा गीला
अव्वल तो पैसा पास में नही, फिर आटा गीला हो गया । अब उसे ठीक करने के लिए आटा कहां से आए। जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिस पर पैसा खर्च करना बहुत जरूरी है, पर गांठ मे कुछ न हो, तब क० ।

बेखार गुल नहीं
सुख के साथ दुख लगा है।
खार—काटा ।
गुल=फूल ।

बेगाना सिर कद्दू बराबर
दे०—पराया सिर कद्दू ..।

बेगाना सिर पसेरी बराबर
दे०—पराया सिर पंसेरी ..।

बेगानी आस नित उपास
दे०—पर आसा ।

बेगानी थैली का मुंह संकरा
दे०—पराई थैली...।

बेगाने कारन लूली तोड़ना
दूसरे के खाने के लिए मिठाई बनाना। व्यर्थ का परिश्रम करना।
(लूली जलेबी की तरह की एक मिठाई होती है ।)

बेगाने कारन लूली तोड़े टांग. (स्त्रि०)
दूसरे के लिए लगडी अपनी टांग तोड़ती है ।
दे०—ऊ० ।

बेगाने खत्ते पर झींगुर नाचे
दूसरे की वस्तु पर घमंड करना ।
खत्ता=अनाज की खेती ।

बेघरनी घर पावत है. है घरनी घर गाजत है, (पू०)
दे०—बिन घरनी...।

बेघरनी घर भूत का डेरा
दे०—बिन घरनी...।

बेच-बेच मेरी पसनी का ब्याह, (स्त्रि०)
लड़की के ब्याहे में प्राय: बहुत ख़र्च करना पड़ता है। उसी पर क० कि बेचो घर की संपत्ति और करो लड़की की शादी।

बेचे के साग, करे मोतियों के दाम, (पू०)
अपनी हैसियत से बाहर बात करना।

बेचे सो बंजारा, रक्खे सो हत्यारा, (हिं०)
माल को बेचना ही अच्छा है, रख छोड़ना अच्छा नहीं।

बेजड़ा के पीसनहारी, गेहूं के गीत गाव, (स्त्रि०)
(१) असंगत काम।
(२) हैसियत से बढ़कर बात करना।

बेजर बिसनी भड़वे बराबर
(१) बिना पैसे का व्यसनी भड़वे के समान है।
(२) बिना पैसे की स्त्री भड़वे के समान है। व्यसनी किसी भी तरह का नशा करनेवाला, पान, तमाखू आदि भी उसमें शामिल है।

बेटा खाय, बाप लखाय; कलयुग अपना बल दिखलाय
पुत्र जब पिता की सुख-सुविधा को कोई ध्यान न रखे, तब क०।

बेटा बन के सब ने खाया है, बाप बन के कोई नही खाता
प्रेम से बोलनेवाले को सब चाहते है, रोब जमानेवाले को कोई नहीं।

बेटा बेटी बस का अच्छा
आज्ञाकारी लडका या लडकी ही प्रशंसनीय है।

बेटा मरियो, पर तिस्सर न पड़िया, (स्त्रि०)
तीसरे लडके का जीने की अपेक्षा मर जाना अच्छा। लोक-विश्वास।
(एक के बाद एक तीसरे लड़के का होना बहुत अशुभ मानते है।)

बेटा लायगा चमारी, वह भी बहू कहलायेगी हमारी, (स्त्रि०)
(१) जब कोई अपनी खराब चीज को अच्छी बताए, तब क०।
(२) लड़के के हर काम की सराहना करनी पड़ती है, यह अर्थ भी निलकता है।
(३) बहू देखने मे कितनी ही बुरी क्यों न हो, फिर भी वह हमारे घर की लक्ष्मी ही कहलाएगी।

बेटा हुआ जब जानिए, जब पोता खेले बार
पुत्र का होना तभी सार्थक है, जब घर में पोता खेलता फिरे; क्योंकि पोता हो जाने से वंश के आगे बढ़ने की आशा हो जाती है।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर होती है
दोनों जल्दी बढ़ती हैं।

बेटी का धन निभाना है, आते भी रुलाये, जाते भी रुलाये
लड़की का होना अच्छा नही, उसके पैदा होने पर भी दुख होता है और ब्याह के बाद जब वह ससुराल जाती है, तब भी दुख होता है।

बेटी ने किया कुम्हार, और मां ने किया लुहार। न तुम चलाओ हमार, न हम चलाएं तुम्हार।
जहां दोनों एक-से बुरे हों, वहां कौन किसकी कहे?

बेटी ससुरा न जाती, मन-मन गाजती, (स्त्रि०)
लडकी (किसी वजह से) ससुराल नहीं जाती, मन-ही-मन क्रोध से उफनती रहती है।
किसी से अपनी बात न कह पाना।

बेटे से नाम चलता है
वंश बढता है।

बे थांग चोरी नहीं होती
बिना भेद के चोरी नही होती।

बेदर्द क़साई, क्या जाने पीर पराई? (स्त्रि०)
हृदयहीन व्यक्ति।

बेदिल नौकर, दुश्मन बराबर
मन लगाकर काम न करनेवाला नौकर अच्छा नही।

बेधर्मा भई ओर बेहना के साथ में, (पू०, स्त्रि०)
बुरा काम किया और कुछ मजा भी नही आया। गुनाह बेलज्जत।
बेधर्म धर्मभ्रष्ट।
(बेहना हलकी जाति का मुसलमान होता है और उक्त बात कहनेवाली हिन्दू है।)

बे फ़िक्री अजब चीज है
बहुत बढ़िया चीज है।

बे बूझ नगरी, बे बूझ राजा; टके सेर भाजी; टके सेर खाजा

घोर कुप्रबंध और अराजकता। (कथा है कि किसी समय एक साधु अपने चेले के साथ देशाटन करता एक नगर मे पहुचा। वहा उसने चेले को आटा लेने के लिए बाजार भेजा। चेले ने सभी चीजे एक ही भाव बिकती देखकर मगद, मालपुए खरीद लिए, और प्रसन्न होता हुआ गुरु के पास आया। परतु साधु ने जब यह देखा तो उसने ऐसे स्थान मे रहना पसद नही किया, जहा सब वस्तुए एक भाव मिल रही हो, और चेले को वही छोडकर वह अन्यत्र चला गया। यहा चेला उस नगर मे मौज से रहने लगा और मालटाल खाकर कुछ दिनो मे काफी मोटा हो गया। सयोगवश नगर मे एक खून हो गया। बहुत तलाश करने पर भी हत्यारे का पता नही लग सका। राजा इस पर बडा क्रुद्ध हुआ और उसने आज्ञा दी कि नगर मे जो भी सबसे मोटा आदमी मिले उसे पकड कर फासी दे दी जाए। सिपाहियो ने उसी चेले को सबसे मोटा ताजा जानकर पकड लिया और फासी के लिए राजा के सामने ले गए। साधु को जब इसका पता चला तो चेले को बचाने के लिए दौडे आए। राजा के पास आकर बोले—खून मैने किया है। फासी मुझे मिलनी चाहिए। यह आदमी निरपराध है, इसे छोड दीजिए। इस पर सिपाहियो ने चेले को छोडकर गुरु को पकड लिया। पर जब वे उसे फासी की टिकटी के पास ले गए तो चेला चिल्ला उठा खून तो मैने किया है। इन्हे छोड दीजिए। इस तरह दोनो मे विवाद छिड़ गया। एक कहता मैंने खून किया है। दूसरा कहता—नही मैंने किया है। इस पर राजा बडे चक्कर मे पड गए और उन्होने दोनों को छोड दिया। साराश कथा का यह है कि जहां सब चीज़ एक भाव मिलती हो, वहा कभी न्याय और सुप्रबंध नही हो सकता। इस कथा पर आधारित भारतेन्दु हरिश्चद्र का 'अंधेर नगरी' नामक एक सुंदर प्रहसन है।)

बे ब्याही खाये रोटियां, और ब्याही खाये बोटियां

ब्याह हो जाने के बाद लड़की जब ससुराल चली जाती है, तो हमेशा उसे कुछ-न कुछ भेंट-सौगात देते रहना पडती है। इसी से क०।

बोटिया हड्डिया। खाये बोटियां का भाव यह है कि ब्याह के बाद उस पर और भी अधिक खर्च करना पड़ता है।

बे माघे घी खिचड़ी खाये, बे मेहरी ससुरारे जाये, बे भादों पेन्हाई पन्वा. कहैं घाघ ये तीनों कव्वा।

जो माघ को छोडकर दूसरे महीनो मे घी खिचडी खाए, स्त्री के मर जाने पर ससुराल जाए और भादो के सिवा दूसरी ऋतु मे झूला झूले' घाघ कहते है, ये तीनो ही मूर्ख हैं।

बे मीर बाजी अन्तर

फर्जी के पिट जाने पर शतरज की बाजी कमजोर पड़ जाती है। बिना मालिक या अफसर के काम गड़बड हो जाता है।

बे मेह की डांवरी, घोड़ा बिना लगाम।
बे नाथ के लश्कर, तीनों भइल निकाम। (ग्रा०)

बिना वर्षा के खेत जोतना, बिना लगाम का घोड़ा और बिना नायक की फौज; ये तीनों व्यर्थ हैं।

बेर खांसी का घर है

स्पष्ट।

बेरों में गुठलियों का मिलाना

अच्छी वस्तु मे निकम्मी का मेल करना।

बेल के मारे बबूल तले, बबूल के मारे बेल तले

बेल के नीचे गए तो उसका फल सिर पर गिरा, बबूल के नीचे गए तो उसके काटे शरीर में छिद गए।

कही भी आश्रय न मिलना। अभागा मनुष्य।

बे-लज्जी बहुरिया पर घर नाचै, (स्त्रि०)

निर्लज्ज बहू दूसरे के घर घूमती-फिरती है।

बेल पक्का तो कौवों के बाप को क्या ?

माना कि कोई वस्तु बहुत बढ़िया है, पर वह यदि हमे सुलभ नही, तो उससे हमें लाभ क्या ? (बेल के ऊपर का छिलका इतना कड़ा होता है कि